धम्मसंगानी

तिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि

पाली संस्करण : नीचे दिए गए प्रत्येक अनुभाग की शुरुआत में पाली-अंग्रेजी और पाली-देवनागरी संस्करण उपलब्ध कराए गए हैं।

अंतर्वस्तु

धम्मसंगानी
(धर्मों/घटनाओं की सूची)

धम्मसंगानी अभिधम्म की पहली पुस्तक है। धम्मसंगनी की शुरुआत मतिका (पाली में "मैट्रिक्स") से होती है, जो धम्मों के वर्गीकरणों की एक सूची है, जिसका अनुवाद प्रकृति, विचार, घटनाएँ, अवस्थाएँ, प्रतिरूप आदि के रूप में किया जाता है। अभिधम्म पद्धति के अनुसार 22 त्रिगुणीय वर्गीकरण हैं, उसके बाद 100 द्विगुणीय वर्गीकरण और सूत्र (प्रवचन) पद्धति के अनुसार 42 वर्गीकरण हैं। पुस्तक का मुख्य भाग चार भागों में विभाजित है।

पहला भाग मन की अवस्थाओं से संबंधित है, जिसमें उनमें मौजूद कारकों को सूचीबद्ध और परिभाषित किया गया है। दूसरा भाग भौतिक घटनाओं से संबंधित है, जिसमें उन्हें संख्यात्मक रूप से, इकाई, द्वि आदि के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

तीसरा भाग पहले दो भागों की सामग्री को मतिका में दिए गए वर्गीकरणों की व्याख्या करने के लिए लागू करता है।

चौथा भाग भी ऐसा ही करता है, लेकिन एक अलग और कभी-कभी अधिक विस्तृत तरीके से, और सूत्र (प्रवचन) पद्धति के द्विगुणीय वर्गीकरणों को छोड़ देता है।

स्कैन की गई पुस्तक
स्कैन की गई पुस्तक का लिंक

पाठ संस्करण
नोट: जैसा है वैसा ही उपलब्ध कराया गया है; प्रूफरीड नहीं किया गया है।

पुस्तक IV - अट्ठकथा
अट्ठकथा: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक1-भाग1-अध्याय 1
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 1 - विचारों की उत्पत्ति
  - भाग 1 - चेतना की उत्तम अवस्थाएँ

अंतर्वस्तु

अध्याय I - इंद्रिय जगत से संबंधित विचार के आठ मुख्य प्रकार

कामावकारा अत्था महाचित्तनी

[1]

प्रकार I.

[1] कौन से राज्य अच्छे हैं?[2]

जब इंद्रिय जगत[3] के विषय में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है, जो आनंद से युक्त हो और ज्ञान[4] से जुड़ा हो, और जिसका विषय दृष्टि[5], ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श[6], मानसिक अवस्था[7], या कुछ और[8] हो, तो

(i) संपर्क (§ 2),

(ii) भावना (§ 3),

(iii) बोध (§4),

(iv) संकल्प (§ 5),

(v) विचार (§ 6),

(vi) अनुप्रयोग (§ 7),

(vii) निरंतर चिंतन (§8),

(viii) उत्साह (§ 9),

(ix) सहजता (§ 10),

(x) आत्म-संयम (§11),

(xi) विश्वास की क्षमता (§ 12),

(xii) ऊर्जा की क्षमता (§ 13),

(xiii) जागरूकता की क्षमता (§ 14),

(xiv) एकाग्रता की क्षमता (§ 15),

(xv) अंतर्दृष्टि की क्षमता (§ 16),

(xvi) विचार की क्षमता (§ 17),

(xvii) प्रसन्नता की क्षमता (§ 18),

(xviii) जीवन की क्षमता (§ 19);

(xix) सही विचार (§ 20),

(xx) सही इरादा (§21),

(xxi) सही प्रयास (§ 22),

(xxii) सही जागरूकता (§ 23),

(xxiii) सही एकाग्रता (§ 24);

(xxiv) विश्वास की शक्ति (§ 25),

(xxv) ऊर्जा की शक्ति (§ 26),

(xxvi) जागरूकता की शक्ति (§ 27),

(xxvii) एकाग्रता की शक्ति (§ 28),

(xxviii) अंतर्दृष्टि की शक्ति (§ 29),

(xxix) कर्तव्यनिष्ठा की शक्ति (§ 30),

(xxx) निंदा के भय की शक्ति (§ 31);

(xxxi) लोभ का अभाव (§ 32),

(xxxii) घृणा का अभाव (§ 33),

(xxxiii) सुस्ती का अभाव (§ 34);

(xxxiv) लोभ का अभाव (§ 35),

(xxxv) द्वेष का अभाव (§ 36),

(xxxvi) सही विचार (§ 37);

(xxxvii) कर्तव्यनिष्ठा (§ 38),

(xxxviii) निंदा का भय (§ 39);

(xxxix, xl) मन की शांति और मानसिक कारक (§§ 40, 41),

(xli, xlii) मन की हल्कापन और मानसिक कारक (§§ 42, 43),

(xliii, xliv) मन की लचीलापन और मानसिक कारक (§§ 44, 45),

(xlv, xlvi) मन की सुगमता और मानसिक कारक (§§ 46, 47),

(xlvii, xlviii) मन की उपयुक्तता और मानसिक कारक (§§ 48, 49),

(xlix, l) मन की प्रत्यक्षता और मानसिक कारक (§§ 50, 51);

(li) सचेतनता (§ 52),

(lii) बुद्धि (§53),

(liii) शांति (§ 54),

(liv) अंतर्ज्ञान (§ 55),

(lv) समझ (§ 56),

(lvi) संतुलन (§ 57)।

अब ये — या उस अवसर पर मौजूद अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ[10] — ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अच्छी हैं।

[2] उस अवसर पर संपर्क (फासो) क्या है?

उस अवसर पर जो संपर्क स्पर्श करने वाला होता है, संपर्क में आना, संपर्क में आने की अवस्था—यही वह संपर्क है जो उस समय होता है।

[3] उस अवसर पर वेदना (भावना) क्या है?

मानसिक सुख, मानसिक सहजता, जो उस अवसर पर प्रतिनिधि बौद्धिकता के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होती है;[13] विचार के संपर्क से उत्पन्न होने वाली सुखद, सहज अनुभूति;[14] विचार के संपर्क से उत्पन्न होने वाली सुखद, सहज अनुभूति — यही वह अनुभूति है जो तब होती है।

[4] उस अवसर पर धारणा (सन्ना) क्या है?

वह अनुभूति, वह अनुभूति, वह अनुभूति प्राप्त करने की अवस्था जो उस अवसर पर प्रतिनिधिक बौद्धिकता के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होती है - यही वह अनुभूति है जो उस समय विद्यमान होती है।

[5] उस अवसर पर संकल्प (चेतना) क्या है?

प्रतिनिधिक बौद्धिकता के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होने वाली इच्छाशक्ति, उद्देश्य और सार्थकता ही वह इच्छाशक्ति है जो तब विद्यमान होती है।

[6] उस अवसर पर क्या सोचा जाता है (चित्तम)?

उस अवसर पर जो विचार, मन, हृदय, वह जो स्पष्ट है, मन के क्षेत्र के रूप में विचार, मन की क्षमता, बुद्धि, बुद्धि का स्कंध, प्रतिनिधि बुद्धि का उपयुक्त तत्व - वही विचार उस समय विद्यमान होता है।

[7] उस अवसर पर मन का अनुप्रयोग (विटाक्को) क्या है?

भेदभाव, अनुप्रयोग, जो उस अवसर पर निपटान है,[18] निर्धारण, ध्यान केंद्रित करना,[19] मन का अधिरोपण,[20] सही निपटान—यह वह अनुप्रयोग है जो तब होता है।

[8] उस अवसर पर निरंतर विचार (विकारो) क्या है?

प्रक्रिया, निरंतर प्रक्रिया (विकारो), प्रगति और पहुँच [मन की] जो उस अवसर पर विचार का [निरंतर] समायोजन और ध्यान केंद्रित करना है[22] — यही निरंतर विचार है जो तब होता है।

[9] उस अवसर पर उत्साह (पिति) क्या है?

उस अवसर पर जो उत्साह होता है, वह आनंद, उल्लास, हर्ष और उल्लास, प्रसन्नता[24], उमंग, मन की उमंग[25] होता है — यही उत्साह तब होता है।

[10] उस अवसर पर सुख (आराम) क्या है?

उस अवसर पर जो मानसिक सुख, जो मानसिक शांति होती है, वह विचारों के संपर्क से उत्पन्न होने वाला सुखद, आरामदायक अनुभव होता है—यही वह शांति है जो उस समय मौजूद होती है।

[11] उस अवसर पर आत्म-संयम (cittass' ekaggata) क्या है?

उस समय मौजूद स्थिरता, दृढ़ता, विचारों की तल्लीनता और स्थिरता, जो कि विचलित न होने, संतुलन, अविचलित मानसिक प्रक्रिया, शांति, एकाग्रता की क्षमता और शक्ति, सही एकाग्रता का रूप है—यही वह आत्म-संयम है जो उस समय मौजूद होता है।

[12] उस अवसर पर विश्वास की शक्ति (सद्धिंद्रियम) क्या है?

उस अवसर पर जो विश्वास, जो भरोसा करने, जो विश्वास व्यक्त करने, जो आश्वासन की भावना है, जो आस्था है, एक क्षमता और एक शक्ति के रूप में आस्था है - वही आस्था उस समय विद्यमान होती है।

[13] उस अवसर पर ऊर्जा (वीरियिंद्रियम) की शक्ति क्या है?

उस अवसर पर मौजूद ऊर्जा की मानसिक शुरुआत[35], प्रयास और आगे बढ़ने का प्रयास, परिश्रम और कोशिश, उत्साह और जोश, शक्ति और दृढ़ता, अविचल प्रयास की स्थिति, निरंतर इच्छा की स्थिति, अविचल सहनशीलता की स्थिति, बोझ की ठोस पकड़, ऊर्जा, क्षमता और शक्ति के रूप में ऊर्जा, सही प्रयास - यही वह ऊर्जा है जो उस समय मौजूद होती है।

[14] उस अवसर पर सतिन्द्रियम (सतिन्द्रियम) की क्षमता क्या है?

उस अवसर पर जो जागरूकता स्मरण करना, याद दिलाना है; वह जागरूकता[37] जो याद रखना, ध्यान में रखना है, सतहीपन[38] और विस्मृति का विपरीत; एक क्षमता के रूप में जागरूकता, एक शक्ति के रूप में जागरूकता, सही जागरूकता - यही जागरूकता की वह क्षमता है जो तब होती है।

[15] उस अवसर पर एकाग्रता की शक्ति (समाधिन्द्रियम) क्या है?

'स्वयं-संयम' के लिए उत्तर दें, धारा 11.

[16] उस अवसर पर पन्ना/अंतर्दृष्टि (पन्ना-इन्द्रियम) की क्षमता क्या है?

उस अवसर पर जो ज्ञान/अंतर्दृष्टि (पन्ना-इन्द्रियम) की क्षमता होती है, वह है अंतर्दृष्टि/ज्ञान, प्रत्यक्ष समझ, खोज, शोध, सत्य की खोज,[41] विवेक, भेदभाव, विभेदन, विद्वता, प्रवीणता, सूक्ष्मता, आलोचना, चिंतन, विश्लेषण, व्यापकता[42], बुद्धिमत्ता[43], नेतृत्व[44], अंतर्दृष्टि, बुद्धि, प्रोत्साहन[45]; पन्ना संकाय के रूप में (पणिन्द्रियं), पन्ना शक्ति के रूप में (पन्नबल:), पन्ना तलवार के रूप में [46] (पन्नसत्थ:), पन्ना ऊंचाई के रूप में [47] (पन्नपसादो), पन्ना प्रकाश के रूप में [48] (पन्ना-आलोको), पन्ना रूप में महिमा[49](पन्ना-ओभासो), पन्ना के रूप में (चमकदार) वैभव[50](पन्ना-पज्जोतो), पन्ना के रूप में (चमकदार) कीमती पत्थर(पन्ना-रतनं); नीरसता का अभाव, सत्य की खोज[51], सही दृष्टिकोण - यही पन्ना क्षमता (पन्ना-इंद्रियम्) है जो तब मौजूद है।

[17] उस अवसर पर विचार करने की क्षमता (प्रतिनिधि कल्पना, मनिन्द्रियम) क्या है?

"विचार" (चित्तम) के लिए उत्तर दें, धारा 6.

[18] उस अवसर पर आनंद की शक्ति (सोमनसिंद्रियम) क्या है?

सुखम (आसानी) के लिए उत्तर दें, धारा 10।

[19] उस अवसर पर जीवन शक्ति (जीवितिन्द्रियम) क्या है?

इन निराकार अवस्थाओं की निरंतरता, उनका अस्तित्व, उनका निरंतर चलते रहना, उनकी प्रगति, निरंतरता, संरक्षण, जीवन, एक संकाय के रूप में जीवन[52] — यही जीवन शक्ति का संकाय है जो तब मौजूद है।[53]

[20] उस अवसर पर सही विचार (सममिदित्थी) क्या हैं?

"बुद्धि की क्षमता" के लिए उत्तर दें, धारा 16.

[21] उस अवसर पर सही इरादा (सममासंकप्पो) क्या है?

"गर्भाधान" के लिए उत्तर दें, धारा 7.

[22] उस अवसर पर उचित प्रयास (सम्मवयामो) क्या है?

एन्सिवर "ऊर्जा की क्षमता" के लिए, § 13.

[23] उस अवसर पर क्या उचित है - सजगता (सम्मसति)?

धारा 14 के अनुसार "सजगता की क्षमता" के लिए उत्तर दें।

[24] उस अवसर पर सही एकाग्रता (सम्मासमाधि) क्या है?

"स्वयं-संयम" के लिए उत्तर दें, धारा 11.

[25] उस अवसर पर विश्वास (सद्धबलम) की शक्ति क्या है?
"विश्वास की क्षमता" के लिए उत्तर दें, धारा 12.
[26] उस अवसर पर ऊर्जा (विरियाबलम) की शक्ति क्या है?
"ऊर्जा संकाय" के लिए उत्तर दें, धारा 13.
[27] उस अवसर पर सतीबलम (सतीबलम) की शक्ति क्या है?
धारा 14 के अनुसार "सजगता की क्षमता" के लिए उत्तर दें।
[28] उस अवसर पर एकाग्रता की शक्ति (समाधिबलम्) क्या है?
"स्वयं-संयम" के लिए उत्तर दें, धारा 11.
[29] उस अवसर पर ज्ञान (पन्नबलम) की शक्ति क्या है?
"ज्ञान की क्षमता" के लिए उत्तर दें, धारा 16.अर्थात उस अवसर पर मौजूद ज्ञान/अंतर्दृष्टि (पन्ना-बलम) की शक्ति अंतर्दृष्टि/ज्ञान, प्रत्यक्ष समझ, खोज, शोध, सत्य की खोज,[41] विवेक, भेदभाव, विभेदन, विद्वता, प्रवीणता, सूक्ष्मता, आलोचना, चिंतन, विश्लेषण, व्यापकता[42], बुद्धिमत्ता[43], नेतृत्व[44], अंतर्दृष्टि, बुद्धि, प्रोत्साहन[45] है; पन्ना एक संकाय के रूप में (पञ्ञिन्द्रियं), पन्ना एक शक्ति के रूप में (पञ्ञाबलं), पन्ना एक तलवार के रूप में[46](पञ्ञासत्थं), पन्ना एक ऊँचाई के रूप में[47](पञ्ञापासादो), पन्ना एक प्रकाश के रूप में[48](पञ्ञा-आलोको), पन्ना एक महिमा के रूप में[49](पञ्ञा-ओभासो), पन्ना एक वैभव के रूप में[50](पञ्ञा-पज्जोतो), पन्ना एक कीमती पत्थर के रूप में (पञ्ञा-रतनं); सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज[51], सही विचार - यही ज्ञान/अंतर्दृष्टि (पञ्ञा-बलम्) की शक्ति है जो तब होती है।
[30] उस अवसर पर विवेक (हिरिबलम) की शक्ति क्या है?
विवेकपूर्ण संशय[57] की भावना जो उस अवसर पर होती है जब संशय महसूस किया जाना चाहिए, बुरे और दुष्ट अवस्थाओं को प्राप्त करने पर विवेकपूर्ण संशय - यही विवेक की शक्ति है जो तब होती है।
[31] उस अवसर पर निंदा के भय (ओत्तप्पबलम) की शक्ति क्या है?
अपराधबोध की भावना,[58] जो उस अवसर पर होती है, जहाँ अपराधबोध महसूस किया जाना चाहिए, बुरे और दुष्ट अवस्थाओं को प्राप्त करने पर अपराधबोध की भावना - यही दोष का भय है जो तब होता है।
[32] उस अवसर पर कामवासना (अलोभो) की अनुपस्थिति क्या है?
उस अवसर पर जो वासना, कामुकता, और मोह का अभाव होता है, वह मोह, और मोह की अनुपस्थिति, वह वासना की अनुपस्थिति जो अच्छाई की जड़ है[59] — यही वह वासना की अनुपस्थिति है जो तब होती है।
[33] उस अवसर पर घृणा (अदोसो) की अनुपस्थिति क्या है?
घृणा की अनुपस्थिति, घृणा[60], घृणा की अनुपस्थिति, जो उस अवसर पर होती है, द्वेष की अनुपस्थिति, द्वेष[61], घृणा की अनुपस्थिति जो अच्छाई की जड़ है - यही घृणा की अनुपस्थिति है जो तब होती है।
[34] उस अवसर पर सुस्ती (अमोहो) की अनुपस्थिति क्या है?
"बुद्धि की क्षमता" के लिए उत्तर दें, § 16.[62]
[35] उस अवसर पर लोभ का अभाव (अनभिज्जा) क्या है?
"वासना की अनुपस्थिति" के लिए उत्तर दें, § 32.[63]
[36] उस अवसर पर द्वेष (अव्यपादो) की अनुपस्थिति क्या है?
"घृणा की अनुपस्थिति" के लिए उत्तर दें, धारा 33।
[37] उस अवसर पर सही विचार (सममिदित्थी) क्या हैं?
"बुद्धि की क्षमता" के लिए उत्तर दें, धारा 16.
[38] उस अवसर पर कर्तव्यनिष्ठा (हिरी) क्या है?
"विवेकशीलता की शक्ति" के लिए उत्तर दें, धारा 30।
[39] उस अवसर पर निंदा का भय (ओत्तप्पम) क्या है?
"दोषारोपण के भय की शक्ति" के लिए उत्तर दें, धारा 31।
[40] उस अवसर पर इंद्रियों का विश्राम (कयपसद्धि) क्या है?

उस अवसर पर जो शांति[67], जो संयम होता है, जो शांति, जो स्थिरता, जो स्कंधों की शांति, बोध और संश्लेषण की शांति होती है—वह इंद्रिय की शांति है जो तब होती है।

[41] उस अवसर पर विचार की शांति (चित्तपसद्धि) क्या है?

उस अवसर पर जो शांति, जो संयम होता है, जो सुकून देने वाला, जो मन को शांत करने वाला, बुद्धि के स्कंध की जो शांति होती है—वही उस समय मौजूद विचार की शांति होती है।

[42] उस अवसर पर भावना (कयालहुता) का उत्प्लावन[68] क्या है?

उस अवसर पर जो उत्साह होता है, परिवर्तनशील सतर्कता[69], भावना, बोध और संश्लेषण के स्कंधों में सुस्ती[70] और जड़ता की अनुपस्थिति—यह इंद्रिय का उत्साह है जो तब होता है।

[43] उस अवसर पर विचार की उमंग (चित्तलहुता) क्या है?

बुद्धि के स्कंध में उत्प्लावन आदि (जैसा कि § 42 में है) — यह विचार का उत्प्लावन है जो तब होता है।

[44] उस अवसर पर इंद्रिय की प्लास्टिसिटी (कयामुदुत) क्या है?

उस अवसर पर जो लचीलापन होता है, जो कोमलता, सहजता, कठोरता का अभाव, भाव, बोध और संश्लेषण के स्कंधों में जो दृढ़ता होती है—यही इंद्रियों का वह लचीलापन है जो उस समय मौजूद होता है।

[45] उस अवसर पर विचार की लचीलापन (चित्तमुदुता) क्या है?

बुद्धि के स्कंध में जो लचीलापन आदि (जैसा कि § 44 में है) होता है, वह विचार का लचीलापन है जो तब होता है।

[46] उस अवसर पर इंद्रिय (कयाकममन्नत) की सुगमता[72] क्या है?

उस अवसर पर जो सहजता, जो सुगमता, जो कोमलता, जो भाव, बोध और संश्लेषण के स्कंधों में होती है—वही उस समय की इंद्रियों की सहजता है।

[47] उस अवसर पर विचार की सुगमता (चित्तकम्मन्नत) क्या है?

बुद्धि के स्कंध की सुगमता, आदि (जैसा कि § 46 में है) - यही विचार की सुगमता है जो तब होती है।

[48] उस अवसर पर समझ (कयापगुन्नत) की उपयुक्तता[73] क्या है?

उस अवसर पर जो उपयुक्तता होती है, जो योग्यता होती है, जो स्कंधों की क्रियाशीलता, बोध और संश्लेषण की जो कुशल अवस्था होती है—वही उस समय इंद्रियों की उपयुक्तता होती है।

[49] उस अवसर पर विचार की उपयुक्तता (चित्तपगुन्नत) क्या है?

बुद्धि के स्कंध की उपयुक्तता, आदि (जैसा कि § 48 में है) - यही विचार की उपयुक्तता है जो तब होती है।

[50] उस अवसर पर विवेक (कयुज्जुकता) की सत्यता[74] क्या है?

उस अवसर पर जो सीधापन होता है, भावना, बोध और संश्लेषण के स्कंधों की जो शुद्धता होती है, बिना किसी विचलन, मोड़ या टेढ़ेपन के, वही उस समय मौजूद इंद्रिय की प्रत्यक्षता होती है।

[51] उस अवसर पर विचार की सत्यता (चित्तुज्जुकता) क्या है?

बुद्धि के स्कंध की सत्यता, आदि (जैसा कि § 50 में है) — यही विचार की सत्यता है जो तब होती है।

[52] उस अवसर पर सती (सती) क्या है?

धारा 14 के अनुसार "सजगता की क्षमता" के लिए उत्तर दें।

[53] उस अवसर पर बुद्धि (संपजन्नम) क्या है?

"बुद्धि" के लिए उत्तर दें, धारा 16.

[54] उस अवसर पर क्या शांत (समथो) है?

"स्वयं-संयम" के लिए उत्तर दें, धारा 11.

[55] उस अवसर पर अंतर्दृष्टि (विपश्यना) क्या है?

"बुद्धि" के लिए उत्तर दें, धारा 16.

[56] उस अवसर पर क्या ग्रास्प (पगहो) है?

"ऊर्जा संकाय" के लिए उत्तर दें, धारा 13.

[57] उस अवसर पर संतुलन (अविक्खेपो) क्या है?

"स्वयं-संयम" के लिए उत्तर दें, धारा 11.

ये, या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ — ये सभी अवस्थाएँ अच्छी हैं।

[यहां शब्दों का परिसीमन समाप्त होता है (पद-भजनी-यम)।]

[पाठ के लिए प्रथम भाग का समापन।]

[प्रथम प्रकार के विचार (संगहवरम या कोत्थासवरम) के घटकों का सारांश।]

[58] अब, उस अवसर पर

स्कंध चार हैं,

क्षेत्र (आयतननि) दो हैं,

तत्व (धातुयो) दो हैं,

पोषक तत्व (आहार) तीन हैं,

शक्तियाँ (इन्द्रियानि) आठ हैं,

ध्यान पाँच प्रकार का है,

पथ पाँच प्रकार का है,

शक्तियाँ (बलनि) सात हैं,

कारण (हेतु) तीन हैं;

संपर्क,

भावना,

बोध,

सोच,

विचार,

प्रत्येक एकल [कारक] हैं;

स्कंधों के:

भावना,

बोध,

संश्लेषण,

बुद्धि,

प्रत्येक एकल [कारक] हैं;

विचार-मंथन का क्षेत्र (मनायतनम्),

विचार-मंथन की क्षमता,

प्रतिनिधिक बौद्धिक क्षमता का तत्व (मनोविन्ननधातु),

किसी (प्रतिनिधि) राज्य का क्षेत्र,

किसी (प्रतिनिधि) राज्य का तत्व

ये सभी एकल [कारक] हैं। ये, या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारण-प्रेरित अवस्थाएँ - ये सभी अवस्थाएँ अच्छी हैं।

[59] उस अवसर पर चार स्कंध क्या हैं?

भावना, बोध, संश्लेषण और बौद्धिक क्षमता के स्कंध।

[60] (i.) उस अवसर पर भावना का स्कंध क्या है?

उस अवसर पर जो मानसिक सुख, जो मानसिक सहजता होती है[79], विचार के संपर्क से उत्पन्न होने वाली सुखदायक, सहज अनुभूति, विचार के संपर्क से उत्पन्न होने वाली सुखद, सहज अनुभूति — यही उस समय मौजूद भावना का स्कंध है (§§ 3, 10, 18)।

[61] (ii.) उस अवसर पर बोध का स्कंध क्या है?

वह धारणा, बोध करना, बोध करने की अवस्था, जो उस अवसर पर होती है — यही उस समय की धारणा का स्कंध है (§ 4)।

[62] (iii.) उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?

संपर्क करना,

सोच,

गर्भाधान,
विवेचनात्मक विचार,
आनंद,
आत्म-संयम,
आस्था की क्षमता,
ऊर्जा संकाय,
ध्यान की क्षमता,
एकाग्रता संकाय,
ज्ञान की क्षमता,
जीवन शक्ति की क्षमता,
सही विचार,
सही इरादा,
सही प्रयास,
सही जागरूकता,
सही एकाग्रता,
आस्था की शक्ति,
ऊर्जा की शक्ति,
ध्यान की शक्ति,
एकाग्रता की शक्ति,
ज्ञान की शक्ति,
विवेक की शक्ति,
निंदा के भय की शक्ति,
कामुकता का अभाव,
नफरत का अभाव,
सुस्ती का अभाव।
लोभ का अभाव,
दुर्भावना का अभाव,
सही विचार,
कर्त्तव्य निष्ठां,
दोषारोपण का भय,
इंद्रियों की शांति,
विचारों की शांति,
इंद्रियों की उमंग,
विचारों की उमंग,
इंद्रियों की लचीलापन
विचारों की लचीलता,
इंद्रियों की सुगमता,
विचार की सुगमता,
समझ की उपयुक्तता,
विचार की उपयुक्तता,
विवेक की सत्यता, ।
विचारों की सत्यता,

सचेतनता,
बुद्धिमत्ता,
शांत,
अंतर्दृष्टि,
पकड़,
संतुलन।
ये, या उस अवसर पर मौजूद अन्य सभी निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ, भावना, बोध और बुद्धि के स्कंधों को छोड़कर—ये संश्लेषण के स्कंध हैं।
[63] (iv.) उस अवसर पर बुद्धि का स्कंध क्या है?
उस अवसर पर जो विचार, मन, हृदय, वह जो स्पष्ट है, मन के क्षेत्र के रूप में विचार, मन की क्षमता के रूप में विचार, बुद्धि का स्कंध, प्रतिनिधि बुद्धि का उपयुक्त तत्व — यही उस समय विद्यमान बुद्धि का स्कंध है (§ 6)। उस अवसर पर ये चार स्कंध हैं।
[64] उस अवसर पर दो गोले क्या हैं?

विचार-मंथन का क्षेत्र, (मानसिक) अवस्थाओं का क्षेत्र।
[65] उस अवसर पर »विचार-निर्माण का क्षेत्र (मनायतनम्) क्या है?
'विचार' के लिए धारा 6 और 'बौद्धिकरण के स्कंध' के लिए धारा 63 के अनुसार उत्तर दें।
[66] उस अवसर पर (मानसिक) अवस्थाओं (धम्मयातनम्) का क्षेत्र क्या है?
भावना, बोध, संश्लेषण के स्कंध— उस अवसर पर यह (मानसिक) अवस्थाओं का क्षेत्र होता है।
उस अवसर पर ये दो गोले हैं।
[67] उस अवसर पर वे दो तत्व क्या हैं?
प्रतिनिधिक बौद्धिकता का तत्व, (मानसिक) अवस्थाओं का तत्व।
[68] उस अवसर पर प्रतिनिधिक बौद्धिकता (मनोविन्ननाधातु) का तत्व क्या है?
"विचार" के लिए उत्तर, धारा 6; तुलना करें धारा 63, 65.
[69] उस अवसर पर (मानसिक) अवस्थाओं (धम्मधातु) का तत्व क्या है?
भावना, बोध और संश्लेषण के स्कंध उस अवसर पर (मानसिक) अवस्थाओं के तत्व होते हैं।
उस अवसर पर ये दो तत्व होते हैं।
[70] उस अवसर पर तीन पोषक तत्व क्या हैं?[81]
संपर्क का पोषण, प्रतिनिधि चिंतन का पोषण, बौद्धिक क्षमता का पोषण।
[71] उस अवसर पर संपर्क का पोषण (फस्साहारो) क्या है?
धारा 2 में "संपर्क" के लिए दिए गए उत्तर के अनुसार उत्तर दें।
[72] उस अवसर पर प्रतिनिधि चिंतन (मनोसानसेतनहारो) का पोषण क्या है?
उस अवसर पर जो चिंतन, मनन और विचार-विमर्श होता है, वही उस समय का प्रतिनिधि चिंतन है।
[73] उस अवसर पर बुद्धि का पोषण (विन्नानहारो) क्या है?
"बौद्धिक स्कंध" के लिए उत्तर दें, धारा 63।
उस समय ये तीन पोषक तत्व होते हैं।
[74] उस अवसर पर आठ संकाय क्या हैं?
आस्था, ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता, ज्ञान, विचार, खुशी और जीवंतता जैसी क्षमताएं।
[75-82] उस अवसर पर विश्वास की क्षमता क्या है... जीवंतता?
अनुच्छेद 12-19 में दिए गए अनुसार उत्तर दें।
उस समय ये आठ संकाय थे।
[83] उस अवसर पर पंचांगिकम झानम क्या है?
गर्भाधान, विवेचनात्मक विचार, आनंद, सहजता, आत्मसंयम।

[84-88] उस अवसर पर अवधारणा क्या है... आत्म-संयम?

उत्तर क्रमशः अनुच्छेद 7-11 के अनुसार हैं।

उस अवसर पर यही पंच प्रकार का ध्यान है।

[89] उस अवसर पर पंचमार्ग (पंचांगिको मग्गो) क्या है?

आठ दृष्टिकोण, सही इरादा, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

[90-94] उस अवसर पर सही विचार क्या हैं... क्या... सही एकाग्रता है?

उत्तर क्रमशः अनुच्छेद 20-24 के अनुसार हैं।

उस अवसर पर यही पंचमार्ग है।

[95] उस अवसर पर सात शक्तियाँ क्या हैं?

आस्था, ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता, ज्ञान, कर्तव्यनिष्ठा और निंदा के भय की शक्ति।

[96-102] उस अवसर पर विश्वास की शक्ति क्या है... निंदा का भय?

उत्तर क्रमशः अनुच्छेद 25-31 के अनुसार हैं।

उस अवसर पर ये सात शक्तियाँ थीं।

[103] उस अवसर पर तीन कारण (तयोहेतु) क्या हैं?

वासना, घृणा और सुस्ती का अभाव।

[104-106] उस अवसर पर कामवासना की अनुपस्थिति क्या है... सुस्ती?

उत्तर क्रमशः धारा 32-34 के अनुसार हैं।

उस अवसर पर ये तीन कारण होते हैं।

[107] उस अवसर पर संपर्क क्या है... [108] भावना...

[109] बोध...

[110] चिंतन... [111]

विचार... [112

] भावना का स्कंध...

[113] बोध का स्कंध... [114]

संश्लेषण का स्कंध... [115]

बौद्धिक स्कंध...

[116] विचार का क्षेत्र ...

[117] विचार की क्षमता... [118

] वैचारिक बौद्धिक तत्व...

[119] (मानसिक) अवस्थाओं का क्षेत्र...

[120] (मानसिक) अवस्थाओं का तत्व, एक एकल कारक के रूप में माना जाता है?

उत्तर क्रमशः धारा 2-6, 60-63, 65, 65, 65, 66, 66 के अनुसार हैं।

ये, या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ — ये सभी अवस्थाएँ अच्छी हैं।

[यहाँ समाप्त होता है] [अच्छे विचारों के प्रथम मुख्य प्रकार के घटकों का] सारांश।

["शून्यता" खंड (सुन्नतवरो)].[82]

[121]

अब, उस समय अवस्थाएँ (विचार के विभेदनीय घटक), स्कंध, शक्तियाँ,

क्षेत्र, कारण,

तत्व, संपर्क,

पोषक तत्व, भावना,

क्षमताएँ, बोध, ध्यान

, चिंतन,

मार्ग, विचार आदि मौजूद होते हैं।
भावना का स्कंध,
बोध का स्कंध,
संश्लेषण का स्कंध,
बुद्धि का स्कंध,
विचार का क्षेत्र,
विचार करने की क्षमता,
प्रतिनिधिक बोध का तत्व,
मानसिक अवस्थाओं का क्षेत्र,
मानसिक अवस्थाओं का तत्व। ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ—ये सभी अवस्थाएँ अच्छी हैं।
[122] उस अवसर पर राज्य क्या हैं?
भावना, बोध, संश्लेषण और बौद्धिक क्षमता के स्कंध।
[123] उस अवसर पर स्कंध क्या हैं?
धारा 59 में उल्लिखित एन्सिवर।
[124-145] इसके बाद घटक प्रजातियों की सूची में "क्षेत्र", "तत्व" आदि के संबंध में इसी प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। उत्तर पिछले 'सारांश' में दिए गए समान प्रश्नों के उत्तरों के समान हैं, अर्थात् §§ 64, 67, 70, 74, 83, 89, 95, 103, और 107-120 में।
[यहाँ समाप्त होता है] "शून्यता" खंड।
[यहाँ समाप्त होता है] अच्छे विचारों का पहला मुख्य प्रकार।

प्रकार II.
[146] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब किसी सचेत प्रेरणा[83] से इंद्रिय जगत के विषय में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है, ऐसा विचार जो आनंद से युक्त हो, ज्ञान से जुड़ा हो, और जिसका विषय दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, [मानसिक] अवस्था, या कुछ और हो, तो संपर्क, भावना आदि[84] उत्पन्न होती है। [यहाँ अनुच्छेद 1-145 में वर्णित और प्रथम विचार का निर्माण करने वाली 'अवस्थाओं' की सूची दी गई है] — ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ — ये अवस्थाएँ अच्छी होती हैं। . . .
[यहाँ समाप्त होता है] दूसरा विचार.[85]

प्रकार III.
[147] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब इंद्रियों से संबंधित ब्रह्मांड के बारे में कोई अच्छा विचार आनंद से भरपूर होकर, ज्ञान से अलग होकर, किसी दृश्य, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, मानसिक अवस्था या किसी अन्य चीज को विषय बनाकर उत्पन्न होता है, तब
संपर्क करना, गर्भाधान,
अनुभूति, विवेचनात्मक विचार,
धारणा, आनंद,
सोच, आसानी,
सोचा, आत्मसंयम;
संकाय के...
आस्था, एकाग्रता,
ऊर्जा, विचार-मंथन,
सचेतनता, ख़ुशी,

जीवन शक्ति;

सही इरादा[86], सही जागरूकता,

सही प्रयास, सही एकाग्रता,

इसकी शक्ति

आस्था, एकाग्रता,

ऊर्जा, कर्त्तव्य निष्ठां,

सचेतनता, निंदा का भय;

कामुकता का अभाव,

नफरत का अभाव,

लोभ का अभाव,

दुर्भावना का अभाव;

कर्त्तव्य निष्ठां,

दोषारोपण का भय;

शांति, उपयोगयोग्यता,

उत्प्लावन बल, फिटनेस,

प्लास्टिसिटी, सत्यता,

इंद्रियों और विचारों दोनों के संदर्भ में;

सचेतनता, पकड़,

शांत, संतुलन।

ये, या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ — ये सभी अवस्थाएँ अच्छी हैं।

[सारांश, देखें धारा 58 इत्यादि]

[147a] अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं,

क्षेत्र दो हैं,

तत्व दो हैं,

पोषक तत्व तीन हैं,

क्षमताएँ सात हैं[87],

ध्यान पंचगुणी है,

पथ चौगुणी है,

शक्तियाँ छह हैं[88],

कारण दो हैं[89], .

संपर्क, आदि।

[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]

[148] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?

संस्कार-स्कंध की विषयवस्तु प्रथम प्रकार के विचार, § 62[90] के समान ही है, जिसमें निम्नलिखित शब्द हटा दिए गए हैं: "ज्ञान की क्षमता",

"सही दृष्टिकोण",

"ज्ञान की शक्ति",

"सुस्ती का अभाव",

"बुद्धि",

"अंतर्दृष्टि"। इन्हें "ज्ञान से विरक्त" गुण के साथ असंगत होने के कारण हटा दिया गया है।

ये, या कोई अन्य निराकार, आदि।

[यहाँ समाप्त होता है] तीसरे प्रकार का विचार।[91]
प्रकार IV.
[149] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब किसी सचेत प्रेरणा से इंद्रिय जगत के विषय में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है, ऐसा विचार जो आनंद से युक्त हो, ज्ञान से असंबद्ध हो, और जिसका विषय दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, [मानसिक] अवस्था, या कुछ भी हो, तब संपर्क आदि होता है। [धारा 147 के अनुसार जारी रखें] - ये, या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ हों - ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। . . .[92]
यहां चौथा विचार समाप्त होता है।

प्रकार V.
[150] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब इंद्रिय जगत के विषय में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है, जो निस्वार्थता[93] से युक्त हो, ज्ञान से जुड़ा हो, और जिसका विषय दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, [मानसिक] अवस्था, या कुछ भी हो, तब संपर्क आदि होता है। [धारा 1 के अनुसार जारी रखें, लेकिन "आनंद" और "खुशी" के स्थान पर "समभाव" (उपेक्खा) और "खुशी की क्षमता" के स्थान पर "निस्वार्थता की क्षमता" का प्रयोग करें]।[94]
[151] उस अवसर पर संपर्क क्या है?
उत्तर m § 2 के रूप में दें।
[152] उस अवसर पर भावना क्या है?
वह मानसिक स्थिति जो न तो सुखद है और न ही अप्रिय, जो उस अवसर पर प्रतिनिधिक बौद्धिकता के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होती है; विचार के संपर्क से उत्पन्न होने वाली संवेदना जो न तो सुखदायक है और न ही कष्टदायक; विचार के संपर्क से उत्पन्न होने वाली अनुभूति जो न तो सुखदायक है और न ही कष्टदायक — यही वह अनुभूति है जो उस समय मौजूद होती है।
[धारा 4-8 के अनुसार जारी रखें।]
[153] उस अवसर पर निस्वार्थता क्या है?[95]
पिछले उत्तर के समान ही उत्तर दें, जिसमें "प्रतिनिधि बौद्धिकता के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न" वाक्यांश को हटा दें।
[धारा 11-17 के अनुसार जारी रखें।]
[154] उस अवसर पर निःसंकोचता की क्षमता क्या है?
पिछले उत्तर के अनुसार उत्तर दें। धारा 19-57 के अनुसार आगे बढ़ें।
[सारांश।]
[154क] अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं,
क्षेत्र दो हैं,
तत्व दो हैं,
पोषक तत्व तीन हैं,
क्षमताएँ आठ हैं,
ध्यान चार गुना है[96],
पथ पंच गुना है,
शक्तियाँ सात हैं,
कारण तीन हैं,
संपर्क,
आदि, आदि। [cf. § 58]
मानसिक अवस्थाओं का क्षेत्र एक ही कारक है,
मानसिक अवस्थाओं का तत्व एक ही कारक है। ये, या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ—ये सभी अवस्थाएँ अच्छी हैं।

[धारा 59-61 के अनुसार जारी रखें।]
[155] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
धारा 62 के अनुसार उत्तर दें, "आनंद" को छोड़कर।[97]
[प्रथम प्रकार के विचार के सारांश और "शून्यता" अनुभाग के अनुसार जारी रखें।]
[यहाँ पाँचवें प्रकार का विचार समाप्त होता है।]

प्रकार VI.
[156] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब इंद्रिय-संबंधी जगत के विषय में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है, जो निस्वार्थ भाव से युक्त हो, ज्ञान से जुड़ा हो, सचेतन प्रेरणा से प्रेरित हो, और जिसका विषय कोई दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, मानसिक अवस्था आदि हो, तब संपर्क आदि होता है।

[पांचवें प्रकार के विचार के अनुसार जारी रखें।]
यहां छठे प्रकार का विचार समाप्त होता है।

प्रकार VII.
[157] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब इंद्रियों से संबंधित इस जगत के बारे में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है, जो निस्वार्थ भाव से, ज्ञान से विरक्त होकर, और जिसका विषय कोई दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, मानसिक अवस्था आदि हो, तब संपर्क आदि होता है।
[तीसरे प्रकार के विचार के अनुसार जारी रखें, "आनंद" और "सुविधा" के स्थान पर "निराकारता" और "खुशी" के स्थान पर "निराकारता की क्षमता" तथा "पंचगुणी ध्यान" के स्थान पर "चतुर्गुणी" का प्रयोग करें।] [98]
[सारांश।]
[157a] अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं,
इत्यादि।
[तीसरे प्रकार के चिंतन के अनुसार जारी रखें, "पंचगुणा ध्यान" के स्थान पर "चतुर्गुणा" शब्द का प्रयोग करें।]

[158] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
इस स्कंध की विषयवस्तु तीसरे प्रकार के विचार (देखें § 148) के समान है, जिसमें "आनंद" को हटा दिया गया है।
[पहले प्रकार के विचार के अनुसार जारी रखें।]
यहां सातवें प्रकार का विचार समाप्त होता है।

प्रकार VIII.
[159] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब इंद्रिय-संबंधी जगत के विषय में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है, जो निस्वार्थ भाव से, ज्ञान से विरक्त होकर, सचेतन प्रेरणा से प्रेरित होकर, और जिसका विषय कोई दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, मानसिक अवस्था आदि हो, तब संपर्क आदि होता है।
[सातवें प्रकार के विचार के अनुसार जारी रखें।]

[यहाँ समाप्त होता है] विचार का आठवाँ प्रकार।
[संवेदी जगत के संबंध में विचार के आठ मुख्य प्रकारों पर अध्याय I का अंत।]
(यहाँ पाठ का दूसरा भाग समाप्त होता है।)

- फुटनोट:

1. इस शीर्षक और अन्य सभी शीर्षकों को कोष्ठक में रखकर यह दर्शाया गया है कि इन्हें पाठ में उनके वर्तमान स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है। पाठ में प्रत्येक शीर्षक अपने अनुभाग के अंत में है।

2. प्रस्तावना देखें।

3. वही।

4. नाना-संपयुत्तनी। साईं के अनुसार, एक अच्छे विचार को तीन आधारों पर इस प्रकार विभेदित किया जाना चाहिए:
इससे उत्पन्न होने वाले कर्मों से,
इसमें शामिल क्षमताओं की परिपक्वता से,
और मानसिक और नैतिक दुर्बलता की दूरी से जो यह निहित है (असल. 76)।
सम्पायुत्तम् — शाब्दिक अर्थ, आमंत्रित — का वर्णन कथावत्थु में, जिसका उल्लेख साई. (पृष्ठ 42) ने किया है, निम्नलिखित संबंधों (एक अवस्था और दूसरी अवस्था के बीच) को समाहित करने के रूप में किया गया है: सहवर्ती (सहगत),
जन्मजात (सहजता),
निकटवर्ती (सर्नसत्थ),
एक सामान्य उत्पत्ति (एकुप्पदा),
एक सामान्य समाप्ति (एकनिरोध),
एक सामान्य आधार या स्वरूप (एकवत्थुक),
ध्यान का एक सामान्य विषय (एकराममन)। इस कृति में, इस शब्द का अनुवाद आगे "जुड़ा हुआ" के रूप में किया गया है, उदाहरण के लिए, अनुच्छेद 1007 आदि में। पूर्ववर्ती विशेषण वाक्यांश, सोमनस्स-सहगतम्, जिसका मैंने अनुवाद "सुख से युक्त" किया है, को साई. ने वस्तुतः यहाँ सोमनस्स-संपायुत्तम् के समतुल्य घोषित किया है, क्योंकि इसकी व्याख्या इसके पूर्ण अर्थ में की जानी है।
इसके पाँच भेदक अर्थों में से, यहाँ "जुड़ा हुआ" (समसत्तम) अर्थ चुना गया है। और "जुड़ा हुआ" के चार भेदक भावार्थों में से, यहाँ "संबंधी" अर्थ चुना गया है। अतः "साथ में" का अर्थ यहाँ "संबंधी" है।
और इसके अलावा, चूंकि सहवर्तीता दो भौतिक घटनाओं के बीच या एक भौतिक और एक अभौतिक घटना के बीच नहीं है, इसलिए यह उस निरंतर और व्यापक प्रकार की है - जो सामान्य उत्पत्ति से परे बनी रहती है - जिसे "सहयोगी" शब्द के अंतर्गत वर्णित किया गया है।
अब तक तो मैंने जटिल बुद्धघोष ग्रंथ का अध्ययन किया है। लेकिन मुझे अभी तक मानसिक अवस्थाओं के बीच संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाले नियमों का विश्लेषण करने का कोई प्रयास नहीं मिला है, जैसा कि हमें सबसे पहले अरस्तू के ग्रंथों में देखने को मिलता है।
"खुशी" के बारे में, धारा 10, 18 देखें।

5. रूपराममनम, सद्दराममनम, आदि, अर्थात्, वर्तमान अनुभूति के रूप में या अतीत या भविष्य से संबंधित प्रतिनिधि छवि के रूप में; ह्यूम की भाषा में, एक छाप या एक विचार के रूप में; अधिक व्यापक जर्मन शब्द में, वोर्स्टेलुंग (असल. 71)। प्रस्तावना देखें।

6. शाब्दिक रूप से, एक ऐसी वस्तु जो मूर्त हो - पाली भाषा का मानक शब्द।

7. धम्मरम्मनम् - प्रतिनिधित्वात्मक कल्पना या विचार का "विषय" (म नो, चित्तम्, अस्ल., 71), ठीक वैसे ही जैसे देखी गई वस्तु दृष्टि का विषय होती है। बुद्धघोष इस मत को खारिज करते हैं कि धम्मरम्मनम् इंद्रियों की सीमा से बाहर है, और मि. i. 295 का हवाला देते हैं, जहाँ सारिपुत्त कहते हैं कि जहाँ प्रत्येक इंद्रिय का अपना विशिष्ट क्षेत्र होता है, वहीं मनो का दायरा इन सभी पाँच क्षेत्रों के अंतर्गत आता है।

जिस क्षण कोई वस्तु "आँख के द्वार" या अन्य इंद्रिय के द्वार में प्रवेश करती है, उसी क्षण वह विचार-मंथन करने वाली शक्ति के द्वार में भी प्रवेश करती है, जिससे चेतना या व्यक्ति का अस्तित्व कंपन करने लगता है (भवंगचलनस्स पच्चयो होति), ठीक उसी प्रकार जैसे उतरता हुआ पक्षी उसी क्षण शाखा से टकराता है और छाया बनाता है {वही, 72)। — जैसा कि हम कह सकते हैं, प्रस्तुतात्मक संज्ञान हमेशा प्रतिनिधि संज्ञान के साथ होता है।

फिर, इंद्रिय-प्रभाव के कारण उत्पन्न होने वाली इस गड़बड़ी से उत्पन्न मानसिक उतार-चढ़ाव के दौरान, महाचित्तनी नामक आठ मनोविकारों में से एक उभर सकता है। "लेकिन शुद्ध प्रतिनिधिक अनुभूति (शुद्ध-मनोद्वरे) में, इंद्रिय उत्तेजना की कोई प्रक्रिया नहीं होती", जैसा कि हम अतीत के इंद्रिय-अनुभवों को याद करते समय करते हैं।

प्रतिनिधित्व की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया है, और यह प्राचीन मनोविज्ञान पर एक रोचक निबंध को पूरा करता है। देखने, सुनने और सूंघने के मामले में, अतीत की सुखद संवेदनाओं को विश्राम की बाद की अवस्था में पुन: जीवंत होने के रूप में वर्णित किया गया है। स्वाद और स्पर्श के मामले में, वर्तमान अप्रिय संवेदनाएं अतीत के किसी विपरीत अनुभव का संकेत देती हैं। लेकिन टिप्पणीकार यहां "विपरीतता द्वारा जुड़ाव" में रुचि नहीं रखता है।

8. शाब्दिक रूप से, "या जो भी [विचार का विषय] है"। कुछ हद तक अस्पष्ट टिप्पणी का सार यह है कि, जबकि वर्तमान या अतीत की संवेदनाओं के अलावा वस्तुओं का कोई नया वर्ग नहीं समझा जाना है, कोई क्रमवाचक या संख्यात्मक क्रम नहीं है जिसमें ये "विचार के लिए सामग्री बन जाते हैं।

9. बुद्धघोष के अनुसार, क्रमांकित 34-6 अवस्थाओं को क्रमशः क्रमांकित 31-3 अवस्थाओं के समतुल्य माना जाता है, परन्तु एक अन्य परिप्रेक्ष्य में। पूर्व क्रम में 'सद्गुण के त्रिगुणी मूल' का वर्णन है; बाद वाले में 'कर्म के मार्ग' का संदर्भ समझा जाता है (असल. 129)।

10. शास्त्र के अनुसार, इस मनोविकृति में नौ अन्य अवस्थाओं का भी उल्लेख किया गया है, जैसे कि इच्छा (या संकल्प, या इच्छाशक्ति, चंदो),
संकल्प (अधिमोक्खो),
ध्यान (मानसिकरो),
समभाव (तत्रमज झटता),
करुणा (करुणा),
सहानुभूति (मुदिता),
कर्म, वाणी और आजीविका में बुरे आचरण से परहेज
। पाठ में इस और इसी प्रकार के पूरक खंडों के आरंभिक शब्दों को एक तकनीकी शब्द - ये-वापनक, "जो भी" [अवस्थाएँ] - में ढाला गया है, जो ऐसे समूहों को दर्शाता है।

इसके बाद, धर्मग्रंथ नौ तत्वों को परिभाषित करता है: इच्छा, जिसे नैतिक रूप से अवांछनीय इच्छा (धारा 1097 आदि) से अलग करने के लिए रूढ़िवादी इच्छा (धम्मचंदो) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, कार्य करने की इच्छा है, विचार में वस्तु को पकड़ने के लिए मन का हाथ बढ़ाना है। संकल्प दृढ़ता, दृढ़ निश्चय, स्तंभ के समान अविचलित रहना है।

ध्यान मन की गति, दिशा और वस्तु के प्रति समर्पण है। समभाव—शाब्दिक अर्थ, मध्य अवस्था—वह अवस्था है जिसमें मन बिना किसी दोष या अधिकता के, बिना किसी पक्षपात के, समान रूप से प्रवाहित होता है। दया और सहानुभूति का वर्णन अनुच्छेद 258 और उसके बाद के अनुच्छेदों में किया गया है। अंतिम तीन अनुच्छेद अष्टांगिक मार्ग के उन तीन कारकों को दर्शाते हैं जिनका वर्णन विचार के विश्लेषण में नहीं मिलता (असल. 132, 133)।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि इस पूरक श्रेणी में सभी विशुद्ध मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ पूरी तरह से, या कम से कम मुख्य रूप से, स्वैच्छिक या भावनात्मक होती हैं।

11. स्पर्श या संपर्क को बहुत व्यापक अर्थ में समझना चाहिए, जो तीन स्थितियों का परिणाम है: एक स्पर्श करने वाला संवेदी अंग, संवेदी अंग से बाह्य रूप से परिकल्पित एक स्पर्श करने वाली शक्ति, और प्रभाव या टक्कर। मिल. 60 में मेढ़ों और झांझों की उपमाएँ

साइ में उद्धृत हैं। आँख और उसका विषय सामान्य उदाहरण हैं, लेकिन प्रतिनिधि कल्पना (मनो या चित्तम) और उसका विषय संपर्क के माध्यम से आगे बढ़ने वाले के रूप में शामिल हैं, केवल बिना प्रभाव (संगठनम) के।
हर मामले में वास्तविक कारण संबंध - जैसा कि मैं समझता हूँ, मेरे लिए अस्पष्ट रूप से व्यक्त की गई टिप्पणी (असल. 109) - मानसिक है, भले ही हम एक बाहरी एजेंसी की बात करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे जब लाख गर्मी से पिघलता है तो हम गर्म कोयले को कारण बताते हैं, हालांकि गर्मी लाख के अपने ऊतक में होती है।
"संपर्क" को प्राथमिकता दी जाती है, क्योंकि यह विचार की शुरुआत का प्रतीक है, और सभी संबद्ध अवस्थाओं का अनिवार्य तत्व है, जो उन्हें उसी प्रकार प्रभावित करता है जैसे एक बहुमंजिला घर की छत अन्य सभी सामग्रियों के संयोजन को सहारा देती है (iUd, 107)।

12. वेदना एक बहुत व्यापक अर्थ वाला शब्द है, जिसका अर्थ है संपर्क या प्रभाव के कारण शारीरिक या मानसिक संवेदनशीलता या प्रतिक्रिया। संवेदना शब्द इसका उतना सटीक अनुवाद नहीं है जितना कि भावना, क्योंकि यद्यपि वेदना को अक्सर इंद्रिय-क्रिया में "संपर्क से उत्पन्न" के रूप में वर्णित किया जाता है, इसे सामान्यतः तीन प्रकारों से मिलकर बना माना जाता है।
आनंद (खुशी),
दर्द (बीमारी),
और तटस्थ भावना
— एक सुखवादी पहलू जिसके लिए 'भावना' शब्द ही पर्याप्त है। इसके अलावा, यह प्रतिनिधि भावना को भी समाहित करता है।
वेदना का यह सामान्य मानसिक पहलू, जो शरीर में होने वाली संवेदनाओं (जैसे दांत दर्द) से भिन्न है, संभवतः उत्तर में प्रयुक्त शब्द "मानसिक" (चेतसिकम्) द्वारा बल दिया गया है। साई. बताते हैं कि इस अभिव्यक्ति (= चित्तनिस्सितत्तम्) से "शारीरिक सुख समाप्त हो जाता है" (असल. 139)।
यह उदाहरण वेदना के व्यापक दायरे को एक रसोइए के उपमा से भी स्पष्ट करता है, जो अपने स्वामी के लिए अनेक व्यंजन तैयार करने के बाद प्रत्येक व्यंजन का बारीकी से स्वाद लेकर परखता है, और स्वामी अपनी पसंद का व्यंजन ग्रहण करता है। रसोइया विचार-प्रणाली में निहित सभी संबंधित अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट तरीके से कार्य करती है। वेदना, जो स्वामी है, समग्र रूप से वस्तु के सार (स्वाद) का आनंद लेती है।

13.तज्ज-मनोविफिनाधातु। तज्ज ए को अनुच्चविक्फ़ी, सरूपा द्वारा व्याख्यायित किया गया है। सी एफ ए. मैं. 207; एस. iv. 215; एम. मैं. 190, 191 ; मिल. 53. मिश्रित पद के शेष भाग पर, § 6 देखें। और उत्तर में सुखवादी अभिव्यक्तियों पर, § 10 देखें।

14. चेतो-सम्फसजम . . . वेदयितम। बाद वाला शब्द (अनुभव) अधिक शाब्दिक रूप से वह है जिसे महसूस किया जाता है, दास एम्फुंडने। इन शब्दों के लिए चेतो और चित्तम का प्रयोग चक्र में एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है (देखें § 6)। "संपर्क" विचार या वस्तु और विचार, या विचार उत्पन्न करने वाली शक्ति के बीच का संपर्क है, जिसे इंद्रिय-अंग और इंद्रिय-वस्तु के बीच के प्रभाव के समान माना जाता है। इस संपर्क या प्रस्तुति के परिणामस्वरूप, चेतना में भावनात्मक अभिलाषा उत्पन्न होती है।

15. पिटकों में सन्ना शब्द के अर्थ में जिस तरह से अनियमितता दिखाई देती है, उससे इसका कोई एक उपयुक्त अंग्रेज़ी अनुवाद देना कठिन हो जाता है। महावेदल्ल सूत्र (एम. i. 293) और अन्यत्र (सी/. मिल. 61) में इसे बौद्धिक या संज्ञानात्मक प्रक्रिया के अपेक्षाकृत सरल रूप में समझाया गया है, जिसमें संवेदनाओं का बोध, पहचान और आत्मसात करना शामिल है—उदाहरण के लिए, रंगों का, जैसे "नीला", आदि—इस प्रक्रिया को आधुनिक अंग्रेज़ी मनोविज्ञान में इंद्रिय-बोध कहा जाता है, सिवाय इसके कि यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं है कि बौद्ध मनोविज्ञान में, अंग्रेज़ी मनोविज्ञान की तरह, बोध केवल इंद्रिय उत्तेजना के अवसर पर ही होता है।
दरअसल, हमारे अनुच्छेद 4 में उत्तर केवल प्रतिनिधि गतिविधि की ओर ही संकेत करता है। हालाँकि, महापरिनिब्बान सूत्र (देखें ए. श्लोक 105) में सन्ना, अनित्यता, सारहीनता आदि जैसी कई अत्यंत जटिल अवधारणाओं की बौद्धिक अनुभूति को दर्शाता है। पोत्थपाद सूत्र (डी. आई. 180-187) में, जिस सन्ना की चर्चा की गई है, वह स्पष्ट रूप से चेतना है, चाहे वह समाधि की अचेतना के विपरीत हो, या ननम की कच्ची सामग्री के रूप में हो, या आत्मा या अहंकार से अलग मानी जाए। अंत में, अधिक प्रचलित अर्थ में इस शब्द का प्रयोग (विशेष रूप से जातक कथाओं और टीकाकारों की उपमाओं में) चिह्न, चिन्ह या प्रतीक के लिए किया जाता है।

यहां, यदि हम साइ. (असल. 110) का अनुसरण करें, तो sail ii a का अर्थ केवल वह इंद्रिय-बोध है जो इंद्रिय-अनुभूतियों को पहचानता है, उनका भेद करता है और उन्हें श्रेणी-संदर्भ देता है (उपस्थित-विषय)। इसकी प्रक्रिया की तुलना बढ़ई द्वारा प्रत्येक लकड़ी पर बनाए गए चिह्न से उसकी पहचान करने, कोषाध्यक्ष द्वारा प्रत्येक आभूषण पर लगे टिकट से उसकी पहचान करने और जंगली जानवर द्वारा बिजूका में मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तु को पहचानने से की जा सकती है।

साईना का सार चिह्न के माध्यम से पहचान करना बताया गया है। चिह्न और अंकन की इस धारणा में विचार की वह निरंतरता निहित है जो इस शब्द के विभिन्न उपयोगों के लिए सिद्ध की जा सकती है। चेतना का मूल अर्थ है भेद करने की क्षमता—अर्थात चिह्न लगाना। चिह्न लगाना ही बोध करना है। और "अनित्यता", "अशुद्धता" आदि के विचार या अवधारणाएँ, अत्यंत "प्रतिनिधित्वात्मक" प्रकृति के होते हुए भी, अंकन के अनेक कार्य थे। सन्ना, चित्तम (प्रस्तावना देखें) और "विचार" दोनों का प्रतिनिधित्व करता है, और उस क्षमता के किसी भी कार्य या उत्पाद का भी। और यह किसी भी ऐसे कार्य के परिणाम को भी दर्शाने के लिए वस्तुनिष्ठ हो जाता है—अर्थात चिह्न या संकेत के अर्थ में।

मेरा मानना है कि जब इसे स्कंध या क्षमता के अधिक विशिष्ट अर्थ में व्यक्त किया जाता है, तो इसे सुरक्षित रूप से "बोध" या "चिह्नित करना" के रूप में अनुवादित किया जा सकता है, और इसका अर्थ इंद्रिय विषयों से संबंधित संज्ञान की अपेक्षाकृत "सतही", "क्षणिक" (असल. 110, 111) प्रक्रिया हो सकता है। विशुद्धि मार्ग के अध्याय 14 में - एक अंश जिसे स्वर्गीय हेनरी सी. वॉरेन ने मेरे लिए प्रतिलिपि करने की कृपा की - सन्ना को इसी प्रकार, और केवल इसी प्रकार, वीण-नाम और पन्ना से अलग किया गया है। बाद वाले शब्द (जैसा कि हम कह सकते हैं) अपेक्षाकृत उच्चतर और उससे भी उच्चतर शक्ति पर संज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि वे जिन अवधारणाओं के बारे में प्रयोग किए जाते हैं उनकी गहराई और जटिलता अधिक होती है (देखें §§6, 16)।

16. धम्म संगानी की व्याख्या में इससे अधिक कठिन समस्या कोई नहीं है कि इसके संकलकों और बाद में इसके टीकाकार ने किस आधार पर चेतना और चित्तम जैसे व्युत्पत्तिगत रूप से समान शब्दों के परस्पर स्वतंत्र विवरण प्रस्तुत करना उचित समझा। मेरे विचार में एकमात्र समानता ब्रिटिश दर्शन में लंबे समय तक चले आ रहे "तर्क" और "कारण" के बीच के भेद में निहित है—अर्थात निगमनात्मक अनुमान और बुद्धि, या बौद्धिक क्रिया के बीच का भेद।

ये दोनों शब्द प्रचलित रूप में प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए, निदान-कथा (जाति. i. 74) में बुद्ध का मारा को उत्तर देखें: 'यहाँ मेरा कोई चेतन (या बुद्धिमान) साक्षी नहीं है... इस पृथ्वी को, चाहे वह अचेतन ही क्यों न हो, साक्षी होने दो... सचेतानो कोचि सक्खी, इत्यादि... अयम अचेतनपि... पथावि सक्खलति।' फिर, अध्या. i., पृष्ठ 224 में, इसका अर्थ सरल और तकनीकी रूप से काफी सरल प्रतीत होता है: "उनके विचार (चेतना) और आशाएँ (शाब्दिक रूप से, सोचना और आशा करना) निम्नतर चीजों पर टिकी हैं।" इसलिए मैंने प्रचलित शब्दों का ही प्रयोग किया है। यह 'सोच' और 'विचार' जैसे इतने अविभेदित शब्दों के प्रयोग को उचित नहीं ठहराता; फिर भी, आधा दर्जन विकल्पों को आजमाने के बाद, विभिन्न कारणों से मैं इन पर लौट आया हूँ। ये शब्द बौद्ध धर्म के इन दो शब्दों के बीच घनिष्ठ संबंध को अस्पष्ट करने के बजाय उसे दर्शाते हैं; ये रूप और विस्तार दोनों में समान रूप से लोकप्रिय और अस्पष्ट हैं; 'चेतना' का अर्थ चिंतन के मनोवैज्ञानिक विवरण से बहुत मिलता-जुलता है; 'चित्तम' के साथ 'विचार' शब्द से कम अनुपयुक्त कोई शब्द नहीं है, सिवाय 'हृदय' के, जिसके बारे में प्रस्तावना में चर्चा की गई है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि बुद्धघोष इन दोनों का तुलनात्मक विश्लेषण नहीं करते, जैसा कि वे वितक्क-विचार और पीति-सुखम के मामले में करते हैं। चेतना के अंतर्गत वे सशक्त उपमाओं का प्रयोग करते हुए इसे सक्रियता और परिश्रम की प्रक्रिया तथा समन्वयकारी एवं व्यवस्थात्मक कार्य के रूप में वर्णित करते हैं। वे इसकी तुलना एक ऊर्जावान किसान से करते हैं, जो अपने पचपन मजदूरों (विचार-समूह के पचपन सह-घटकों) को फसल काटने के लिए इधर-उधर दौड़ाता है; एक बढ़ई के वरिष्ठ प्रशिक्षु से, जो स्वयं काम करता है और दूसरों के कार्यों की देखरेख करता है; एक योद्धा दल के नेता से, जो लड़ता और उकसाता है। नागसेना (मिल. 61) की परिभाषा इन धारणाओं में केवल तैयारी (अभिसंखरणम्) शब्द जोड़ती है, दूसरा विशेषण मात्र एक संज्ञात्मक रूप है (जैसे कि हम कहें "विचार करना")।

इस प्रकार, जहाँ तक "चिंतन" का तात्पर्य प्रतिनिधिक, समन्वयकारी बौद्धिक चिंतन से है, यह चेतना के साथ मेल खाता है। सामान्य धारणाओं के माध्यम से बौद्धिक चिंतन के अपने संकीर्ण, तकनीकी अर्थ में, यह मेल नहीं खाता (प्रस्तावना देखें)। किसी भी तरह, इसे चिंतन कहना पर्याप्त रूप से अनिश्चित है, और यह इसे अन्यत्र "चिंतन", "मनन", "विचार" आदि शब्दों द्वारा व्यक्त करने से नहीं रोकता है। लेकिन यह समस्या अभी भी अनसुलझी है कि यह सारिन, चिट तर्न और विन्नानम जैसे शब्दों से कैसे संबंधित है। स्कंध के संबंध में, इसे चित्त के साथ नहीं, बल्कि संखार-स्कंध के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, धारा 62।

मेरे परिचय में चित्तम और उसके वर्णन के संदर्भों पर चर्चा की गई है।

17. विताको और विकारो ऐसे दो शब्द हैं जिन्हें अंग्रेजी के किसी एक शब्द से जोड़ना कठिन है। संभव है कि अकादमिक शिक्षा में इन्हें आम बोलचाल और विशुद्ध नैतिक उपयोग की तुलना में अधिक गहन और विशिष्ट अर्थ दिया गया हो। देखें, एम. आई., सुत्त 19 और 20, जहाँ विताको को विचारों, धारणाओं या सोच से उचित रूप से व्यक्त किया जा सकता है। दूसरी ओर, अस्लि. 114, 115 में (देखें मिल. 62, 63), चित्त और एक दूसरे से इन दोनों के संबंध को बहुत सारे रूपकों के साथ समझाया गया है, हालाँकि मनोवैज्ञानिक समझ का अभाव है। विताको एक विचार श्रृंखला की शुरुआत में होने वाली विशिष्ट मानसिक प्रक्रिया है, स्वैच्छिक ध्यान की जानबूझकर की गई गति। जैसे एक राजा अपने महल में अपने प्रिय या रिश्तेदार का सहारा लेकर चढ़ता है, वैसे ही विचार अपनी अवधारणात्मक क्रिया (विताको; अस्लि. 114) पर निर्भर करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँचता है।
अन्य लाक्षणिक गुण हैं किसी वस्तु पर प्रभाव डालना, उसे चारों ओर से घेरना (पर्याहनम्), और फिर उसे निकट लाना। अतः, वितको का अनुवाद अक्सर "तर्क" के रूप में किया जाता है, और इस प्रकार मैंने "अवधारणा" शब्द का चयन किया है। इसके द्वारा मैं मन की इस ग्रहणशील, रचनात्मक और विस्तारशील क्रिया, कल्पना की इस प्रारंभिक पहुँच को उजागर करना चाहता था, जिसका बौद्ध विद्वतापूर्ण विश्लेषण में विस्तार से वर्णन किया गया है; परन्तु मैं पूर्वी परंपरा में सामान्य धारणाओं के माध्यम से अवधारणा को बौद्धिक क्रिया के रूप में अपने तार्किक या मनोवैज्ञानिक अर्थ से जोड़ना नहीं चाहता था। फिर भी, जिस प्रकार अवधारणा का प्रयोग "तर्क" या "तर्क-वितर्क" को समाहित करने के लिए किया जा सकता है, उसी प्रकार उत्तर में वितको को तक्को द्वारा वर्णित किया गया है, जो तर्कसंगत प्रक्रिया, तर्क या बुद्धि के लिए प्रयुक्त शब्द है (देखें डी. आई. 12, 21)। साई. पूछता है, "कोई किस बारे में तर्क करता है (तककेसी)? किसी बर्तन के बारे में, किसी गाड़ी के बारे में, किसी भी चीज़ की दूरी के बारे में?" खैर, विटाको का तर्क अधिक सशक्त है।'

18. "प्रवृत्ति", "सही इरादे" पर, धारा 21 देखें।

19. अप्पना व्यप्पना, बाद वाला पूर्व का गहन रूप है (असल. 142, 143)। "योगवचार की नियमावली" (पृष्ठ 11 और आगे) में अप्पना नियमित ध्यान के अभ्यास के दौरान वांछित अवधारणा के उदय को दर्शाता है। बुद्धघोष इसे इस प्रकार परिभाषित करते हैं: — एकग्गम चित्तम अरम्मने अप्पेन्ति।

20.सीतासो अभिनिरोपन = अरम्मने चित्तम्। . . पतितथापेटी (उक्त)

21. विकारो, विटाको की तुलना में, स्वैच्छिक विचार-निरंतरता की गति और निरंतरता को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता था, जो चिंतन के विषय से जूझने की पहल से भिन्न है। टिप्पणीकारों द्वारा इसमें संपूर्ण को समझने की तुलना में विस्तृत रूप से जांच करने का अर्थ भी देखा जाता है (असल. 114)। यह एक तरह से कूटना (अनुमज्जनम) है, साथ ही एक जुड़ाव भी है। विटाको से इसके संबंध को दर्शाने के लिए रूपकों की संख्या बढ़ाई गई है।
यह उसी प्रकार है जैसे ढोल या घंटी की गूंज; जैसे पक्षी के पंखों का प्रारंभिक उड़ान के बाद समतल होना; जैसे कमल पर बैठने के बाद मधुमक्खी की भिनभिनाहट; जैसे गंदे कटोरे को पकड़ने पर उसकी सफाई; जैसे कुम्हार का हाथ, जिसमें मिट्टी को चाक पर पकड़ने वाले हाथ को विताको के रूप में दर्शाया गया है, इत्यादि। "जांच" निरंतर गतिविधि को अच्छी तरह से व्यक्त करता है; "विश्लेषण" विस्तार से चिंतन को; "विवेचनात्मक विचार" आधुनिक और पश्चिमी निहितार्थों को शामिल किए बिना दोनों के कुछ अर्थों को स्पष्ट करता है।

22. जैसे धनुष और बाण को समायोजित करना। "फोकस करना" अनुपेक्खमानो है।

23. सुखम से भिन्न पीति को स्पष्ट रूप से भावना के स्कंध से बाहर रखा गया है, इसे अपरिहार्य सुखवादी घटक माना जाता है और इसे संस्कार स्कंध के मिश्रित मनोविकारों के रूप में संदर्भित किया जाता है। यह केवल भावना से भिन्न, संवेग को दर्शाता है; अर्थात्, पीति एक जटिल मानसिक घटना है, जिसका अर्थ है "केंद्रीय मनो-शारीरिक उत्पत्ति" और व्यापक रूप से फैला हुआ "दैहिक प्रतिध्वनि" (सली, 'मानव मन', ii. 56)।

यह वर्तमान विचार से उत्पन्न होता है और संपूर्ण अस्तित्व में व्याप्त हो जाता है। बुद्धघोष के समय तक इसे पाँच प्रकारों में विभाजित किया गया था: आनंद का रोमांच, जिससे शरीर में सिहरन दौड़ जाती है; बिजली की तरह आनंद की चमक; समुद्र तट पर लहरों की तरह आनंद की बाढ़; परमानंद या उन्माद, जिसमें व्यक्ति हवा में तैर सकता है; और अत्यधिक व्याप्त आनंद (आस्ल. 115, 116)। चौथे प्रकार (उब्बेग-पिति) के उदाहरण दिए गए हैं, जिसका प्रेरक विचार 'बुद्धरम्मनम्' है (विशुद्धि मार्ग, अध्याय 4; "योगवचार की नियमावली", 7 भी देखें)। इसी शब्द (उब्बेगो) का प्रयोग अपराधबोध के कारण होने वाली पीड़ा या कंपकंपी का वर्णन करने के लिए किया जाता है। नीचे देखें, § 31 n.

24. विट्टी, जिसका शाब्दिक अर्थ, जैसा कि साइ. बताते हैं, समृद्धि, धन है, और यहाँ इसका प्रयोग आनंद के स्रोत से उत्पन्न अवस्था के रूप में किया गया है। 'आनंदित व्यक्ति को अपने आनंद से सुख प्राप्त होता है, जैसे धनी व्यक्ति को अपनी धन-संपत्ति से सुख प्राप्त होता है।' (असल. 143)

25. अत्तमनता चित्तस्स। बुद्धघोष, जो इस शब्द की सही व्युत्पत्ति से अनभिज्ञ थे, हमेशा की तरह अनुमान लगाने के लिए तैयार थे: अत्तनो मनता, यानी स्वयं की मानसिकता, न कि किसी दूसरे की, व्यक्तिपरक अनुभव। यदि मैं दुखी या प्रसन्न हूँ, तो यह विशेष रूप से मेरी भावना है (वही)। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह ध्यान देने योग्य है कि वे इस घनिष्ठ, व्यक्तिपरक संदर्भ को तीव्र भावना की अवस्था में खोजने के लिए तैयार हैं। "भावना एक उत्कृष्ट व्यक्तिपरक अनुभव है... हमारी भावनाएँ... पूरी तरह से हमारी अपनी हैं।" (सुली, 'मानव मन', ii. 2; जी.सी. रॉबर्टसन, 'मनोविज्ञान के तत्व', 185-188)।

26. पीति और सुखम के बीच अंतर बताने के लिए, बुद्धघोष एक यात्री का सुंदर चित्रण करते हैं, जो रेगिस्तान की यात्रा से थककर एक उपवन में स्थित तालाब के बारे में सुनकर प्रसन्न होता है और उसे देखकर आनंदित होता है। तालाब का पानी पीकर, स्नान करके और उसकी छाया में विश्राम करके वह शांति से भर जाता है। यह सत्य है कि सुखम केवल निष्क्रियता नहीं है; यह सकारात्मक, सुखद अनुभूति है और इसके साथ सक्रिय भावनाएँ भी जुड़ी हो सकती हैं; इसका सार विस्तार या वृद्धि (उपबृहन्नम) है।
लेकिन जिस प्रकार दुःखम का अर्थ पीड़ा से अधिक अस्वस्थता या कष्ट है, उसी प्रकार सुखम का अर्थ स्वस्थ और सुखी अवस्था है। और जिस प्रकार "आनंद" हमारी इच्छा की प्राप्ति (संभावित रूप से या वास्तव में) की संतुष्टि है, उसी प्रकार 'सुख' हमारी प्राप्ति के स्वाद (फ्रेंच, स्वाद) का आनंद है (असल. 117)। आगे अनुच्छेद 60 देखें। "मानसिक सुखम" (चेतसिकम सुखम) शायद अधिक सही रूप से सोमनस्सम है, जिसका अनुवाद (अनुच्छेद 1, आदि) 'खुशी' के रूप में किया गया है, सुखम को कभी-कभी केवल शारीरिक (कायिकम) के रूप में ही भेद किया जाता है। देखें शमूएल श्लोक 209।

27. "चित" एकग्गता, मन की एक शिखर वाली अवस्था, एकाग्रता (समाधि) का एक नाम है, ऐसा शास्त्र कहता है (पृष्ठ 118)। और तदनुसार, जबकि धारा 15 के अंतर्गत समाधि का कोई और वर्णन नहीं दिया गया है, यहाँ चित्त' एकग्गता पर समाधि को दर्शाने के लिए मिल. 38 में प्रयुक्त रूपकों को लागू किया गया है, अर्थात् तम्बू के आकार की झोपड़ी का मध्य भाग और अपनी सेना का नेतृत्व करने वाला सरदार।
आगे इसमें कहा गया है कि इस समाधि, जिसे आत्म-एकाग्रता कहा जाता है, की विशेषता भटकाव और ध्यान भटकने का अभाव है; इसका सार इसके साथ उत्पन्न होने वाली मन की अवस्थाओं का आपस में बंध जाना है, जैसे पानी साबुन के झाग को बांधता है; और इसके सहवर्ती गुण शांति या ज्ञान हैं—क्योंकि कहा गया है, "जो शांत है वह समझता है, वह चीजों को वैसे ही देखता है जैसे वे वास्तव में हैं"—और सहजता। विचार की स्थिरता की तुलना हवा रहित स्थान में जलती हुई दीपक की लौ की स्थिरता से की गई है।' 'योगावचार की नियमावली', पृष्ठ 26 देखें।

28.
ये तीनों समरूप शब्द चित्तस्स थिति संथिति अवत्थिति पाठ में हैं। साई. (पृष्ठ 143) के अनुसार, थिति द्वारा दर्शाई गई वस्तु में या उस पर अडिग खड़े रहने (अरम्मने) की स्थिति को सम उपसर्ग द्वारा संशोधित किया गया है, जिसका अर्थ है वस्तु में संबंधित अवस्थाओं को एक साथ गूंथना (संपिन्देत्व), और अवा उपसर्ग द्वारा वस्तु में लीन होना। बौद्ध धर्म में अंतिम रूपक को चार अच्छी और तीन बुरी अवस्थाओं

पर लागू माना जाता है - विश्वास, सजगता, एकाग्रता (= आत्म-संयम) और ज्ञान; लालसा, अटकलबाजी और अज्ञान, लेकिन सबसे अधिक आत्म-संयम पर।

29. अविसहरो, अविक्खेपो [v. § 57)। व्याकुलता और संतुलन की हानि 'उत्तेजना और उलझन' की उपस्थिति के कारण होती है (§§ 425, 429; असल. 144)।

30. समाथो। तीन प्रजातियों में विभेदित: मानसिक शांति (यहाँ प्रयुक्त); कानूनी शांति, या समझौता; सभी संस्कारों में शांति, जिससे, साइ. (144) के अनुसार, निर्वाण की शांति का तात्पर्य है।

31. "संकाय" के बारे में, प्रस्तावना देखें।
विश्वास को उन्हीं शब्दों और लगभग उन्हीं उपमाओं के माध्यम से परिभाषित और चित्रित किया गया है जिनका प्रयोग मिल., पृष्ठ 34-60 में किया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह मन की एक ऐसी अवस्था है जहाँ भ्रम का अभाव आकांक्षा और ऊर्जा को मुक्त करता है। इसे बुद्ध और उनकी पद्धति में विश्वास के रूप में वर्णित किया गया है। हालाँकि, यहाँ किसी अंतिम लक्ष्य पर विस्तार से चर्चा नहीं की गई है, जैसा कि सेंट पॉल ने "उच्च उद्देश्य की पहचान के लिए पुरस्कार" आदि के बारे में बात करते हुए किया था, जिसकी ओर उन्होंने प्रबल विश्वास के साथ अग्रसर किया था।
बल्कि, यहाँ उस आत्मविश्वास पर ज़ोर दिया गया है जो अपने तरीकों और प्रयासों की सार्थकता के प्रति दृढ़ विश्वास से उत्पन्न होता है, जो एक प्रकार से विश्वास का ही एक पहलू है। नदी की उपमा में, साइ. ट्रेंकनर के मिलिंडा संस्करण से इस हद तक भिन्न है कि लोग मगरमच्छों और अन्य राक्षसों के डर से नदी पार करने से डरते हैं, जब तक कि नायक अपनी तलवार लेकर नदी में कूद नहीं जाता। मिलिंडा के अनुवाद (1.56) में 'विश्वास' पर टिप्पणी देखें।

32.अर्थात, बुद्ध, सिद्धांत और संघ में। बुद्धघोष केवल व्युत्पत्ति को नैतिकता से जोड़ने में रुचि रखते हैं, और विश्वास की मनोवृत्ति में आत्मविश्वास (ओ-कप्पना) के "नीचे की ओर गिरने" की तुलना "सचेतनता" में "डूबने", "एकाग्रता" में "स्थिर स्थिति" और "ज्ञान" की "गहन" पैठ से करते हैं (असल. 144, 145)।

33. साइ. इस और इसके बाद के यौगिकों के वर्णन में यौगिक के प्रथम पद, अर्थात् "विश्वास" की पुनरावृत्ति की एक वैकल्पिक व्याख्या प्रस्तुत करता है। पूर्व के अनुसार, यह अभिदम्मा की विधि है कि यौगिक के विशेषण भाग को अलग से प्रस्तुत किया जाए जिस पर संज्ञा भाग निर्भर करता है: विश्वास-क्षमता = विश्वास (की क्षमता)।
बाद वाले मत के अनुसार, आस्था और आस्था-क्षमता, इन दो अमूर्त अवधारणाओं के बीच समानता को उजागर किया गया है। यह टिप्पणी करता है कि स्त्री और नारीत्व के गुण का मामला अलग है। (यह मूर्त और अमूर्त के बीच अंतर को खोजने का एक प्रयास हो सकता है।)

34. बुद्धघोष द्वारा विरियम को इससे जोड़ा गया है
(क) वीरा, गतिशील प्रभावशीलता जो "हीरो" (वीरो) प्रजाति का सार है,
(ख) इरिया, कंपनशील गति। वह इसे दो धारणाओं द्वारा परिभाषित करता है: "सहारा देना" और "पकड़ना", या "आगे की ओर खींचना" (पग्गाहो), और फिर "प्रयास करना" (उस्साहनम)। ओ. मिल. 36; सुम. विल. 63.
और वे मिलिंदा में मिलने वाली उपमाओं का ही प्रयोग करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक मनोवैज्ञानिकों की तरह वे भी सचेत प्रयास के दो रूपों - प्रतिरोध और मुक्त ऊर्जा - की व्याख्या करना चाहते थे। लेकिन वे इस तथ्य पर भी बल देते हैं कि यहाँ जिस ऊर्जा की बात हो रही है वह मानसिक है, शारीरिक नहीं (पृष्ठ 120 और आगे, 145)।

35. आरंभो (c/. अर अम मन अम), प्रत्यक्ष क्रिया, निष्क्रियता से भिन्न, अतः क्रिया की शुरुआत, को साइ. द्वारा छह अलग-अलग निहितार्थों के रूप में विभेदित किया गया है, इस आधार पर कि इसमें कर्म, किए गए दोष, वध या चोट, या क्रिया (किरिया), या ऊर्जा का संदर्भ है।

मैं यह दावा नहीं करता कि निम्नलिखित चार शब्द युग्म पाठ में दिए गए शब्दों से बिल्कुल मेल खाते हैं। ये मात्र अनुमानित हैं। 'प्रयास' शब्द 'वायमो' है, जो आर्य अष्टांगिक मार्ग में 'ऊर्जा' का प्रतीक है। 'अडिग' प्रयास (असिथिला-परक्कमाता) उस व्यक्ति का मनोभाव है जिसने बौद्ध धर्म की विशिष्ट प्रतिज्ञा ली है: चाहे मेरी त्वचा, नसें और हड्डियाँ सूखकर मुरझा जाएँ, या मैं अपनी ऊर्जा तब तक रोके रखूँ, जब तक मैं वह सब कुछ प्राप्त न कर लूँ जो मानवीय शक्ति, ऊर्जा और प्रयास से प्राप्त किया जा सकता है! (एम. आई. 480)। वह इच्छा जो बनी रहती है—शाब्दिक रूप से, जिसे दबाया नहीं जाता—वह है जो अच्छे कर्म करने के अवसर पर महसूस होती है।

36. बुद्धघोष की सती प्रथा पर टिप्पणी, जिसमें उन्होंने मिल. 37, 38 के विवरण का बारीकी से अनुसरण किया है और उसे विस्तृत किया है, यह दर्शाती है कि चेतना के उस पहलू की पारंपरिक अवधारणा में विवेक या नैतिक भावना के पश्चिमी आधुनिक सिद्धांत के साथ बहुत कुछ समानता थी। सती को एक आंतरिक मार्गदर्शक के रूप में दर्शाया गया है, जो अच्छे और बुरे में भेद करता है और चुनाव को प्रेरित करता है। हार्डी ने तो इसे "विवेक" के रूप में भी प्रस्तुत किया, लेकिन इससे पूर्वी और पश्चिमी चिंतन के बीच के रोचक अंतरों को नजरअंदाज कर दिया गया है।
पूर्वोक्त ग्रंथ सती के विषय पर काफी स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह प्रतिनिधि कार्यप्रणाली की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को (केवल स्मृति और निर्णय के बीच अंतर किए बिना) लेता है और उसे नैतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है। हिरी, §30 के अंतर्गत भी देखें; और "मिलिंदा के प्रश्न", 38, n. 2 में वर्णित धारणा को भी देखें।

37. उत्तर (सी/. § 12) में सती का तीन बार उल्लेख के. से सहमत है, लेकिन पुग्गला पनाटी (पृष्ठ 25) से नहीं। इस पर सी.वाई. द्वारा ध्यान नहीं दिया गया है।

38. अपिलापनाता। अत्थसालिनी इस शब्द से उत्पन्न समस्या का समाधान (मिलिंदा (एसबीई), खंड 1, पृष्ठ 58, नोट 2 देखें) इसे पिलावती, यानी तैरना, से व्युत्पन्न करके करती है और व्याख्या करती है: — "पानी पर कद्दू और बर्तनों की तरह सतह पर न तैरना", सती विचार के विषय में प्रवेश करना और उसमें गहराई तक उतरना। तुलना करें § 11, नोट 2; § 12, नोट 2, जिसमें इस शब्द का पुनः प्रयोग किया गया है। सकारात्मक रूप m/m, §1349 में मिलता है। PPhas(a)vilapanata (21,25)। (Asl. 147; तुलना करें 405।) यदि मैंने मूल के नकारात्मक रूप को सामने लाना पसंद न किया होता, तो मैं इस शब्द का अनुवाद "गहनता" के रूप में करता।

39. बुद्धघोष की व्युत्पत्ति - "अरम्माने चित्तम सम्मा अधियाति, थपेति ति" - निःसंदेह गलत है, सम-अ-धा अधिक सटीक विश्लेषण है; फिर भी, वह निरंतर मानसिक प्रयास के उद्देश्य से ध्यान के स्वैच्छिक और जानबूझकर समायोजन को सामने लाते हैं जो समाधि (असल. 122) द्वारा निहित है।

40. 'पा फिन अ' शब्द को उसके यूरोपीय समकक्ष से सटीक रूप से जोड़ना बौद्ध दर्शन की सबसे कठिन चुनौतियों में से एक है। मैंने इसके लिए तर्क, बुद्धि, अंतर्दृष्टि, विज्ञान, समझ और ज्ञान जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। दर्शन साहित्य में इन सभी का प्रयोग विभिन्न अर्थों में होता रहा है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्त किया जाने वाला भाव प्रचलित और अस्पष्ट है, मनोवैज्ञानिक और सटीक है, या पारलौकिक और - कृपया ध्यान दें - सटीक अस्पष्टता वाला है। और इनमें से प्रत्येक किसी न किसी रूप में 'पा फिन अ' का प्रतिनिधित्व कर सकता है।
चुनाव में मुख्य कठिनाई यह निर्धारित करने में थी कि बौद्धों के लिए पन्ना का अर्थ मानसिक क्रिया है, या किसी विशेष मानसिक क्रिया के समग्र परिणाम से, या दोनों से। जब सुत्त पिटक में पाणिया के सभी संदर्भों का संकलन हो जाएगा, तब अंतिम अनुवाद संभव हो सकेगा। यहां दो उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। मि.ई. 292 में, जिसे पा फिन (पाईनवा) प्राप्त होता है, उसे इसके फलस्वरूप पीड़ा या अस्वस्थता (चार आर्य सत्य) की प्रकृति को समझने (पाजनति) की क्षमता प्राप्त होती है। दी.ई. 124 में गौतम पूछते हैं: यह पन्ना क्या है? और स्वयं इसका सार कुछ बौद्धिक उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जैसे कि ध्यान, अनित्यता की प्रकृति की अंतर्दृष्टि, स्वयं की मानसिक छवि, इद्धि की शक्ति, दैवीय श्रवण शक्ति, अन्य मनों की अंतर्दृष्टि, अपने पूर्व जन्मों की अंतर्दृष्टि, दैवीय नेत्र और सभी दूषित प्रवृत्तियों का निवारण।
बुद्धघोष (विज़. एम., अध्याय 14) भी पन्ना को सन्ना और विन्नाना से अलग करते हैं। वे इसे न केवल इन इंद्रियों द्वारा बोधित की जा सकने वाली चीजों, अर्थात् इंद्रिय-विषयों और तीन लक्षणों (अनित्यता, पीड़ा और सारहीनता) को समझने के लिए पर्याप्त बताते हैं,

बल्कि पथ को भी समझने के लिए पर्याप्त मानते हैं। उनके अनुसार, इसे "उच्चतर स्तर की बुद्धि" कहा जा सकता है। और गौतम के उत्तर में, इन सभी उपलब्धियों का वर्णन बौद्धिक 'प्रक्रिया' के रूप में किया गया है।
फिर भी, यह स्पष्ट है कि यह शब्द किसी विशेष स्तर की जटिलता वाली मानसिक प्रक्रिया को नहीं दर्शाता था, बल्कि यह उन मानसिक प्रक्रियाओं को भी दर्शाता था जो सभी बौद्ध साधकों के लिए वस्तुनिष्ठ रूप से मान्य अवधारणाओं की एक निश्चित प्रणाली के अनुसार विकसित की जाती थीं। इसलिए, मेरा मानना है कि तर्क, बुद्धि और समझ जैसे शब्दों को अस्वीकार करना और ज्ञान, विज्ञान, विद्या या दर्शन जैसे शब्दों को चुनना बेहतर है। इन्हें केवल इसी संदर्भ में समझा जाना चाहिए कि ये किसी व्यक्ति की बुद्धि द्वारा आत्मसात और लागू किए गए ज्ञान के समूह को दर्शाते हैं। नान आम (परिचय) और विज्जा (धारा 1296) के अंतर्गत आगे देखें।

41.le, "चार सत्यों" के सिद्धांत (असली. 147)। तुलना करें मिल. 83.

42. पृथ्वी की चौड़ाई और विस्तार के समान बुद्धि (असली. 147, 148)।

43.मेधा. साइ. इस शब्द की विशिष्ट बुद्धिमत्ता को बुराई को "मारने" या फिर "समझने और सहन करने" में निहित बताते हैं (148)।

44.परिणयिका.

45. शाब्दिक अर्थ में, एक उकसाने वाला यंत्र।

46. "बुराइयों के वध के लिए" (असली. 148; तुलना करें जाट. iv. 174)।

47."किसी उदात्त चीज़ के अर्थ में" (वही; तुलना करें Dhp. v. 28 = Mil. 387).

48.एंग. ii. 139.

49.वही।

50.वही।

51. "उदासीनता" के विपरीत दोहराया गया (असल. 148)।

52. पाठ में, idam से पहले hoti का प्रयोग संभवतः एक त्रुटि है।

53. यह उत्तर वाक्य के प्रारंभ में तस्मीम समाये ('उस अवसर पर') के लोप के कारण अपवाद है। देखें §§ 82, 295, 441। इसके लोप का कारण संभवतः यह है कि जीवन की उपस्थिति में, जिसके द्वारा धर्मों का समूह जल द्वारा कमलों के समान, या अपनी माँ द्वारा शिशु के समान पोषित होता है (असली. 124), दिए गए समूह के नैतिक गुण (अच्छा, बुरा या अनिश्चित) पर कुछ भी निर्भर नहीं करता है।

54. दिठ्ठी शब्द की चर्चा के लिए, § 1003 देखें। पथ के इन पाँच कारकों पर प्रस्तावना देखें।

55.संकप्पोइस को विशेष रूप से चेतसो अभिनिरोपण अभिव्यक्ति से पहचाना जाता है, जिसका अर्थ है मन का अनुप्रयोग, ध्यान का स्वभाव या समायोजन, जिस पर हृदय लगा होता है, अतः आकांक्षा, इरादा, उद्देश्य, योजना।

56. बुद्धघोष द्वारा विश्लेषित हिरी और ओत्तप्पम नैतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु प्रस्तुत करते हैं। इन्हें एक साथ लेने पर हमें अंतरात्मा की आधुनिक अवधारणा का भावनात्मक और क्रियात्मक पहलू प्राप्त होता है, ठीक उसी प्रकार जैसे सती इसका बौद्धिक पहलू दर्शाती है। पहला शब्द "लज्जा" के समान है, जबकि दूसरा "दुराचार के कारण होने वाली पीड़ा" के समान है। हिरी का स्रोत भीतर है; ओत्तप्पम का उद्गम बाहर से होता है। हिरी स्वायत्त (अत्तधिपति) है; ओत्तप्पम परतंत्र है, जो समाज से प्रभावित (लोकधिपति) है।
पहला लज्जा पर आधारित है; दूसरा भय पर। पहले में निरंतरता होती है; दूसरे में त्रुटि के खतरे और भयावहता की समझ होती है। हिरी के चार व्यक्तिगत स्रोत हैं, अर्थात्, जन्म, आयु, योग्यता और शिक्षा के अनुसार जो उचित है, उसका विचार। इस प्रकार, हिरी से ग्रसित व्यक्ति सोचेगा, "केवल नीच लोग (मछुआरे आदि), बच्चे, गरीब, अंधे और अज्ञानी ही ऐसा काम करेंगे", और वह ऐसा करने से बचता है। ओत्तप्पम का बाह्य स्रोत यह विचार है कि "विश्वासी लोग तुम्हें दोषी ठहराएंगे", और इसलिए व्यक्ति ऐसा करने से बचता है। यदि किसी व्यक्ति में हिरी है, तो जैसा कि बुद्ध ने कहा है, वह स्वयं अपना सर्वश्रेष्ठ गुरु है। ओत्तप्पम के प्रति संवेदनशील व्यक्ति के लिए, धर्म के गुरु ही सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक होते हैं (असल. 126)।
एक पूरक अनुच्छेद (पृष्ठ 127) में "चिह्नों" (संगति आदि) की व्याख्या इस प्रकार की गई है: हिरी में व्यक्ति अपने जन्म, अपने शिक्षक, अपनी संपत्ति और अपने सहपाठियों के महत्व पर विचार करता है। ओट्टाप्पर्न में व्यक्ति आत्म-निंदा, दूसरों के दोषारोपण, दंड और परलोक में प्रतिशोध के भय से ग्रस्त होता है।

57.हिरियती, जिगुच्चति द्वारा व्याख्यायित (असल. 149; डी. आई. 174; एम. आई. 78)।

58.ओट्टापति, उबेगो द्वारा व्याख्या (असल. 124)।

59.अर्थात्, मूलभूत अवस्था, अच्छाई का कारण। "लोभ" और "मोह" के लिए, धारा 35, 1059 देखें। अलोभो और इसके दो सहसंबद्ध गुण, अच्छाई के त्रिगुणी "मूल", अंग्रेजी नकारात्मक शब्दों में अपनी सारी शक्ति खो देते हैं, लेकिन एक बौद्ध के लिए निस्संदेह उतना ही प्रभावशाली, उतना ही सकारात्मक महत्व रखते हैं जितना कि नकारात्मक 'अमरता' ईसाई के लिए रखती है। उदाहरण के लिए, अलोभो में सक्रिय परोपकारिता शामिल है; अदोसो में सक्रिय सहानुभूति; अमोहो में संस्कृतिपूर्ण जीवन (धारा 34, संज्ञा देखें)। मुझे इन्हें व्यक्त करने के लिए कोई उपयुक्त सकारात्मक शब्द नहीं पता।
प्रथम की "विशेषता" लोभ या आसक्ति का अभाव है, जैसे कमल के पत्ते से पानी की एक बूंद बह जाती है। इसका सार स्वतंत्रता है, जैसे मुक्त भिक्षु की स्वतंत्रता (असल. 127)।

60.के. में अदुसना, अदुसितत्तम् लिखा है। ऐसा करने का "लक्षण" अशिष्टता और क्रोध का अभाव बताया गया है (देखें § 1060); इसका सार झुंझलाहट और क्रोध का दमन है; इसका तात्कालिक परिणाम पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह सुंदरता है (असल. 127)।

61. "क्रोधित होने पर महसूस होने वाले दर्द का विपरीत" (असल. 150)।

62. बुद्धघोष बौद्ध धर्म के मूलभूत त्रिगुणों की श्रेष्ठताओं पर विस्तार से चर्चा करते हैं। उनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:
अलोभो (1) में स्वास्थ्य शामिल है,
अडोसो (2) युवावस्था (बुढ़ापे से नफरत जल्दी होती है),
अमोहो (3) लंबी उम्र (विवेक के माध्यम से)।
(1) उदारता के माध्यम से भौतिक भलाई की ओर प्रवृत्त होता है (तुलना करें "जो बहुतायत से बोता है", आदि);
(2) प्रेम द्वारा जीते और धारण किए गए मित्रों की प्राप्ति;
(3) आत्म-विकास।
(1) देवलोक में जीवन की ओर ले जाता है,
(2) ब्रह्मलोक में जीवन की ओर ले जाता है,
(3) अरहतत्व की ओर ले जाता है।
(1) अनित्यता में अंतर्दृष्टि देता है, और इसके विपरीत,

(2) और

(3) अन्य दो चिह्नों ("दर्द" और "गैर-सारता", क्रमशः) में अंतर्दृष्टि देता है।

63. अभिज्झा और लोभो पर्यायवाची हैं। धारा 1059 और 1136 देखें, जहाँ अभिज्झा लोभो के स्थान पर प्रयोग किया गया है।

64. (असली. 129) को दूसरों के शारीरिक या मानसिक कल्याण, इस या अन्य लोकों में उनके लाभों, या उनकी अच्छी प्रतिष्ठा को नष्ट करने की किसी भी इच्छा से रहित प्राणी के रूप में वर्णित किया गया है।

65.तुलना करें § 1 (xxxvi), फुटनोट।

66. कायो के अर्थ के बारे में जानने के लिए प्रस्तावना देखें।

67. पसद्धि को दर्द से मुक्त अवस्था के रूप में वर्णित किया गया है—जहाँ दर्द शांत और दबा हुआ होता है; जहाँ कंपन या बेचैनी की जगह शीतलता आ जाती है—जो कि क्लेशों, विशेषकर उत्तेजना (§ 1229) की अवस्थाओं के विपरीत है। तुलना करें डी. i. 73; एम. i. 37.

68. शाब्दिक रूप से, हल्कापन, जिसे भारीपन, सुस्ती और दृढ़ता तथा अचेतना के विपरीत वर्णित किया गया है (§ 1185)।

69."जल्दी बदलने की क्षमता" (असल. 150). तुलना करें चाइल्डर्स डिक्शनरी, एसवी परिवत्ती.

70.अदंधनाता पढ़ें। के. अदंधनाता पढ़ता है, लेकिन धारा 43 और धारा 639 में अदंधनाता है।

71. कठोरता और प्रतिरोध, या विरोध का दमन; राय और अहंकार के किलेसा से संबंधित रवैये के विपरीत रवैया।

72. कम्मन्नाता, शाब्दिक रूप से कार्ययोग्य, या सेवायोग्यता - अच्छे कार्य के लिए (असली. 151), जिसके द्वारा कोई "विचार की वस्तुओं का निर्माण करने में सफल होता है" (वही. 130)।

73. बीमारी और अविश्वास का विपरीत (वही, 131)।

74. कुटिलता, छल (शायद) और चालाकी (असल. 131) के विपरीत के रूप में परिभाषित किया गया है।

75. या बोध; किसी भी चीज़ को उसकी उपयोगिता, उसकी उपयुक्तता, उसके दायरे के अनुसार जानना और उसे स्पष्ट रूप से जानना। लगभग "बुद्धि" के समतुल्य नाम दिया गया, साइप्रस इसे सचेतनता की विशेषताओं को भी प्रदान करता है (वही), सती-संपजानो की बार-बार आने वाली दोहरी योग्यता देखें - जैसे, एम. आई. 274.

76. "उत्तेजना या घबराहट का विपरीत" (असल. वही)। शाब्दिक रूप से, "डगमगाहट का अभाव" (या झिझक या अस्थिरता)।

77. ऊपर देखें, पृष्ठ 5.

78. "अच्छे विचारों" (चित्तंगणी) की आठ योजनाओं में से पहली योजना के घटक धर्मों का अब वर्ग और संख्या के संदर्भ में पूर्वाभ्यास किया जाता है। इसका उद्देश्य संभवतः विद्यार्थी को संबंधित मनोविकृति का संक्षिप्त विवरण देना या स्मृति प्रदान करना था। इस प्रकार, यदि विचार के घटक कारकों को वर्गीकृत समूहों (रसत्थेन या खंडत्थेन) के रूप में देखा जाए, तो वे सभी चार शीर्षों के अंतर्गत आते हैं।

वे सभी जो भावना, बोध या बुद्धि के स्कंधों से संबंधित नहीं हैं, संस्कार-स्कंध के अंतर्गत आते हैं। संयोग या संयोजन (आयतनम्) के दृष्टिकोण से देखने पर, वे सभी दो शीर्षों के अंतर्गत आते हैं, जो क्रमशः चौथे, पहले, दूसरे और तीसरे स्कंधों के अनुरूप हैं। घटनाओं, गैर-संभाव्य (सभावत्तन्, सुइलियत्तन्, निसत्तत्तन्) के दृष्टिकोण से देखने पर, वे सभी दो शीर्षों के अंतर्गत आते हैं, जो पूर्ववर्ती दो शीर्षों के अनुरूप हैं। फिर हम आंशिक पहलुओं पर आते हैं।

79. इस और अगले उत्तर दोनों में अनुच्छेद 3 और 4 में प्रयुक्त वाक्यांश "प्रतिनिधि बौद्धिकता के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न" का लोप, साइ. के. में ध्यान नहीं दिया गया है। के. ने इस ओर एक फुटनोट में ध्यान दिलाया है, इस अंश में नहीं, बल्कि अनुच्छेद 108-110 में। यह लोप संभवतः आकस्मिक है।

80. प्रस्तावना देखें,

81. इन तीन निराकार पोषक तत्वों या खाद्य पदार्थों का, चौथे या साकार खाद्य पदार्थ के साथ, सुत्त पिटक में वर्णन किया गया है: एम. i. 261; एस. ii. 11. इसमें इनका वर्गीकरण चतुक्क निपाता के अंतर्गत नहीं किया गया है; परन्तु दशक निपाता (ए. v. 136) में दस प्रकार के आहारों का उल्लेख है, जिनका इन चारों से कोई संबंध नहीं है। उदाहरण के लिए, "उचित कर्म ही स्वास्थ्य का आहार है"।
बुद्धघोष, व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए, इन्हें परिस्थितियाँ नहीं बल्कि पूरक आकस्मिक "संयोजक" (अ-हार) कहते हैं। उदाहरण के लिए, एक जीवित व्यक्ति को देखते हुए, संपर्क का उल्लेख करें, तो भावना प्राप्त होती है; चिंतन का उल्लेख करें, तो तीन "विकास" (इंद्रियों आदि के ब्रह्मांड में) प्राप्त होते हैं; बुद्धि का उल्लेख करें, तो अवधारणा और नाम-और-रूप प्राप्त होते हैं (असल. 153)।

82. "शून्यता" शब्द के महत्व पर, प्रस्तावना देखें; सी/. § 344. विद्यार्थी के अध्ययन पाठ्यक्रम में इस खंड का महत्व केवल इस बात में निहित प्रतीत होता है: कि विचार-समूह को जिन मानसिक गतिविधियों में समाहित किया जा सकता है, उनमें से प्रत्येक प्रकार के विशिष्ट घटकों की प्रकृति और संख्या से ध्यान हटाकर, इस सिद्धांत पर जोर दिया जाता है कि यह विचार-समूह ऐसे घटनात्मक कारकों का एक समूह या संयोजन है, और इससे अधिक कुछ नहीं।
"चेतना की अवस्थाएँ होती हैं" (धम्म होन्ती); अर्थात् (असल. 155), "कोई स्थायी सत्ता या आत्मा नहीं है जो अवस्थाओं को प्राप्त करती है"।
"अवस्थाओं को प्रत्यक्ष रूप से समझा जाना चाहिए। इनके अलावा कोई अन्य सत्ता, अस्तित्व, व्यक्ति या इकाई नहीं है।"

83. संसंखारेना। बुद्धघोष द्वारा इस शब्द की व्याख्या संक्षिप्त और स्पष्ट है। स = सह-, संखारो = यौगिक, यहाँ इसका प्रयोग स्रोत, प्रेरणा, साधन या कारण के साथ सहवर्ती के अर्थ में किया गया है (उस्साहो, पयोगो, उपायो, पच्चयो-गहनम्)। उदाहरण के लिए, विहार के आस-पास रहने वाला भिक्षु, जब कर्तव्य उसे स्तूप के चारों ओर चबूतरे की सफाई करने, बड़ों की सेवा करने या धम्म सुनने के लिए बुलाता है, तो वह मार्ग को बहुत कठिन पाता है और सेवा से जी चुराता है।
न जाने की अनुचितता के बारे में दूसरी सोच उसे जाने के लिए प्रेरित करती है। ये सोच या तो उसकी अपनी अंतरात्मा (attano va payogena) से प्रेरित होती है, या किसी दूसरे व्यक्ति के आग्रह से, जो न जाने के नुकसान और जाने के लाभ को बताते हुए कहता है, "आओ, जाओ!" और "अच्छा विचार", यानी जाने का संकल्प, 'किसी कारण को पकड़ने के माध्यम से, एक साथ उत्पन्न होने वाले मकसद के रूप में' कहा जाता है। असल. 156.
यह व्याख्या विजयसिंह मुडलियार द्वारा चाइल्डर्स को दी गई ससंखारिको की व्याख्या से भिन्न नहीं है। मेरा मानना है कि वे इतने कट्टर बौद्ध नहीं थे कि उनका अर्थ यह हो कि असंखारिकम चित्तम एक स्वतःस्फूर्त, अर्थात् अकारण विचार है। उनका तात्पर्य केवल यह था कि विचार का विषय उसे उसके मानसिक पूर्ववर्ती के प्रति सचेत हुए बिना, पच्चय-गहनम के बिना अनुभव करता है। दूसरी ओर, चित्तम ससंखारेना में, विचार अपनी मानसिक स्थितियों के साथ चेतना में प्रकट होता है। अभिधम्मत्थ-संघ में इसी संदर्भ में प्रयुक्त शब्द असंखारिकम और ससंखारिकम हैं। जेपीटीएस, 1884, पृष्ठ 1 आदि। तुलना करें: वॉरेन, "बौद्ध धर्म अनुवादों में", 490।

84. पाठ (§ 146) में, "...पे ..." द्वारा इंगित छोड़े गए पुनरावृत्तियों पर § 147 का संदर्भ दिया गया है। अधिक सही संदर्भ § 1 का होना चाहिए। दूसरा प्रकार-विचार (सारांश और 'शून्यता' खंड सहित) सभी दृष्टियों से पहले प्रकार (Asl. 156) के समान है, केवल "चेतन

प्रेरणा द्वारा प्रेरित" के अतिरिक्त निहितार्थ को छोड़कर। इसी अपवाद के साथ चौथा, छठा और आठवां प्रकार-विचार क्रमशः तीसरे, पांचवें और सातवें प्रकार-विचार के समान हैं। अतः पाठ के § 159 में संदर्भ § 157 का होना चाहिए था।

85.के. को दुतियम चित्तम पढ़ा जाता है, और इसी तरह आठों के लिए।

86. सम्मदित्ति शब्द को यहाँ पाठ में छोड़ देना चाहिए था, ठीक वैसे ही जैसे अव्यापादो और हिरी के बीच इसके दूसरे उल्लेख के स्थान पर इसे सही ढंग से छोड़ दिया गया है। तीसरे प्रकार के विचार से इसका अभाव "ज्ञान से विरक्त" वाक्यांश में निहित है, ठीक वैसे ही जैसे "बुद्धि", "अंतर्दृष्टि" आदि में है। तुलना करें, के. 147ए में पथ को केवल चार प्रकार का बताया गया है।

87. "बुद्धि" शब्द का उल्लेख न होना।

88.पिछली टिप्पणी देखें।

89. "उदासीनता की अनुपस्थिति" शब्द को हटा दिया गया है।

90. पाठ में पाठक को बिना किसी संकोच के अनुच्छेद 62 का संदर्भ दिया गया है, जिससे वह विरोधाभासों में फंस जाता है। के. ने स्कंध की विषयवस्तु को पूरी तरह से सूचीबद्ध किया है, उन सभी कारकों को छोड़ दिया है जो ज्ञान से विरक्त विचार के साथ असंगत हैं। मैंने केवल इन बहिष्कृत कारकों का उल्लेख करना ही पर्याप्त समझा है।

91. धारा 147 के बाद पाठ में गलती से रखा गया।

92. इसलिए के. पाठ में न केवल पुनरावृत्तियों को, बल्कि अनिवार्य रूप से विशिष्ट कारक ससंख क्षेत्र को भी छोड़ दिया गया है, जिससे "चौथे विचार" का सम्मिलन पूरी तरह से समझ से परे हो जाता है।
बुद्धघोष ने इस प्रकार के विचार का एक अलग उदाहरण दिया है, जो पूर्ववर्ती चित्तर्न ससंखारेना से इसकी समानता और भिन्नता के अनुरूप है, अर्थात्: इसमें मन की सुखद अवस्था तो शामिल होती है, लेकिन कोई गहरी समझ या विवेक नहीं। ऐसा ही विचार छोटे बच्चों का होता है, जो अपने माता-पिता द्वारा चैत्य में सिर झुकाकर पूजा करने के लिए कहे जाने पर स्वेच्छा से ऐसा करते हैं, यद्यपि वे ऐसा बिना किसी विवेकपूर्ण विश्वास के करते हैं। असल. 156.

93. उपेक्षा। "यह विचार के विषय के संबंध में निष्पक्षता (शाब्दिक रूप से, मध्यता) है, और इसमें एक विवेकपूर्ण ज्ञान निहित है" (असल. 157)। ध्यान की साधना में इसके महत्व की तुलना करें, धारा 165। पहले प्रकार के विचार से उत्पन्न होने वाले ध्यान में, जो "आनंद" और "सुकून" के साथ होता है, इसे "आत्म-संयम" से प्रतिस्थापित किया जाता है। धारा 83 देखें।

94. यहाँ, फिर से, पाठ में लगभग पूरे उत्तर का लोप, और धारा 156 का संदर्भ, जहाँ छठे विचार को इस पाँचवें विचार से, ससंखारेण गुण द्वारा अलग किया गया है, मूल में अपनाए गए वर्गीकरण को पूरी तरह से अस्पष्ट कर देता है।

95. "आनंद" और "सुकून" के स्थान पर प्रतिस्थापित, धारा 9, 10.

96. संभवतः इसमें "अवधारणा", "विवेचनात्मक विचार", "निस्वार्थता" ("आनंद" और "सुकून" से ऊपर) और "आत्म-संयम" शामिल हैं। देखें अनुच्छेद 83। पिटकों में यह अंतिम मनोवृत्ति आमतौर पर ध्यान की चरम अवस्था (या अन्य) के रूप में नहीं मिलती है (देखें अनुच्छेद 160 आदि)। हालांकि, अभिधम्मत्थ-संघ में यह इसी रूप में और "निस्वार्थता" के साथ-साथ पाई जाती है। जेपीटीएस, 1884, पृष्ठ 3।

97.के. स्कंध को पूर्ण रूप से प्रस्तुत करता है, जिसमें "आनंद" को छोड़ दिया गया है, क्योंकि आनंद और उपेक्षा परस्पर अनन्य हैं।

98.नानिन्द्रियम् पाठ में मनिन्द्रियम् होना चाहिए।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक1-भाग1-अध्याय 2
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 1 - विचारों की उत्पत्ति
  - भाग 1 - चेतना की उत्तम अवस्थाएँ

अंतर्वस्तु

अध्याय II - रूप के ब्रह्मांड के संबंध में अच्छाई
रूपावकारा कुसलम
[पृष्ठ 43] ध्यान को प्रेरित करने की विधियाँ,
विधि I: आठ कृत्रिम विधियाँ (अत्थकसिनम)।
1. द अर्थ आर्टिफ़िस (पथविकसिनम)।
(क) झदना (चतुक्कनायो) की चतुर्विध प्रणाली।
[160] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह रूप के स्वर्गों को प्राप्त करने के लिए[1][2] इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर[3] उस मार्ग का अनुसरण करता है, और इस प्रकार पृथ्वी-दर्शन द्वारा[4] प्रथम ध्यान (प्रथम समाधि) में प्रवेश करता है[5] और उसमें विलीन रहता है[5], जिसमें अवधारणा कार्य करती है और विचार विवेचनात्मक[6] होते हैं, जो एकांत[7] से उत्पन्न होता है, और आनंद[8] और सहजता से परिपूर्ण होता है—तब संपर्क, भावना... पकड़, संतुलन, जो उसमें उत्पन्न होते हैं, या उस अवसर पर जो भी अन्य[9] निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ होती हैं—ये अवस्थाएँ अच्छी होती हैं।
[पृष्ठ 45] इंद्रिय-संबंधी ब्रह्मांड से संबंधित विचार के पहले प्रकार की तरह जारी रखें, जिसमें सारांश और "शून्यता" विभाजन शामिल हैं।[10]
[161] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, कल्पना और विचार-विमर्श के कार्य को दबाकर, उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार, पृथ्वी-दर्शन द्वारा, द्वितीय ध्यान (द्वितीय समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो स्वयं विकसित[11], एकाग्रता से उत्पन्न, आनंद और सहजता से परिपूर्ण है, उसमें, कल्पना और विचार-विमर्श के कार्य से मुक्त होकर, मन [पृष्ठ 46] शांत और निश्चित[12] हो जाता है, उच्च[13] पर निवास करता है - तब संपर्क, भावना, बोध, चिंतन, विचार, आनंद, सहजता, आत्म-संयम, विश्वास, ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता, ज्ञान, विचार, प्रसन्नता और जीवन शक्ति की क्षमताएं, सही दृष्टिकोण[14], सही प्रयास, . . [15] पकड़, संतुलन जो उत्पन्न होता है - ये, या जो भी अन्य निराकार, कारण से प्रेरित अवस्थाएँ उस अवसर पर होती हैं - ये अवस्थाएँ अच्छी होती हैं।

[पृष्ठ 47] [सारांश।]

[161क] अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं, क्षेत्र दो हैं, तत्व दो हैं, पोषक तत्व तीन हैं, क्षमताएँ आठ हैं, ध्यान तीन गुना है[16], पथ चार गुना है[17], शक्तियाँ सात हैं, कारण तीन हैं, संपर्क को एक कारक के रूप में गिना जाता है, इत्यादि।

[धारा 58 आदि के अनुसार जारी रखें।]

[162] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?

संपर्क आनंद

सोच आत्म collectedness

संकायों के

आस्था एकाग्रता

ऊर्जा बुद्धि

सचेतन जीवर्नबल

सही विचार

सही प्रयास

आदि आदि

[धारा 62 आदि के अनुसार जारी रखें।] [18]

[पृष्ठ 48] [163] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, उस मार्ग का अभ्यास करता है, और आगे, आनंद के लिए सभी जुनून के कम होने के माध्यम से[19], स्वयं को निष्पक्ष[20] रखता है, जबकि, सचेत और आत्म-संयमित[21], वह अपनी इंद्रिय-चेतना[22] में उस सहजता का अनुभव करता है जिसकी घोषणा नोबल[23] करते हैं:

जो निष्पक्ष और सतर्क रहता है, वह निश्चिंत रहता है।

— और इस प्रकार, पृथ्वी-दर्शन द्वारा, तृतीय ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है — तब संपर्क, भावना, बोध, चिंतन, विचार, सहजता, आत्म-संयम, विश्वास, ऊर्जा, सचेतनता[24], एकाग्रता, ज्ञान, विचार, सुख और जीवंतता, सही दृष्टिकोण, सही प्रयास[25] आदि की क्षमताएँ... बोध, संतुलन जो उत्पन्न होता है[26] — ये, या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ होती हैं — ये अवस्थाएँ अच्छी होती हैं।

[पृष्ठ 49] [सारांश।]

[163a] अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं, क्षेत्र दो हैं, तत्व दो हैं, पोषक तत्व तीन हैं, क्षमताएँ आठ हैं, ध्यान दो गुना है[27], पथ चार गुना है[28], शक्तियाँ सात हैं, कारण तीन हैं, संपर्क को एक कारक के रूप में गिना जाता है, इत्यादि।

[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]

[164] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?

संपर्क करना,

सोच,

आत्मसंयम;

संकायों के

आस्था एकाग्रता

ऊर्जा बुद्धि

सचेतन जीवर्नबल

सही विचार सही प्रयास

आदि आदि

[धारा 62 के अनुसार जारी रखें।]

[पृष्ठ 50] [165] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और सुख और दुख को त्यागकर, अपने द्वारा अनुभव किए जाने वाले सुख और दुख[29] को दूर करके, वह पृथ्वी-दर्शन द्वारा चौथे ध्यान (चौथी समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो अनासक्ति[30] से उत्पन्न होने वाली पूर्ण पवित्रता की अवस्था है, जहाँ न सुख का अनुभव होता है और न ही कोई दुख—तब संपर्क, अनुभूति, बोध, चिंतन, विचार, अनासक्ति, आत्म-संयम, विश्वास, ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता, ज्ञान, विचार, अनासक्ति[पृष्ठ 51] और जीवन शक्ति, सही दृष्टिकोण, सही प्रयास आदि...
[धारा 163 के अनुसार जारी रखें।]
[सारांश।]
[165a] अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं, क्षेत्र दो हैं, तत्व दो हैं, पोषक तत्व तीन हैं, क्षमताएँ आठ हैं, ध्यान दो गुना है[31], पथ चार गुना है, शक्तियाँ सात हैं, कारण तीन हैं, संपर्क को एक कारक के रूप में गिना जाता है, इत्यादि।
[धारा 58 आदि के अनुसार जारी रखें।]

[166] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
धारा 164.[32] के अनुसार उत्तर दें।
[यहाँ समाप्त होता है] ध्यान की चतुर्विध प्रणाली।

[पृष्ठ 52] (ख) ध्यान की पंचविध प्रणाली (पंचकनायो)।[33]
[167] प्रथम ज्ञान.

प्रश्न और उत्तर जैसा कि चौगुने पाठ्यक्रम में है, धारा 160।
[168] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और पृथ्वी को निहारते हुए द्वितीय ध्यान (द्वितीय समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसमें कल्पना का कोई कार्य नहीं होता, बल्कि केवल विवेचनात्मक विचार होते हैं—जो एकाग्रता से उत्पन्न होते हैं, और आनंद और सहजता से परिपूर्ण होते हैं—तब संपर्क, अनुभूति, बोध, चिंतन, विचार, विवेचनात्मक पूछताछ, आनंद, सहजता, आत्म-संयम आदि का अनुभव होता है।
[धारा 161 में द्वितीय ध्यान के लिए दिए गए निर्देशों का पालन करें।]
[सारांश।]
[168क] अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं, क्षेत्र दो हैं, तत्व दो हैं, पोषक तत्व तीन हैं, क्षमताएँ आठ हैं, [पृष्ठ 53] ध्यान चार गुना है, पथ चार गुना है, इत्यादि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]

[169] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
संपर्क, चिंतन, विवेचनात्मक विचार, आनंद, आदि...
[धारा 162 के अनुसार जारी रखें।]

[170-175] तीसरा, चौथा और पाँचवाँ ध्यान।

[ये चतुर्विध प्रणाली के द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ ध्यानों के समान सूत्रबद्ध हैं, प्रश्न और उत्तर अनुच्छेद 161-166 में दिए गए हैं।]
[यहाँ समाप्त होता है] ध्यान की पंचविध प्रणाली।

(सी) प्रगति के चार तरीके (कटासो पति-पाद)।[34]

[पृष्ठ 54] [176] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार पृथ्वी-दर्शन द्वारा प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... प्रगति कष्टदायक और अंतर्ज्ञान सुस्त होने पर— तब संपर्क[35]... जो संतुलन उत्पन्न होता है— ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[177] [36] . . . [या] जब ... वह ... प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें रहता है ... प्रगति कष्टदायक होती है, लेकिन अंतर्ज्ञान तीव्र होता है ...

[178]

... [या] जब ... वह ... प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है ... प्रगति सुगम होती है, लेकिन अंतर्ज्ञान सुस्त होता है ...

[179] . . . [या] जब ... वह ... प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है ... प्रगति आसान और अंतर्ज्ञान तीव्र होने पर - तब संपर्क, आदि ... जो संतुलन उत्पन्न होता है - ये ... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[पृष्ठ 55] [180] ये चार संयोजन चतुर्विध प्रणाली में दूसरे से चौथे ध्यान के मामले में और पंचविध प्रणाली में दूसरे से पाँचवें ध्यान के मामले में दोहराए जाते हैं।

प्रगति के चार तरीके यहीं समाप्त होते हैं।

(घ) विचार के चार विषय (कत्तरी अरम-मन अनी)।[37]

[181] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, पृथ्वी-दर्शन द्वारा, प्रथम ध्यान (प्रथम समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसमें अवधारणा कार्य करती है और विचार विवेचनात्मक होता है, जो एकांत से उत्पन्न होता है, और आनंद और सहजता से भरा होता है, लेकिन जो सीमित होता है, और विचार का एक सीमित उद्देश्य होता है - तब संपर्क[38] . . . जो संतुलन उत्पन्न होता है - ये . . . अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[182] . . . [या] जब . . . प्रथम ध्यान[39] ... सीमित है, लेकिन विचार का एक उद्देश्य है जो अनंत विस्तार में सक्षम है . . .

[183] . . . [या] जब . . . प्रथम ध्यान ... अनंत विस्तार में सक्षम है, लेकिन विचार का एक सीमित उद्देश्य है . . .

[184] . . . [या] जब . . . प्रथम ध्यान ... अनंत विस्तार में सक्षम है, और विचार की एक वस्तु अनंत विस्तार में सक्षम है - तब संपर्क, आदि . . . जो संतुलन उत्पन्न होता है, ये . . . अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[पृष्ठ 56] [185] ये चार संयोजन चतुर्गुण प्रणाली पर दूसरे से चौथे झाना के मामले में और पंचगुण प्रणाली पर पहले से पाँचवें[40] झाना के मामले में दोहराए जाते हैं।

[यहाँ विचार के चार विषय समाप्त होते हैं]।

(ई) (= सी और डी) सोलह गुना संयोजन (सोलासक्खट्टुकम)।

[186] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, उस मार्ग का अनुसरण करता है, और इस प्रकार पृथ्वी को निहारते हुए प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है...

जहां प्रगति कष्टदायी होती है और अंतर्ज्ञान सुस्त होता है, <

<< जो सीमित है, और जिसके विचार का दायरा भी सीमित है...

[187] . . . [या] जो सीमित है, लेकिन विचार का एक ऐसा विषय है जो अनंत विस्तार में सक्षम है . . . [188] . . . [या] जो अनंत विस्तार में सक्षम है, लेकिन विचार का एक सीमित विषय है ... [189] . . . [या] जो अनंत विस्तार में सक्षम है, और विचार का एक ऐसा विषय है जो अनंत विस्तार में सक्षम है

[190] . . . [या] जहाँ प्रगति कष्टदायक है, लेकिन अंतर्ज्ञान तेज़ है। <
<< जो सीमित है, और जिसके विचार का दायरा भी सीमित है...
[191] . . . [या] . . . इत्यादि। [धारा 191-193 के लिए धारा 187-189 के अनुसार जारी रखें।]

[पृष्ठ 57]
[194] . . . [या] जहाँ प्रगति आसान है, लेकिन अंतर्ज्ञान सुस्त है, <
<< जो सीमित है[41], और विचार का एक सीमित उद्देश्य है...
[195] . . . [या] . . . इत्यादि। [धारा 195-197 के लिए ऊपर दिए गए अनुसार जारी रखें।]

[198] . . . [या] जहाँ प्रगति आसान हो और अंतर्ज्ञान तीव्र हो, <
<< जो सीमित है, और जिसके विचार का दायरा भी सीमित है...
[199] [धारा 199-201 के लिए ऊपर दिए गए अनुसार जारी रखें।]

[202]
[ये सोलह संयोजन चतुर्विधिक प्रणाली में दूसरे से चौथे ध्यान के मामले में और पंचविधिक प्रणाली में पहले से पांचवें ध्यान के मामले में दोहराए जाते हैं।]
[यहाँ समाप्त होता है] सोलह गुना संयोजन।

2. शेष सात कलाकृतियाँ जिन्हें सोलह गुना संयोजन में भी विकसित किया जा सकता है (अत्थकसिनम सोलसक्खट्टुकम)।[42]
[पृष्ठ 58] [203] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, इंद्रिय सुखों और बुरे विचारों से विरक्त होकर, जल, अग्नि, वायु, नीले-काले, पीले, लाल, सफेद रंगों की युक्ति से प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, तब जो संपर्क आदि उत्पन्न होते हैं—ये सभी अवस्थाएँ शुभ होती हैं।
प्रेरण के लिए शेष सात युक्तियों के मामले में सोलह गुना संयोजन यहीं समाप्त होता है।
विधि II: निपुणता के स्टेशन (अभिभयतननि)। [43]
1. "सीमित के रूप में प्रपत्र" (रुपाणी परित्तानी)।
(क और ख) चौगुनी और पंचगुनी ध्यान।
[204] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए [पृष्ठ 59] उस मार्ग का अभ्यास करता है, और अपने शारीरिक स्व के किसी भी भाग से बेखबर[44] होकर, बाह्य वस्तुओं को सीमित मानते हुए, "मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ!"[45] के विचार से उन पर वशीकरण प्राप्त करता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान आदि में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... तब जो संपर्क आदि उत्पन्न होता है - ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।
[205] [चार प्रकार की ध्यान पद्धति में दूसरे से चौथे ध्यान के मामले में और पंच प्रकार की ध्यान पद्धति में दूसरे से पाँचवें ध्यान के मामले में दोहराएँ।]
(ग) प्रगति के चार तरीके।
[206-210] प्रगति के चार संयोजनों को दर्दनाक या आसान के रूप में, और अंतर्ज्ञान को सुस्त या तेज के रूप में, जैसा कि §§ 176-180 में बताया गया है, "पृथ्वी-दर्शन" के स्थान पर महारत सूत्र को प्रतिस्थापित करें।

[पृष्ठ 60] (घ) विचार के दो विषय।

[211-213] दोहराएँ, "पृथ्वी-दर्शन" के स्थान पर मास्टरी-सूत्र f § 181 को प्रतिस्थापित करते हुए, जहाँ ध्यान "सीमित है, और विचार का एक सीमित उद्देश्य है", और § 183, जहाँ ध्यान "अनंत विस्तार में सक्षम है, लेकिन विचार का एक सीमित उद्देश्य है" ।[46]

(ई = सी और डी) अष्टांग संयोजन (अत्थाखट्टुकम्) ।[47]

[214-221] सोलह गुना संयोजन के §§ 186, 188, 190, 192, 194, 196, 198, और 200 को उसी प्रतिस्थापन के साथ दोहराएँ।

[222] शेष प्रत्येक झान के मामले में इन आठ संयोजनों को दोहराएँ।

2. "रूप सीमित और सुंदर या बदसूरत के रूप में" (रुपानी परित्तनी सुवन्न अद उब्बन्नानी).[48]

[पृष्ठ 61] [(क) और (ख)]

[223] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और अपने शरीर के किसी भी भाग से बेखबर होकर, बाह्य वस्तुओं को सीमित और सुंदर या कुरूप मानकर, "मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ!" के विचार से उन पर वशीकरण प्राप्त कर लेता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान आदि में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... तब जो संपर्क आदि उत्पन्न होते हैं—ये... वे अवस्थाएँ शुभ होती हैं।

[224] शेष प्रत्येक ध्यान के मामले में इसे दोहराएँ,

आठ गुना संयोजन में विकसित करें।

3. "अनंत के रूप में रूप" (रुपाणी अप्पमननि).[49]

(क) और (ख)

[225] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और अपने देहधारी अस्तित्व के किसी भी भाग से अनभिज्ञ होकर, बाह्य वस्तुओं को अनंत मानते हुए, "मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ!" के विचारों से उन पर आधिपत्य प्राप्त कर लेता है, और इस प्रकार, इंद्रियजन्य इच्छाओं आदि से विरक्त हो जाता है।

[धारा 204 के अनुसार जारी रखें।]

[226] शेष प्रत्येक झान के मामले में दोहराएँ।

(ग) प्रगति के चार तरीके।

[227-231] धारा 206-210 को दोहराएँ, "सीमित" के स्थान पर "अनंत" प्रतिस्थापित करें।

[पृष्ठ 62] (घ) विचार के दो विषय।

[232-234] (सी) में समान प्रतिस्थापन के साथ, धारा 211-213 दोहराएँ।

(e = c और d) अष्टांग संयोजन।

[235-242] धारा 187, 189, और इसी प्रकार धारा 201 तक (सी) और (डी) में दिए गए प्रतिस्थापन के अनुसार विकसित करें।

[243] शेष प्रत्येक Jhdna के मामले में इन आठ संयोजनों को दोहराएँ।

4. "रूप उतने ही अनंत और उतने ही सुंदर या कुरूप" (रुपाणी अप्पमननि सुवन्ना दुब्बन्नानि)।
(क) और (ख)
[244] धारा 223 को दोहराएँ, 'सीमित' के स्थान पर 'अनंत' प्रतिस्थापित करें। [245] शेष प्रत्येक झाना के मामले में दोहराएँ। आठ गुना संयोजन में विकसित करें।

5. "नीले-काले रंग के रूप में रूप", आदि (रूपानी निलानी)।[50]
[पृष्ठ 63] (क)
[246] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, उस मार्ग का विकास करता है, और अपने शारीरिक स्व के किसी भी भाग से अनभिज्ञ होकर, नीले-काले रंग की, दृश्य विस्तार में नीले-काले[51], चमक में नीले-काले बाहरी वस्तुओं को देखकर, "मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ!" के विचार से उन पर अधिकार प्राप्त करता है, और इस प्रकार, इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं आदि से दूर रहता है।
[धारा 204 के अनुसार जारी रखें।]

6-8. "पीले रंग के रूप में", आदि (रुपाणी पिटानी)।
[247] धारा 246 को दोहराएँ, "नीला-काला, रंग में नीला-काला", आदि के स्थान पर क्रमशः "पीला", "लाल" और "सफेद" [52] प्रतिस्थापित करें।
सोलह गुना संयोजन में निपुणता के इन स्तरों को विकसित करें।

विधि III: तीन प्रथम मुक्ति (तिनी विमोक्खनी)। [53]
1.
[248] जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और अपने शारीरिक रूप [पृष्ठ 64] के प्रति सचेत होकर, शारीरिक रूपों को देखता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान आदि में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... तब जो संपर्क आदि उत्पन्न होता है, ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

2.
[249] जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और अपने देह-स्वभाव से अनभिज्ञ होकर बाह्य देह रूपों को देखता है, और इस प्रकार, इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं आदि से विरक्त रहता है।
[पिछले भाग की तरह जारी रखें।]

3.
[250] जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, उस मार्ग का विकास करता है, और "यह कितना सुंदर है!" [55] इस विचार के साथ, इंद्रिय सुख आदि से विरक्त रहता है।
[पृष्ठ 65] [पहले उद्धार की तरह जारी रखें।]
इन तीनों मुक्ति को सोलह गुना संयोजन में भी विकसित किया जा सकता है।

विधि IV: उदात्त निवासों के चार ध्यान (चत्तरी ब्रह्मविहारझनानी)।[56]
1. प्रेम (मेट्टा)।

(क) चौगुना ध्यान।

[251] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए [पृष्ठ 66] उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान (प्रथम समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसमें अवधारणा [पृष्ठ 67] कार्य करती है और विचार विवेचनात्मक होता है, जो एकांत से उत्पन्न होता है, आनंद और सहजता से परिपूर्ण होता है, और प्रेम से युक्त होता है - तब संपर्क, आदि... [? धारा 1 के अनुसार जारी रखें]... जो संतुलन उत्पन्न होता है - ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[252] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह स्वरूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, कल्पना और विवेचनात्मक विचारों को दबाकर उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार पृथ्वी-दर्शन के द्वारा द्वितीय ध्यान (द्वितीय समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो स्वयं विकसित, एकाग्रता से उत्पन्न, आनंद और सहजता से परिपूर्ण होता है; उसमें मुक्त होकर... मन शांत और स्थिर हो जाता है, उच्चतर अवस्था में लीन हो जाता है - और जो प्रेम से परिपूर्ण होता है - तब संपर्क आदि होता है।

[ऊपर दिए गए निर्देशों के अनुसार जारी रखें,]

[253] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और आगे, आनंद के लिए सभी वासनाओं के कम होने के माध्यम से, स्वयं को निष्पक्ष रखता है, तब सचेत और आत्म-संयमित रहते हुए, वह अपनी इंद्रिय-चेतना में उस सहजता का अनुभव करता है जिसके बारे में श्रेष्ठ जन कहते हैं: "जो निष्पक्ष और सतर्क है वह सहजता से रहता है" - और इस प्रकार, पृथ्वी-दर्शन द्वारा, तीसरे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें रहता है, जो प्रेम से युक्त है[57] - तब, इत्यादि।

[ऊपर दिए गए निर्देशों के अनुसार जारी रखें।]

(ख) पंच प्रकार का ध्यान।

[254-257] धारा 167, 168, 170, 172 में प्रश्न और उत्तर दोहराएँ, प्रत्येक उत्तर में, पूर्ववर्ती खंड की तरह, "और जो प्रेम के साथ है" जोड़ें।[58]

2. दया (करुणा)।

[258, 259] पिछले अनुभागों (क) और (ख) में प्रश्न और उत्तर दोहराएँ, लेकिन प्रत्येक मामले में प्रेम पर खंड के स्थान पर "और जो दया के साथ है" प्रतिस्थापित करें।

3. सहानुभूति (मुदिता)।

[260, 261] पिछले दो खंडों में प्रश्न और उत्तर दोहराएँ, लेकिन प्रत्येक मामले में दया पर खंड के स्थान पर "और जो सहानुभूति के साथ है" प्रतिस्थापित करें।

4. वैराग्य (उपेक्खा)।

[262] जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और सुख और दुख को त्यागकर, अपने द्वारा अनुभव किए जाने वाले सुख और दुख को दूर करके, पृथ्वी-दर्शन द्वारा, उस परम पवित्र ध्यान की चौथी अवस्था (चौथी समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो अनासक्ति से उत्पन्न होती है, जहाँ न सुख का अनुभव होता है और न ही कोई दुख, और जो अनासक्ति के साथ होती है—तब संपर्क, आदि।

[धारा 165 के अनुसार जारी रखें।]

[पृष्ठ 69] परम निवासों के चार ध्यान सोलह संयोजनों में विकसित किए जा सकते हैं।

विधि V: असुभ-झानम (असुभ-झानम)।
[263] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसमें, आदि...
और जिसके साथ एक फूले हुए शव का विचार जुड़ा होता है[59] . . . [या] [264] एक बदरंग शव का ... [या] एक सड़ते हुए शव का ... [या] फटी त्वचा वाले शव का ... [या] कुतरे और क्षत-विक्षत शव का ... [या] टुकड़ों में कटे हुए शव का ... [या] विकृत और टुकड़ों में कटे हुए शव का ... [या] एक खूनी शव का ... [या] कीड़ों से ग्रस्त शव का ... [या] एक कंकाल का ...
फिर संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है — ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अच्छी हैं।[60]
[पृष्ठ 70] गंदी चीजों का ध्यान सोलह संयोजनों में विकसित किया जा सकता है।
[रूप के ब्रह्मांड के संबंध में अच्छाई पर यह अध्याय यहीं समाप्त होता है।]
- फुटनोट:
1. प्रस्तावना देखें।
2. चेतना की इन अवस्थाओं का विषय।
3. विविच्च एव कामेही, विविच्च अकुसलेही धम्मेही। शाब्दिक अर्थ है, "स्वयं को अलग करके, विद्यमान होकर, विमुख होकर" (अस्लिम 164)। अर्थात्—फिर से साइ. (वही) के अनुसार—इंद्रिय-इच्छाओं के विषयों से और स्वयं इच्छाओं से, क्रमशः (वत्थुकमा, किलेसकामा। चाइल्डर्स डिक्शनरी, एसवी कामो)। पहला वाक्यांश (विविच्च एव कामेही) इंद्रिय-प्रस्तुति के संपूर्ण मनोवैज्ञानिक क्षेत्र (कायो, या भावना, बोध और संस्कारों के तीन स्कंध) को समाहित करता है; दूसरा, धम्मेही, केवल विचार (चित्तम) के क्षेत्र को संदर्भित करता है।
यह ग्रंथ इस विचार का खंडन करता है कि दो वाक्यांशों में से केवल पहले में आने वाला ज़ोरदार शब्द 'एव' दूसरे को कम महत्वपूर्ण बनाता है, और इसके समर्थन में चूला-सिहानदा प्रवचन (एम. i. 63) के आरंभिक शब्दों का हवाला देता है।
4. पथविकासम्। कर्मस्थान विधियों में से पहली विधि, या बाह्य जगत के अस्थायी समाधि विस्मृति को प्राप्त करने के लिए अर्ध-सम्मोहनकारी युक्ति। सांचे के वृत्त की अनुभूति स्पष्ट छवि (निमित्तम्) उत्पन्न करती है, और उसके बाद ध्यान उत्पन्न होता है।
5. अर्थात्, यह मनोदशा को अनिश्चित काल तक बनाए रखता है। यह ग्रंथ विभंग का हवाला देते हुए कहता है कि विभंग ने इस शब्द की व्याख्या उन्हीं अभिव्यक्तियों, "चलते रहना", आदि से की है, जिनका प्रयोग ऊपर (§ 19) "जीवन शक्ति" का वर्णन करने के लिए किया गया है।
6. सवितक्कम् सविचरम्। ध्यान की नकारात्मक आवश्यक स्थितियों को छोड़कर, हम सकारात्मक विशेषताओं की ओर बढ़ते हैं (असल. 166)। ध्यान इन दोनों के माध्यम से विशेष रूप से प्रगति करता है, जैसे एक पेड़ अपने फूलों और फलों से प्रगति करता है। विभंग के अनुसार, वे व्यक्तिगत विद्यार्थी के दृढ़ संकल्पों (पुग्गलधित्थाना) को प्रकट करते हैं। (वही)
7. साइ. के अनुसार, एकांत शारीरिक से अधिक नैतिक है, और इसका अर्थ है "एकांत में जन्म" जिसे विद्यार्थी अपने हृदय से पाँच बाधाओं को दूर करके बनाता है (वही, नीचे, § 1152)। जैसा कि पेटक (? पेटकोपदेश) में कहा गया है, एकाग्रता कामुक इच्छा का विरोध करती है; आनंद द्वेष का विरोध करता है; गर्भाधान, या बुद्धि का उद्भव, जड़ता और सुस्ती का विरोध करता है; सहजता उत्तेजना और चिंता का विरोध करती है; विवेचनात्मक विचार उलझन या संदेह का विरोध करता है (असल. 165)। देखें I), i. 73, जहाँ बाधाओं का स्पष्ट रूप से ध्यान के संबंध में उल्लेख किया गया है; इसके अलावा, रीस डेविड्स की "बुद्ध के संवाद", I., पृष्ठ 84 में दिए गए नोट्स भी देखें।
8.अर्थात, पाँचवीं प्रजाति का आनंद, फराना-पीति (असल. 166), § 9; ऊपर उल्लिखित अंश, डी. i. 73 की तुलना भी करें। ऊपर देखें, इसलिए इमाम एव कायम . . . अभिसंदेति . . . परिप-फरति।
9.अर्थात, पाँचवीं प्रजाति का आनंद, फराना-पीति (असल. 166), § 9; ऊपर उल्लिखित अंश, डी. i. 73 की तुलना भी करें। ऊपर देखें, इसलिए इमाम एव कायम . . . अभिसंदेति . . . परिप-फरति।
10. इन्हें ऊपर बताए गए नौ में से पहले चार - इच्छा, आदि - कहा गया है, पृष्ठ 5, नोट 1 (असल. 168)।
11. अतः साइ. (वही)। अतः पाठ में पाठक को (147) के बजाय (1) का संदर्भ दिया जाना चाहिए था। के. लोप को केवल एक ... पे ... द्वारा इंगित करता है, जो मेरे अनुवाद में "या जो भी..." से पहले अल्पविराम के अनुरूप है, जिसके बाद "इमे धम्म कुसला" आता है।

हालाँकि, मेरा झुकाव इस ओर है कि विभिन्न धम्मों की प्रकृति के बारे में विस्तृत उपदेश, जैसा कि §§ 2-57 में मिलता है, को यहाँ या शेष ध्यानों में छोड़े गए अंश में शामिल नहीं समझा जाना चाहिए। के. शेष तीन ध्यानों में संबंधित बिंदु पर ऊपर उद्धृत . . . पे . . . को दोहराता नहीं है, जहाँ सारांश छोड़ा नहीं गया है, बल्कि दिया गया है। न ही यह . . . पे . . . देता है जो पाठ में §§ 163, 165 में तस्मीम खो पाना समाये से पहले है। इसी प्रकार यह "पंच-गुना ध्यान" के सूत्रों में संबंधित बिंदुओं पर पाठ में दिए गए . . . पे . . . को छोड़ देता है, § 168 इत्यादि।

12.अज्जत्तम, अर्थात्, साइ के अनुसार। (169), अत्तनो जतम्, अत्तसन्तने निब्बत्तर्न; विभंग के अनुसार, पच्चत्तम्। मुझे यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि केवल इस ध्यान में इस शब्द का विशेष महत्व क्या है, सिवाय इसके कि अब "पृथ्वी-दर्शन" जारी नहीं रहता - व्यक्ति चेतना के बाह्य निर्धारकों से अधिक विमुख हो जाता है, विशुद्ध रूप से व्यक्तिपरक परिस्थितियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है।

13. संपसादनम्, शांत करने वाला, च्य. (वही) में सद्धा, आश्वासन या विश्वास (ऊपर, § 12) द्वारा व्याख्यायित। यह ध्यान के लिए ही एक शब्द है, जो संपूर्ण चिंतनशील अनुशासन के साथ मिश्रित है, जैसे बैंगनी रंग में भीगा हुआ कपड़ा "बैंगनी" होता है - टीकाकार की उपमा को हमारी मुहावरे में ढालने के लिए। अगला शब्द चेतसो, 'मन का', या तो इस शब्द के साथ, या इसके बाद वाले शब्द, एकोदिभवम् (वही) के साथ लिया जा सकता है।

14. पाठ में एकोदिभवम् पढ़ें। इस अभिव्यक्ति पर बुद्धघोष की टिप्पणियों में चाइल्डर्स में दिए गए थेरा सुभूति के उद्धरण का मूल अंश है। उनका सार यह है कि चेत (बुद्धि, मन, हृदय), वितक्को और विकरों से अभिभूत या बोझिल न होकर, अपनी ध्यानमग्न एकाग्रता, या समाधि में धीरे-धीरे सर्वोपरि (एको = सेत्थो या असहयो) हो जाता है, यह शब्द एकोदिभवम् (समाधि का एतम् अधिवचनम्) का पर्यायवाची है। प्रथम ध्यान की विवेचनात्मक बौद्धिकता, जो चेत को विचलित करती है, जैसे लहरें पानी को मर्मस्पर्श करती हैं, द्वितीय ध्यान में शांत हो जाती है। और यह उत्थान (टीकाकार जोर देते हैं) चेत का है, न कि किसी व्यक्ति विशेष का, न ही किसी सजीव आत्मा का (न सत्तस्स न जीवस्स)। मॉरिस की टिप्पणी देखें, जेपीटीएस, 1885, पृष्ठ। 32.

15. सम्मासंकप्पो यहाँ, अपने सामान्य स्थान क्रम के अनुसार, छोड़ दिया गया है। इसमें विटाक्को शामिल है; देखें § 7. 16. पाठ में § 157 का संदर्भ सही नहीं हो सकता। विषय ने अभी तक सुखदायक भावना को त्याग नहीं दिया है, और अनासक्ति की शांति प्राप्त नहीं की है; न ही उसकी मनःस्थिति ज्ञान से असंबद्ध है। विचार का प्रकार, इसके शेष घटकों के संबंध में, अभी भी पहला है, अर्थात् § 1 का।

17. (तुलना करें § 83. "अवधारणा" और "विवेचनात्मक विचार" अब हटा दिए गए हैं।

18. (तुलना करें § 89. "आठ इरादा", जिसमें "अवधारणा" शामिल है, अब हटा दिया गया है।मन अब इस जीवन से संबंधित प्रत्यक्ष गतिविधियों में व्यस्त नहीं है। पृष्ठ 46, नोट 3 देखें।

19. इसमें संभवतः "शून्यता" खंड भी शामिल है, जैसा कि प्रथम ध्यान के मामले में है।

20. पितिया च विराग, "जिसका अर्थ है आनंद के प्रति अरुचि या उसका अतिक्रमण"। च पूर्ववर्ती से वर्तमान ध्यान तक प्रगतिशील निरंतरता को इंगित करता है (असल. 171)।

21. उपेक्खको, या निःसंकोच। वह उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखता है जो पहुँच चुका है, साइ. (172) कहता है। जैसा कि हम कह सकते हैं:

"ई टेरा मैग्नम अल्टेरियस स्पेक्टारे लेबोरेम।"

बुद्धघोष यहाँ हार्डी, "मैन. बुद्धिज्म", 505 में सूचीबद्ध दस प्रकार के उपेक्खक पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

22. संपजानो। अपनी प्रक्रिया के प्रति बुद्धिमानी से जागरूक।

23. कायो, प्रस्तावना देखें; ऊपर, पृष्ठ 43, नोट 3।

24. नीचे देखें, § 1003, नोट। 6.

25. पाठ में छोड़ा गया है, लेकिन क. में नहीं। संदर्भ के अनुसार इसे शामिल करना आवश्यक है।

26. धारा 157, जिसका उल्लेख पाठ में पाठक के लिए किया गया है, स्पष्ट रूप से गलत है। धारा 1 अधिक सटीक होगी।

27. "सुविधा" और "आत्म-संयम" शेष हैं।

28. तुलना करें धारा 161 n. 2.

29. क. के अनुसार, "सुविधा" और "दुःख" कायिकम् हैं, या भावना आदि के तीन स्कंधों से संबंधित हैं - इंद्रिय-चेतना से संबंधित। "सुख" और "दुःख" (सोमन-अस्सर्न, डोमनसम्) बुद्धि या वैचारिक चेतना से संबंधित हैं। "सुख" इनमें से अंतिम है जिसे पार किया जाना है; अन्य को ध्यान की पिछली अवस्थाओं के दौरान निष्कासित कर दिया गया है (अस. 175, 176)।

लेकिन यहाँ इन चारों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है, मानो ये सभी केवल इस चौथे ध्यान में ही पार हो चुके हों, ताकि संपूर्ण उन्मूलन की विधि द्वारा उस तीसरी प्रकार की भावना की सूक्ष्म और मायावी प्रकृति को अधिक स्पष्ट रूप से दर्शाया जा सके जिसे "तटस्थ" (अदुक्खम-असुख) या "निस्वार्थ" (उपेक्खा) कहा जाता है - सुखवादी मात्रा का शून्य बिंदु या रेखा, जैसा कि हम कह सकते हैं। इसके बाद, साइ. झुंड के शेष पशुओं को हटाकर मवेशियों के मुखियाओं के चयन की उपमा देता है, जिसका उल्लेख हार्डी ने किया है {ibid., 177; ईस्ट मोनाकिज़्म, 270)।

30.उपेक्खा-सतिपरिशुद्धिम। विभंग के अनुसार, शुद्ध की गई चेतना, चेतना में मौजूद अन्य सभी तत्वों का प्रतिनिधित्व करती है, जिन्हें समभाव के शांत माध्यम से स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है। इसके बाद दिन और रात के चंद्रमा की उपमा दी जाती है, जो हार्डी (उपरोक्त, 271) में भी दी गई है। उपेक्षा, ध्यान की अन्य अवस्थाओं में चेतना में अव्यक्त रहती है, लेकिन बौद्धिक और भावनात्मक अभ्यास की चमक से रंगहीन हो जाती है, जैसे दिन के समय अर्धचंद्र, आकाश में मौजूद होने के बावजूद, सूर्य की चमक से मंद हो जाता है (असल. 178)।

31.अर्थात्, "निराकारता" और "आत्म-संयम" (असल. 179)। अन्यथा, एकांगिकम ध्यानम की खोज की जाती।

32. मुद्रित पाठ में सतिंद्रियम शब्द नहीं है, यद्यपि संदर्भ के अनुसार इसकी स्पष्ट आवश्यकता है। के. इसे देते हैं।

33. पिटकों में आमतौर पर ध्यान का उल्लेख चार गुना क्रम में किया गया है। पंचगुण विभाजन वितको और विकारो के एक साथ नहीं, बल्कि क्रमिक रूप से उन्मूलन द्वारा प्राप्त किया जाता है। साइ के अनुसार, बुद्ध के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, शिक्षक के लिए यह वैकल्पिक था कि वह अपने विवेक से, अपने शिष्यों की विशेष मानसिक स्थिति के अनुकूल ढलते हुए, या अपने प्रवचन के प्रभावी प्रवाह को ध्यान में रखते हुए, समाधि का उपयोग करे। पिटकों से एक अंश उद्धृत किया गया है—संभवतः एस. 4. 363 या ए. 1. 299, एन. 2 {तुलना करें के वी. 413; मिल. 337)—जहाँ समाधि को इस प्रकार विभेदित किया गया है।

विटाको और विकारो होने के कारण,
केवल बाद वाला होने पर,
दोनों में से कोई भी न होना।

34. यह देखा गया है कि ध्यान की विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करने से पहले, विद्यार्थी को विशिष्ट तरीकों से स्वयं को शुद्ध और अनुशासित करना पड़ता था— सांसारिक मामलों पर ध्यान न देना, तार्किक चिंतन को त्यागना, इत्यादि। आत्म-संयम और गहन चिंतन के प्रत्येक कार्य के बाद ध्यान की विशेष अवस्था उत्पन्न होती थी। इन प्रक्रियाओं में एक पूर्व और एक पश्चात अवस्था होती थी, जिसे कम से कम बाद के ग्रंथों में क्रमशः उपचारा और अप्पना कहा जाता है। इन दोनों को जोड़ने वाला प्रभावी संज्ञान पैना का अभ्यास था, जिसे ग्रंथ में अभिफिना ("अंतर्ज्ञान") के रूप में जाना जाता है, संभवतः वांछित अप्पना या अवधारणा को प्राप्त करने के लिए मन की सहज या अवचेतन खोज। अब, प्रारंभिक चिंतन आसान था या कठिन, और रचनात्मक सामान्यीकरण का प्रयास सुस्त था या जोरदार, यह क्रमशः विद्यार्थी के नैतिक स्वभाव और मानसिक क्षमता पर निर्भर करता था (असल. 182-184)।

ए. ii. 149-152 में दिए गए दोहरे स्पष्टीकरण को देखें, जहाँ दोनों व्याख्याओं में अंतर्ज्ञान की शीघ्रता या सुस्ती विश्वास, ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता और बुद्धि की पाँच शक्तियों की तीक्ष्णता या शिथिलता पर निर्भर करती है। पहले स्पष्टीकरण में, आत्म-अवशोषण में सहजता या कठिनाई इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यार्थी स्वभाव से भावुक, द्वेषपूर्ण, सुस्त है या इन तीनों का विपरीत है। दूसरे विवरण में, यदि विद्यार्थी ने अपनी चेतना को बुरी चीजों (नीचे देखें, § 263), संसार से घृणा, अनित्यता और मृत्यु की अनुशासनात्मक अवधारणाओं से भर दिया है, तो प्रगति कष्टदायक होती है; यदि वह केवल चार ध्यान का अभ्यास करता है, तो प्रगति आसान होती है।

अभिन्न के विभिन्न अर्थों पर (जो इस कृति में किसी अन्य संदर्भ में नहीं मिलते), "बुद्ध के संवाद", खंड 62 देखें। उपचारा और अप्पना पर, "योगवाचार की नियमावली", पृष्ठ 11 देखें। विशुद्धि मार्ग और विभंग के संपादन के समय हमें संभवतः पूरी प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी मिलेगी।

35. तुलना करें § 1.

36. प्रत्येक खंड में एक ही प्रश्न को दोहराया हुआ समझा जाना चाहिए।

37. कहने का तात्पर्य यह है कि वे बोध या अवधारणाएँ जिन पर विद्यार्थी ध्यान केंद्रित करता है, यहाँ उन्हें गहन चिंतन की दुर्बल या उदात्त अवस्था उत्पन्न करने की क्षमता रखने वाले के रूप में वर्गीकृत किया गया है। बुद्धघोष पूर्व प्रकार की वस्तु को मात्र टोकरी या थाली के समान उथली बताते हैं (असल. 184)। नीचे भी देखें, §§ 1019-1024।

38. धारा 1 देखें।

39. निम्नलिखित संक्षिप्त अंशों में पाठ में प्रश्न और उत्तर क्रमशः धारा 181 में दिए गए उदाहरण के अनुरूप हैं और उसी प्रकार प्रारंभ होते हैं।

40. पाठ में, धारा 185 में, 'पथमम झिलनाम' के बाद '...पे...पंचम अम झानम' पढ़ें। ऐसा ही K. धारा 180 देखें। फिर, 'अविक्खेपो होती' के बाद '...पे...' जोड़ें।

41. पाठ में 'परित्तरम-मनम' से पहले 'परित्तम' जोड़ें।

42. ध्यान की उत्पत्ति के लिए पहला उपाय पृथ्वी-दर्शन था (ऊपर देखें)। सुत्त पिटक में - अर्थात, महा सकुलुदायि-सुत्त (एम. द्वितीय, पृष्ठ 14) में, और झाना यग्गा (ए. आई. 41) में - दस कसिनों की गणना की गई है, जो धम्मसंगनी में छोड़े गए हैं वे बुद्धि (वी इन एन ए) और अंतरिक्ष (आकासा) के कसिन हैं।

इस चूक और दो चूके हुए कसिनों की प्रकृति पर बुद्धघोष (असल. 186) ने टिप्पणी की है। वे पहले कसिन की चूक का कारण यह बताते हैं कि यह §§ 265-268 में दिए गए चार अरुप्पझनानि में से दूसरे के समान है, और दूसरे कसिन की चूक का कारण इसकी अस्पष्टता बताते हैं।

या तो यह "पीले" कसीना (सूर्यप्रकाशित स्थान) के समान है, या यह प्रथम अरुप्पझना (§ 265) के समान है। सीलोन परंपरा में भी दस कसीना हैं, लेकिन विन्नाना के स्थान पर आलोक (प्रकाश) को स्वीकार करती है। और इसमें भूत-कसीना के रूप में एक और अर्ध-कसीना शामिल है, या चारों तत्वों को सामूहिक रूप से लिया गया है, प्रत्येक पर अलग-अलग चर्चा के बाद। "योगवाचारा मैनुअल, 1896", पृष्ठ 48-52 देखें।

43. महा-परिनिब्बान-सूत्र (पृष्ठ 28, 29; एसबीई 11:49, 50 और ए. 4:305 देखें) में आठ "स्थल" या "निपुणता की स्थिति" दी गई हैं, लेकिन पहले चार के सूत्र हमारे पाठ से थोड़े भिन्न हैं। सीलोन इस विसंगति की ओर ध्यान आकर्षित करता है (असल. 189)। सुत्तंत में, चारों अवस्थाओं में देखी गई वस्तुओं के सौंदर्य संबंधी पहलू को ध्यान में रखा जाता है, जिनमें से दो में विशिष्ट अंतर यह है कि व्यक्ति अपने स्वयं के शारीरिक ढांचे के किसी भाग पर सचेत रूप से ध्यान केंद्रित करता है, जिसे ओरिपस्कन्ध कहा जाता है।

धम्मसंगनी में इस चेतना को सभी अवस्थाओं से बाहर रखा गया है। इसके समावेशन और अपवर्जन के माध्यम से शिक्षा देना "गुरु के प्रवचन में मात्र एक भावभंग" (देसन-विलास-मत्तम एव) कहलाता है। निम्नलिखित टिप्पणी देखें।

44.अज्जत्तम अरूपसनि (= ना रूपसनि)। यह अनुवाद बुद्धघोष की टिप्पणियों (असल. 188, 189, 191) के अनुसार है। शिष्य ने, या तो प्रयास करके असफल होने के कारण, या प्रयास न करने की इच्छा के कारण, अपने बालों या अन्य किसी भी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करके ध्यान नहीं लगाया है। महा एहुलोवदा-सूत्र (एम. i. 62) देखें, जहाँ व्यक्ति के रूप-स्कंध को चार तत्वों, अज्जत्तिका पथविध-हतु, आदि के संदर्भ में पूरी तरह से समझाया गया है, जिसकी शुरुआत 'बाल' और अन्य से होती है। सीजे. § 248 एन.

45. प्रश्न में उल्लिखित बाह्य वस्तुओं का चिंतन कसीना प्रणाली (असली. 188) के आधार पर किया जाता है। और जिस प्रकार एक सुपाच्य व्यक्ति एक चम्मच चावल को झटपट खा लेता है, उसी प्रकार उदात्त सत्य का साधक वस्तु के महत्वहीन होने पर बाह्य बोध की प्रारंभिक क्रिया को शीघ्रता और सरलता से पार कर जाता है और वांछित अवधारणा (अप्पना) को प्रकट करता है।

बुद्धघोष के अनुसार, जिन निर्णयों द्वारा वे बौद्धिक निपुणता की चेतना को दर्ज करते हैं, उनका संदर्भ ज्ञानोदय के पूर्व अनुभव से है, और वे केवल एक पहचान, या तर्कशास्त्र के संदर्भ में, एक लघु आधार वाक्य की पहचान को इंगित करते हैं। लेकिन वे कहते हैं कि निकायों पर सिंहली टीका में, उनकी व्याख्या नए प्रकाश की वर्तमान प्राप्ति, एक नई नैतिक उपलब्धि के रूप में की गई है, जो विचारक द्वारा बोधगम्य चेतना से परे जाने के बाद प्राप्त होती है (वही)।

46. यहाँ "विचार के विषय" कसिन हैं, जिन्हें अनिवार्य रूप से "सीमित" या महत्वहीन माना जाता है। इसलिए दो प्रकार हैं, चार नहीं; और इसलिए आठ, सोलह नहीं। अप्पमनैन शब्द केवल एक सापेक्ष अनंतता को दर्शाता है, पूर्ण अनंतता को नहीं, इसलिए प्राप्त ध्यान की गहराई, शुद्धिकरण प्रभावकारिता, या अन्य चीजों में केवल मात्रा का अंतर है। तदनुसार, उसी दृष्टांत का प्रयोग किया जाता है, लेकिन मात्रा में भिन्नता के साथ। पेटू, चावल की एक छोटी थाली से असंतुष्ट होकर, और अधिक की मांग करता है। इसलिए, पूर्ण आत्म-एकाग्रता का लक्ष्य रखने वाला साधक (अब नानुत्तरो, नानुत्तरिको नहीं), उस अनंत को अनंत कहने से इनकार करता है जो ऐसा प्रतीत होता है (वही)।

47. इसलिए के.

48. सुवन्न अर्न और दुब्बनम के सामान्य सौंदर्य संबंधी पदनामों को साई. में परिशुद्धा और उसके नकारात्मक द्वारा प्रतिलेखित किया गया है। जिस प्रकार दृश्य वस्तुओं की सीमित प्रकृति को वैचारिक प्रयासों के लिए एक प्रभावी विचार माना जाता था, और 'अनंत' की धारणा

सुस्ती के लिए सहायक थी, उसी प्रकार सुंदर और कुरूप को क्रमशः शत्रुतापूर्ण आचरण और वासना में लिप्त होने के लिए निर्धारित किया गया था। कहा जाता है कि इन सब की उपयुक्तता पर विशुद्धि मार्ग (असल. 189) के चरिया-निद्देश में चर्चा की गई है।

49. धारा 211-213 पर टिप्पणी देखें। क्रमानुसार, बुद्धघोष की वहाँ दी गई टिप्पणी पाठ के उस भाग पर लागू होती है। संदर्भ के अनुसार, यह यहाँ अधिक उपयुक्त हो सकती है, जहाँ बाह्य रूपों या कसीना-वस्तुओं को अब "अनंत" के रूप में देखा जा रहा है। हालाँकि, यह विचार दोनों अंशों पर लागू होता है।

50. यह सर्वविदित है कि नीलम द्वारा इंगित रंग की सीमा निर्धारित करना उतना ही कठिन है जितना कि शब्द के रंग-मूल्य का निर्धारण करना। बाद वाले शब्द की तरह, नीलम मूल रूप से रंगत की तुलना में चमक को अधिक संदर्भित करता होगा, जिसका अर्थ है गहरा चमकदार, काला या निग्रेसेंट। किसी भी तरह, मानव शरीर में इसके उदाहरण के रूप में मानव बाल या पित्त (पित्त द्रव) के संदर्भ में इस शब्द को "नीला" के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है। अनुच्छेद 248 के नोट 2 देखें। जाट. iii. 138 में बालों के रंग या बाल धोने को नीलियम कहा गया है - शायद उसी तरह जैसे हम जूतों के लिए "कालापन" या "रसेट पॉलिश" की बात करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि निल एम नामक रंग, यदि सामान्य रंग नहीं तो कम से कम मानव बालों का वांछित रंग तो था ही।

यदि यह हमारे द्वारा एक विशिष्ट नीले रंग के रूप में समझा जाता, तो यह शब्द आकाश और समुद्र, या इंद्रधनुष की बैंगनी पट्टी पर लागू होता, जो कि, मेरा मानना है, कभी नहीं होता। संभवतः इन संदर्भों में हमारे अपने रंग-समानांतर आधुनिक विकास हैं। देखें हैवलॉक एलिस, समकालीन समीक्षा, खंड 99, पृष्ठ 727। मुझे बताया गया है कि आधुनिक हिंदू रंग-शब्द काफी हद तक फारसी मूल के हैं।

51. नीलानिदासनम, जो कि साइप्रस (190) के अनुसार, बिना किसी रुकावट के नीले रंग की एकसमान चादर को दर्शाता है। इस और अगले खंडों में रंग एक फूल, कपड़े के टुकड़े या किसी अन्य आधार में मौजूद हो सकते हैं।

52. शेष तीन अंग्रेजी रंग-नाम पिछले मामले की तरह ही पाली शब्दों से मिलते-जुलते हो सकते हैं। देखें एसबीई 11, loc, cit. सुत्त में अनुवादित रंगों के उदाहरण दिए गए हैं, और आश्चर्यजनक रूप से, "सफेद" को दूध या दूर हिमालय की बर्फ से नहीं, बल्कि सुबह के तारे से दर्शाया गया है।

53. अगले अध्याय, §§ 265-268 में आठ मुक्ति में से चार और दी गई हैं। केवल आठवीं मुक्ति इस कृति में नहीं दी गई है। महा परिनिर्वाण सुत्त, पृष्ठ 30; ए. iv. 306 देखें। साई. (190) के अनुसार, "मुक्ति" (विमोक्खम, या अधिमुच्चनम्) शब्द का प्रयोग "प्रतिकूल परिस्थितियों" और उनके मोहक आकर्षणों से मुक्त होने को दर्शाने के लिए किया जाता है, ताकि ध्यान उस पूर्ण वैराग्य और विश्वास के साथ बना रहे जो बच्चा अपने पिता की गोद में बैठा होता है, उसके छोटे अंग लटकते रहते हैं, उनकी पकड़ की आवश्यकता नहीं होती।

54. रूपी. साई. के अनुसार (190), यह अज्झत्तम रूपसन्नि के समतुल्य है—अर्थात्, "अपने शारीरिक स्व के किसी भी भाग के प्रति अचेतन" शब्द के विपरीत, जो कि महारत के पड़ावों, सुप्रा, § 204 इत्यादि में वर्णित मनोवृत्ति है। चयनित परिकमम "अपने बाल और शेष भाग" है। यदि नीला परिकमम की खोज की जाती है, तो ध्यान बालों, पित्त (पित्त तर्न) या आँख की पुतली पर केंद्रित किया जाता है। यदि प्रेरण पीले रंग के माध्यम से हो, तो वसा या त्वचा को लिया जा सकता है; यदि लाल हो, तो मांस, रक्त, या जीभ, या हाथों या पैरों की हथेलियाँ आदि; यदि सफेद हो, तो दांत, नाखून, या आँख का सफेद भाग। साथ ही "वह नीला या अन्य कसिन में ध्यान-दृष्टि से बाहरी शारीरिक रूपों को देखता है" (झनाचक्खुना पस्साति)।

गहन ध्यान के इस दोहरे प्रयास को कैसे अंजाम दिया गया, यह मैं पूरी तरह से नहीं समझ सकता, लेकिन बुद्धघोष एक से अधिक बार हमें अधिक विस्तृत विवरण के लिए यिशुद्धि मार्ग का संदर्भ देते हैं।

55. अर्थात्, जैसा कि साइ. (191) कहते हैं, यहाँ अवधारणा (अप्पन अ) की सचेत प्राप्ति का नहीं, बल्कि विशेष कसिना में रंग या चमक की पूर्णता या शुद्धता की चेतना का अभिप्राय है। (स्वाभाविक रूप से, सही पाठ सुभन ति होना चाहिए।) और बुद्धघोष इस दृश्यात्मक चेतना को नैतिक रूप से प्रतिकूल परिस्थितियों से मुक्ति की भावना को उसी प्रकार प्रज्वलित करने वाला बताते हैं, जैसे कि नैतिक सौंदर्य की वह अनुभूति जो निम्नलिखित खंडों के उदात्त निवासों में अनुभव की जा सकती है। यहाँ उद्धृत पति-संभिदा-मार्ग के अनुसार, जब प्रेम, दया आदि के हृदय से पूरे विश्व को व्याप्त करने पर, सभी जीवित प्राणियों से घृणा की भावना जड़ से उखड़ जाती है, तो विद्यार्थी विचार की महिमा से अभिभूत हो जाता है और अपनी मुक्ति के लिए प्रयास करता है।

56. इन चार महान अभ्यासों पर, एहिस डेविड्स, एसबीई xi. 201, n. देखें; और, इनकी मुक्तिदायक प्रभावकारिता पर, एम. i. 38 देखें। बुद्धघोष अधिक विस्तृत व्याख्या के लिए पाठक को अपने विशुद्धि मार्ग की ओर पुनः निर्देशित करते हैं (अध्याय ix देखें, और हार्डी, 'पूर्वी मठवाद', पृष्ठ 243 आदि देखें)। ये चारों यहाँ केवल *शुद्धिका' सूत्रों के अंतर्गत दिए गए हैं—अर्थात् (क) और (ख) शीर्षकों के अंतर्गत। परन्तु (ग), या प्रगति के तरीके, साथ ही (घ) और (ङ), प्रत्येक मामले में अनुसरण करते हुए समझे जाते हैं (असल. 192)। इस

संदर्भ में विचार का विषय (अ राम-म नाम) 'सीमित' होगा यदि विद्यार्थी केवल सीमित संख्या में प्राणियों पर प्रेम आदि में लीन रहता है; 'अनंत' होगा यदि उसका हृदय विशाल संख्या में प्राणियों को समाहित करता है।

इस कृति में टीकाकार ने 'आवासों' के स्वरूप और उनके आपसी संबंधों पर काफी कुछ कहा है (पृष्ठ 193-195)। सर्वप्रथम, प्रत्येक निवास के लक्षण और उनकी विपत्ति (विपत्ति) का पूर्ण वर्णन किया गया है। आसक्ति (सिनहसंभवो) प्रेम की विपत्ति है, जिसका मूल तत्व परोपकारी आचरण आदि है। आँसू और इसी प्रकार की भावनाएँ करुणा की उतनी सच्ची अभिव्यक्ति नहीं हैं जितनी दूसरों के दुखों को सहना और उन्हें दूर करना। हँसी और इसी प्रकार की भावनाएँ सहानुभूति (मुदिता) की उतनी वास्तविक अभिव्यक्ति नहीं हैं जितनी दूसरों की उपलब्धियों की सराहना करना। और एक उदासीनता (उपेक्खा) की स्थिति भी है जो अज्ञान से उत्पन्न होती है, न कि मानव कर्म के उस ज्ञान से जो भावनाओं को शांत कर सकता है।

आगे वे चार असामाजिक मनोवृत्तियों का वर्णन करते हैं जिन्हें इन नैतिक अनुशासनों द्वारा जड़ से उखाड़ फेंकना है, क्रमानुसार — दुर्भावना (व्यापदो), क्रूरता (विहेष), घृणा (आरती) और वासना (रागो) — और बताते हैं कि प्रत्येक सद्गुण का एक दूसरा दुर्गुण भी होता है। वे इसे उसका निकट शत्रु कहते हैं, क्योंकि यह उसके नैतिक विपरीत की तुलना में कम प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है, बाद वाला एक ऐसे शत्रु के समान है जिसे जंगल और पहाड़ियों में दूर घात लगाकर बैठना पड़ता है। प्रेम और प्रतिशोधी आचरण एक साथ नहीं रह सकते। इस मामले में सफल होने के लिए, प्रेम को निर्भयतापूर्वक विकसित किया जाना चाहिए। लेकिन जहाँ प्रेम और उसके लक्ष्य में बहुत अधिक समानता होती है, वहाँ प्रेम को वासना से खतरा होता है। इस पक्ष में प्रेम की अच्छी तरह रक्षा की जानी चाहिए। फिर, करुणा का निकट शत्रु, क्रूरता से भी अधिक कपटी, आत्म-दया है जो उस चीज़ के लिए तड़पती है जो किसी के पास नहीं है या खो गई है — एक नीच, अपवित्र उदासी। और जो कुछ व्यक्ति के पास है, उसी में निहित सांसारिक सुख, या जो कुछ उसने खोया है, उसके प्रति विस्मृति के परिणामस्वरूप, दूसरों के सौभाग्य की सराहना को दबाने के लिए घात लगाए बैठा रहता है। अंत में, सांसारिक व्यक्ति की अविवेकी उदासीनता होती है, जिसने सीमाओं पर विजय प्राप्त नहीं की है और न ही कारण और परिणाम को समझा है, क्योंकि वह बाहरी चीजों से ऊपर उठने में असमर्थ है।

उनके शेष विचार चारों लोकों में आवश्यक नैतिक क्रम, उनकी साधना में विधि का पालन करने के महत्व और अंत में उनके तकनीकी नाम 'अप्पमन्ना' या 'अनंतता' पर केंद्रित हैं। इस संदर्भ में वे हार्डी (पृष्ठ 249) द्वारा दिए गए माता और उसके चार बच्चों के मार्मिक उदाहरण को दोहराते हैं। शिशु के विकास के लिए उसकी इच्छा को 'मेट्टा', बीमार बच्चे के स्वस्थ होने के लिए 'करुणा', युवक द्वारा प्रदर्शित गुणों के संरक्षण के लिए 'मुदिता' और अपने वयस्क पुत्र के जीवन में बाधा न डालने की उसकी चिंता को 'उपेक्खा' कहा गया है। यह ध्यान देने योग्य है कि जब हार्डी, एक विदेशी की मुदिता की कमी के साथ, बौद्ध भिक्षु (पृष्ठ 250) की निंदा करते हैं कि वह एकजुटता के गुणों के बारे में तो सोचते हैं लेकिन उनका अभ्यास नहीं करते, तो वे पूरी तरह से भूल जाते हैं कि ये अभ्यास तो केवल दूसरों की बौद्धिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इच्छाशक्ति की तैयारी मात्र हैं, जिसके लिए संन्यासी का जीवन काफी हद तक समर्पित था, और जिसका महत्व पश्चिमी लोग, दान के भौतिक रूपों के प्रति अपने उत्साह में, आज भी उसके वास्तविक मूल्य पर नहीं समझते हैं। और बौद्ध धर्म बौद्धिक नियंत्रण के बिना अच्छे आवेगों को बेलगाम छोड़ने में विश्वास नहीं करता था।

57. प्रेम में अनिवार्य रूप से सुख निहित है (सोमनस्सम् = चेतसिकम् सुखम्, § 10, n.), इसलिए इसे चौथे - या (ख) के अंतर्गत, पाँचवें - ध्यान के माध्यम से विकसित नहीं किया जा सकता है।

58. पाँचवें ध्यान को छोड़ना। पिछला नोट देखें।

59. प्रथम ध्यान का सूत्र दस असुभों में से प्रत्येक के मामले में दोहराया जाता है, लेकिन केवल प्रथम असुभ के मामले में। क्योंकि, साइ. (पृष्ठ 199) के शब्दों में, 'जैसे तेज बहने वाली नदी में नाव को केवल पतवार की शक्ति से ही स्थिर किया जा सकता है, वैसे ही विचार की कमजोरी (दुब्बा-लत्ता) (इस मामले में) से मन को उसके अमूर्तता में केवल वैचारिक गतिविधि (वितक्को) की शक्ति से ही स्थिर किया जा सकता है।' और प्रथम ध्यान के बाद इस गतिविधि का त्याग कर दिया जाता है।

60. नैतिक अनुशासन के इस विशिष्ट रूप के अधिक विस्तृत विवरण के लिए, पाठक को फिर से विशुद्धि मार्ग (अध्याय 6) का संदर्भ दिया जाता है। हार्डी ("ईस्ट मोन"), जिन्होंने विशुद्धि मार्ग पर सिंहली टीका से बड़े पैमाने पर उद्धरण दिए हैं, का भी संदर्भ लिया जा सकता है (पृष्ठ 247 और आगे)। सतिपथाना सूत्र (डी. 22. वारेन, "बौद्ध धर्म अनुवाद में", पृष्ठ 353 और आगे देखें; और एमआई 58) में नौ असुभ ध्यान विधियों का वर्णन कुछ भिन्न शब्दों में किया गया है। एसवी (पृष्ठ 129-131) में, "मूल" ध्यान से शुरू होने वाले पांच असुभों को सजगता और अनासक्ति के संभोग के साथ निर्धारित किया गया है।

और वही पाँच विधियाँ अ. i. 42 (तुलना करें अ. iii. 323) के ध्यान वग्ग में दी गई हैं। यहाँ दी गई दस विधियों के बारे में साई. (पृष्ठ 197-199) में कहा गया है कि ये उन लोगों के लिए निर्धारित हैं जो शरीर की सुंदरता से भावुक रूप से प्रभावित होते हैं - आकृति, त्वचा,

गंध, दृढ़ता या निरंतरता, मोटापा, अंगों और छोरों, समरूपता, अलंकरण, शरीर के साथ स्वयं का एकात्मीकरण, या इसके अधिकार में संतुष्टि (?कये ममत्तम्; तुलना करें एसएन 951), और दाँत। इस प्रकार की मन-साधना के लिए मृत शरीर आवश्यक नहीं है, साई. उन थेरों के उदाहरण देता है जिन्होंने किसी व्यक्ति के दाँतों की एक झलक या किसी राजा को उसके हाथी पर देखकर आवश्यक ध्यान प्राप्त किया। आवश्यक प्रक्रिया किसी भी जीवित प्राणी की क्षणभंगुरता को स्पष्ट और साहसपूर्वक समझना था।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक1-भाग1-अध्याय 3

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 1 - विचारों की उत्पत्ति
- भाग 1 - चेतना की उत्तम अवस्थाएँ
अध्याय III - निराकार ब्रह्मांड के संबंध में अच्छाई
अरुपावकारा कुसलम
[पृष्ठ 71] निराकार अस्तित्व से जुड़े चार ध्यान (चत्तरी अरुपज्जनानी)।[1]

1. असीम अंतरिक्ष का गोला (आकासनचयतनम्)।

[265] कौन से राज्य अच्छे हैं?

[पृष्ठ 72] जब वह निराकार स्वर्गों को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार, रूप की सभी चेतना से पूर्णतः परे जाकर, इंद्रिय प्रतिक्रिया की चेतना के लुप्त होने[2] से, अनेकता की किसी भी चेतना से ध्यान हटाकर[3], वह उस तल्लीन ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है जो असीम अंतरिक्ष के एक क्षेत्र की चेतना के साथ होता है — [पृष्ठ 73] यहाँ तक कि चौथा ध्यान, जिसे प्राप्त करने के लिए[4] सुख की सभी भावनाएँ त्याग दी जानी चाहिए, और दुख की सभी भावनाएँ त्याग दी जानी चाहिए, और सुख और दुख का वह मिट जाना चाहिए जो वह पहले महसूस करता था — (तल्लीन ध्यान) जो अनासक्ति से ओतप्रोत है, और जहाँ न सुख का अनुभव होता है और न ही कोई दुख, बल्कि केवल वह पूर्ण पवित्रता जो सचेतनता और अनासक्ति से आती है — तब संपर्क, आदि... [cf. § 165] जो संतुलन उत्पन्न होता है, ये... ये अच्छी स्थितियाँ हैं।

2. अनंत बुद्धि का क्षेत्र (विन्ननानकायतनम)।[5]

[266] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह निराकार स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए, उस मार्ग का अभ्यास करता है, और असीम अंतरिक्ष के क्षेत्र से पूरी तरह से परे जाकर, उस तल्लीन ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है जो अनंत बुद्धि के क्षेत्र की चेतना के साथ होता है - यहाँ तक कि चौथा ध्यान, जिसे प्राप्त करने के लिए सभी सुख-सुविधाओं को त्याग देना चाहिए, आदि।

[पिछले भाग की तरह जारी रखें।]

3. शून्यता का क्षेत्र (अकिंचन्नयतनम)।

[267] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह निराकार स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और अनंत बुद्धि के क्षेत्र से पूर्णतः परे जाकर, उस तल्लीन ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है जो शून्यता के क्षेत्र की चेतना से युक्त होता है—अर्थात् चौथा ध्यान, जिसे प्राप्त करने के लिए सभी सुख-सुविधाओं का त्याग करना आवश्यक है, इत्यादि।

[धारा 265 के अनुसार जारी रखें।]

4. वह क्षेत्र जहाँ न तो बोध है और न ही अबोध (नेवा-सन्ना-नासन्नायतनम्)।

[268] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह निराकार स्वर्गों को प्राप्त करने के लिए उसका मार्ग बनाता है, और शून्यता के क्षेत्र से पूरी तरह से परे जाकर, उस तल्लीन ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है जो एक ऐसे क्षेत्र की चेतना के साथ होता है जहाँ न तो बोध होता है और न ही अबोध [8] —यहाँ तक कि चौथा ध्यान, जिसे प्राप्त करने के लिए सभी सुख-सुविधाओं को त्याग देना चाहिए, आदि।

[धारा 265 के अनुसार जारी रखें।]

[पृष्ठ 75] निराकार अस्तित्व से जुड़े चार ध्यान सोलह संयोजनों में विकसित किए जा सकते हैं।

- फुटनोट:
1. ये अक्सर निकायों में आठ विमोखों या मुक्ति के चौथे से सातवें क्रम में दिखाई देते हैं (देखें §§ 248- 250; महा पर. सूत्र, पृष्ठ 30; ए. iv. 306)। हालांकि विशुद्धि मार्ग (अध्याय iii) में इनका वर्णन है, बुद्धघोष केवल विभंग में दिए गए इनके विवरण से तुलना करते हैं। श्लोक iii. 237 में, और अक्सर मज्झिमा में, ये चार ध्यान के ठीक बाद बिना किसी सामूहिक उपाधि के आते हैं, न कि चौथे ध्यान के सहवर्ती के रूप में।

वहाँ भी, सूत्रों में वर्तमान कृति के सूत्रों से यह थोड़ा सा अंतर है कि अमूर्तता के प्रत्येक चरण की सचेत प्राप्ति को पहचान के एक संक्षिप्त प्रस्ताव द्वारा व्यक्त किया जाता है, जैसे, ananto akaso ti . . . n'atthi kind ti (यह असीम अंतरिक्ष है! . . . कुछ भी नहीं है!)। साई. इसे एक विचित्र तर्क द्वारा समझाते हैं जो संयोगवश रुचिकर है (पृष्ठ 204)। बुद्ध की इच्छा थी कि वे, पिछली प्रक्रिया की तरह ही, इस प्रक्रिया में भी, विचार के चार विषयों [arammanani; ऊपर, (d) के अंतर्गत देखें] का अध्ययन करें। और इनमें से पहला यह है कि किसी का विषय "सीमित" है।

लेकिन यदि विद्यार्थी असीम अंतरिक्ष की अविभेदित चेतना प्राप्त कर लेता है और 'यह असीम है!' जैसे विस्मयादिबोधक विचार से इसके स्वरूप को जान लेता है, तो वह तार्किक रूप से इसे सीमित नहीं मान सकता। यदि मैं बुद्धघोष की सही व्याख्या करूँ, तो बौद्ध दर्शन में अक्सर पाए जाने वाले इन विस्मयादिबोधकों का एक रोचक अर्थ निकलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये सचेतन मान्यता की क्रिया का संकेत देते हैं।

2. विद्यार्थी को रूप जगत में अपनी सारी रुचि और ध्यान हटा लेना चाहिए, और अपनी इंद्रियों पर पड़ने वाले बाह्य परिघटनाओं (जिनमें उसका स्वयं का रूप भी शामिल है) के बीच अंतर करना पूरी तरह से बंद कर देना चाहिए, जिससे संवेदनाएँ समाप्त हो जाएँ या एक समरूप, विस्तारित शून्यता की अनुभूति में विलीन हो जाएँ। संवेदी प्रतिक्रिया द्वारा व्यक्त पतिघो को दृष्टि-बोध, ध्वनि-बोध, गंध, स्वाद और स्पर्श-बोध के रूप में समझाया गया है।

"यहाँ विचार पाँच द्वारों के माध्यम से कायम नहीं रहता" (असल. 201, 202)। सबसे कठिन था ध्वनियों से सारा ध्यान हटाना। गौतम के गुरुओं में से एक, अलारा कलामा, जो कम से कम छठे विमोख (एम. आई. 164) तक इन तल्लीन अवस्थाओं में निपुण थे, को इस प्रकार तल्लीन होने की शक्ति प्राप्त थी कि वे अपने पास से गुजरने वाली सैकड़ों गाड़ियों को देख या सुन नहीं पाते थे (असल. 202)। पतिघो के मनो-शारीरिक उपयोग पर, रूप पर पुस्तक में इंद्रिय सिद्धांत देखें, नीचे, § 597 इत्यादि।

3. नानात्तसन्नानम् अमनसिकारा। बाद वाले शब्द के लिए, ऊपर पृष्ठ 5, नोट 1 देखें। ननात्तम् शब्द निकायों में दुर्लभ रूप से मिलता है; लेकिन एम. i. 3 देखें, जहाँ अवधारणाओं की एक श्रृंखला में, यह "एकता" के बाद और "समग्र" से पहले आता है (न्यूमैन ने विएलहाइट द्वारा अनुवाद किया है); साथ ही एस. iv. 113, 114 भी देखें, जहाँ इसे विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं, संबंधित विन्नना और परिणामी भावना के संदर्भ में समझाया गया है। बुद्धघोष द्वारा उद्धृत विभंग (पृष्ठ 202) में, इसे आठ प्रकार के अच्छे विचारों, बारह बुरे विचारों (नीचे, § 365), साथ ही इन विचारों के बाद लिए गए अच्छे और बुरे परिणामों के विचारों में प्रकृति की पारस्परिक विविधता या असमानता (ऐनमन्नाम असदिसा) के संज्ञान के रूप में समझाया गया है।

चित्तानी के स्थान पर सन्ना शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिससे संभवतः विविधता के बोध का अनुप्रयोग उन सभी "विचारों" के संवेदी आधार तक सीमित हो जाता है। फिर भी, संदर्भ यहाँ प्रयुक्त सानिया के एक निश्चित सामान्य, अमूर्त, "पुनः-प्रतिनिधित्वात्मक" अर्थ की ओर संकेत करता प्रतीत होता है। इसे मनोधातु या मनोविन्फियानाधातु में लीन व्यक्ति की चेतना कहा जाता है—अर्थात, प्रतिनिधि या पुनःप्रतिनिधित्वात्मक संज्ञान में— विचारों में या उन विचारों के संज्ञान में। इस संदर्भ में विचारणीयता अनेक प्रकार की संवेदी घटनाओं के बारे में है, और इसकी अमूर्त प्रकृति निश्चित रूप से उनकी विविधता को इसी रूप में समझने में निहित है।

4. पाठ में चौथे ध्यान का सूत्र अपरिवर्तित रहता है (संदर्भ 165)। लेकिन यह स्थान और निस्वार्थता से संबंधित जटिल विशेषणों के बीच फंसा हुआ है। इसलिए भाषा की भद्दीपन से बचने के लिए कुछ संशोधन आवश्यक था।

5. सख्ती से viiinananancayatanam. आमतौर पर लोपा गया शब्दांश (rulhi-saddo) Cy में देखा जाता है। (205).

6.के., यहाँ और अगले दो उत्तरों में, निकायों में प्रचलित प्रयोग के अनुसार समतिक्कम्मा क्रिया का प्रयोग किया गया है (देखें, उदाहरण के लिए,!), एमपीएस, 30; एम. आई. 174, 209; एस. iii. 237, 238; ए. iv. 306)। बुद्धघोष स्पष्टतः समतिक्कम्मा (2^5) पढ़ते हैं, जैसा कि इन चार अरुपज्जनों में से केवल पहले में अपरिवर्तनीय स्थिति है।

7. एक ऐसे शब्द की व्याख्या, जिस पर बुद्धघोष के विस्तृत वर्णन को सुनना सुखद होता, केवल यही दी गई है, "उसके लिए चिंतन करने योग्य किसी भी विषय का कोई अंत नहीं है" (शाब्दिक रूप से, मननशील; मनसिकतब्बा-वसेना) (असल. 205)। अगले चरण (§ 267) पर भी कोई प्रकाश नहीं डाला गया है (पृष्ठ 206)।

8. बुद्धघोष इस मानसिक अवस्था को चेतन संश्लेषणों के सूक्ष्म अवशेष (संस्कारवसेसा-सुखुमा-भावम्) की कार्यप्रणाली के संवर्धन के रूप में समझाते हैं। जहाँ तक बोध (संभवतः पूर्णतः अंतर्मुखी) प्रभावी रूप से कार्य करने में असमर्थ हो जाता है (पतु-सानिया-किच्चम्), यह अवस्था अबोधात्मक होती है। जहाँ तक वे सूक्ष्म, सूक्ष्म चेतन प्रतिक्रियाएँ बनी रहती हैं, यह अवस्था "अबोधात्मक नहीं" होती है।

चेतना में शून्य बिंदु के चारों ओर होने वाले इस दोलन को हार्डी द्वारा उद्धृत उपमाओं (इस पुस्तक से नहीं) द्वारा दर्शाया गया है (ओजे. सिट., 264), अर्थात्, एक कटोरे में उतना ही तेल होना चाहिए जितना सफाई के लिए पर्याप्त हो, लेकिन उसे उंडेला न जाए; और एक छोटा तालाब, जो पैर गीले करने के लिए पर्याप्त हो, लेकिन स्नान के लिए बहुत उथला हो। तेल और पानी दोनों का अस्तित्व या अनुपस्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि उनके संबंध में क्या क्रिया की जा सकती है।

साइ. आगे कहते हैं कि यह सीमांत बिंदु न केवल सन्ना में, बल्कि भावना, विचार और संपर्क में भी पाया जाता है (208)। चेतना की "दहलीज" और उसके आसपास एकत्रित अति- और अवचेतन स्तरों का अध्ययन मनोभौतिकी के अन्वेषक के लिए काफी परिचित है।

जो बात हमारे लिए अपरिचित है, वह है नैतिक विकास के हित में चेतना की सीमा का दोहन। यदि लाइबनिज़ को अवसर मिला होता, तो वे शायद नवा-सन्ना-नसाईइनायतनम में अपने लघु बोध के सिद्धांत की प्रेरणा पा सकते थे।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक1-भाग1-अध्याय 4

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण

- पुस्तक 1 - विचारों की उत्पत्ति
  - भाग 1 - चेतना की उत्तम अवस्थाएँ

अध्याय IV - तीनों लोकों से संबंधित भलाई में प्रभावशीलता के स्तर

[पृष्ठ 76] 1. इंद्रियों के ब्रह्मांड (कामावकारकुसलम) के संबंध में अच्छा।

[269] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब इंद्रिय जगत के विषय में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है, जो (I.) सुख से युक्त और ज्ञान से जुड़ा होता है — ऐसा विचार जो निम्न,

मध्यम

या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रभावकारिता का हो,[1] या जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा,

ऊर्जा

या [पृष्ठ 77] [कोई अन्य] विचार

या अन्वेषण हो;[2] या जिसमें प्रमुख प्रभाव निम्न,

मध्यम

या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रभावकारिता की इच्छा हो; या जिसमें प्रमुख प्रभाव निम्न,

मध्यम

या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रभावकारिता की ऊर्जा हो; या जिसमें प्रमुख प्रभाव निम्न,

मध्यम

या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रभावकारिता का [कोई अन्य] विचार हो; [पृष्ठ 78] या जिसमें प्रमुख प्रभाव निम्न,

मध्यम

या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रभावकारिता का अन्वेषण हो,[3] तब जो संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है — ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[270] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब इंद्रिय जगत के विषय में कोई अच्छा विचार उत्पन्न होता है जो (II.) सुख से युक्त हो, ज्ञान से जुड़ा हो और सचेत प्रेरणा से प्रेरित हो...

या (तीसरा) खुशी के साथ, और ज्ञान से असंबद्ध...

या (IV.) खुशी के साथ, ज्ञान से असंबद्ध, और एक सचेत मकसद से प्रेरित...

या (क्रिया) निस्वार्थता के साथ, और ज्ञान से जुड़ा हुआ...

या (VI.) निस्वार्थता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, और एक सचेत मकसद से प्रेरित...

या (सातवां) निस्वार्थता के साथ, और ज्ञान से असंबद्ध...

या (VIII.) निस्वार्थता से युक्त, ज्ञान से असंबद्ध और सचेत प्रेरणा से प्रेरित—

एक विचार जो निम्न स्तर का हो... या मध्यम स्तर का हो...
या अति उत्कृष्ट प्रभावकारिता का हो... [पृष्ठ 79] या वह प्रमुख प्रभाव जिसमें इच्छा,
या ऊर्जा,
या कोई अन्य विचार हो; या वह प्रमुख प्रभाव जिसमें निम्न,
मध्यम
या अति उत्कृष्ट प्रभावकारिता की इच्छा हो; या वह प्रमुख प्रभाव जिसमें निम्न,
मध्यम
या अति उत्कृष्ट प्रभावकारिता की ऊर्जा हो; या वह प्रमुख प्रभाव जिसमें निम्न,
मध्यम
या अति उत्कृष्ट प्रभावकारिता का कोई अन्य विचार हो; तब संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है - ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।[4]

2. रूप के ब्रह्मांड के संबंध में अच्छा।

[271] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, पृथ्वी को निहारते हुए प्रथम ध्यान (प्रथम समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जो निम्न,
मध्यम
या अति प्रभावी होता है; [पृष्ठ 80] या जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा,
ऊर्जा,
विचार
या अन्वेषण का होता है; या जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा... ऊर्जा... विचार...
निम्न,
मध्यम
या अति प्रभावी अन्वेषण का होता है—तब संपर्क... उत्पन्न होने वाला संतुलन—ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[272] अन्य ध्यानों के मामले में (क) और (ख) दोनों को दोहराएँ।

3. निराकार ब्रह्मांड के संबंध में अच्छा।

[273] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह निराकार स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार, रूप की सभी चेतना से पूर्णतः परे जाकर, इंद्रिय-प्रतिक्रिया की चेतना के लुप्त होने से, अनेक प्रकार की चेतना से ध्यान हटाकर, वह उस तल्लीन ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है जो असीम अंतरिक्ष के क्षेत्र की चेतना से युक्त होता है - यहाँ तक कि चौथे ध्यान में भी, जिसे प्राप्त करने के लिए सभी सुख-सुविधाओं को त्याग देना आवश्यक है, आदि - (तल्लीन ध्यान) जहाँ न तो अस्वस्थता है और न ही सुख, बल्कि केवल वह पूर्ण पवित्रता है जो सचेतनता और अनासक्ति से आती है, और जो निम्न स्तर की...
मध्यम स्तर की...
या अति उत्कृष्ट प्रभावकारिता की... या जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा...
या ऊर्जा...
या एक विचार...
या अन्वेषण... [पृष्ठ 81] या जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा... ऊर्जा... एक विचार...
निम्न स्तर के अन्वेषण...
मध्यम...
अत्यंत प्रभावीता—फिर संपर्क...जो संतुलन उत्पन्न होता है—ये...अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[274-276] यहाँ तीन शेष "निराकार अस्तित्व से जुड़े ध्यान" दिए गए हैं, जिनमें से प्रत्येक को पूर्वोक्त उत्तर में सूचीबद्ध विशेषताओं द्वारा संशोधित किया गया है। तुलना करें §§ 266-268. [5]

- फुटनोट:
1. उपरोक्त सभी विचारों और अभ्यासों की प्रभावी शक्ति या कर्म, जो किसी न किसी ब्रह्मांड में व्यक्ति के अस्तित्व को अच्छे के लिए परिवर्तित करते हैं, व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए प्रभावशीलता के तीन स्तरों में विभेदित किए गए प्रतीत होते हैं। कम से कम इस विचित्र खंड (पृष्ठ 211, 212) पर टिप्पणी से मुझे यही समझ आता है: "हीन" (हीनम) का अर्थ संचय के संदर्भ में तुच्छ समझा जाना चाहिए।" बाद के ग्रंथों में "संचय" लगभग हमेशा कर्म से जुड़ा होता है। परिश्रम करने, विशेष रूप से खोदने, ढेर लगाने के अर्थ में, इसका उपयोग पुनर्जन्म के मार्ग में व्यक्ति की क्षमता का निर्माण करने वाले निरंतर संचयी पुण्य या पाप की लाक्षणिक धारणा को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। तुलना करें मिल. 109; नीचे भी, § 1059, n. 9, 'वह जो परिश्रम करती है' पर। पट्टाना इस विषय पर अधिक प्रकाश डाल सकता है (एएसएल, वही)।

2. मेरे विचार से, कर्म के इस विशेष पहलू के साथ चार इद्धिपादों (एम. i. 103; ए. iii. 82; एसवी 264-266) के संबंध की व्याख्या भी आवश्यक है; क्योंकि ये किसी अन्य लोक में पुनर्जन्म की बजाय अर्हतत्व की ओर ले जाते हैं। शास्त्र केवल इतना कहता है कि जब कोई व्यक्ति संचय करते समय इच्छा या अन्य किसी भी चीज़ का त्याग करता है, तो उसे निम्न (प्रभावी) कहा जाता है; जब ये चारों अवस्थाएँ मध्यम या अति प्रभावी होती हैं, तो उन्हें तदनुसार कहा जाता है; और जब किसी ने इच्छा (चंदो), अर्थात् कर्म करने की इच्छा को अपना सर्वोपरि, प्रमुख और मार्गदर्शक बनाकर संचय किया है, तो प्रक्रिया को इच्छा के प्रबल प्रभाव में कहा जाता है। यही बात अन्य तीन के लिए भी लागू होती है।

यह खेदजनक है कि साई. में विमंसा (जांच) शब्द या इस चार पंक्तियों की श्रृंखला में इसकी उपयुक्तता पर चर्चा नहीं की गई है। वितक्को और विकार 0 के संबंध में इसके मनोवैज्ञानिक महत्व को जानना रोचक होता। इस श्रृंखला में दोहरी समरूपता का संकेत मिलता है: जैसे चंदो विरियार्न (क्रिया से क्रिया में परिवर्तित होने वाली कल्पना) से संबंधित है, वैसे ही चित्तम (विचार) विमंसा के विवेचनात्मक पुनर्प्रतिनिधित्वात्मक बौद्धिक चिंतन से संबंधित है। मैंने चित्तधिपटेय्यम का अनुवाद साई. (213) के अनुसार किसी अन्य विचार के प्रभाव से किया है, जहाँ इसे मूल "अच्छे विचार" से संबंधित विचार या अवस्था कहा गया है।

नीचे अधिपतेयों पर एक और संक्षिप्त टिप्पणी है, धारा 1034, खंड 2।

3. इस और आगे के उत्तरों में अपनाई गई सारणीबद्ध शैली का उद्देश्य न केवल प्रणाली का संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करना है, बल्कि पाली में (... पे... द्वारा व्यक्त) प्रत्येक सारणीबद्ध पद से पहले और बाद में उत्तर के अपरिवर्तनीय ढांचे की पुनरावृत्ति के लोप को भी दर्शाना है। इस और अगले उत्तर में कोमन अंक अध्याय 1 में 'विचार के आठ मुख्य प्रकार' के मूल कथन को संदर्भित करते हैं। स्पष्टतः प्रत्येक विचार के अरम्मनम के संवेदी आधार को यहाँ दोहराने का इरादा नहीं है।

4. धम्म संगानी में प्रचलित प्रक्रिया के अनुसार, जब एक वाक्य में अनेक विषयों को संयोजित किया जाता है, तो अंतिम विवरण केवल श्रृंखला के अंतिम विषय पर ही लागू होते हैं। इसलिए, विचार VIII के संदर्भ में "जांच" शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है, क्योंकि संभवतः यह "ज्ञान से असंबद्ध" है। इसी प्रकार, विचार III, IV और VII के संदर्भ में भी इसका प्रयोग नहीं किया जाता, लेकिन अन्य विचारों के संदर्भ में किया जाता।

5.§ 275 में पाठ अनजाने में मज्झिमम् को छोड़ देता है। . . पे. . . पैनिटम। . . पे. . . विमम् से पहले-साधिपतियम्।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक1-भाग1-अध्याय 5
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 1 - विचारों की उत्पत्ति
  - भाग 1 - चेतना की उत्तम अवस्थाएँ

अंतर्वस्तु

अध्याय V - उच्च आदर्श पर केंद्रित चिंतन

लोकुत्तराम चित्तम

===[पृष्ठ 82] I. पहला पथ (पथमो मग्गो।) [1] बीस महान विधियाँ (विसति महानाय)।===

1. तल्लीन ध्यान (झानम)।

(i.) शुद्धिकरण में प्रगति के चार तरीके (सुद्धिकपतिपाद)।

[277] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ने और पुनर्जन्म को समाप्त करने की दिशा में एक निरंतर प्रगति होती है[2] — और जब, ताकि वह [पृष्ठ 83] प्रथम अवस्था को प्राप्त कर सके, वह विचारों और मतों को त्याग देता है[3] और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसमें अवधारणा कार्य करती है और विवेचनात्मक विचार, जो एकांत से उत्पन्न होता है, आनंद और सहजता से भरा होता है, जिसमें प्रगति कठिन होती है और अंतर्ज्ञान सुस्त होता है — तब संपर्क,

भावना, बोध

,

चिंतन, विचार, अवधारणा, विवेचनात्मक विचार, आनंद, सहजता, आत्म-संयम , विश्वास, ऊर्जा, जागरूकता , एकाग्रता , ज्ञान , विचार, सुख, जीवन शक्ति और "मैं अज्ञात को जान लूँगा"[4] विश्वास करने की क्षमता, सही विचार, सही इरादा, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका[5], सही प्रयास, सही [पृष्ठ 84] सजगता, सही एकाग्रता;

आस्था, ऊर्जा,

जागरूकता,

एकाग्रता,

ज्ञान,

कर्तव्यनिष्ठा और

निंदा के भय जैसी शक्तियां ;

कामवासना,

घृणा,

सुस्ती,

लोभ और द्वेष का अभाव,

सही विचार,

विवेक,

निंदा का भय,

शांति, सहजता

,

लचीलापन,

कुशलता,

उपयुक्तता और इंद्रियों और विचारों में प्रत्यक्षता,

जागरूकता,

बुद्धिमत्ता,

शांति,

अंतर्दृष्टि,

समझ और संतुलन। अब ये—या उस समय उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ—ये अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[278-282] "संपर्क", "भावना", "धारणा", "सोच" और "विचार" का वर्णन §§ 2-6 में किया गया है।

[283] उस अवसर पर गर्भाधान क्या है?

तर्क, अवधारणा, जो उस अवसर पर स्वभाव, निर्धारण, ध्यान केंद्रित करना, मन का अनुप्रयोग, सही इरादा, "मार्ग-घटक", "मार्ग में निहित" [6] है - यह वह अवधारणा है जो तब है।

[284] "विवेचनात्मक विचार" का वर्णन § 8 में किया गया है।

[285] उस अवसर पर आनंद क्या है?

उस अवसर पर जो आनंद प्रसन्नता, उल्लास, उल्लास, आनंद, प्रसन्नता, प्रसन्नता, उत्साह, हृदय की उमंग है, वह आनंद जो महान जागरण [7] में एक कारक है - यही वह आनंद है जो तब होता है।

[पृष्ठ 85] [286] "आसानी" का वर्णन § 10 में किया गया है।

[287] उस अवसर पर आत्म-संयम क्या है?

स्थिरता, दृढ़ता, विचारों की तल्लीन स्थिरता जो उस अवसर पर विचलित न होने, संतुलन, अविचलित मानसिक प्रक्रिया, शांति, एकाग्रता की क्षमता और शक्ति, सही एकाग्रता, वह एकाग्रता जो महान जागृति का एक कारक है, एक "मार्ग-घटक", "मार्ग में निहित" - यही वह अवधारणा है जो तब मौजूद होती है।

[288] "विश्वास" का वर्णन धारा 12 में किया गया है।

[289] उस अवसर पर ऊर्जा की क्षमता क्या है?

उस अवसर पर जो मानसिक ऊर्जा का उद्भव होता है, वह प्रयास और निरंतर परिश्रम, वह परिश्रम और प्रयास, वह जोश और उत्साह, वह सामर्थ्य और धैर्य, वह अटूट प्रयास की अवस्था, वह निरंतर इच्छा की अवस्था, वह अविचल सहनशीलता की अवस्था, वह भार पर दृढ़ पकड़, वह ऊर्जा, वह ऊर्जा जो एक क्षमता और शक्ति के रूप में है, वह सही ऊर्जा, वह ऊर्जा जो महान जागृति का एक कारक है, मार्ग का एक घटक है, जो मार्ग में समाहित है - यही वह ऊर्जा है जो उस समय विद्यमान होती है।

[290] उस अवसर पर सचेतनता की क्षमता क्या है?

उस अवसर पर जो जागरूकता स्मरण कर रही है, उस जागरूकता को याद कर रही है[8] जो याद रख रही है, ध्यान में रख रही है, सतहीपन और विस्मृति के विपरीत; जागरूकता, एक क्षमता और एक शक्ति के रूप में जागरूकता, सही जागरूकता, वह जागरूकता जो महान जागृति में एक कारक है, एक पथ-घटक है, पथ में निहित है - यही वह जागरूकता है जो तब होती है।

[291] "एकाग्रता" को "स्वयं-संयम" के समान शब्दों में वर्णित किया गया है, § 287.

[पृष्ठ 86] [292] उस अवसर पर ज्ञान की क्षमता क्या है?

उस अवसर पर जो ज्ञान विद्यमान होता है, वह है समझ, खोज, शोध, सत्य की खोज, विवेक, भेद, विद्वता, निपुणता, सूक्ष्मता, आलोचना, चिंतन, विश्लेषण, व्यापकता, बुद्धिमत्ता, मार्गदर्शन, अंतर्दृष्टि, बुद्धि, प्रोत्साहन, एक क्षमता और शक्ति के रूप में ज्ञान, एक तलवार के रूप में ज्ञान, एक ऊँचाई के रूप में ज्ञान, एक प्रकाश के रूप में ज्ञान, एक महिमा के रूप में ज्ञान, एक वैभव के रूप में ज्ञान, एक कीमती पत्थर के रूप में ज्ञान; सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, वह सत्य की खोज जो महान जागृति[9] में एक कारक है, एक पथ-घटक, पथ में निहित - यही वह ज्ञान है जो तब विद्यमान होता है।

[293-295] "विचार", "खुशी" और "जीवंतता" की क्षमताओं का वर्णन §§ 17-19 में किया गया है।

[296] उस अवसर पर विश्वास करने की क्षमता क्या है, "मैं अज्ञात को जान लूँगा" (अनन्नतन्नसमितिन्द्रियम)?[10]

वह ज्ञान जो उन सत्यों की प्राप्ति कराता है[11] जो अवास्तविक, अनबोधित, अप्राप्य, [पृष्ठ 87] अनदेखे, अज्ञात हैं—वह ज्ञान जो समझ, खोज, शोध, सत्य की खोज आदि है।

[धारा 292 के अनुसार जारी रखें।]

[297] उस अवसर पर सही विचार क्या हैं? "बुद्धि" के लिए उत्तर दें, धारा 292।

[298] "आठ इरादे" को "अवधारणा" के समान शब्दों में वर्णित किया गया है, § 283.

[299] उस अवसर पर सही भाषण (सम्मा वका) क्या है?

उस अवसर पर त्याग करना, परहेज करना और बचना, और भाषण की चार त्रुटियों से घृणा करना[12], उन्हें न करना और न ही करना, कोई अपराध न करना, न ही उनके संबंध में अतिक्रमण करना और न ही उल्लंघन करना, उनके लिए मार्ग को नष्ट करना[13] - सही भाषण, एक मार्ग-घटक, मार्ग में निहित - यही सही भाषण है जो तब होता है।

[300] उस अवसर पर उचित कर्म (सम्मा कम्मंतो) क्या है?

उस अवसर पर आचरण की तीन त्रुटियों का त्याग करना, उनसे दूर रहना और उनसे विमुख होना[14], उन्हें न करना और न ही उन्हें पूरा करना, कोई अपराध न करना, न ही उनके संबंध में अतिक्रमण करना और न ही उल्लंघन करना, उनके लिए मार्ग को नष्ट करना - सही आचरण, मार्ग का एक घटक, मार्ग में निहित - यही सही आचरण है जो तब होता है।

[301] उस अवसर पर सही आजीविका (सम्मा अजीवो) क्या है?

उस अवसर पर त्याग करना, अनुचित आजीविका के तरीकों से परहेज करना, उनसे दूर रहना और उनसे विमुख होना, उन्हें [पृष्ठ 88] अप्राप्य और अधूरा छोड़ देना, उनके संबंध में कोई अपराध न करना, न ही अतिक्रमण करना और न ही उल्लंघन करना, उनके लिए मार्ग को नष्ट करना - सही आजीविका, मार्ग का एक घटक, मार्ग में निहित - यही सही आजीविका है जो तब मौजूद है।

[302-304] "आठ प्रयास", "सही जागरूकता", "सही एकाग्रता"[15], का वर्णन §§ 289-291 में किया गया है।

[305-311] "विश्वास", "ऊर्जा", "जागरूकता", "एकाग्रता" और "बुद्धि" की "शक्तियों" का वर्णन §§ 288-292 में किया गया है; "विवेकशीलता" और "दोष का भय" की शक्तियों का वर्णन §§ 30, 31 में किया गया है।

[312-319] "वासना का अभाव" और "घृणा का अभाव" का वर्णन धारा 32, 33 में किया गया है; "सुस्ती का अभाव" का वर्णन धारा 309 ("बुद्धि") में किया गया है; "लोभ का अभाव" और "द्वेष का अभाव" का वर्णन धारा 35, 36 में किया गया है; "ईमानदारी" और "निंदा का भय" का वर्णन धारा 38, 39 में किया गया है; "सही विचार" का वर्णन धारा 292 या 309 ("बुद्धि") में किया गया है।

[320] उस अवसर पर इंद्रियों की शांति क्या है?

उस अवसर पर जो शांति, जो संयम होता है, जो सुकून देता है, जो स्थिरता प्रदान करता है, जो भाव, बोध और संश्लेषण के स्कंधों की शांति है, जो शांति महान जागरण का एक कारक है - यही उस समय की इंद्रिय शांति है।

[321] उस अवसर पर विचार की शांति क्या है?

उस अवसर पर जो शांति, जो संयम होता है, जो सुकून देने वाला होता है, जो बुद्धि के स्कंध की शांति होती है, जो शांति महान जागरण का एक कारक है - यही उस समय मौजूद विचार की शांति है।

[322-331] उस अवसर पर भावना और विचार दोनों को दर्शाने वाले शेष पाँच गुण: — "उछाल", "लचीलापन", आदि — का वर्णन §§ 42-51 में किया गया है।

[332-337] "सजगता", "बुद्धि", "शांति", "अंतर्दृष्टि", "समझ" और "संतुलन" का वर्णन क्रमशः §§ 290, 292 ("ज्ञान"), 291, 292, 289 ("ऊर्जा") और 291 में किया गया है।

[पृष्ठ 89] ये, या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ होती हैं — ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अच्छी हैं।

[सारांश।]

[337ए]

उस समय स्कंध चार थे,
गोले दो थे,
तत्व दो थे,
पोषक तत्व तीन थे,

इंद्रियां नौ थीं,
ध्यान पांच प्रकार का था,
मार्ग आठ प्रकार का था,
शक्तियां सात थीं और
कारण तीन थे।
संपर्क,
भावना,
बोध,
सोच,
विचार, <
<
< ये प्रत्येक एकल [कारक] हैं;

स्कंधों के
भावना,
बोध,
संश्लेषण,
बुद्धि, <
<
< ये प्रत्येक एकल [कारक] हैं;

विचार का क्षेत्र,
विचार करने की क्षमता,
प्रतिनिधि बौद्धिकता का तत्व,
एक [प्रतिनिधि] राज्य का क्षेत्र,
एक [प्रतिनिधि] राज्य का तत्व। <
<
< ये प्रत्येक एकल [कारक] हैं।

ये, या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ — ये सभी अवस्थाएँ अच्छी हैं।
[पृष्ठ 90] [यहाँ सूचीबद्ध चार स्कंधों में से पहले दो से संबंधित प्रश्न और उत्तर धारा 59-61 के अनुसार ही दिए गए हैं।]
[338] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है? संपर्क,
चिंतन, [16] अवधारणा,
विवेचनात्मक विचार,
आनंद,
आत्म-संयम,
संकायों के
विश्वास,
एकाग्रता,
ऊर्जा,
ज्ञान,
सजगता,

जीवंतता,
यह विश्वास कि "मैं अज्ञात को जान लूंगा";
सही विचार,
सही आजीविका,
सही इरादा,
सही प्रयास,
सही वाणी,
सही जागरूकता,
सही कर्म,
सही एकाग्रता;
सात शक्तियाँ; [17]

कामवासना, घृणा और सुस्ती का अभाव ;
लोभ और द्वेष का अभाव,
निंदा का भय;
सही विचार;
कर्तव्यनिष्ठा,
शांति,
सहजता,
उत्साह,
फिटनेस,
लचीलापन,
इंद्रियों और विचारों की प्रत्यक्षता;
जागरूकता और बुद्धिमत्ता;
शांति और अंतर्दृष्टि;
पकड़ और संतुलन। [पृष्ठ 91] ये, या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ हों, भावना, बोध और बुद्धि के स्कंधों को छोड़कर — ये संश्लेषण के स्कंध हैं।
[सारांश में शेष बिंदुओं से संबंधित प्रश्न आगे पूछे जाने की संभावना है।]
[340] कौन से राज्य अच्छे हैं? [18]
जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे निरंतर प्रगति होती है और पुनर्जन्म का निवारण होता है—और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... तब उस तक प्रगति कठिन होती है, परन्तु अंतर्ज्ञान तीव्र होता है...
[या] [341] . . . उसकी ओर प्रगति आसान है, लेकिन अंतर्ज्ञान सुस्त है . . .
[या] [342] . . . उसकी ओर प्रगति आसान और अंतर्ज्ञान तीव्र होने पर — तब संपर्क . . . जो संतुलन उत्पन्न होता है — ये . . . अच्छी अवस्थाएँ हैं।
[343] चार प्रकार की प्रणाली में दूसरे से चौथे ध्यान के मामले में और पंच प्रकार की प्रणाली में पहले से पाँचवें ध्यान के मामले में चार तरीकों को दोहराएँ।
[यहाँ शुद्धिकरण में प्रगति के तरीके समाप्त होते हैं]।
(ii.) शून्यता (सुन्नतम) पर खंड। [19]
(ए और बी)
[344] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्र ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ने और पुनर्जन्म को समाप्त करने की दिशा में प्रगति होती है — और जब, प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए, वह विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, इंद्रिय-सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसमें अवधारणा कार्य करती है और विचार विवेचनात्मक होते हैं, जो एकांत से उत्पन्न होता है, आनंद और सहजता से भरा होता है, और जो शून्य होता है — तब संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है — ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[345] चतुर्विध प्रणाली पर द्वितीय से चतुर्थ ध्यान को और पंचविध प्रणाली पर प्रथम से पंचम ध्यान को दोहराएँ, प्रत्येक मामले में "और जो खाली है" वाक्यांश को जोड़कर।

[यहाँ समाप्त होता है] "शून्यता" खंड।

[पृष्ठ 93] (ग) प्रगति के तरीके, "शून्यता" को आधार मानते हुए (सुन्नत-मूलक-पतिपाद)।

[346] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान का अभ्यास करता है... और जब, प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए, वह... प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... उस तक पहुँचने में कठिनाई और अंतर्ज्ञान की सुस्ती के कारण, विधि शून्यता की अवधारणा है - तब संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है - ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[347-349] उसी सूत्र को दोहराएँ, प्रगति के शेष तीन तरीकों (§§ 176-179) को क्रमिक रूप से प्रतिस्थापित करते हुए, प्रत्येक मामले में प्लीरासे "शून्यता की अवधारणा होने की विधि" को जोड़ते हुए।

[350] उसी सूत्र को दोहराएँ, क्रमशः चतुर्गुण प्रणाली और पंचगुण प्रणाली पर शेष झदनाओं को प्रतिस्थापित करते हुए, और प्रत्येक मामले में प्रगति के चार तरीकों को लागू करते हुए, "शून्यता" पर अतिरिक्त वाक्यांश के साथ।

(ii.) लक्ष्यहीन (अप्पनिहितम्)। [20]

(ए और बी)

[351] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान का अभ्यास करता है... और जब, प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए, वह प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जो एकांत से उत्पन्न होता है, आनंद और सहजता से परिपूर्ण होता है, और जो लक्ष्यहीन होता है—तब जो संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है—ये... अवस्थाएँ अच्छी होती हैं।

[352] शेष तीन को प्रतिस्थापित करते हुए, और पाँचों झदनाओं को क्रमानुसार प्रतिस्थापित करते हुए, उसी फॉर्मिडा को दोहराएँ, प्रत्येक मामले में "और जो लक्ष्यहीन है" वाक्यांश को जोड़ते हुए।

[पृष्ठ 94] (ग) प्रगति के तरीके, उद्देश्यहीनता को आधार मानते हुए (अप्पनिहित-मूलक-पतिपाद)।

[353] जब वह उच्च आदर्श के ध्यान का अभ्यास करता है... और जब, ताकि वह इसके प्रथम चरण को प्राप्त कर सके, वह... प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जिसकी प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, विधि लक्ष्यहीनता की अवधारणा है - तब संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है - ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

[354-356] उसी सूत्र को दोहराएँ, प्रगति के शेष तीन तरीकों को क्रमिक रूप से प्रतिस्थापित करते हुए, प्रत्येक मामले में वाक्यांश "विधि लक्ष्यहीनता की अवधारणा है" को जोड़ते हुए।

[357] उसी सूत्र को दोहराएँ, शेष तीन और पाँच ध्यानों को क्रमानुसार प्रतिस्थापित करते हुए, और प्रत्येक मामले में प्रगति के चार तरीकों को लागू करते हुए, "लक्ष्यहीनता" पर अतिरिक्त वाक्यांश के साथ।

[2-20. शेष उन्नीस महान विधियाँ।]

[358] कौन से राज्य अच्छे हैं?

यहां उन्नीस अवधारणाएं दी गई हैं, जिनमें से प्रत्येक को पिछले 81 उत्तरों [§§ 277-357] में "उच्च आदर्श के ध्यान" के स्थान पर अरहतत्व के लिए मन को प्रशिक्षित करने के साधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। वे इस प्रकार हैं:
उच्च आदर्श का मार्ग।
उच्च आदर्श की ओर सचेतनता में प्रगति[21]
उच्च आदर्श की ओर आठ प्रयासों की प्रणाली[22]
उच्च आदर्श पर लागू रहस्यमय शक्तियों की श्रृंखला[23]।
उच्च आदर्श से संबंधित संकाय।
उच्च आदर्श से संबंधित शक्ति।
उच्च आदर्श की ओर महान जागरण।
[पृष्ठ 95] उच्च आदर्श का सत्य।
उच्च आदर्श की शांति[24]
उच्च आदर्श का सिद्धांत।
स्कंध का संबंध उच्च आदर्श से है।
उच्च आदर्श का क्षेत्र।
उच्च आदर्श का तत्व।
उच्च आदर्श का पोषण।
उच्च आदर्श से संपर्क।
उच्च आदर्श से जुड़ाव महसूस करना।
उच्च आदर्श से संबंधित धारणा।
उच्च आदर्श से संबंधित चिंतन।
उच्च आदर्श से संबंधित विचार।

[प्रगति के तरीकों (अधिपति) में प्रमुख प्रभाव।]
[359] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह उच्च आदर्श के ध्यान का अभ्यास करता है... और जब, प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए, वह... प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जिस तक पहुँचने में कठिनाई होती है और अंतर्ज्ञान सुस्त होता है, और जिसमें इच्छा, ऊर्जा, विचार या अन्वेषण का प्रभुत्व होता है, तब जो संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है—ये अवस्थाएँ अच्छी होती हैं।
[360] शेष तीन और पाँच ध्यान के मामले में इस सूत्र को दोहराएँ।
[361] शेष उन्नीस "महान विधियों" में से प्रत्येक के मामले में उपरोक्त [§§ 359, 360] को दोहराएँ।
[यहाँ समाप्त होता है] पहला मार्ग।

II. दूसरा मार्ग।
[362] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह उच्च आदर्श (समाधिपूर्ण ध्यान) के ध्यान का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ना और प्रगति करना संभव होता है, पुनर्जन्म का निवारण होता है — और जब, ताकि वह [पृष्ठ 96] द्वितीय अवस्था को प्राप्त कर सके, वह कामुक भावनाओं और द्वेष की शक्ति को कम कर देता है[25], और इस प्रकार, कामुक इच्छाओं से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है — तब संपर्क... ज्ञान की क्षमता का पूर्ण होना[26]... जो संतुलन उत्पन्न होता है — ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।
[यहाँ समाप्त होता है] दूसरा मार्ग।

III. तीसरा मार्ग।
[363] कौन से राज्य अच्छे हैं?

जब वह उच्च आदर्श (समाधिपूर्ण ध्यान) के ध्यान का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ना और प्रगति करना संभव होता है, पुनर्जन्म का निवारण होता है - और जब, तीसरे चरण को प्राप्त करने के लिए, वह सभी इंद्रिय-संबंधी भावनाओं और द्वेष[27] के अवशेषों को त्याग देता है, और इस प्रकार, [पृष्ठ 97] इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से विरक्त, बुरे विचारों से विरक्त, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है - तब संपर्क... ज्ञान की क्षमता पूर्ण हो जाती है... जो संतुलन उत्पन्न होता है - ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।
[यहाँ समाप्त होता है] तीसरा मार्ग।

IV. चौथा मार्ग।
[364] कौन से राज्य अच्छे हैं?
जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे निरंतर प्रगति होती है और पुनर्जन्म का निवारण होता है, और जब वह चौथे चरण को प्राप्त करने के लिए रूप के प्रति सभी जुनून, निराकार के प्रति सभी जुनून, सभी अहंकार, उत्तेजना और अज्ञान को पूर्णतः त्याग देता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है - तब संपर्क... ज्ञान की क्षमता का पूर्ण होना... उत्पन्न होने वाला संतुलन - ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।
[364क] उस अवसर पर ज्ञान की शक्ति किस प्रकार परिपूर्ण होती है (अन्निन्द्रियम)?
वह ज्ञान जो उन सत्यों की अनुभूति कराता है जिन्हें पहले ही अनुभव किया जा चुका है, समझा जा चुका है, प्राप्त किया जा चुका है, पहचाना जा चुका है और जाना जा चुका है—वह ज्ञान जो समझ, खोज, शोध, सत्य की खोज आदि है।
[धारा 292 के अनुसार जारी रखें।]
ये, या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ, अच्छी अवस्थाएँ हैं।
यहां चौथा मार्ग समाप्त होता है।

[यहाँ समाप्त होता है] उच्च आदर्श पर चिंतन।
- फुटनोट:
1. अर्थात्, अरहतत्व या निर्वाण की ओर ले जाने वाले जीवन पथ का पहला चरण। उत्तरों में, पथ के स्थान पर भूमि (चरण) शब्द का प्रयोग किया गया है। और "प्रथम भूमि" को साई. (पृष्ठ 214, 215) में संन्यास के प्रथम फल (या फल प्राप्ति) के समतुल्य घोषित किया गया है (यानी, द्वितीय सूत्र); दूसरे शब्दों में, सोतापत्ति या "रूपांतरण" के फल के समतुल्य, जैसा कि इसे कहा गया है।

2. वह विशेष प्रकार का ध्यान, जिसका अभ्यास, उद्‌भव और विकास बुद्धघोष द्वारा "एकचित्तक्खनिकम् अप्पना-ज्ञानम्" के रूप में वर्णित किया गया है - किसी विचार की क्षणिक चमक से प्रेरित अवधारणा पर तल्लीन ध्यान (देखें केवी, पृष्ठ 620, 458) - और स्वयं ग्रंथ द्वारा इसे निय्यानिकम् अपचयगमम् के रूप में वर्णित किया गया है। इन दोनों अंतिम शब्दों में से पहले पर इस प्रकार टिप्पणी की गई है:
"यह संसार से, पुनर्जन्म के चक्र से (नीचे की ओर) आगे बढ़ना है। या, इसके माध्यम से आगे बढ़ना है। जो व्यक्ति इससे परिपूर्ण है, 111 को समझकर आगे बढ़ता है, 111 के उद्‌गार को त्यागकर आगे बढ़ता है, 111 के निवारण को जानकर आगे बढ़ता है, (उस निवारण की ओर ले जाने वाले) मार्ग का अनुसरण करके आगे बढ़ता है।"
और दूसरा शब्द: यह उस पुनर्जन्म के संचय और गुणन के समान नहीं है जो तीनों लोकों से संबंधित गुणों द्वारा होता है। यह उस व्यक्ति के समान है जो अठारह हाथ ऊँचा किला खड़ा करने के बाद एक बड़ा हथौड़ा लेकर उसे गिराने और ध्वस्त करने का काम शुरू कर दे। क्योंकि ऐसा करने से भी तीनों लोकों के गुणों द्वारा संचित पुनर्जन्म की क्षमता नष्ट हो जाती है, क्योंकि इससे पुनर्जन्म के कारणों में कमी आ जाती है।

3. दित्थिगतानी, शाब्दिक अर्थ है विचारों का सहारा लेना। सभी परंपराएँ या अटकलें जिनका पालन या तो बिना सबूत के या अपर्याप्त सबूतों के आधार पर किया जाता है, जैसा कि "व्यक्तिवाद का सिद्धांत, उलझन और मात्र नियम और अनुष्ठान का संक्रमण" (असल. 214; इन्फ्रा, §§ 1002-1005) नामक अवस्थाओं में निहित है।

4. इटैलिक्स चेतना के उन घटकों को दर्शाते हैं जिनमें यह ध्यान धारा 160 में उल्लिखित ध्यान से भिन्न है, जिसके घटक प्रथम प्रकार के अच्छे विचार, धारा 1 के घटकों के समान हैं।

5. "अष्टांग मार्ग" के ये तीन कारक, जो आठ प्रकार के अच्छे विचारों में स्पष्ट रूप से शामिल नहीं थे, साइ. के अनुसार, "या जो भी अवस्थाएँ हों" में अप्रत्यक्ष रूप से शामिल थे। ऊपर देखें, पृष्ठ 5, नोट 1। यहाँ साइ. केवल यह टिप्पणी करता है कि, जबकि ये तीनों अब "पाली में शामिल" हैं क्योंकि अष्टांग मार्ग का लक्ष्य निर्वाण है, "दया" और "सहानुभूति" शामिल नहीं हैं क्योंकि उनका उद्देश्य सजीव प्राणी हैं, निर्वाण नहीं।

6. चूंकि यह मार्ग 'आठ गुना मार्ग' है, इसलिए "अवधारणा" (विटाक्को) को इसमें शामिल माना जाता है, क्योंकि यह लगभग "इच्छा" (संकप्पो) के समतुल्य है।

7. पीति-संबोध्झंगो। सात संबोध्झंगों का वर्णन अ. iv. 23; एस. v. 110, 111; और मिल. 340 में भी मिलता है, जहाँ इन्हें "अरहतों के सात गुना ज्ञान का रत्न" कहा गया है। संबोधि नामक अवस्था के लिए, पिहिस डेविड्स की "बुद्ध के संवाद", i., पृष्ठ 190-192 देखें। इसे साइ. (217) में इसकी सात घटक अवस्थाओं के सामंजस्य के रूप में वर्णित किया गया है, और इसे आसक्ति (लिनम) और उत्तेजना के संचय, इंद्रिय सुखों में लिप्तता और तृप्ति, और शून्यवाद और शाश्वतवाद की अटकलों की लत से बने हानिकारक मिश्रण के विपरीत बताया गया है (नीचे, § 1003)।
बुझहति क्रिया का इस प्रकार भावार्थ किया जा सकता है: वह बुराई की नींद से जागता है, या चार आर्य सत्यों को समझता है, या निर्वाण को प्राप्त करता है।

8. सती, जैसा कि धारा 14 में दोहराया गया है, मुद्रित पाठ से हटा दिया गया है। के. इसे दोहराता है।

9. धम्मविकायो के नाम से सत्य, सिद्धांत या धर्म की खोज करना।

10. बुद्धघोष (216) के अनुसार, उत्साहपूर्ण, अडिग विद्यार्थी में जो प्रेरणादायक आश्वासन की भावना जागृत होती है कि वह महान सत्यों के सिद्धांत को जान लेगा - वह अमृतमय मार्ग जो सांसारिक गतिविधियों और परिणामों के चक्र में अज्ञात है जहाँ लक्ष्य अमृतमय नहीं है - उसके लिए एक नई क्षमता या नैतिक सिद्धांत का उदय है।

11. तेसम धम्मनम्... सच्चिकिरियाय पैना, इत्यादि, जिसका शाब्दिक अर्थ है किसी बोध से प्राप्त ज्ञान (या समझ, इत्यादि)। इसका भावार्थ है "आँखों के ठीक सामने लाना" (असल. 218)। प्रथम मार्ग पर चलते हुए विद्यार्थी उन संक्षिप्त सूत्रों का पूर्ण अर्थ सीखता है जिन्हें चार आर्य सत्य कहा जाता है, जिनका बुद्ध ने अपने प्रथम आधिकारिक कथन में प्रतिपादन किया था। इससे पहले उसे इनका केवल अप्रत्यक्ष ज्ञान होता है; और जैसे कोई व्यक्ति अपने सामान्य परिवेश से बाहर किसी निवास स्थान पर आकर नए वस्त्र, वस्त्र और भोजन प्राप्त करता है, तो उसे नए अनुभवों का अहसास होता है, उसी प्रकार इन सत्यों को, जो अब तक उसे ज्ञात नहीं थे, "अज्ञात" कहा जाता है (असल. 218)।

12.अर्थात् झूठ बोलना, निंदा करना, अभद्र भाषा बोलना और निरर्थक बातें करना। देखें Cula Sila, eg, in D. i. 4.

13. सेतुघातो, अर्थात्, बुराई करने का कारण या स्थिति — अर्थात्, कामवासना, घृणा और सुस्ती (असल. 219)। यह रूपक अ. i. 220, 221, 261; ii. 145, 146 में मिलता है।

14.अर्थात्, हत्या (किसी भी जीवित प्राणी की), चोरी और व्यभिचार। डी.आई. 4.

15. समाधि, सम्बोज्झंगो से पहले, मुद्रित पाठ से हटा दिया गया है।

16. मुद्रित पाठ में 'चेतना' के स्थान पर 'वेदना' लिखा है, जो स्पष्ट रूप से गलत है।

17. इन्हें मूल रूप में धारा 277 में दिए गए अनुसार ही प्रस्तुत किया गया है।

18. पाठ में [339] के रूप में चिह्नित उत्तर केवल लोकुत्तरा-झानम की पुनरावृत्ति है, जैसे दुक्खपतिपदम दं-धभिफिनम, यानी [277] में दिए गए पहले "प्रगति के तरीके" की। इसलिए मैंने इसे छोड़ दिया है। इस संदर्भ में सी.वाई. के. द्वारा कोई पुनरावृत्ति नहीं देखी गई है।

19. साइ. (221) में इसे सुनफियात-वरो कहा जाता है, जिसमें उपखंड शुद्धिक-सुन्नत, या "शुद्धिकरण-सूत्र पर लागू शून्यता", यानी (ए और बी) चिह्नित समूह, और सुईनात-पतिपाद, या "शून्यता के संबंध में प्रगति के तरीके", यानी (सी) चिह्नित समूह शामिल हैं।
तकनीकी शब्द "शून्यता" के लिए, ऊपर दिए गए अनुच्छेद 121 और खिस डेविड्स की "योगवचार की नियमावली", पृष्ठ 27, 28 देखें। वहाँ चर्चा की गई तीन "पहेलियों" - "शून्य, लक्ष्यहीन और चिह्नहीन" - में से केवल पहली दो को ही यहाँ साधना के लिए निर्धारित किया गया है। बुद्धघोष इस विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं (आस्ल 221-225)। वे समझाते हैं कि ये तीनों शब्द आदर्श (लोकउत्तर-मग्गो) तक पहुँचने के मार्ग के अनेक नाम हैं, जिनमें से प्रत्येक अन्य दो की तुलना में इसके एक विशेष पहलू को अधिक स्पष्ट करता है, फिर भी तीनों अवधारणाओं के बिना कोई प्रगति नहीं की जा सकती।
सचेत आदर्श के रूप में इस मार्ग के उदय की विशेषता यह है कि संस्कारों में कोई स्थायी आत्मा नहीं होती और न ही सुखदायी तत्व मौजूद होते हैं। इस मार्ग का गुण या विशेषता पूरी तरह से कामवासना, घृणा और सुस्ती से मुक्ति है। इसका उद्देश्य भी निर्वाण है। लेकिन "शून्य" शब्द का मुख्य अर्थ पहले बताए गए तथ्य से संबंधित है - किसी भी वस्तु में किसी भी आधार या आत्मा का न होना।
"लक्ष्यहीन" मुख्य रूप से दुःख, यानी पीड़ा या बीमारी के स्वरूप की अंतर्दृष्टि पर लागू होता है। इस अंतर्दृष्टि के फलस्वरूप संस्कारों के प्रति सभी आकांक्षाएँ या लालसाएँ नष्ट हो जाती हैं। इसके द्वारा ही आदर्श का मार्ग प्रकट होता है। तीसरा "रहस्य", "चिह्नहीन" - अर्थात्, वह मार्ग जो स्थायित्व, दुःख और आत्मा के तीन चिह्नों या झूठे सिद्धांतों से मुक्त माना जाता है - पर बाद में ध्यान दिया जाएगा (धारा 506, 511, आदि)।

20. जैसा कि ऊपर बताया गया है, साइ. {ihid.) इस और अगले खंड को शून्यता पर दो खंडों के साथ समन्वयित करता है, (ए और बी) को शुद्धिका-अप्पनिहित और अगले समूह को अप्पनिहित-पतिपाद कहता है।

21.सतीपट्टाना. एम. आई. 56.

22. सम्मप्पधना. नीचे देखें, धारा 1367.

23. इद्धिपदा. ऊपर देखें, धारा 273 इत्यादि।

24. समाथो. ऊपर देखें, धारा 54.

25. तुलना करें डी. i. 156 और एमपीएस 16, 17। यह उल्लेखनीय है कि यहाँ और निम्नलिखित उत्तर में मोह (सुस्ती) में कमी का उल्लेख नहीं है। हालाँकि, नीचे, § 1134 देखें। अज्ञान (= सुस्ती) पर वास्तव में विजय केवल चौथे मार्ग में ही प्राप्त होती है। इस कमी का वर्णन (असल. 238) दो तरीकों से किया गया है: दुष्ट प्रवृत्तियाँ कभी-कभी उत्पन्न होती हैं और आदतन नहीं रहतीं, और जब वे उत्पन्न

होती हैं तो उनकी तीव्रता कम हो जाती है। वे नए कटे हुए खेत में घास की विरल पत्तियों की तरह हैं, और एक नाजुक झिल्ली या मक्खी के पंख की तरह हैं।

26. धारा 296 देखें। सोतिपत्ति, या प्रथम मार्ग के विद्यार्थी का विश्वास और आशा, अपने ज्ञान के स्तर (जिसे बौद्ध धर्मग्रंथ 'इयातमरियादम' कहते हैं, पृष्ठ 239) की सीमाओं से जूझते हुए, अब सकदागामी के रूप में उस गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टि की प्राप्ति से पुरस्कृत होती है, जो 'अन्ना' या सर्वोत्कृष्ट ज्ञान कहे जाने वाले 'चार सत्यों' के पूर्ण निहितार्थों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, और बौद्ध ग्रंथों में केवल विकसित या विकासशील अरहतत्व पर ही लागू होती है। नीचे धारा 555 देखें।

27. इन्हें, जिन्हें ईसा मसीह ने द्वितीय मार्ग के संदर्भ में सामूहिक रूप से 'किलेसा' कहा है, अब 'सौनोजननी' के नाम से जाना जाता है। धारा 1229 और उसके बाद की धाराएँ तथा धारा 1113 और उसके बाद की धाराएँ देखें।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक1-भाग2-अध्याय 6
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 1 - विचारों की उत्पत्ति
  - भाग 2 - चेतना की बुरी अवस्थाएँ

अंतर्वस्तु

अध्याय VI - बारह बुरे विचार
द्वादा अकुसलाचित्तनी
मैं।
[पृष्ठ 98] [365] कौन से राज्य बुरे हैं?[1]
जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है, जो खुशी के साथ होता है, और विचारों और मतों से जुड़ा होता है,[2] और जिसका उद्देश्य दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद,[3] स्पर्श, [मानसिक] अवस्था, या कुछ भी हो, तो संपर्क,
भावना,

बोध,
सोच,
विचार,
अवधारणा,
विवेचनात्मक विचार,
आनंद, [पृष्ठ 99] सहजता,
आत्म-संयम होता है;[4]

ऊर्जा,
एकाग्रता,[5] विचार,
खुशी, जीवंतता की क्षमताएँ
;
गलत विचार,
गलत इरादा,
गलत प्रयास,
गलत एकाग्रता;

ऊर्जा,
एकाग्रता,
कर्तव्यहीनता,
दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;
वासना, लोभ,
सुस्ती,[6] गलत विचार,
कर्तव्यहीनता,
दोष की अवहेलना,
[पृष्ठ 100] शांत,
पकड़,[7] संतुलन। अब, ये — या जो भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ उस अवसर पर होती हैं — ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो बुरी हैं।[8]
[366-370] उस अवसर पर संपर्क क्या है... भावना... बोध... सोच... विचार?
अनुच्छेद 2-6 में दिए गए अनुसार उत्तर दें।
[371] उस अवसर पर गर्भाधान क्या है?
धारा 7 के अनुसार उत्तर दें, 'सही इरादे' के स्थान पर 'गलत इरादे' (मिच्चासनकप्पो) का प्रयोग करें।
[372-374] उस अवसर पर विवेचनात्मक विचार क्या है... आनंद... आराम?
उत्तर क्रमशः अनुच्छेद 8-10 के अनुसार हैं।
[375] उस अवसर पर आत्म-संयम क्या है?
धारा 11 के अनुसार उत्तर दें, 'सही सांद्रता' के स्थान पर 'गलत सांद्रता' प्रतिस्थापित करें।
[376] उस अवसर पर ऊर्जा की क्षमता क्या है?
धारा 13 के अनुसार उत्तर दें, 'सही प्रयास' के स्थान पर 'गलत प्रयास' प्रतिस्थापित करें।
[377] उस अवसर पर एकाग्रता की क्षमता क्या है?
धारा 375 के अनुसार उत्तर दें।
[पृष्ठ 101] [378-380] उस अवसर पर विचार करने की क्षमता क्या है... खुशी... जीवंतता?
अनुच्छेद 17-19 में दिए गए अनुसार उत्तर दें।

[381] उस अवसर पर गलत विचार (मिच्चदित्थी) क्या हैं?[9]
उस अवसर पर जो विचार राय में चलना,
राय का जंगल,[10]
राय का वीरान इलाका,[11]
राय का कठपुतली शो,[12]
राय की हाथापाई,[13]
राय की बेड़ी,[14]
उसकी पकड़[15] और दृढ़ता[16], उसकी ओर
झुकाव,[17]
उससे संक्रमित होना,
एक बाई-पाथ,
एक गलत रास्ता,
गलत होना,
'फोर्डिंग प्लेस',[18]
पकड़ की अस्थिरता - ये वे गलत विचार हैं जो तब मौजूद होते हैं।
[पृष्ठ 102] [382-384] उस अवसर पर गलत इरादा... गलत प्रयास... गलत एकाग्रता क्या है?
उत्तर क्रमशः धारा 371, 376 और 375 के अनुसार होंगे।
[885, 386] उस अवसर पर ऊर्जा की शक्ति क्या है... एकाग्रता की शक्ति?
धारा 383 और 384 में उल्लिखित अनुसार सहायक।
[387] उस अवसर पर अविवेकीपन (अहिरिकबलम) की शक्ति क्या है?
जब विवेकपूर्ण संशय की भावना महसूस होनी चाहिए, उस समय उसका अभाव, बुरे और पापपूर्ण कार्यों को करने में विवेकपूर्ण संशय का अभाव—यही उस समय मौजूद निर्विवेकता की शक्ति है।
[388] उस अवसर पर निंदा की उपेक्षा (अनोत्तप्पबलम) की शक्ति क्या है?
उस अवसर पर अपराधबोध की भावना का अभाव जहाँ अपराधबोध महसूस किया जाना चाहिए, बुरे और दुष्ट अवस्थाओं को प्राप्त करने पर अपराधबोध की भावना का अभाव[19] — यही दोष की उपेक्षा की शक्ति है जो तब होती है।
[389] उस अवसर पर वासना क्या है?
उस समय जो कामवासना, वासना, कामुकता होती है, जो मोह, मोह की भावना और अवस्था होती है, जो लोभ, जो बुराई की जड़ है—वही कामवासना उस समय मौजूद होती है।
[390] उस अवसर पर नीरसता क्या है?
उस अवसर पर ज्ञान और दृष्टि का अभाव;
समन्वय, निर्णय, जागरूकता[20] और अंतर्दृष्टि का अभाव;
समझने, आत्मसात करने में असमर्थता;
तुलना करने, विचार करने, [पृष्ठ 103] और सिद्ध करने में असमर्थता;
मूर्खता, बचकानापन, बुद्धि का अभाव;
वह सुस्ती जो अस्पष्टता, भ्रम, अज्ञानता है, अज्ञानता का सैलाब[21], अज्ञानता का बंधन, अज्ञानता का पूर्वाग्रह, अज्ञानता का जुनून, अज्ञानता की बाधा;
वह सुस्ती जो बुराई की जड़ है।
— तब जो नीरसता छाई रहती है, वही सबसे बड़ी नीरसता होती है।
[391-397] उस अवसर पर लोभ क्या है... गलत विचार क्या हैं... असावधानी क्या है... दोष की उपेक्षा क्या है... शांति क्या है... पकड़ क्या है... संतुलन क्या है?
उत्तर क्रमशः धारा 389, 381, 387, 388, 375, 376 और फिर से 375 के अनुसार हैं।
या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ हों — ये सभी अवस्थाएँ बुरी हैं।

[सारांश।]

[397ए]

अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं,

क्षेत्र दो हैं,

तत्व दो हैं,

पोषक तत्व तीन हैं,

क्षमताएँ पाँच हैं,

ध्यान पाँच गुना है,

पथ चार गुना है,

शक्तियाँ चार हैं,

कारण दो हैं,[22]

संपर्क, > प्रत्येक एकल [कारक] हैं;

इत्यादि। > इत्यादि।

[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]

[पृष्ठ 104] [398] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है? संपर्क,

चिंतन,

अवधारणा,

विवेचनात्मक विचार,

आनंद,

आत्म-संयम;

ऊर्जा,

एकाग्रता और

जीवंतता जैसी क्षमताएं ;

गलत विचार,

गलत इरादा,

गलत प्रयास,

गलत एकाग्रता;

ऊर्जा,

एकाग्रता,

कर्तव्यहीनता,

दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;

कामवासना, लोभ,

सुस्ती; गलत विचार;

कर्तव्यहीनता,

दोष की अवहेलना;

शांति,

पकड़,

संतुलन। ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारण-प्रेरित अवस्थाएँ, भावना, बोध और बुद्धि के स्कंधों से इतर, ये संश्लेषण के स्कंध हैं।

[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]

II.
[399] कौन से राज्य fchat खराब हैं?
जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो आनंद से युक्त होता है, विचारों और मतों से जुड़ा होता है, और एक सचेत मकसद से प्रेरित होता है,[23] और जिसका उद्देश्य एक दृश्य ... या कुछ और होता है, तो संपर्क होता है ... संतुलन ...
[प्रथम विचार, धारा 365 के अनुसार जारी रखें।]

III.
[400] कौन से राज्य बुरे हैं?
जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो सुख के साथ होता है और विचारों और मतों से असंबद्ध होता है, और जिसका विषय कोई दृश्य, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, या कुछ और होता है, तो संपर्क आदि होता है।
[पहले बुरे विचार की तरह जारी रखें, लेकिन 'गलत विचार' नामक एकल, दो बार सूचीबद्ध आइटम को छोड़ दें।][24]
[सारांश।]
[400क] अब, उस समय स्कंध चार हैं,
गोले दो हैं, [पृष्ठ 106] तत्व दो हैं,
पोषक तत्व तीन हैं,
शक्तियाँ पाँच हैं,
ध्यान पाँच प्रकार का है,
मार्ग तीन प्रकार का है,
इत्यादि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]
[401] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
धारा 398 के अनुसार उत्तर दें, 'गलत विचारों' को छोड़ दें।

IV.
[402] कौन से राज्य खराब हैं?
जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो आनंद से युक्त होता है, विचारों और मतों से असंबद्ध होता है, और एक सचेत मकसद से प्रेरित होता है, और जिसका उद्देश्य कोई दृश्य ... या कुछ और होता है, तब संपर्क ... संतुलन ... होता है।
[तीसरे विचार, § 400 के अनुसार जारी रखें।]
वी
[403] कौन से राज्य खराब हैं?

जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो अनासक्ति से युक्त होता है, और विचारों और मतों से जुड़ा होता है, और जिसका विषय कोई दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, [मानसिक] अवस्था, या कुछ और होता है, तब संपर्क, विचार,
भावना, अवधारणा,
बोध, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, अनासक्ति,
आत्म-संयम होता है;

ऊर्जा, [पृष्ठ 107] एकाग्रता, विचार की क्षमताएँ
;
निस्वार्थता,
जीवंतता;
गलत विचार,
गलत इरादा,
गलत प्रयास,
गलत एकाग्रता;

ऊर्जा,
एकाग्रता,
कर्तव्यहीनता,
दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;
वासना, लोभ,
सुस्ती; गलत विचार;
अचेतना,
दोषारोपण की अवहेलना,
संयम,
समझ,
संतुलन। ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ—ये सभी बुरी अवस्थाएँ हैं।
[404-407] 'संपर्क', 'भावना', 'निस्वार्थता' और 'निस्वार्थता की क्षमता' पर प्रश्न और उत्तर, धारा 151-154 में दिए गए प्रश्नों के समान हैं।

[सारांश।]
[407ए]

अब, उस समय स्कंध चार हैं,
इत्यादि,
शक्तियाँ पाँच हैं,
ध्यान चार गुना है,[25] [पृष्ठ 108] मार्ग चार गुना है,
इत्यादि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]
[408] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
संपर्क, चिंतन, अवधारणा, विवेचनात्मक विचार, आत्म-संयम आदि।
[धारा 398 के अनुसार जारी रखें, 'निस्वार्थता' के साथ असंगत होने के कारण 'आनंद' शब्द को हटा दिया गया है।]

VI.
[409] कौन से राज्य बुरे हैं?
जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो निस्वार्थता से युक्त होता है, विचारों और मतों से जुड़ा होता है, और एक सचेत मकसद से प्रेरित होता है, और जिसका उद्देश्य कोई दृश्य ... या कुछ और होता है, तो संपर्क आदि होता है।
[विचार V के अनुसार जारी रखें।]

सातवीं।
[410] कौन से राज्य बुरे हैं?
जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो निस्वार्थता से युक्त होता है, विचारों और मतों से असंबद्ध होता है, और जिसका उद्देश्य कोई दृश्य ... या कुछ और होता है, तब संपर्क आदि होता है।
[विचार V के अनुसार जारी रखें, 'गलत विचारों' को हटा दें।]
[पृष्ठ 109] [सारांश।]
[410ए]

उस समय स्कंध चार होते हैं,
इंद्रियां
पांच होती हैं,
ध्यान चार प्रकार का होता है,
मार्ग तीन प्रकार का होता है,
इत्यादि।
[धारा 397क के अनुसार जारी रखें।]
[411] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
धारा 398 के अनुसार एन्सिवर, जिसमें 'खुशी' और 'गलत विचार' दोनों को हटा दिया गया है।

आठवीं।
[412] कौन से राज्य बुरे हैं?
एन्सिवर जैसा कि विचार VII में है, अतिरिक्त जैक्टर के साथ, जैसा कि विचार II, IV, VI में डाला गया है, 'एक सचेत मकसद से प्रेरित'।[26]

IX.
[413] कौन से राज्य बुरे हैं?

जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो उदासी से युक्त होता है और घृणा से जुड़ा होता है,[27] और जिसका उद्देश्य एक दृष्टि, एक ध्वनि, एक गंध, एक स्वाद, एक स्पर्श, एक मानसिक स्थिति, या कुछ भी हो, तो संपर्क,
भावना,
बोध, [पृष्ठ 110] सोच,
विचार,
अवधारणा,
विवेचनात्मक विचार,
संकट,
आत्म-संयम होता है;

ऊर्जा,
एकाग्रता,
विचार-मंथन,
उदासी,

जीवंतता जैसी क्षमताएं ;
गलत इरादा,
गलत प्रयास,
गलत एकाग्रता;

ऊर्जा,
एकाग्रता,
कर्तव्यहीनता,
दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;
घृणा,
सुस्ती;
द्वेष;
अचेतना,
दोषारोपण की अवहेलना,
शांति,
पकड़,
संतुलन। ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणिक अवस्थाएँ - ये सभी बुरी अवस्थाएँ हैं।
[414] 'संपर्क' पर प्रश्न और उत्तर, § 2.

[415] उस अवसर पर भावना क्या है?
मानसिक पीड़ा, मानसिक कष्ट (दुक्खम), जो उस अवसर पर प्रतिनिधि बौद्धिकता के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होता है; विचार के संपर्क से उत्पन्न होने वाली पीड़ादायक, कष्टदायक अनुभूति; [पृष्ठ 111] विचार के संपर्क से उत्पन्न होने वाली पीड़ादायक, कष्टदायक भावना — यही वह कष्ट है जो तब होता है।
[416, 417] उस अवसर पर दुःख (दुक्खम) क्या है... उदासी (डोमनसिंद्रियम) की क्षमता क्या है?
धारा 415 में 'भावना' के लिए दिए गए उत्तरों में 'प्रतिनिधि बौद्धिकता के उपयुक्त तत्व के साथ' को हटा दें।
[418] उस अवसर पर घृणा क्या है?
घृणा, नफरत, नफरत जो उस अवसर पर एक अव्यवस्थित स्वभाव है, परेशान होना,[28] विरोध, शत्रुता, अशिष्टता,[29] अचानकता,[30] हृदय की घृणा - यही वह घृणा है जो तब होती है।
[419] उस अवसर पर द्वेष क्या है?
'नफरत' के लिए दिए गए उत्तर की तरह ही उत्तर दें।
या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ हों — ये सभी अवस्थाएँ बुरी हैं।

[पृष्ठ 112] [सारांश।]

[419ए]

अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं,
इत्यादि,
संकाय पाँच हैं,
ध्यान चार गुना है,
पथ तीन गुना है,
शक्तियाँ चार हैं,

कारण दो हैं,[31] इत्यादि।
[धारा 58-61 के अनुसार जारी रखें।]
[420] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है? संपर्क,
चिंतन,
अवधारणा,
विवेचनात्मक विचार,
आत्म-संयम;

ऊर्जा,
एकाग्रता और जीवंतता की क्षमताएं
;
गलत इरादा,
गलत प्रयास,
गलत एकाग्रता;

ऊर्जा,
एकाग्रता,
कर्तव्यहीनता,
दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;
घृणा,
सुस्ती;
[पृष्ठ 113] दुर्भावना;
अचेतना,
दोषारोपण की उपेक्षा,
शांति,
पकड़,
संतुलन। ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली अन्य कोई भी निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ, जो भावना, बोध और बुद्धि के स्कंधों से इतर हों, संश्लेषण के स्कंध कहलाती हैं।

एक्स।
[421] कौन से राज्य बुरे हैं?
जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो उदासी से युक्त हो, घृणा से जुड़ा हो, और किसी सचेत मकसद से प्रेरित हो, और जिसका उद्देश्य कोई दृश्य हो ... या कुछ और, तब संपर्क आदि होता है।
[विचार IX के अनुसार जारी रखें।]

XI.
[422] कौन से राज्य बुरे हैं?
जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो निस्वार्थता से युक्त होता है और उलझन से जुड़ा होता है, और जिसका विषय दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, मानसिक अवस्था, या कुछ भी हो, तब संपर्क,
भावना, बोध,
चिंतन

,
विचार,
अवधारणा, [पृष्ठ 114] विवेचनात्मक विचार,
निस्वार्थता,
आत्म-संयम होता है;

ऊर्जा, निस्वार्थता,
विचारोत्तेजना, जीवंतता जैसी क्षमताएं ;
गलत इरादा,
गलत प्रयास;

ऊर्जा,
कर्तव्यहीनता और
दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;
असमंजस;
सुस्ती;
अचेतना,
दोष की अवहेलना,
लोभ। ये, या उस समय उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ—ये सभी बुरी अवस्थाएँ हैं।
[423] उस अवसर पर संपर्क क्या है?

सामान्य सूत्र।
[424] उस अवसर पर आत्म-संयम क्या है?

उस अवसर पर जो विचार कायम रहता है[32] — यही वह आत्म-संयम है जो तब होता है।
[पृष्ठ 115] [425] उस अवसर पर उलझन (विकिचिच्चा) क्या है?[33]
संदेह, हिचकिचाहट, शंका, जो उस [पृष्ठ 116] अवसर पर उलझन[34] व्याकुलता; विचलित होना, चौराहे पर खड़ा होना;[35] पतन,[36] समझ की अनिश्चितता; टालमटोल, हिचकिचाहट;[37] पूरी तरह से समझने में असमर्थता,[38] मन की कठोरता,[39] मानसिक पीड़ा[40] — यही वह उलझन है जो तब होती है। [पृष्ठ 117]
[सारांश।]
[425ए]

अब, उस समय स्कंध चार हैं,
इत्यादि,
शक्तियाँ चार हैं,
ध्यान चार गुना है,
पथ दो गुना है,
शक्तियाँ तीन हैं,
कारण एक है,[41] इत्यादि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]
[426] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है? संपर्क,
चिंतन,

अवधारणा,
विवेचनात्मक विचार,
आत्म-संयम;

ऊर्जा, स्फूर्ति जैसी क्षमताएं
;
[पृष्ठ 118] गलत इरादा,
गलत प्रयास;

ऊर्जा,
कर्तव्यहीनता और
दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;
उलझन,
सुस्ती;
अचेतनता,
दोष की उपेक्षा,
लालच.[42] या जो भी अन्य, आदि।
[धारा 420 के अनुसार जारी रखें।]

बारह.
[427] कौन से राज्य बुरे हैं?

जब कोई बुरा विचार उत्पन्न होता है जो अनासक्ति से युक्त होता है और उत्तेजना से जुड़ा होता है, और जिसका उद्देश्य एक दृश्य, एक ध्वनि, एक गंध, एक स्वाद, एक स्पर्श, एक मानसिक अवस्था, या कुछ भी हो सकता है, तब संपर्क,
भावना,
बोध,
चिंतन,
विचार,
अवधारणा,
विवेचनात्मक विचार,
अनासक्ति ,
आत्म-संयम , ऊर्जा, एकाग्रता, विचार, अनासक्ति, [पृष्ठ 119] अनासक्ति, जीवंतता
की क्षमताएं होती हैं ;

गलत इरादा,
गलत प्रयास,
गलत एकाग्रता;

ऊर्जा, एकाग्रता,
कर्तव्यहीनता,
दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;
उत्तेजना;
सुस्ती;
अचेतना,
दोषारोपण की अवहेलना,
शांति, पकड़,
संतुलन। ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणिक अवस्थाएँ - ये सभी बुरी अवस्थाएँ हैं।
[428] 'संपर्क' पर सामान्य प्रश्न और उत्तर।
[429] उस अवसर पर उत्तेजना (उद्धच्चम) क्या है?
उस अवसर पर मन की उत्तेजना जो बेचैनी, हृदय की व्याकुलता, मन की उथल-पुथल होती है - यही वह उत्तेजना है जो तब होती है।[43]
[पृष्ठ 120] [429ए]
अब, उस समय
स्कंध चार हैं,
इत्यादि, शक्तियाँ पाँच हैं, [पृष्ठ 121] ध्यान चार प्रकार का है,
मार्ग तीन प्रकार का है,
शक्तियाँ चार हैं,
कारण एक है, इत्यादि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]
[पृष्ठ 122] [430] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है? संपर्क,
चिंतन,
अवधारणा,
विवेचनात्मक विचार,
आत्म-संयम;

ऊर्जा,
एकाग्रता और जीवंतता की क्षमताएं
;
गलत इरादा,
गलत प्रयास,
गलत एकाग्रता;

ऊर्जा,
एकाग्रता,
कर्तव्यहीनता,
दोषारोपण की अवहेलना जैसी शक्तियां ;
उत्तेजना;
सुस्ती;
अचेतना,
दोषारोपण की अवहेलना,
शांति,

समझ,
संतुलन।
या जो भी अन्य, इत्यादि।
[धारा 62 के अनुसार जारी रखें।]
यहां बारह बुरे विचार समाप्त होते हैं।

- फुटनोट:
1. इस संदर्भ में बारह विचारों के वे घटक जो स्वयं नैतिक रूप से तटस्थ हैं, उन्हें अच्छे विचारों के संदर्भ में दिए गए अर्थ में अपरिवर्तित समझा जाना चाहिए। बुरे विचारों के लिए इंद्रिय जगत के अलावा अस्तित्व का कोई अन्य क्षेत्र नहीं है, यह बात संपूर्ण रूप से समझी जानी चाहिए (असली. 247)।

2.दिट्ठिगता-संपयुत्तम। सी एफ पी.83, एन.1, §§ 381,1003 के साथ।

3. Rasarammanam va अनजाने में मुद्रित पाठ में छूट गया है।

4.अगला नोट देखें।

5. बौद्ध धर्म के उच्चतर जीवन के लिए मन की एकाग्रता आवश्यक है; फिर भी, यह श्रेष्ठता का आधार होने के बजाय, प्रभावी बुराई करने के लिए भी आवश्यक है। बुद्धघोष कहते हैं कि यदि मन विचलित न हो, तो हत्यारे का चाकू नहीं चूकता, चोरी असफल नहीं होती, और एक ही उद्देश्य (शाब्दिक रूप से, एक ही मन) से बुराई की जाती है (असल. 248)। हिब्रू मुहावरे की तुलना करें जिसका अर्थ है 'मन का अच्छे या बुरे कार्य के लिए दृढ़ होना' (उपदेशक. 82:11; भजन संहिता 98:8)।

6. घृणा (ऐसा करना) और द्वेष (व्यापादो) बुरे विचारों के कारकों में स्थान नहीं पाते (अच्छे विचारों में उनके विपरीत तत्वों के स्थान के अनुरूप, § 1), जब तक हम अंतिम चार प्रकार के बुरे विचारों तक नहीं पहुँच जाते। जबकि ये उदासी (डोमनस्सम्) से जुड़े होते हैं, पहले और बाद के तीन प्रकार के विचारों का विषय एक प्रसन्न पापी होता है। आनंद, सहजता और प्रसन्नता को घृणा के साथ असंगत माना गया है।

7. विपश्यना (अंतर्दृष्टि) को पाठ में त्रुटिपूर्वक शामिल किया गया है। बौद्धों के लिए नैतिक अंतर्दृष्टि अनैतिक विचारों के साथ उतनी ही असंगत थी जितनी सुकरात और प्लेटो के लिए। इसलिए 'बुद्धि' और 'सचेतना' के साथ-साथ 'विश्वास' को भी इसमें शामिल नहीं किया गया है। बौद्ध धर्म कहता है कि विधर्मी सिद्धांतों और मात्र मतों के अनुयायी अपने गुरुओं में केवल झूठी आस्था रख सकते हैं, केवल बुरे विचारों के प्रति सचेत रह सकते हैं और केवल छल और भ्रम का ही पालन कर सकते हैं। न ही उनमें इंद्रियों और विचारों की वह छह गुना दक्षता संभव है जो अच्छे विचारों के साथ जुड़ी होती है (धारा 4051)। असल. 249.

8. पाठ में 'कुसला' शब्द का प्रयोग एक त्रुटि है। इन सभी बुरे विचारों में दस अन्य अवस्थाएँ शामिल हैं: इच्छा, संकल्प, ध्यान, अहंकार, ईर्ष्या (इसा, या इच्छा, लालसा), नीचता, जड़ता, सुस्ती, उत्तेजना, चिंता (असल. 250)। ऊपर देखें, पृष्ठ 5, नोट 1।

9. मिच्छदित्थी को साई. (पृष्ठ 248) में अयथावदस्सनम् के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसका अर्थ है चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में न देखना। (दित्थी पर, § 1003, n. देखें।) ब्रह्मजाल सूत्र (डी. i.) में इस विकृत दृष्टि या निराधार अटकलों के 62 प्रकारों का विवेचन किया गया है, ये सभी अस्तित्व के सिद्धांत हैं, और टीकाकार द्वारा इनका उल्लेख किया गया है (पृष्ठ 252)। तुलना करें: एहिस डेविड्स, 'अमेरिकन लेक्चर्स', पृष्ठ 27 और आगे।

10. इससे बाहर निकलना मुश्किल होने के कारण, जैसे घास, जंगल या पहाड़ी जंगल से बाहर निकलना (AsL, ibid.)।

11. ऐसी राय रखने के खतरे और भयावहता के कारण, जैसे कि लुटेरों और साँपों से घिरे रेगिस्तान में पानी या भोजन की कमी हो (वही)।

12.बुद्धघोष ने इस शब्द को विसुकम से नहीं लिया है, बल्कि विसु-के अय इकम = विपरीत रूप से गठित - यानी, सम्मादिथि से लिया है।

13. अव्यवस्था और संघर्ष, कुछ विनाशवादी, कुछ शाश्वतवादी, आदि होने के कारण (असल. 253)।

14. धारा 1113 देखें।

15. किसी विचार वस्तु के प्रति आसक्ति, जैसे मगरमच्छ की पकड़ (असली. 253)।

16. Cy. के पाठ में patiggaho के स्थान पर patitthaho लिखा है। हालाँकि, K. में patiggaho लिखा है।

17.अर्थात, स्थायित्व आदि की भ्रामक राय की ओर। (असली. 253)।

18. तित्थयातनम्। इस रूपक का अंग्रेज़ी पर्यायवाची खोजना असंभव है, जिसका शाब्दिक अर्थ केवल खड़े होने की जगह है, लेकिन आमतौर पर, अपने पहले अर्थ में, यह एक उथले नदी तट या समुद्र तट से जुड़ा होता है, और अपने दूसरे अर्थ में, सांप्रदायिक सट्टा मान्यताओं और उनकी शिक्षाओं से जुड़ा होता है। स्वयं बुद्धघोष एक वैकल्पिक अर्थ देते हैं:
'जहां मूर्ख लोग अपने चक्रों (अर्थात संसार) के दौरान पार करते हैं';
संप्रदायवादियों का क्षेत्र या निवास (तित्तिया)। एम.आई. 483 में इस शब्द के प्रयोग की तुलना करें।
19.ना यहाँ मुद्रित पाठ से हट गया है।

20.संबोधो. देखें. धारा 285.

21.अज्ञानता को बाढ़ और बंधन के रूप में देखें, नीचे देखें, §§ 1151, 1151ए।
जबकि कामवासना का लक्षण (लक्खनम्) किसी वस्तु को कल्पना में पकड़ लेना है, वहीं सुस्ती का सार (रसो) उस वस्तु के वास्तविक स्वरूप को छुपा लेना है, जिसके परिणामस्वरूप उस पर दिया गया ध्यान सतही (अयोनिसो) होता है। असल. 249.

22.अर्थात्, 'वासना' और 'सुस्ती'।

23. साइ. एक युवक के मामले का उदाहरण देता है, जिसे किसी झूठे सिद्धांतवादी की बेटी का हाथ उसके अलग संप्रदाय का होने के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है, तो वह अपने स्नेह से प्रेरित होकर लड़की के लोगों के चर्च में जाता है और उनके विचारों को अपनाता है, इस प्रकार अपना पुरस्कार प्राप्त करता है (असल. 255)।

24. पाठ में कोष्ठक में दिए गए सोमनसिंद्रियम को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए। यह सोमनसिंद्रियम उन लोगों की मानसिकता का उदाहरण है जो सार्वजनिक खेल-कूद, नृत्य और ग्राम उत्सवों (नटसमज्जदिनी) जैसे 'सांसारिक सुखों' में लिप्त हैं। तुलना करें, 'बुद्ध के संवाद', अध्याय I, पृष्ठ 7, नोट 4।
साइ. (पृष्ठ 257) में दिए गए संक्षिप्त और अस्पष्ट शब्दों वाले दोहरे उदाहरण की व्याख्या करना कठिन है, जो इस प्रकार के विचार को दर्शाता है। इसमें तीसरे विचार के समान ही परिस्थितियाँ मानी गई हैं, साथ ही इसमें शरारत और अश्लील जिज्ञासा जैसे निम्न-स्तरीय आनंद भी शामिल हैं।

25.तुलना करें § 154ए.

26. साइ. इस या इससे पहले के तीन प्रकार के विचारों का कोई उदाहरण नहीं देता है।

27. पतिघो ने (§ 1060) ऐसा करने का वर्णन करने के लिए और फिर (§ 597 इत्यादि) इंद्रिय-उत्तेजना के संबंध में 'प्रतिक्रिया' के रूप में प्रयोग किया।

28.व्यापत्ति, व्यापज्जना। तुलना करें § 1060, n. 5. यहाँ टिप्पणी है पकातिभाव-विजहनत्थेन = सामान्य अवस्था को त्याग देना (असल. 258)। *जैसे दलिया खराब हो गया हो' (सुम., 1. 211)।

29. कैंडिक्कम। जेपीटीएस, 1891, पृष्ठ 17; पीपी ii. 1 (= ii. 11) देखें। एसएमपी. 297. मॉरिस का मानना है कि कैंडिट्टम सही वर्तनी है। मेरा मानना है कि लेक्टियो डिफिसिलियर के सही होने की संभावना अधिक है। चार अंशों में साइ. kk के साथ वर्तनी करता है। के. ने एक चूक के कारण वर्तमान अंश में कैंडिट्टम लिखा है, जबकि §§ 1060, 1314 में kk लिखा है।

30. असुरोपो. ईफर्स, साइ. (258) के अनुसार, क्रोध में एक आदमी के टूटे हुए उच्चारण के लिए।
यह थोड़ा अजीब है कि 'आत्म-संयम', 'शांति' और 'संतुलन' जैसे तत्व ऊपर वर्णित घृणा के साथ असंगत नहीं माने जाते। 'एकाग्रता' कम असंगत है, और यह याद रखना चाहिए कि तीनों अवस्थाओं का वर्णन एक ही शब्दों में किया गया है। इसलिए, यदि एक अवस्था स्थिर रहती है, तो दूसरी नहीं गिर सकती। लेकिन विचार X और XH के अंतर्गत देखें।

31.अर्थात, दोसो और मोहो।

32.बुद्धघोष इस अंश पर कहते हैं (असल. 259):
'चूंकि विचार के इस कमजोर रूप में केवल निरंतर बने रहने या दृढ़ रहने की क्षमता है (पवत्ति थितिमत्तकम)', इसलिए 'आत्म-संयम' की अन्य कोई भी विशेषता इस पर लागू नहीं होती है।
अतः यह स्पष्ट है कि पाठ में thiti के बाद '... pe ...' का प्रयोग त्रुटिपूर्ण है। और K. की तुलना करें। यह ध्यान देने योग्य है कि 'एकाग्रता', साथ ही 'शांति' और 'संतुलन' शब्द पूरी तरह से गायब हैं।

33. विकिचिच्चा को 'संदेह' के रूप में व्यक्त करना आकर्षक प्रतीत होता है। ऐसा करना गलत नहीं होगा। संदेह शब्द की व्युत्पत्ति में निहित दोहरी मानसिक स्थिति को इस शब्द के वर्णन हेतु चुने गए दो शब्दों में दर्शाया गया है। फिर भी, अनुच्छेद 1004 में वर्णित विकिचिच्चा के विषय वे हैं जिन पर नैतिक-धार्मिक अर्थ में 'संदेह' शब्द लागू किया जा सकता है। लेकिन कुछ ऐसे पहलू भी हैं जिनमें विकिचिच्चा के प्रति बौद्ध दृष्टिकोण पश्चिम में आमतौर पर समझे जाने वाले संदेह से मेल नहीं खाता।
संदेह, विश्वास, आत्मविश्वास या आस्था का विपरीत है। अब, उत्तर में इनके लगभग समानार्थी शब्द - सद्धा और पासादो - का उल्लेख नहीं किया गया है, हालांकि तुलना के उद्देश्य से किया जा सकता था। फिर भी, हालांकि यह अपने आप में प्रश्नगत दोनों शब्दों के मेल न खाने का पर्याप्त आधार नहीं है, इन शब्दों की व्युत्पत्ति बहुत भिन्न है।
विकिचिच्चा की संरचना में द्वैत, विभाजित मानसिक स्थिति का कोई अंश नहीं होता, जैसा कि 'संदेह' की संरचना में होता है।
सिकित, सिट (सोचना) का इच्छावाचक या बारंबारता रूप है; वी (उपसर्ग) गहन या विचलित चिंतन को दर्शाता है। इस प्रकार, भारतीय शब्द की व्युत्पत्ति स्थिर की बजाय गतिशील पर, अनिश्चितता के क्षणिक तनाव की बजाय बौद्धिक चिंतन पर बल देती है। जब यह शब्द पुनः आता है (§ 1004), तो बुद्धघोष इसे किच्चो से जोड़ते हैं - 'निर्णय लेने में असमर्थता के कारण उत्पन्न थकान' - जो मनोवैज्ञानिक रूप से 'संदेह' की तुलना में 'भ्रम' के अधिक निकट है।
यह बिल्कुल सच है कि व्युत्पत्ति के आधार पर, कंख शब्द हमारे 'संदेह' शब्द के समान नहीं है। कंख का अर्थ है इच्छा करना। ऐसा प्रतीत होता है कि यह शब्द विचिकिच में निहित बौद्धिक अवस्था के भावनात्मक और स्वैच्छिक पूरक को दर्शाता है, जो चिंताजनक चिंतन से उत्पन्न निश्चितता और निर्णय में पलायन करने की लालसा है।

हालाँकि, कंख नैतिक शब्दों की किसी महत्वपूर्ण श्रेणी में नहीं आता, जैसे कि विकिचिच्चा आता है; इसके अलावा, इसका द्वितीयक अर्थ—अर्थात्, विचाराधीन मामले या उससे संबंधित मन की स्थिति (देखें जाट. i. 165; एम. i. 147)—प्राथमिक अर्थ पर हावी हो गया प्रतीत होता है, जो अकंखति में बरकरार है (देखें अकंखेय्या सूत्र, एम. i. 33)। अतः, इसे 'संदेह' के रूप में आसानी से व्यक्त किया जा सकता है।
इसलिए, मैं यह दावा नहीं करता कि 'परप्लेक्सिटी' शब्द व्युत्पत्ति के अनुसार vicikiccha का पर्यायवाची है, लेकिन मैं इसका प्रयोग करता हूँ।
बाद वाले को हमारे द्वारा प्रयुक्त 'संदेह' के निहितार्थों के साथ बहुत आसानी से आत्मसात करने से बचने के लिए, और
किसी भी आधार पर संशयवादी प्रवृत्ति रखने वाले व्यक्ति के 'नश्वर शरीर' और विचारों के उलझाव पर जोर देना।
34. विमति, लगभग विकिचिच्चा के समानांतर है, क्योंकि यह तीव्र या व्याकुल मन-क्रिया को दर्शाता है।

35.द्वेलहकम, द्वेधपथो। यहाँ हमें अपने 'संदेह' में व्युत्पत्ति संबंधी विचार मिलता है। साइप्रस में, एक के लिए, 'इधर-उधर डगमगाना या हिलना' है; दूसरे के लिए, 'एक मार्ग के रूप में जो दो भागों में बँट जाता है, यह प्राप्ति में एक बाधा है' (259)।

36. संसयो - 'पतन' का व्युत्पत्तिगत पर्याय। साईं कहते हैं कि किसी व्यक्ति की अपनी अक्षमता के आगे झुक जाना, ऐसी समस्याओं को लगातार जारी रखने में असमर्थता, जैसे कि क्या यह स्थायी है या अस्थायी? (वही)।

37. असप्पना, परिस्प्पना। साई. के अनुसार, इनका अर्थ क्रमशः 'विचार के विषय को निर्णय लेने में असमर्थता के कारण त्याग देना' (या उससे नीचे उतर जाना - ओसक्कति; देखें ट्रेंकनर की 'मिसलेनी', पृष्ठ 60) और 'किसी विषय में गहराई से उतरने में असमर्थता के कारण चारों ओर फिसल जाना' (या इधर-उधर भाग जाना - सप्पति [देखें सर्प]) है। असल. 260.

38.अपरियोगहन, मोहो का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त। देखें § 390.

39. यदि बाद वाला पाठ 'थम्भितत्तम्, चम्भितत्तर्न' (अस्थिरता) के लिए 'च्य' शब्द का यह अनुवाद न करता कि 'इसका अर्थ सघनता (या कठोरता, थद्धो) की स्थिति है', तो मुझे इसे अपनाने में संकोच नहीं करना चाहिए था। क्योंकि जब दुविधा उत्पन्न होती है, तो व्यक्ति अपने मन को कठोर (हठी, सघन, थद्धम्) बना लेता है।
के. थम्भितत्तम् भी पढ़ते हैं। यद्यपि दोनों शब्द अर्थ में विपरीत हैं, फिर भी ये दोनों 'स्तंभ' (सहारा देना) मूल से व्युत्पन्न हैं; और दोनों का प्रयोग गैसीय तत्व का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो अस्थिर होते हुए भी ठोसों को अलग रखता है। नीचे, अनुच्छेद 965 देखें। आगे टिप्पणी (एएसएल, वही) यह है कि, 'निश्चितता के संदर्भ में, मन में विचार को बनाए रखने में असमर्थता का तात्पर्य है'।
इस प्रकार, यद्यपि विचिकिच्चा में मस्तिष्क का सक्रिय रूप से उपयोग करना निहित है, यह प्रभावी चिंतन में प्रगति को बाधित करता है, और मोह की सघनता और अपरीयोगहना के समान मानसिक स्थिति उत्पन्न करता है।
मनोविलेखो. 'जब उलझन उत्पन्न होती है, तो विचार के विषय को पकड़ कर, यह मन को खरोंचती है, मानो' (वही)। जब इस शब्द का प्रयोग कुक्कुच्चम, या चिंता (§ 1160) का वर्णन करने के लिए किया जाता है, तो इसे साइ. में तांबे के बर्तन को एक सुई (अरग्गम) से खुरचने के उदाहरण से समझाया गया है। असल. 384.

40. पृष्ठ 117 पर टिप्पणी देखें।

41.अर्थात, मोहो.

42. 'संतुलन' के लोप पर, नीचे देखें, धारा 429, नोट।

43.Yam cittassa uddhaccarn avupasamo, cetaso vikkhepo, bhantattam cittassa — idam vuccati uddhaccarn. यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि, चाहे uddhaccarn को कहीं और अहंकारपूर्ण मानसिकता को दर्शाने वाले शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है

या नहीं (देखें एहिस डेविड्स, 'बौद्ध धर्म', पृष्ठ 109; वॉरेन, 'अनुवादों में बौद्ध धर्म', पृष्ठ 365; न्यूमैन, 'डाई ईडेन', आदि, 1., पासिम), इस संदर्भ में विशिष्ट अर्थ (Tattha katamam uddhaccarn) vupasamo का विलोम और vikkhepo के समतुल्य है।

ये दोनों ही ऐसी अभिव्यक्तियाँ हैं जिनके अर्थ के बारे में बहुत कम या कोई अनिश्चितता नहीं है। संस्कृत में औद्धात्य शब्द बाद के ग्रंथों में केवल दो बार पाया जाता है, जिनमें से एक बौद्ध ग्रंथ है (देखें बोथल और बोथ, एसवी), और वहाँ इसका अर्थ है संघर्ष, एक ऐसा शब्द जिसका प्रयोग हम कुछ उत्तेजित, प्रचंड मानसिक अवस्थाओं के लिए करते हैं। निवरणों में इस शब्द को कुक्कुच्चम (चिंता) के साथ जोड़ना (देखें §§ 1158-1160; और दूसरे संबंधित जोड़े, थ मामिद ध आम, §§ 1155-1157 में समान अर्थ की तुलना करें) इसे अहंकार या आत्म-धार्मिकता के निहितार्थों से काफी हद तक वंचित कर देता है। ('बुद्ध के संवाद', i. 82 में, पूर्व जोड़ी को 'उथल-पुथल और चिंता' के रूप में अनुवादित किया गया है।) बुद्धघोष बहुत कम सहायता प्रदान करते हैं; लेकिन वह उद्धच्चम् (एकराममने विप्पन्दति) को एक ही विचार विषय पर संघर्ष (एकराममने विप्पन्दति) और उलझन (विभिन्न विचार विषयों पर संघर्ष) के बीच अंतर करते हैं। बौद्ध स्पष्ट रूप से ऐसी मानसिक स्थिति का वर्णन करने के लिए शब्दों की तलाश कर रहे थे जो थिनामिद्धम् (स्थिरता और सुस्ती) से विपरीत हो। थिनामिद्धम् में अत्यधिक स्थिरता होती है - यह स्थिरता किसी सूक्ष्म रूप से संतुलित इंद्रियों और मूल्यों की नहीं, बल्कि एक जड़ द्रव्यमान की होती है। उद्धच्च-कुक्कुच्चम् (उद्धच्च-कुक्कुच्चम्) में संतुलन और समायोजन का अभाव होता है। किसी न किसी कारण से व्यक्ति उत्तेजित, व्याकुल और परेशान हो जाता है; अमेरिकी मुहावरे में, 'घबरा जाता है'।

जिसे मैंने 'उथल-पुथल' (भंट्टतम; अधिक शाब्दिक रूप से, डगमगाता, लुढ़कता, डगमगाता हुआ) प्रस्तुत किया है, बुद्धघोष उसे विभांति-भावो {सिक लेगे), भंतायन-भंतागोनादिनं विया (असल 260) कहते हैं।

उद्धच्चम का सटीक अर्थ चाहे जो भी हो, यह दिखाने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं कि यह प्रश्नगत बुरे विचार के अंतर्गत सूचीबद्ध कुछ अन्य घटकों के काफी हद तक विपरीत है—कम से कम, जब इन्हें उनके पूर्ण अर्थ में लिया जाता है। मैं लगभग समानार्थी समूह की बात कर रहा हूँ: 'आत्म-संयम', 'एकाग्रता', 'शांति' और 'संतुलन'। वास्तव में, अंतिम (अविक्खेपो) उस वाक्यांश का विरोधाभास है जो उद्धच्चम को चेतसो विक्खेपो के रूप में वर्णित करता है! पाठ में वास्तव में इसका उल्लेख नहीं है, लेकिन यह केवल अनजाने में हुआ है (देखें § 430)।

यह K. में दिया गया है, और Cy. स्पष्ट रूप से (पृष्ठ 260) कहता है कि अट्ठाईस घटक सूचीबद्ध हैं, जिनमें से चौदह को अन्य चौदह में से किसी एक के संदर्भ में वर्णित किया गया है। (यदि पाठक § 427 की तुलना §§ 2-57 में दिए गए संबंधित विवरणों से करेगा, तो वह इसे सही साबित कर देगा।) न ही इसमें समावेशन में किसी स्पष्ट विसंगति पर टिप्पणी करने या उसे स्पष्ट करने के लिए कोई शब्द है। केवल उद्दच्चम् और विचिचिच्च के संबंध पर एक संक्षिप्त चर्चा है, जिसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। विचार 11. और 12., 1. से 9. की सममित प्रक्रिया से हटकर, विविध विषय माने जाते हैं, और विचार (अरम्मने पावत्तनक-चित्तनि) पर निरंतर ध्यान देने से संबंधित हैं। और जिस प्रकार, यदि एक गोलाकार रत्न और एक चतुर्भुजाकार रत्न को एक झुके हुए तल पर लुढ़काया जाए, तो पहले वाले की गति एकसमान होती है, जबकि दूसरे वाले की गति एक विराम अवस्था से दूसरी विराम अवस्था तक होती है, उसी प्रकार vicikiccha विचारों के निरंतर कार्य को दर्शाता है, जबकि uddhaccam एक समय में एक दिए गए आधार पर कार्य करता है।

इस प्रकार, जैसा कि प्रतीत होता है, 'उलझन' और 'उत्तेजना' के बीच काफी समानता को देखते हुए, यह मानना उचित है कि 'आत्म-संयम' और इसके पर्यायवाची शब्द बारहवें विचार में उसी दुर्बल रूप में मौजूद हैं, जिस दुर्बल रूप में वे, या कम से कम उनमें से पहला, ग्यारहवें विचार में मौजूद हैं (देखें § 424, n.)। इस प्रकार संकलक अपनी तर्कशक्ति को लेकर दुविधा में थे। या तो 'विक्खेपो' के प्रयोग को स्वीकार करने के लिए 'अविक्खेपो' को हटाना होगा - इस स्थिति में 'अविक्खेपो' के पर्यायवाची शब्द (समाधि, आदि) भी हटाने होंगे - या इसे और इसके पर्यायवाची शब्दों को अत्यंत संकुचित अर्थ में बनाए रखना होगा। संभवतः विषय को केवल किसी एक बिंदु पर उत्तेजित, लेकिन सामान्य रूप से शांत माना गया था।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक1-भाग3-अध्याय 1

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण

- पुस्तक 1 - विचारों की उत्पत्ति
  - भाग 3 - चेतना की अनिश्चित अवस्थाएँ

अंतर्वस्तु

अध्याय I - प्रभाव या परिणाम पर
विपाको

ए. अच्छे कर्म। [पृष्ठ 123]
1. इंद्रिय-संबंधी ब्रह्मांड में।
(क) पांच प्रकार की अनुभूतियों को अच्छाई के परिणाम के रूप में माना जाता है (kusalavipakani pane av innanani).]
(मैं।)
[431] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब, अच्छे कर्म[1] के फलस्वरूप, इंद्रिय जगत के संबंध में संचित होने के कारण, दृश्य बोध उत्पन्न हुआ है, जो कि अनासक्ति[2] से युक्त है, और जिसका विषय कुछ देखा हुआ है, तब संपर्क, सोच, भावना,
विचार,
बोध, अनासक्ति,
आत्म-संयम होता है;

[पृष्ठ 124] विचार,
निस्वार्थता, जीवंतता की क्षमताएँ
। ये, या उस अवसर पर मौजूद अन्य [3] निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ - ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[432] ऊपर दिए गए अनुसार 'संपर्क' पर प्रश्न और उत्तर, पासिम।
[433] उस अवसर पर भावना क्या है?
वह मानसिक स्थिति, जो न तो सुखद है और न ही अप्रिय, जो उस अवसर पर दृश्य अनुभूति के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होती है; वह संवेदना, जो विचार के संपर्क से उत्पन्न होती है, जो न तो सुखदायक है और न ही कष्टदायक; वह अनुभूति, जो विचार के संपर्क से उत्पन्न होती है, जो न तो सुखदायक है और न ही कष्टदायक — यही वह अनुभूति है जो उस समय मौजूद होती है।
[434] उस अवसर पर धारणा क्या है?
वह अनुभूति, वह अनुभव, वह अनुभव करने की अवस्था, जो उस अवसर पर दृश्य अनुभूति के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होती है - यही वह अनुभूति है जो उस समय मौजूद होती है।
[435] उस अवसर पर क्या सोच रहा है?
उस अवसर पर दृश्य अनुभूति के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होने वाला चिंतन, मनन और विचार-विमर्श ही वह चिंतन है जो उस समय मौजूद होता है।
[436] उस अवसर पर क्या सोचा जाता है?
उस अवसर पर जो विचार, मन, हृदय, जो स्पष्ट है, मन के क्षेत्र के रूप में विचार, विचार करने की क्षमता, बुद्धि, बुद्धि का स्कंध, दृश्य बोध का उपयुक्त तत्व - वही विचार उस समय विद्यमान होता है।
[437] उस अवसर पर निस्वार्थता क्या है?
धारा 436 के अनुसार 'भावना' के लिए उत्तर दें, वाक्यांश 'जो दृश्य अनुभूति के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होता है' को हटा दें।
[पृष्ठ 125] [438] उस अवसर पर आत्म-संयम क्या है?

उस अवसर पर जो विचार की निरंतरता[4] होती है—यही वह आत्म-संयम है जो तब होता है। [439] उस अवसर पर विचार की क्षमता क्या है?
'विचार' के लिए उत्तर दें, धारा 436।

[440] उस अवसर पर निःसंकोचता की क्षमता क्या है?
धारा 437 के अनुसार उत्तर दें।
[441] उस अवसर पर जीवन शक्ति की क्षमता क्या है?

धारा 19 के अनुसार उत्तर दें।
या उस अवसर पर मौजूद अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ - ये वे अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[सारांश।]
[441ए]

अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं,
गोले दो हैं,
तत्व दो हैं,
पोषक तत्व तीन हैं,
क्षमताएँ तीन हैं,[5] संपर्क एक कारक के रूप में गिना जाता है,
इत्यादि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें]
[पृष्ठ 126] विचार करने की क्षमता को एक कारक के रूप में गिना जाता है,
दृश्य अनुभूति के तत्व को एक कारक के रूप में गिना जाता है,
[मानसिक] अवस्थाओं के क्षेत्र को एक कारक के रूप में गिना जाता है,
इत्यादि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]
[442] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है? संपर्क,
चिंतन,
आत्म-संयम,
जीवन शक्ति, या उस अवसर पर मौजूद अन्य कोई भी निराकार, कारण-प्रेरित अवस्थाएँ, भावना, बोध और बुद्धि के स्कंधों को छोड़कर - ये संश्लेषण के स्कंध हैं।

(द्वितीय क्रिया)
[443] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
जब, अच्छे कर्मों के फलस्वरूप, इंद्रिय जगत से संबंध स्थापित होने के कारण, श्रवण बोध,
घ्राण बोध, या
स्वाद बोध उत्पन्न हो जाता है, जो अनासक्ति से युक्त होता है, और जिसका विषय क्रमशः ध्वनि,
गंध, या
स्वाद होता है ... या शरीर का बोध [पृष्ठ 127] उत्पन्न हो जाता है, जो सहजता से युक्त होता है, और जिसका विषय कुछ मूर्त होता है,[6]
तब संपर्क, चिंतन,
भावना,[7] विचार,
बोध, सहजता,

आत्म-संयम होता है;

विचार-मंथन,
सहजता और जीवंतता जैसी क्षमताएँ
। अब, ये या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।
[444] उपरोक्त अनुसार 'संपर्क' पर प्रश्न और उत्तर, पूरे समय
[445] उस अवसर पर भावना क्या है?

शारीरिक सुख, शारीरिक आराम, जो उस अवसर पर शरीर के संज्ञान के उपयुक्त तत्व से उत्पन्न होता है; सुखद, आरामदायक संवेदना जो [पृष्ठ 128] शरीर के संपर्क से उत्पन्न होती है; सुखद, आरामदायक भावना जो शरीर के संपर्क से उत्पन्न होती है - यही वह भावना है जो तब होती है।
[446] उस अवसर पर धारणा क्या है?
वह अनुभूति, वह अनुभूति, वह अनुभूति प्राप्त करने की अवस्था, जो उस अवसर पर शरीर की अनुभूति के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होती है — यही वह अनुभूति है जो उस समय विद्यमान होती है।
[447] उस अवसर पर क्या सोच रहा है?
उस अवसर पर शरीर की अनुभूति के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होने वाला चिंतन, मनन और विचार-विमर्श ही वह चिंतन है जो उस समय मौजूद होता है।
[448] उस अवसर पर क्या सोचा जाता है?
उस अवसर पर जो विचार, मन, हृदय, वह जो स्पष्ट है; मन के क्षेत्र के रूप में विचार, विचार करने की क्षमता, बुद्धि, बुद्धि का स्कंध, शरीर के संज्ञान का उपयुक्त तत्व — वही विचार उस समय विद्यमान होता है।
[449] उस अवसर पर सहजता क्या है?
उस समय शरीर से मिलने वाला सुख, शरीर को मिलने वाली सहजता, जो शरीर के संपर्क से उत्पन्न होने वाली सुखद और आरामदायक अनुभूति होती है; शरीर के संपर्क से उत्पन्न होने वाली सुखद और आरामदायक भावना—यही वह सहजता है जो उस समय मौजूद होती है।
[450-453] उस अवसर पर आत्म-संयम क्या है[8] . . . विचार की क्षमता [9] . . . सहजता . . . जीवंतता?
धारा 438, 448, 449 और 441 के अनुसार उत्तर दें।
या उस अवसर पर मौजूद अन्य कोई भी निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ - ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[पृष्ठ 129] [सारांश।]
[453ए]

उस अवसर पर स्कंध चार होते हैं,
इत्यादि।
[धारा 441क के अनुसार जारी रखें, 'दृश्य अनुभूति के तत्व' के स्थान पर 'शरीर की अनुभूति का तत्व' प्रतिस्थापित करें।]
[454] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
धारा 442 के अनुसार उत्तर दें।
(ख) अच्छे कर्मों का प्रभाव विचार में दिखना (कुसलाविपक मनोधातु)।
[455] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब, अच्छे कर्मों के फलस्वरूप, इंद्रिय जगत से संबंध में संचित होने के कारण, निस्वार्थता के साथ, विचार का एक तत्व[10] उत्पन्न हुआ है, और जिसका उद्देश्य दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, कुछ मूर्त, या कुछ भी नहीं है, तब संपर्क, विचार,
भावना, अवधारणा, [पृष्ठ 130] बोध, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, निस्वार्थता,

आत्म-संयम होता है;

विचार,
निस्वार्थता, जीवंतता की क्षमताएँ
। ये, या उस अवसर पर मौजूद अन्य [11] निराकार, कारण से प्रेरित अवस्थाएँ - ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[456] उपरोक्त 'संपर्क' पर प्रश्न और उत्तर, पूरे क्रम में
[457] उस अवसर पर भावना क्या है?

वह मानसिक स्थिति, जो न तो सुखद है और न ही अप्रिय, जो उस अवसर पर विचार के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होती है; वह संवेदना, जो विचार के संपर्क से उत्पन्न होती है, जो न तो सुखदायक है और न ही कष्टदायक; वह अनुभूति, जो विचार के संपर्क से उत्पन्न होती है, जो न तो सुखदायक है और न ही कष्टदायक — यही वह अनुभूति है जो उस समय मौजूद होती है।
[458-460] उस अवसर पर बोध . . . सोच . . . विचार क्या है?
धारा 446-448 के अनुसार उत्तर, 'शरीर के संज्ञान के तत्व' के स्थान पर 'विचार के तत्व' को प्रतिस्थापित करते हुए।

[461] उस अवसर पर गर्भाधान क्या है?

तर्क, वह कल्पना जो उस अवसर पर स्वभाव, निर्धारण, ध्यान केंद्रित करना, मन का अनुप्रयोग है[12] — यही वह धारणा है जो तब होती है।
[462] उस अवसर पर विवेचनात्मक विचार क्या है?

वह प्रक्रिया, वह सतत कार्यविधि, वह प्रगति और पहुंच [मन की] जो उस अवसर पर विचार का निरंतर समायोजन और निर्देशन है — यही वह विवेचनात्मक विचार है जो उस समय मौजूद होता है।
[पृष्ठ 131] [463-467] उस अवसर पर निस्वार्थता क्या है... आत्मसंयम... विचार करने की क्षमता... निस्वार्थता... जीवंतता?
उत्तर क्रमशः एम §§ 437, 438, 460, 440,[13] 441 के रूप में हैं।
[सारांश।]
[467ए]

अब, उस अवसर पर स्कंध चार हैं,
क्षेत्र दो हैं,
तत्व दो हैं,
पोषक तत्व तीन हैं,
इंद्रियां तीन हैं,
संपर्क को एक कारक के रूप में गिना जाता है,
इत्यादि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]
विचार उत्पन्न करने की क्षमता को एक कारक के रूप में गिना जाता है,
विचार का तत्व एक कारक के रूप में गिना जाता है,
इत्यादि।
[468] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है? संपर्क, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, आत्म-संयम,
अवधारणा, जीवन शक्ति। या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारण-प्रेरित अवस्थाएँ हों, भावना, बोध और बुद्धि के स्कंधों को छोड़कर—ये संश्लेषण के स्कंध हैं।

[पेज 132] (सी) अच्छा (कर्म) प्रतिनिधि बुद्धि में प्रभाव डाल रहा है (कुसल-विपाक मनोयिन्नाधातु)।
(i.) जब खुशी के साथ हो,
[469] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
जब, अच्छे कर्मों के फलस्वरूप, इंद्रिय-संबंधी जगत के साथ संचित होने पर, प्रतिनिधिक ज्ञान का एक तत्व[14] उत्पन्न होता है, जो सुख के साथ होता है और जिसका उद्देश्य [पृष्ठ 133] एक दृष्टि, एक ध्वनि, एक गंध, एक स्वाद, कुछ मूर्त, विचार [इनमें से किसी का], या कुछ भी नहीं होता है, तब संपर्क, अवधारणा,
भावना, विवेचनात्मक विचार,
बोध, आनंद,
चिंतन, सहजता,
विचार, आत्म-संयम होता है;

विचार-मंथन,
खुशी, जीवंतता जैसी क्षमताएं
। ये, या इनके अलावा कोई अन्य क्षमताएं।
[धारा 455 के अनुसार जारी रखें।]
[470-482] इन तेरह घटक अवस्थाओं का वर्णन §§ 2-11 और 17-19 में किया गया है, सिवाय 'गर्भधारण' (vitakko) और 'स्वयं-संग्रह' (cittass' ekaggata) के, जिनका वर्णन §§ 461, 464 में प्रयुक्त प्रतिबंधित अर्थ के साथ किया गया है।
[सारांश।]
[482ए] धारा 467ए के समान, लेकिन 'प्रतिनिधि संज्ञान का तत्व' (मनोविननाधातु) को 'विचार के तत्व' के स्थान पर प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए।[15]
[483] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है? संपर्क, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, आनंद,
अवधारणा, आत्म-संयम;
जीवन शक्ति की क्षमता
। या उस अवसर पर जो भी निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ हों, भावना, [पृष्ठ 134] बोध और बुद्धि के स्कंधों को छोड़कर — ये संश्लेषण के स्कंध हैं।
(ii.) जब निस्वार्थता के साथ हो।
[484] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब, अच्छे कर्मों के फलस्वरूप, इंद्रिय जगत के संबंध में संचित होने के कारण, प्रतिनिधि बोध[16] का एक तत्व उत्पन्न हुआ है, जो निस्वार्थता से युक्त है, और जिसका उद्देश्य दृष्टि आदि है (ऊपर देखें, § 469] . . . तब संपर्क, विचार,
भावना, अवधारणा,
बोध, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, निस्वार्थता,
आत्म-संयम होता है;

विचार-मंथन,
निस्वार्थता, जीवंतता जैसी क्षमताएँ
। ये, या इनके अलावा कोई अन्य क्षमताएँ।
[धारा 469 के अनुसार जारी रखें।]

[पृष्ठ 135] [485-496] इन तेरह अवस्थाओं का वर्णन पूर्ववर्ती खंड (i.) में दिए गए अनुसार ही किया गया है, सिवाय इसके कि धारा 152-154 में दिए गए 'भावना' और 'निस्वार्थता' पर प्रश्न और उत्तर धारा 471, 477 और 481 में दिए गए 'भावना', 'आनंद' और 'खुशी की क्षमता' पर प्रश्नों और उत्तरों के स्थान पर प्रतिस्थापित किए जाने चाहिए। 'सुविधा' को हटा दिया गया है।

[सारांश।]

[496ए] धारा 482ए में उल्लिखित शर्तों के समान शर्तें।

[497] संश्लेषण का स्कंध § 483 में बताए गए विषयवस्तु के समान है, लेकिन 'आनंद' के लोप के साथ।

(घ) आठ मुख्य प्रकार के परिणाम (अत्थ महाविपाक)।

[498] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब, अच्छे कर्मों के फलस्वरूप, इंद्रिय जगत से संबंधित संचय के कारण, प्रतिनिधिक ज्ञान का एक तत्व उत्पन्न हो जाता है,

खुशी के साथ और ज्ञान से जुड़ा हुआ...

खुशी के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, और एक सचेत मकसद से प्रेरित...

खुशी से परिपूर्ण और ज्ञान से विरक्त...

आनंद से परिपूर्ण, ज्ञान से विरक्त, और एक सचेत प्रेरणा से प्रेरित...

उदासीनता के साथ और ज्ञान से जुड़ा हुआ...

निस्वार्थता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, और एक सचेत मकसद से प्रेरित...

उदासीनता और ज्ञान से अलगाव के साथ...

यदि यह निष्पक्षता के साथ हो, ज्ञान से अलग हो [पृष्ठ 136], और एक सचेत मकसद से प्रेरित हो, और इसका उद्देश्य एक दृष्टि, एक ध्वनि, एक गंध, एक स्वाद, कुछ मूर्त, या कुछ भी हो, तो संपर्क होता है[17] . . . संतुलन।

ये, या उस अवसर पर मौजूद कोई भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ — ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[498ए]

कामवासना का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है... घृणा का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है... सुस्ती का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है... ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।[18]

2. रूप के ब्रह्मांड में।

[499] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह रूप के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इंद्रिय सुख आदि से विरक्त होकर,[19] प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... तब संपर्क आदि होता है।[20] अब, ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं। लेकिन जब, इसी [पृष्ठ 137] अच्छे कर्मों के फलस्वरूप, रूप जगत से संबंध में संचित होने पर, वह इंद्रिय सुख आदि से विरक्त होकर प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... तब संपर्क आदि होता है। और ये... अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।

[500] शेष ध्यानों के सूत्र को चतुर्गुण प्रणाली पर और पंचगुण प्रणाली पर सभी ध्यानों के सूत्र को प्रतिस्थापित करते हुए दोहराएँ।

3. निराकार के ब्रह्मांड में।

[501] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह निराकार के स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए उस मार्ग का अभ्यास करता है, और इस प्रकार, रूप की सभी चेतना से पूरी तरह परे जाकर, इंद्रिय प्रतिक्रिया की चेतना के लुप्त होने से, अनेक प्रकार की चेतना से ध्यान हटाकर, वह उस मन की अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है जो असीम अंतरिक्ष के क्षेत्र की चेतना से युक्त होती है - यहाँ तक कि चौथा ध्यान, जिसे प्राप्त करने के लिए

सभी सहजता की भावना को त्याग देना चाहिए, आदि। [धारा 265 के अनुसार जारी रखें] - तब संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है, ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।[21]

लेकिन जब, इसी अच्छे कर्म के फलस्वरूप, निराकार ब्रह्मांड के संबंध में संचित होने पर, वह रूप की सभी चेतना से पूर्णतः परे जाकर, इंद्रिय-प्रतिक्रिया की चेतना के लुप्त होने से, अनेक प्रकार की चेतना से ध्यान हटाकर, उस तल्लीन ध्यान में प्रवेश करता है और स्थिर रहता है जो असीम अंतरिक्ष के क्षेत्र की चेतना से युक्त होता है - यहाँ तक कि चौथा ध्यान, जिसे प्राप्त करने के लिए सभी सुख-सुविधाओं को त्याग देना आवश्यक है, आदि। [ऊपर जारी रखें] . . . तब [पृष्ठ 138] संपर्क[22] . . . जो संतुलन उत्पन्न होता है, ये . . . अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।

[502-504] यहाँ क्रमानुसार अन्य तीन 'निराकार अस्तित्व से जुड़े ध्यान' (§§ 266-268) आते हैं, अर्थात्, 'अनंत बुद्धि का क्षेत्र', 'शून्यता का क्षेत्र', और 'वह क्षेत्र जहाँ न तो बोध है और न ही अबोध', जिनमें से प्रत्येक का 'परिणाम' चौथा ध्यान है, जैसा कि § 501 में बताए गए सूत्र में है।

4. उच्च आदर्श की खोज में (लोकोत्तरविपको)।

I. पहला मार्ग।

बीस महान विधियाँ।

1. एकाग्र ध्यान।

(i.) शुद्धिकरण में प्रगति के चार तरीके।

[505] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ने और पुनर्जन्म के चक्र को तोड़ने की प्रेरणा मिलती है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... [धारा 277 के अनुसार जारी] क्योंकि उसमें प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है - तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। अब ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।

लेकिन जब, इस अच्छे ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में विकसित होने के बाद[23], वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ प्रगति कष्टदायी होती है, अंतर्ज्ञान सुस्त होता है, और जो शून्य होता है — तब संपर्क स्थापित होता है... ज्ञान की क्षमता पूर्ण हो जाती है[24]... संतुलन। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[506] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्र ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे पुनर्जन्म का निवारण होता है और निरंतर प्रगति होती है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार इंद्रिय सुखों और बुरे विचारों से विरक्त होकर प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... [धारा 277 के अनुसार जारी] क्योंकि उसमें प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है - तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। अब ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।

लेकिन जब, इस अच्छे ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में विकसित होने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जिसकी प्रगति कष्टदायक है, जिसमें अंतर्ज्ञान सुस्त है, और जो संकेतहीन है[25]...

[या] [507] (उपरोक्त सभी को दोहराते हुए)

जो लक्ष्यहीन है[26] — तब संपर्क होता है... ज्ञान की क्षमता पूर्ण हो जाती है... संतुलन। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[508] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

[पृष्ठ 140] जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्र ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ने और पुनर्जन्म को समाप्त करने की दिशा में प्रगति होती है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, अवधारणा और विवेचनात्मक विचार के कार्य को दबाकर, द्वितीय ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है...

[या] ... तीसरे ध्यान में ... [या] ... चौथे ध्यान में ... [या] ... [पांच गुना ध्यान के लिए उसी इवै में जारी रखें] ... प्रगति जिसमें कष्ट हो और अंतर्ज्ञान सुस्त हो, तो यह अच्छा (कर्म) है। [27]

लेकिन जब, [इस या उस ध्यान के फलस्वरूप, जब संगत ध्यान प्राप्त होता है] ऐसी प्रगति होती है जिसमें पीड़ा होती है, ऐसी अंतर्ज्ञान शक्ति होती है जो सुस्त होती है, और जो शून्य,

संकेतहीन,

या लक्ष्यहीन होती है, तब संपर्क... जो संतुलन उत्पन्न होता है—ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[509] पिछले दो खंडों को दोहराएँ, प्रगति के शेष तीन तरीकों को क्रम से प्रतिस्थापित करते हुए: 'प्रगति जहाँ कष्टदायक है, लेकिन अंतर्ज्ञान तेज़ है', 'प्रगति जहाँ आसान है, लेकिन अंतर्ज्ञान सुस्त है', और 'प्रगति जहाँ आसान है, और अंतर्ज्ञान तेज़ है' (§§ 176-180)।

(ii.) शून्यता की धारणा शुद्धिकरण (शुद्धिका-सुन्नतम) पर लागू होती है।

[510] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ने और पुनर्जन्म को समाप्त करने की दिशा में एक निरंतर प्रगति होती है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, वह प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जो शून्य है—तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। अब ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।

लेकिन जब, इस उत्तम ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसका अभ्यास करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जो कि शून्य है...

[या] [511] जो चिह्नहीन है ... [या] [512] जो लक्ष्यहीन है — तब संपर्क है ... संतुलन। और ये ... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[513] चार गुना प्रणाली पर शेष प्रत्येक Jhdna के मामले में और पंचगुण प्रणाली पर सभी J lianas के मामले में दोहराएँ,

(iii.) शून्यता (सुन्नत[28]-पतिपाद) की धारणा के संबंध में प्रगति के चार तरीके।

[पहला मोड।]

[514] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे निरंतर प्रगति होती है और पुनर्जन्म का निवारण होता है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार इंद्रिय सुखों और बुरे विचारों से विरक्त होकर प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जब प्रगति कष्टदायी होती है और अंतर्ज्ञान सुस्त होता है, और जो शून्य होता है, तब संपर्क... संतुलन प्राप्त होता है। अब ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।

लेकिन जब, इस अच्छे ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसे विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, [पृष्ठ 142] बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जिसकी ओर प्रगति कष्टदायक है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, और जो शून्य है...

[या] [515] जो संकेतहीन है...

[या] [516] जो लक्ष्यहीन है, तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[517] चार गुना प्रणाली पर शेष प्रत्येक Jhdna के मामले में और पंचगुण प्रणाली पर सभी Jhdna के मामले में दोहराएँ।

[द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ विधाएँ।]

[518] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ने और पुनर्जन्म के चक्र को तोड़ने की दिशा में एक निरंतर प्रगति होती है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, वह प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है...

— वह प्रगति जिसमें कष्ट होता है, लेकिन अंतर्ज्ञान तीव्र होता है,
और जो खाली है...

— वह प्रगति जिसमें आसानी होती है, लेकिन अंतर्ज्ञान सुस्त होता है,
और जो खाली है...

— वह प्रगति जिसमें आसानी होती है और अंतर्ज्ञान तीव्र होता है,
और जो खाली है...

[तीनों मोड के मामले में शेष Jhdna को प्रतिस्थापित करते हुए दोहराएँ]

...तो ये अच्छे कर्म कहलाते हैं।

लेकिन जब, [तीनों गुणों में से किसी एक में इस या उस ध्यान के फलस्वरूप], वह क्रम से लिए गए किसी भी ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो तीनों गुणों में से किसी एक में हो और जो शून्य हो . . .

. . . [या] जो चिन्हहीन हो . . .

. . . [या] जो लक्ष्यहीन हो, [पृष्ठ 143] तब संपर्क . . . संतुलन स्थापित होता है। और ये . . . अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।

(iv.) लक्ष्यहीनता की धारणा शुद्धि (शुद्धिका-अप्पनिहितम्) पर लागू होती है।

[519] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे निरंतर प्रगति होती है और पुनर्जन्म का निवारण होता है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार इंद्रिय-सुखों और बुरे विचारों से विरक्त होकर प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जो लक्ष्यहीन है, तब संपर्क और संतुलन स्थापित होता है। ये अवस्थाएँ उत्तम हैं।

लेकिन जब, इस उत्तम ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसे विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जो लक्ष्यहीन है...

[या] [520] जो संकेतहीन है...

[या] [521] जो शून्य है, तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[522] प्रत्येक q/ के मामले में, चतुर्विध प्रणाली के शेष ध्यानों और पंचविध प्रणाली के सभी ध्यानों के मामले में दोहराएँ।

(v.) उद्देश्यहीनता (अप्पनिहित-पतिपाद) की धारणा के संबंध में प्रगति के चार तरीके।

[523] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ने और पुनर्जन्म को समाप्त करने की दिशा में प्रगति होती है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जिस तक प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, और जो लक्ष्यहीन है, तब संपर्क... संतुलन प्राप्त होता है। अब ये... अच्छी अवस्थाएँ हैं।

लेकिन जब, इस उत्तम ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसे विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जिसकी ओर प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, और जो लक्ष्यहीन है...

[या] [524] जो संकेतहीन है...

[या] [525] जो शून्य है, तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[526] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श (समाधिपूर्ण ध्यान) के ध्यान का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ना और प्रगति करना संभव होता है, पुनर्जन्म का निवारण होता है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, अवधारणा और विचार विवेचनात्मक क्रिया को दबा देता है,[29] वह द्वितीय ध्यान में, या [चतुर्गुण और पंचगुण प्रणाली पर शेष किसी भी ध्यान में] प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जिसकी प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, और जो लक्ष्यहीन है, तब यह अच्छा (कर्म) कहलाता है।

लेकिन जब, [इस या उस ध्यान के परिणामस्वरूप, संगत ध्यान प्राप्त होता है]^ प्रगति जिसमें कठिनाई होती है और अंतर्ज्ञान सुस्त होता है, और जो लक्ष्यहीन है, [या] जो संकेतहीन है,[30] [पृष्ठ 145] [या] जो खाली है,[31] तब संपर्क होता है... संतुलन। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[527] अब दूसरे, तीसरे और चौथे मोड को बारी-बारी से प्रतिस्थापित किया जाता है, जैसा कि § 518 में किया गया है।

2-20. शेष उन्नीस महान विधियाँ।

[528] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

यहां उन्नीस अवधारणाएं दी गई हैं, जिनमें से प्रत्येक को पूर्ववर्ती अभ्यासों (§§ 505-528) में 'उच्च आदर्श के ध्यान' के स्थान पर प्रतिस्थापित किया जा सकता है, और इस अनुच्छेद में वास्तव में जिन अभ्यासों के लिए इन्हें लागू किया गया है, वे §§ 505-509 में दिए गए 'शुद्धिकरण में प्रगति के तरीके' हैं। इन उन्नीस अवधारणाओं को § 358 में सूचीबद्ध किया गया है।

(vi.) इच्छा के प्रमुख प्रभाव के संबंध में शुद्धि में प्रगति के तरीके (चंदाधिपतेय्या-सुद्धिका-पतिपाद) ।[32]

[529] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे निरंतर प्रगति होती है और पुनर्जन्म का निवारण होता है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं और बुरे विचारों से विरक्त होकर प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जब प्रगति कठिन होती है और अंतर्ज्ञान सुस्त होता है, और जिसमें इच्छा का प्रभुत्व होता है—तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। अब ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।

लेकिन जब, इस उत्तम ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसे विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है। [पृष्ठ 146] — जो शून्य है...

[या] [530] जो संकेतहीन है[33]...

[या] [531] जो लक्ष्यहीन है, और जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा का है — तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[532] दोनों प्रणालियों पर शेष प्रत्येक Jhdna के मामले में दोहराएँ।

[533] प्रत्येक Jhdna पर लागू शेष तीन 'प्रगति के तरीके' के मामले में दोहराएँ।

(vii.) शुद्धि के लिए लागू शून्यता की धारणा, और प्रमुख प्रभाव के रूप में इच्छा के संबंध में लिया गया (चंदाधिपतेय्यम सुद्धिका-सुन्नतम) ।[34]

[534] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे निरंतर प्रगति होती है और पुनर्जन्म का निवारण होता है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार इंद्रिय-सुखद इच्छाओं और बुरे विचारों से विरक्त होकर प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जो शून्य है, और जिसमें अभिलाषा का प्रभुत्व है—तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। अब ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।

लेकिन जब, इस उत्तम ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसे विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जो कि शून्य है...

[या] [535] जो कि संकेतहीन है...

[या] [536] जो कि लक्ष्यहीन है, और जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा का है - तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[पृष्ठ 147] [537] दोनों प्रणालियों पर शेष प्रत्येक Jhdna के मामले में दोहराएँ।

(viii.)[35]

[538] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के ध्यान (एकाग्रचित्त ध्यान) का अभ्यास करता है, जिससे निरंतर प्रगति होती है और पुनर्जन्म का निवारण होता है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार इंद्रिय-सुखों और बुरे विचारों से विरक्त होकर प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जब उस ध्यान की ओर प्रगति कठिन होती है और अंतर्ज्ञान सुस्त होता है, जो शून्य है, और जिसमें इच्छा का प्रभुत्व होता है—तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। अब ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।

लेकिन जब, इस अच्छे ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसे विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, - जो शून्य है...

[या] [539] जो संकेतहीन है[36]...

[या] [540] जो लक्ष्यहीन है[37], और जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा का है - तब संपर्क... संतुलन होता है। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[541] शेष प्रत्येक झाना के मामले में इसे दोहराएँ,

[542] शेष तीन 'प्रगति के तरीकों' में से प्रत्येक के मामले में इसे दोहराएँ, जो प्रत्येक ध्यान पर लागू होते हैं।

[पृष्ठ 148] (ix.)

[543-546] यह समूह समूह सात के समान है। [§§ 534-537], सिवाय इसके कि लक्ष्यहीन की अवधारणा खाली की अवधारणा का स्थान लेती है, और इसके विपरीत।

(एक्स।)

[547-551] यह समूह समूह viii के समान है। [§§ 538-542], सिवाय इसके कि लक्ष्यहीन की अवधारणा खाली की अवधारणा का स्थान लेती है, और इसके विपरीत।

2-20. शेष उन्नीस महान विधियाँ.[38]

[552] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब वह उच्च आदर्श के मार्ग का अभ्यास करता है, उच्च आदर्श की ओर सचेतनता में प्रगति करता है, उच्च आदर्श की ओर आठ प्रयासों की प्रणाली का पालन करता है, आदि [धारा 358 के अनुसार जारी रखें, 'उच्च आदर्श से संबंधित विचार'], जिससे आगे बढ़ना और प्रगति करना संभव होता है, पुनर्जन्म का निवारण होता है, और जब वह प्रथम अवस्था को प्राप्त करने के लिए विचारों और मतों को त्याग देता है, और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, और जिसमें प्रमुख प्रभाव इच्छा का है - तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। अब ये... अवस्थाएँ अच्छी हैं।

लेकिन जब, इस उत्तम ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसका अभ्यास करने के बाद, व्यक्ति इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ प्रगति कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, जो शून्य,

या संकेतहीन,
या लक्ष्यहीन है, और जिसमें प्रमुख प्रभाव [पृष्ठ 149] इच्छा,
या ऊर्जा,
या विचार,
या अन्वेषण है, तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। और ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[यहाँ समाप्त होता है] प्रथम पथ में परिणाम।
द्वितीय.— चतुर्थ. शेष तीन मार्ग. तुलना करें. धारा 362-364क.
[553] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
जब वह उच्च आदर्श (समाधिपूर्ण ध्यान) के ध्यान का अभ्यास करता है, जिससे आगे बढ़ना और प्रगति करना संभव होता है, जिससे पुनर्जन्म का नाश होता है, और जब, ताकि वह द्वितीय अवस्था को प्राप्त कर सके, तो उसने कामुक भावनाओं और द्वेष की शक्ति को कम कर दिया है[39] . . .
या जब वह तृतीय अवस्था को प्राप्त कर ले, तब वह कामुक भावनाओं और द्वेष के सभी अवशेषों को त्याग दे...
[या] जब वह चौथे चरण को प्राप्त करने के लिए रूप के प्रति सभी जुनून, निराकार के प्रति सभी जुनून, सभी अहंकार, उत्तेजना और अज्ञान को पूरी तरह से त्याग देता है - और इस प्रकार, इंद्रिय सुखों से दूर, बुरे विचारों से दूर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें रहता है... प्रगति जहां कठिन है और अंतर्ज्ञान सुस्त है, तब संपर्क होता है... ज्ञान की क्षमता परिपूर्ण हो जाती है[40]... संतुलन।
अब ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अच्छी हैं।[41]
[पृष्ठ 150] परन्तु जब, इस उत्तम ध्यान के फलस्वरूप, उच्च आदर्श की खोज में इसका अभ्यास किया जाता है, और वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... जहाँ तक पहुँचना कठिन है, अंतर्ज्ञान सुस्त है, और जो शून्य है, तब संपर्क स्थापित होता है... उस व्यक्ति की क्षमता का संतुलन, जिसका ज्ञान पूर्ण हो चुका है। और ये... अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।
[554] ऊपर दिए गए अनुसार 'संपर्क' पर प्रश्न और उत्तर।
[555] उस अवसर पर उस व्यक्ति की क्या क्षमता होती है जिसका ज्ञान पूर्ण हो गया हो (अन्नतविन्द्रियम)?[42]
पूर्ण ज्ञान, विज्ञान, उन लोगों के सिद्धांतों की समझ जिनका ज्ञान परिपूर्ण हो चुका है, उनकी खोज, शोध, सत्य की खोज; विवेक, भेदभाव, विभेद; विद्वत्ता, दक्षता, सूक्ष्मता; आलोचना, चिंतन, विश्लेषण; व्यापकता, दूरदर्शिता, मार्गदर्शन; अंतर्दृष्टि, बुद्धि, प्रेरणा; एक क्षमता और शक्ति के रूप में ज्ञान; एक तलवार के रूप में, एक ऊँचाई के रूप में, एक प्रकाश के रूप में, एक महिमा के रूप में, एक वैभव के रूप में, एक अनमोल रत्न के रूप में ज्ञान; सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की वह खोज जो महान जागरण का एक कारक है; मार्ग का एक घटक, जो मार्ग में निहित है — यह उस अवसर पर उस व्यक्ति की क्षमता है जिसका ज्ञान परिपूर्ण हो चुका है।
[पृष्ठ 151]
या[43] उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ हों, ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[यहाँ समाप्त होता है] उच्च आदर्श के साथ संबंध स्थापित करने का परिणाम।

बी. बुरा कर्म.[44]
(क) इंद्रिय-ज्ञान के पाँच तरीके।
[556] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
जब बुरे कर्मों के संचय के परिणामस्वरूप,
दृश्य बोध उत्पन्न होता है, जो अनासक्ति से युक्त होता है और जिसका विषय दृष्टि होता है...
श्रवण बोध उत्पन्न होता है, जो अनासक्ति से युक्त होता है और जिसका विषय ध्वनि होता है...
घ्राण बोध उत्पन्न होता है, जो अनासक्ति से युक्त होता है और जिसका विषय गंध होता है...
स्वाद बोध उत्पन्न होता है, जो अनासक्ति से युक्त होता है और जिसका विषय स्वाद होता है...
शरीर बोध उत्पन्न होता है, जो पीड़ा से युक्त होता है और जिसका विषय कुछ मूर्त होता है,
तब [पृष्ठ 152] संपर्क, चिंतन,
भावना, विचार,

बोध, पीड़ा,
आत्म-संयम होता है;

विचार,
संकट, जीवन शक्ति की क्षमताएँ
।[45] अब ये, या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ होती हैं - ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[557] ऊपर दिए गए अनुसार 'संपर्क' पर प्रश्न और उत्तर।
[558] उस अवसर पर भावना क्या है?

शरीर का दर्द, शरीर की पीड़ा जो उस अवसर पर शरीर की अनुभूति के उपयुक्त तत्व के संपर्क से उत्पन्न होती है; शरीर के संपर्क से उत्पन्न होने वाली पीड़ादायक, कष्टदायक अनुभूति; शरीर के संपर्क से उत्पन्न होने वाली पीड़ादायक, कष्टदायक भावना - यही वह भावना है जो उस समय मौजूद होती है।
[559] उस अवसर पर संकट क्या है?

शरीर का दर्द, शरीर की पीड़ा जो उस समय शरीर के संपर्क से उत्पन्न होने वाली दर्दनाक, कष्टदायक अनुभूति होती है; शरीर के संपर्क से उत्पन्न होने वाली दर्दनाक, कष्टदायक भावना - यही वह पीड़ा है जो उस समय मौजूद होती है।
[560] उस अवसर पर संकट की क्षमता क्या है?

धारा 559 के अनुसार उत्तर दें।
[पृष्ठ 153] या उस अवसर पर जो भी अन्य निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ हों, ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[सारांश।]
[560ए]

उस समय स्कंध चार होते हैं,
क्षेत्र दो होते हैं,
तत्व दो होते हैं,
पोषक तत्व तीन होते हैं,
इंद्रियां तीन होती हैं,
संपर्क
आदि।
[धारा 58 के अनुसार जारी रखें।]
विचार की क्षमता को एकल कारक के रूप में गिना जाता है,
शरीर की अनुभूति का तत्व[46] एकल कारक के रूप में गिना जाता है,
[मानसिक] अवस्थाओं का क्षेत्र एकल कारक के रूप में गिना जाता है,
इत्यादि।
[धारा 58-61 के अनुसार जारी रखें।]
[561] उस अवसर पर संश्लेषण का स्कंध क्या है?
संपर्क, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, आत्म-संयम;
गर्भाधान, जीवन शक्ति की क्षमता। या उस अवसर पर मौजूद अन्य सभी निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ, भावना, बोध और बुद्धि के स्कंधों से इतर, ये संश्लेषण के स्कंध हैं।
[धारा 63 आदि के अनुसार जारी रखें।]

[पृष्ठ 154] (ख) विचार का तत्व।

[562] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब बुरे कर्मों के फलस्वरूप, संचित होने के कारण, निस्वार्थता के साथ, किसी दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, किसी मूर्त वस्तु या किसी अन्य वस्तु को विषय बनाकर, विचार,
भावना, अवधारणा,
बोध, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, निस्वार्थता और
आत्म-संयम उत्पन्न होता है;
विचारण क्षमता
,
निस्वार्थता,
जीवंतता। अब ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ, अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।
[सारांश।]
[562a] इसमें संश्लेषण के उपयुक्त स्कंध का वर्णन शामिल है [563], यह संबंधित सारांश, §§ 467a, 468 के समान है।

(ग) प्रतिनिधि बौद्धिकता का तत्व।
[564] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब बुरे कर्मों के फलस्वरूप, संचित होने के कारण, प्रतिनिधिक बौद्धिकता का एक तत्व उत्पन्न हो जाता है, जो निस्वार्थता से युक्त होता है, और जिसका उद्देश्य दृष्टि आदि,[47] या कुछ और होता है, तब संपर्क, विचार,
भावना, अवधारणा, [पृष्ठ 155] बोध, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, आत्म-संयम होता है;
विचारण क्षमता
,
निस्वार्थता,
जीवंतता। अब ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ, अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।
[धारा 485-496 के अनुसार जारी रखें।]
[सारांश।]
[564ए, 565] इसमें संश्लेषण के उपयुक्त स्कंध का वर्णन शामिल है, जो §§ 496ए, 497 के समान है।
यहां बुरे कर्मों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली अनिश्चितताएं समाप्त होती हैं।
- फुटनोट:
1.कम्माम; वस्तुतः क्रिया, काम, कर्म।

2. इस और अगले दो खंडों (2 और 3) में उपेक्षा का प्रयोग स्पष्ट रूप से केवल एक मनोवैज्ञानिक शब्द के रूप में किया गया है, बिना नैतिक निहितार्थ के, और इसका अर्थ केवल तटस्थ भावना है।

3. इनमें से केवल एक ही होगा, अर्थात् ध्यान (असली. 262)।

4. पाठ में thiti के बाद . . . pe . . . को हटा दें, जैसा कि § 424 में है, और उसी कारण से (Asl. 262)।

5. साई. (262) के अनुसार, ध्यान और पथ को सारांश में शामिल नहीं किया गया है; और क्यों? ध्यान अपने चरम पर अवधारणा (वितक्को) रखता है, और पथ अपने चरम पर कारण (हेतु) रखता है। इसलिए, बिना किसी वैचारिक गतिविधि वाले विचार में ध्यान को शामिल करना या कारण रूप से प्रभावी न होने पर पथ को शामिल करना सुसंगत नहीं है।
यह टिप्पणी अनिश्चित अवस्थाओं की समस्या पर कुछ प्रकाश डालती है। वितको में मन अच्छे या बुरे लक्ष्य की ओर कार्य करता है; पथ में पहला कारक (सही दृष्टिकोण) 'सुस्ती की अनुपस्थिति' का पर्याय है, जो अच्छाई का कारण या मूल है (§ 1054)। अतः, न तो वितको और न ही आमो, ऐसी अनुभूति का संभावित घटक है जो अच्छे या बुरे कर्म उत्पन्न करने में असमर्थ है।

6. या 'स्पर्श' (vp 2, n. 2)। यह विचार कि किसी मूर्त वस्तु के संज्ञान का एक सकारात्मक सुखदायक सहवर्ती प्रभाव होता है— सुखद या, यदि कर्म बुरा हो (§ 556), तो अप्रिय—अन्य प्रकार के इंद्रिय-ज्ञान (दी गई परिस्थितियों में) से जुड़े तटस्थ भाव की तुलना में, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। और इससे उत्पन्न टिप्पणी भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। साइ. (263) बताते हैं कि स्पर्श, या देह संवेदनशीलता, वह एकमात्र इंद्रिय है जिसके माध्यम से व्यक्ति के भीतर और बाहर के चार तत्व प्रत्यक्ष संपर्क में आते हैं। अन्य संज्ञान गौण हैं, क्योंकि अन्य इंद्रियां व्युत्पन्न (ऊपर दा) हैं। वे चार निहाई पर रुई के गोलों की तरह हैं, जो हथौड़े के प्रभाव को कम कर देते हैं। स्पर्श में रुई को पीटा जाता है, और प्रतिक्रिया अधिक तीव्र होती है। इसकी तुलना नीचे दिए गए इंद्रिय सिद्धांत, §§ 596-632 से करें। फिर भी, आराम या परेशानी का अंतर इतना कम होता है कि अनुभूति 'अनिश्चित' बनी रहती है।
घटक अवस्थाएँ, संपर्क आदि केवल अंतिम उल्लिखित प्रकार की संज्ञान प्रक्रिया को संदर्भित करते हैं। अन्य चार प्रकारों के मामले में 'सहजता' के स्थान पर 'निस्वार्थता' का प्रयोग करना होगा।

7. वेदना मुद्रित ग्रंथों से लुप्त हो गई है।

8. धारा 450 में thiti के बाद पाठ में ... pe ... को हटा दें।

9. धारा 451 में 'विन्नानाधातु' से पहले 'कय' लगाइए। यह सत्य है कि 'मनिन्द्रियम' अवस्था केवल प्रतिनिधिक ज्ञान की अवस्था है, परन्तु दी गई परिस्थितियों में यह 'कय-विनिअनम्' से युक्त है। 'मनो द्वार' का विषय पाँचों इंद्रियों के सभी या कोई भी विषय हो सकते हैं।

10. एक बार फिर, सि. (263) प्रत्यय -धातु (तत्व) के महत्व को इंगित करता है, जिसका अर्थ है सत्ता का अभाव (निस्सात्त), वैचारिक क्षमता का 'शून्यता' या घटनात्मक चरित्र। तुलना करें, ऊपर, पृष्ठ 33, n. मनो की विशेषताओं को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तावना (बौद्धिकरण का सिद्धांत) देखें। यहाँ जिस संवेदी समुदाय के सिद्धांत का उल्लेख किया गया है, वह व्यावहारिक रूप से अरस्तू द्वारा 'डी सेंसु' में अपनाए गए सिद्धांत के समान है। 'इस प्रकार के विचार का आधार (या स्थल, वस्तु) एक स्थिर तत्व है, अर्थात् हृदय; "द्वारों" (या विचार-द्वार) की वस्तुएँ स्थिर नहीं हैं। जबकि वे एक के बाद एक आती हैं, यह वह स्थान (थानम्) है, जिसका कार्य उन्हें एकता में ग्रहण करना है' (एकसमपच्चनकिच्चम्)।
अनुभूति की प्रक्रिया मनोविनियानाधातु द्वारा पूरी की जाती है (नीचे देखें)।

11. इनमें (असली. 264) दो अन्य बातें, संकल्प और ध्यान शामिल हैं। तुलना करें, ऊपर, पृष्ठ 5, नोट 1।

12. चूंकि, साइ. (264) कहता है कि यह विचार (अपने प्रभाव में) न तो अच्छा है और न ही बुरा, इसलिए इरादा (संकप्पो), चाहे सही हो या गलत, इसके घटक विटाक्को के अर्थ में शामिल नहीं है। तुलना करें §§ 7 और 371, साथ ही पृष्ठ 125, नोट 2।

13. पाठ में दिए गए संदर्भ, जांच करने पर, अधिकतर भ्रामक सिद्ध होंगे।

14. मनोविन्ननाधातु के कार्य की चर्चा प्रस्तावना (बौद्धिकरण का सिद्धांत) में की गई है। यहाँ कहा गया है (असल. 264), कि 'सुख के साथ' होने पर यह दो प्रकार की परिस्थितियों में परिणत होता है: 'पाँच इंद्रियों के द्वार पर स्थित होकर, यह उस विचार (या बोध) के बारे में निर्णय (संतारण) लेने का कार्य करता है, जिसे अच्छे कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न हुई इंद्रिय-ज्ञान की समाप्ति पर विचार तत्व ने ग्रहण किया था।' पुनः: 'जब छह द्वारों (इंद्रियों और विचार) की क्रिया से अधिक प्रभावशाली विचार उत्पन्न होता है, तो इसे ही विचार (तद-आरम्मनम्) कहा जाता है, अर्थात् 'प्रेरणा का विषय' (जाव नम), और प्रतिनिधिक ज्ञान तत्व उस विषय पर स्थिर होने के लिए आकर्षित हो जाता है। इसी प्रकार, एक प्रचंड धारा को पार करते समय, उसका स्वाभाविक प्रवाह नीचे की ओर होने के बावजूद, वह धारा को क्षण भर के लिए मोड़ने में सक्षम होता है।' बुद्धि का सामान्य प्रवाह, एक प्रकार से, व्यक्तिगत जीवन की धारा के अनुदिश होता है (भवंगम् एव' ओतरति)। और यहाँ केवल बुद्धि के इसी सामान्य कार्य को ध्यान में रखा गया है।
किसी भी बहिर्गामी या क्रियात्मक आवेग से ठीक पहले की अनुभूति की अगली अवस्था, जैसा कि जावा नम शब्द से तात्पर्य प्रतीत होता है (देखें सुम. 194; अभ. एस. iii. 3) — मैं 'स्थापित करने' (या पूर्ण आत्मसातकरण, जैसा कि हम कह सकते हैं — वोत्थप्पनम्) की ओर संकेत कर रहा हूँ — का यहाँ स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है। लेकिन यह संभवतः संतलरणदि वाक्यांश में निहित है, जिसका अर्थ है 'निर्णय लेना और शेष'। इस पर कुछ पृष्ठों आगे चर्चा की गई है (असल. 269, 272)।

15. पाठ में [58] का संदर्भ फिर से गलत है, क्योंकि न तो ज्ञान का पूर्वाभ्यास होना है और न ही पाठ का। देखें पृष्ठ 125, नोट 2, और असल. 264.

16. इस प्रकार का परिणामी ज्ञान पाँच प्रकार के अवसरों पर घटित होता है: (i) अशक्त संतान की उत्पत्ति, जैसे अंधा, बहरा, मंदबुद्धि या पागल, उभयलिंगी या नपुंसक; (ii) एक व्यक्ति के जीवनकाल के दौरान (भवंगम); (iii) किसी विचार के संबंध में निर्णय (सन्तिरणम) लेते समय, जब वह वस्तु न तो सुख देती है और न ही दुख; (iv) जब उस विषय (तदारम्मनम) का उदय होता है (धारा 469, n देखें); (v) जब मृत्यु पुनर्जन्म का मार्ग प्रशस्त करती है (चुति)। यह देखा जा सकता है कि ये पाँचों क्रमशः पहले, दूसरे, दसवें, तेरहवें और चौदहवें अवसर हैं जिन पर विशुद्धि मार्ग (अध्याय 14; वॉरेन की 'विषय-सूची', जेपीटीएस, 1891-93, पृष्ठ 130 देखें) के अनुसार विन्नान घटित होते हैं। यह संभव है कि हमारे साइ. में व्याख्यात्मक सामग्री का अभाव, बुद्धघोष द्वारा पूर्व के ग्रंथ में किए गए पूर्ण विवेचन के कारण हो।

17. बौद्ध (शैक्षणिक) अनिश्चितता और यिपको के सिद्धांत के संबंध में वर्तमान ज्ञान के स्तर पर, यहाँ वर्णित परित्यक्त अवस्थाओं के लिए कोई विश्वसनीय संदर्भ प्रदान करना कठिन है। निम्नलिखित खंड (टिप्पणी देखें) यह संकेत देता प्रतीत होता है कि ऊपर वर्णित अनिश्चितताओं के प्रकारों में कम से कम तीन और अवस्थाएँ शामिल की जानी हैं, अर्थात् कामवासना, घृणा और सुस्ती का अभाव। लेकिन साइ. (पृष्ठ 265, 266) बिल्कुल स्पष्ट नहीं है, और यिपको के संबंध में तर्कशास्त्रीय विचारों पर एक लंबी और बेतरतीब चर्चा में उलझ जाता है।

18. यह अत्यधिक संक्षिप्त अनुच्छेद, जिसमें मैंने तीसरा 'मूल' जोड़ा है, जो पाठ में अनजाने में छूट गया था, लेकिन संदर्भ के अनुसार आवश्यक है (ऊपर देखें, §§ 32-34; के., असल. 267, 268), संभवतः यह दिखाने के लिए है कि किस प्रकार निद्देसा, या प्रत्येक आठ प्रकार के केसल्ट की कुछ घटक अवस्थाओं का वर्णनात्मक विवरण, प्रत्येक संबंधित आठ प्रकार के अच्छे विचारों (§§ 1-159) में दिए गए विवरण से भिन्न है।

19. धारा 160 देखें।

20. धारा 160 के अनुसार जारी रखें।

21. मुद्रित पाठ में . . . पे . . . यहाँ को हटा दिया जाना चाहिए, जैसा कि §§ 503, 504 में किया गया है। इसी प्रकार § 502 में भी हटा दें।

22. यह निर्धारित करने की कठिनाई पर कि यहाँ किन घटक धम्मों को समझा जाना चाहिए, धारा 498, नोट देखें।

23. 'कर्म' शब्द और उसका गुणधर्म, 'संग्रह करना' (उपाचितत्तम्), अब क्रमशः लोकुत्तरम झानम् और खेती या अभ्यास (भवितत्तम्) द्वारा प्रतिस्थापित हो गए हैं (असल. 289)।

24. ऊपर दिए गए अनुच्छेद 362 की तुलना करें। प्रथम मार्ग को छोड़ने से पहले, अनिश्चित अवस्थाओं के मामले में, इस क्षमता के विकास पर कोई टिप्पणी नहीं दी गई है। लेकिन इसका कारण संभवतः यह है कि आदर्श की खोज में, परिणाम एक उच्चतर मार्ग की प्राप्ति, या कम से कम प्रथम मार्ग की 'फल प्राप्ति' को दर्शाता है। अनुच्छेद 508 और 509 के संबंधित अनुच्छेदों में, मुद्रित पाठ में या के. में, इस क्षमता का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है; लेकिन संदर्भ से इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसे पढ़ा जाना चाहिए।

25. ऊपर देखें, पृष्ठ 91, नोट 2.

26. वही।

27. ऐसा प्रतीत होता है कि संकलकों ने यहाँ और कुछ बाद के उत्तरों में सामान्य तरीके के अलावा किसी अन्य तरीके से संक्षेपण का प्रयास किया है... यह, मेरा मानना है, एक बहुत ही दुर्लभ उदाहरण है।

28.Sic lege.

29.विविश्चसेवा कामेहि के लिए वितक्कविचारणं वुपासम का पाठ करें।

30.अप्पनिहितं ति विपाको के लिए बार-बार अनिमित्तं ति विपाको पढ़ें।

31. सुन्नतम् अनजाने में पाठ से छूट गया है।

32.के. में छोड़ा गया।

33.अप्पनिमित्तम के लिए मुद्रित पाठ अनिमित्तम में पढ़ें।

34. के. में छोड़ा गया।

35. इस समूह को कोई शीर्षक नहीं दिया गया है, लेकिन यह देखा जाएगा कि यह समूह 6 (पृष्ठ 145) की पुनरावृत्ति है, इस अतिरिक्त विशेषता के साथ कि कर्म का निर्माण करने वाला ध्यान शून्य है।

36. सुन्नतम के लिए अनिमित्तम् पढ़ें।

37. फासो से पहले लोकुट्टारो को छोड़ दें।

38. ऊपर देखें, पृष्ठ 145.

39. मुद्रित पाठ में यहाँ जो अंश आता है, उत्तर की पंक्ति 3 में, अर्थात्, vivicc'eva . . . down to phasso hoti, वह विकृत पाठ प्रतीत होता है, जो पिटक संकलन की संरचना और लोप दोनों की समरूपता में विसंगतियाँ प्रस्तुत करता है। के. इस वाक्यांश को छोड़ देता है।

40. यह शब्द (अन्निन्द्रियम होति) के. में छूट गया है। हालाँकि, यह द्वितीय मार्ग की प्राप्ति से संबंधित है (ऊपर देखें, पृष्ठ 96, नोट 2), और केवल ऐनतविन्द्रियम (§ 555) की बौद्धिक पराकाष्ठा द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि यह गलत पाठ है।

41. यहां मुद्रित पाठ में अव्यकाता की जगह कुसला होना चाहिए।

42. मुझे अभी तक यह जानकारी नहीं है कि यह शब्द तीनों पिटकों में कहीं और मिलता है या नहीं। बुद्धघोष (अस्लिम 291) के अनुसार, यह 'अन्नतवी (यानी, ज्ञात चीजों का धारक) की विशिष्ट क्षमता' है, उस व्यक्ति की जिसने चार सत्यों के दर्शन में वह सब कुछ पूर्ण कर लिया है जो किया जाना था। और उत्तर में उल्लिखित 'सिद्धांतों' को संबद्ध या घटक सिद्धांतों के रूप में परिभाषित किया गया है, जिनके भीतर विषय ने निपुणता प्राप्त की है, या जिन पर उसने आंतरिक रूप से महारत हासिल की है (संपयुत्तधम्मनम्...थितानम् धम्मनम् अभंतरे)।
संभवतः, धम्मनम से तात्पर्य उन बौद्धिक अवस्थाओं से है जिन पर अनित्यतविन का प्रभुत्व और नियंत्रण होता है, जो उत्तर में समाहित हैं।

43.Avikkhepo hoti ... pe ... जैसा कि मुद्रित पाठ में शामिल है, K में छोड़ दिया गया है। हालाँकि, यह गलत नहीं है, क्योंकि घटक अवस्थाओं का वर्णन, 'संपर्क' से शुरू होकर 'संतुलन' पर समाप्त होता है, जो §§ 278-337 में दिए गए वर्णन के समान है, और केवल 'अज्ञात को जानने की क्षमता' के स्थान पर 'जिसका ज्ञान पूर्ण हो गया है उसकी क्षमता' के प्रतिस्थापन से भिन्न है, यहाँ पूर्ण रूप से दोहराया जाना चाहिए। हालाँकि, वर्तमान स्वरूप में यह थोड़ा भ्रामक है।

44. खंड बी और उसके तीन उपखंडों ए से सी के साथ, ऊपर वर्णित अच्छे कर्मों के समन्वित परिणामों की तुलना करें, धारा 431-468 और 484-497। बी के अंतर्गत सुखद परिणाम संभव नहीं हैं, क्योंकि इसके निर्धारक कारक बुरे हैं।

45. धारा 443 में अच्छे कर्म के संबंध में दिए गए उत्तर के आधार पर, मुद्रित पाठ में यहाँ संलग्न . . . पे . . . त्रुटिपूर्ण है। के. इसे छोड़ देता है।
यह सूची और इसके बाद के खंड (557-560) इंद्रिय-ज्ञान के अंतिम रूप, अर्थात् शरीर से संबंधित रूप पर लागू होते हैं। अन्य रूपों के मामले में, 'परेशानी' के स्थान पर 'निस्वार्थता' कुछ प्रश्नों के लिए अलग-अलग उत्तरों का कारण बनेगी।

46.मुद्रित पाठ में मनो-विन्नधातु के लिए काया-विन्नधातु पढ़ें।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक1-भाग3-अध्याय 2
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 1 - विचारों की उत्पत्ति
  - भाग 3 - चेतना की अनिश्चित अवस्थाएँ

अंतर्वस्तु

1.4बी. रूप के ब्रह्मांड (रूपवचार-क्रिया) के संबंध में।
1.5ग. निराकार जगत (अरूपवचार-क्रिया) के संबंध में।
1.6- फुटनोट:
अध्याय II - क्रिया-विचार

ए. संवेदी ब्रह्मांड के संबंध में।[1]
(ए) विचार के अवसर पर (कामवचरा-किरिया)।
[566] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
जब क्रिया [पृष्ठ 157] नामक प्रकार का विचार तत्व उत्पन्न हो जाता है,[2] जो न तो अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, जो अनासक्ति से युक्त है, और जिसका उद्देश्य दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, कुछ मूर्त, या कुछ भी नहीं है, तब संपर्क, विचार,
भावना, अवधारणा,
बोध, विवेचनात्मक विचार,
चिंतन, अनासक्ति,
आत्म-संयम होता है;[3]
विचारण क्षमता

,
निस्वार्थता,
जीवंतता। अब ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य अवास्तविक, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ, अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।
[सारांश।]
[566ए]

अब, उस समय स्कंध चार हैं, [पृष्ठ 158] क्षेत्र दो हैं,
तत्व दो हैं,
पोषक तत्व तीन हैं,
क्षमताएँ तीन हैं,
संपर्क,
आदि।
[567] संश्लेषणों का स्कंध (साथ ही उपरोक्त सारांश का शेष भाग) अध्याय I में संबंधित अंशों के समान है, अर्थात्, §§ 467a, 468।

(ख) प्रतिनिधि बौद्धिक चिंतन के अवसर पर।
1.
[568] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
जब क्रिया नामक प्रकार की प्रतिनिधि बौद्धिकता का एक तत्व उत्पन्न होता है, जो न तो अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, जो सुख के साथ होता है,[4] [पृष्ठ 159] और जिसका उद्देश्य दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, कुछ मूर्त, या कुछ भी नहीं है, तब संपर्क, अवधारणा,
भावना, विवेचनात्मक विचार, बोध,
आनंद,
चिंतन, सहजता,
विचार, आत्म-संयम होता है;

ऊर्जा, विचार,
एकाग्रता, खुशी, जीवंतता जैसी क्षमताएं

। अब ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएं, अनिश्चित अवस्थाएं हैं।

[569] ऊपर बताए अनुसार 'संपर्क' पर प्रश्न और उत्तर।

[570] उस अवसर पर आत्म-संयम क्या है?

स्थिरता, दृढ़ता, विचार की तल्लीन दृढ़ता जो उस अवसर पर व्याकुलता की अनुपस्थिति, संतुलन, अविचलित मानसिक प्रक्रिया, शांति, एकाग्रता की क्षमता और शक्ति है[5] — यही वह आत्म-संयम है जो तब होता है।

[571] उस अवसर पर ऊर्जा की क्षमता क्या है...

[572] एकाग्रता की?

धारा 13 और धारा 570 के अनुसार उत्तर दें।

[पृष्ठ 160] [सारांश।]

[572ए]

उस समय स्कंध चार होते हैं,

गोले दो होते हैं,

तत्व दो होते हैं,

पोषक तत्व तीन होते हैं,

इंद्रियां पांच होती हैं,

संपर्क

आदि।

[धारा 482ए के अनुसार जारी रखें।]

[573] उस अवसर पर सिन थीसिस का स्कंध क्या है? संपर्क,

चिंतन,

अवधारणा,

विवेचनात्मक विचार,

आनंद,

आत्मसंयम,

ऊर्जा,

एकाग्रता, जीवंतता जैसी क्षमताएँ

। या उस समय उत्पन्न होने वाली अन्य सभी निराकार, कारणवश प्रेरित अवस्थाएँ, जो भावना, बोध और बुद्धि के स्कंधों से इतर हों, वे संश्लेषण के स्कंध कहलाती हैं।

2.

[574] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब क्रिया नामक प्रकार की प्रतिनिधि बौद्धिकता का एक तत्व उत्पन्न होता है, जो न तो अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, जो अनासक्ति के साथ होता है [पृष्ठ 161],[6] और जिसका उद्देश्य दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, कुछ मूर्त, या कुछ भी नहीं है, तब संपर्क, विचार,

भावना, अवधारणा,

बोध, विवेचनात्मक विचार,

चिंतन, अनासक्ति,

आत्म-संयम होता है;

ऊर्जा, विचार,
एकाग्रता, निस्वार्थता, जीवंतता जैसी क्षमताएँ
। अब ये, या उस अवसर पर उत्पन्न होने वाली कोई भी अन्य निराकार, कारणवश उत्पन्न अवस्थाएँ, अनिश्चित अवस्थाएँ हैं।
[सारांश।]
[574a] 572a के समान।
[575] संश्लेषण का स्कंध § 573 में दिए गए स्कंध के समान है, लेकिन 'आनंद' को हटा दिया जाना चाहिए।

3.
[576] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?

जब क्रिया नामक प्रतिनिधि बौद्धिकता का एक तत्व उत्पन्न हो जाता है जो न तो अच्छा है, न बुरा है और न ही कर्म का परिणाम है — [पृष्ठ 162]
[7]जो खुशी के साथ आता है और ज्ञान से जुड़ा होता है...
जो आनंद से युक्त हो, ज्ञान से जुड़ा हो, और एक सचेत प्रेरणा से प्रेरित हो...
जो खुशी से भरा होता है और ज्ञान से असंबद्ध होता है...
जो आनंद से परिपूर्ण होता है, ज्ञान से असंबद्ध होता है और एक सचेत प्रेरणा से प्रेरित होता है...
जो निस्वार्थता से युक्त है और ज्ञान से जुड़ा हुआ है...
जो निस्वार्थता से युक्त होता है, ज्ञान से जुड़ा होता है और एक सचेत मकसद से प्रेरित होता है...
जो उदासीनता और ज्ञान से अलगाव के साथ आता है...
जो उदासीनता से युक्त है, ज्ञान से विरक्त है और एक सचेत मकसद से प्रेरित है।
और, जिसका उद्देश्य दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद, कोई स्पर्शनीय वस्तु या कुछ और हो— तो वहाँ संपर्क... संतुलन है। अब ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[576ए]
वासना का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है...
घृणा का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है...
सुस्ती का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है...
ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।[8]

बी. रूप के ब्रह्मांड (रूपवचार-क्रिया) के संबंध में।
[पृष्ठ 163] [577] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
जब वह रूप के ब्रह्मांड से जुड़ाव में तल्लीन ध्यान का अभ्यास करता है, और क्रिया नामक प्रकार का ध्यान करता है जो न तो अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, और जो वर्तमान परिस्थितियों में सहज जीवन से संबंधित है[9]— और इस प्रकार, इंद्रिय-सुख से दूर, बुरे विचारों से दूर, पृथ्वी-दर्शन द्वारा, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... तब संपर्क... संतुलन होता है। अब ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।
[578] चार गुना f पर शेष प्रत्येक झान और पंचगुण प्रणाली पर उन लोगों के मामले में दोहराएँ।

ग. निराकार जगत (अरूपवचार-क्रिया) के संबंध में।
[579] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
जब वह निराकार ब्रह्मांड से संबंधित तल्लीन ध्यान का अभ्यास करता है, जिसे क्रिया कहा जाता है, जो न तो अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, और वर्तमान परिस्थितियों में सुखमय जीवन से संबंधित है — और जब वह रूप की सभी चेतना से पूरी तरह परे जाकर, इंद्रिय-प्रतिक्रिया की चेतना के लुप्त होने से, अनेकता की किसी भी चेतना से ध्यान हटाकर, उस तल्लीन ध्यान में प्रवेश करता है

और उसमें स्थिर रहता है जो असीम अंतरिक्ष के क्षेत्र की चेतना से युक्त है — यहाँ तक कि चौथा ध्यान, जिसे प्राप्त करने के लिए सभी सुखमय भावों को त्याग देना आवश्यक है, आदि... तब संपर्क... संतुलन स्थापित होता है। अब ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं। [पृष्ठ 164] [580-582] यहाँ, उपरोक्त उत्तर के समान प्रारंभिक सूत्र के साथ, तीन शेष 'निराकार अस्तित्व से जुड़े ध्यान' दिए गए हैं। §§ 266-268 देखें।

[582ए]

वासना का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है...

घृणा का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है...

सुस्ती का वह अभाव जो अनिश्चितता की जड़ है...

ये... ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।[10]

[यहाँ समाप्त होता है] विचारों की उत्पत्ति पर चर्चा।

- फुटनोट:

1. मैंने शीर्षक के लिए 'क्रिया-चित्तम' शब्द अस्लि. 293 से लिया है। इसका बाद वाला रूप क्रिया-चित्तम है (देखें अभ. एस., पृष्ठ 2 आदि; बैस्टियन की 'बुद्धिस्टिशे साइकोलॉजी', अनहंग)। क्रिया पर चर्चा मेरी प्रस्तावना में की गई है। अस्लि. में इस शब्द के बारे में निम्नलिखित लिखा है: 'यहाँ क्रिया का अर्थ केवल करना (करण-मत्तम) है। सभी क्रिया-विचारों में वे विचार जिनमें जावणम की अवस्था प्राप्त हो जाती है, हवा में खिले फूलों के समान हैं, परन्तु वे विचार जिनमें यह अवस्था प्राप्त नहीं होती, ऐसे फूलों के समान हैं जिनका पेड़ काट दिया गया हो और जो फलहीन हों। परन्तु जब किसी क्रिया का निरंतर निष्पादन होता रहता है, तब वह शुद्ध और सरल "करना" होता है। अतः क्रिया शब्द का प्रयोग किया गया है।' बुद्धघोष (सुम. I, 195) के अनुसार, जावनाम किसी बोध क्रिया का प्रभावी परिणाम है, वह अवस्था जब बोध करने वाले व्यक्ति का मन या चरित्र किसी न किसी रूप में (नैतिक रूप से) परिवर्तित होता है। परन्तु क्रिया नामक अनिश्चित विचारों में अच्छे या बुरे का कोई व्यावहारिक परिणाम नहीं हो सकता, कोई कर्म मुक्त नहीं हो सकता। अतः बांझ फूलों की उपमा दी गई है।

आभ. एस. में इंद्रिय जगत से जुड़े तीन प्रकार के अकारण क्रिया-विचार भी दिए गए हैं - इंद्रिय अनुभवों पर चिंतन, विचारों पर चिंतन और हर्षितुप्पद-चित्त की उत्पत्ति (हसितुप्पद-चित्त)। ये ध. एस. में दिए गए तीन प्रकारों से काफी हद तक मेल खाते हैं, यदि निरूपित बौद्धिक चिंतन के दोनों तरीकों को उलट दिया जाए।

2. साइ. के अनुसार, क्रियात्मक विचार और परिणामजन्य विचार में केवल उनके उत्पन्न होने के तरीके (उपत्तित्थानम्) में अंतर होता है। उपत्तित्थानम् इंद्रिय-ज्ञान की क्रिया के तुरंत बाद उत्पन्न होता है। क्रियात्मक विचार तब उत्पन्न होता है जब संवेदना वास्तव में क्रियाशील होती है, जब शरीर वस्तु की ओर उन्मुख होता है (असल. 294)। पुनः (वही), यह विचार कि 'न अच्छा है न बुरा' का अर्थ है अच्छे या बुरे के उस कारण का अभाव जिसे एक या दूसरे का मूल कहा जाता है; इसका अर्थ है अच्छे या बुरे की उन स्थितियों का अभाव जिन्हें वस्तुओं को उनके कारणों के आधार पर विचार करना (योनिसो-मन सिकारा) या ऐसा विचार न करना कहा जाता है।

'कर्म का परिणाम भी नहीं' का अर्थ है सृजनात्मक कारण (जन कहेतु) का अभाव, जिसे अच्छा या बुरा (जैसा भी मामला हो) कहा जाता है। असल. 293. अंतिम वाक्य में हाशिये पर लिखा पाठ स्पष्ट रूप से सही है।

3. इसके न्यूनतम अर्थ के साथ, अर्थात्, जैसा कि § 438 और अन्यत्र (असल. 293) में है।

4. साइ. (पृष्ठ 294) इस प्रकार के विचार को मनुष्यों में सामान्य नहीं, बल्कि अरहतों की विशेषता बताता है। 'यह छह द्वारों में प्राप्त होता है', उदाहरण के लिए, जब एक अरहत किसी ऐसे स्थान (थान एम) को देखता है जो निर्धारित आध्यात्मिक साधनाओं में से एक के लिए अनुकूल हो, जिसे पदनानी [sic lege; cf नीचे, § 1366, (v.)] कहा जाता है, 'इस विचार से वह प्रसन्न होता है'। जब वह किसी बाजार में आता है, 'सौदेबाजी का शोर सुनता है, और सोचता है,

मैंने लाभ की इस सारी लालसा को त्याग दिया है।

इस विचार से उसे प्रसन्नता होती है। जब वह मंदिर में सुगंधित पदार्थ या फूल अर्पित करता है, तो इस विचार से उसे प्रसन्नता होती है।

जब वह अपने द्वारा प्राप्त भोजन का स्वाद चख रहा होता है और सोचता है,

"मैंने निश्चित रूप से अपने ऊपर लागू सिद्धांत का पालन किया है।"

इस विचार से वह प्रसन्न हो जाता है। जब वह शरीर से संबंधित छोटे-मोटे नियमों का पालन कर रहा होता है और सोचता है,
मैंने शरीर के द्वार से संबंधित नियमों का पालन किया है।
इस विचार से उन्हें प्रसन्नता होती है। पंचमुखी द्वार से संबंधित यह चिंतन इसी प्रकार का होता है। विचार के द्वार से संबंधित यह चिंतन भूतकाल और भविष्यकाल के संदर्भ में उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, जब बुद्ध अपने पूर्व जन्मों की घटनाओं को याद करके मुस्कुराए थे, या जब उन्होंने भविष्य की भविष्यवाणी की थी।

5. यह उम्मीद की जा सकती थी कि 'ऊर्जा' के साथ-साथ इस 'शक्ति' को भी घटक अवस्थाओं की सूची में स्थान मिलेगा। साइ. (पृष्ठ 295) स्पष्ट करता है कि 'सांद्रता' और 'ऊर्जा' पूर्ण शक्ति में मौजूद नहीं हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सारांश में कोई 'शक्तियाँ' शामिल नहीं हैं।

6. यह विचार, पिछले विचार से भिन्न, जैसा कि शास्त्र (295) में कहा गया है, सभी बुद्धिमान (सचित्तक) प्राणियों में समान है; वास्तव में, ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है जो इसका अनुभव न करता हो। (यहाँ दिया गया पाठ स्पष्ट रूप से अधिक सही है।) यदि यह 'पाँच द्वारों' के संबंध में उत्पन्न होता है, तो यह स्थापना का कार्य है; यदि यह विचार के द्वार के संबंध में उत्पन्न होता है, तो यह चिंतन का कार्य है। इसके द्वारा ज्ञान के छह विशिष्ट मार्ग अपने-अपने विषयों को ग्रहण करते हैं।

7. लैटिन अंक इस कृति के पहले 159 खंडों में वर्णित विचार के आठ मुख्य प्रकारों को संदर्भित करते हैं। हालाँकि, इस संदर्भ में, वे अब 'अच्छे' के रूप में, अर्थात् अच्छे कर्म उत्पन्न करने वाले के रूप में प्रभावी नहीं रह गए हैं।

8. ऊपर देखें, धारा 498ए।

9. दित्था-धम्मसुख-विहारम्। इस व्यक्तिगत अस्तित्व में (इमास्मिम अतत्भवे), साइ. (296. इस शब्द पर, नीचे देखें, पृष्ठ 175, नोट 1) व्याख्या करता है। सुम. I., 121 में व्याख्या इस प्रकार है, 'अस्तित्व की वह अवस्था जो किसी को संयोगवश प्राप्त हो जाती है'। 'बुद्ध के संवाद', I. 50, नोट देखें। वहाँ जिस अंश पर टिप्पणी की गई है (DI 37) वह विधर्म है जो मानता है कि ध्यान निर्वाण का समतुल्य था।

10. के. में एक फुटनोट जोड़ा गया है, जो इस तथ्य में स्पष्ट विसंगति की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि यह अंश, जो अब तक अर्थ के ब्रह्मांड [§§ 498a, 576a] के अंतर्गत दिया गया था, यहाँ निराकार के ब्रह्मांड से जुड़ा हुआ है। इसमें आगे कहा गया है कि इसे उचित विचार-विमर्श के बाद ही स्वीकार किया जाना चाहिए।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पाली-अंग्रेजी संस्करण-अध्याय 2

धम्मसंगानी अध्याय 2

2. रूपकण्डं

उद्देसो

583. कटमे धम्म अभ्यक्ता? कुसलकुशालनं धम्मनं विपाका कामवचार रूपवचरा अरूपवचरा अपरियपन्ना वेदानाक्खन्धो सन्नाक्खान्धो संखरक्खान्धो विनाणक्खण्डो, ये च धम्म किरिया नेव कुसल नकुशला न च कम्मविपाका, सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म अभ्यक्ता।

मातिका

एककं

584. तत्थ क्तमं सब्बं रूपं? चत्तरो च महाभूत, चतुन्नंच महाभूतानां उपादय रूपं - इदं वुच्चति सब्बं रूपं। सब्बं रूपं न हेतुं, अहेटुकं, हेतुविप्पयुत्तं, सप्पक्कयं, सङ्खतं, रूपं [रुपियं (सि.)], लोकियं, सासवं, संयोगियं, गंथनीयं, ओघनियं, योगाणियं, निवारनीयं, परमार्थं, उपादानियं, संकिलेशिकं, अभ्यक्तं, अनारामणं, एसिटासिकं, चित्तविप्पयुत्तं, नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मं, असंकिलिट्ठसंकिलेशिकं, न सवितक्कसविचारं, न अवित्क्कविचारमत्तं, अवित्क्काविचारम्, न पतिसहगतं, न सुखसहगतं, न उपेक्खसहगतं, नेव दस्सानेन न भवनाय पहतब्बम, नेव दस्सानेन न भवनाय पहतबहेतुकं, नेव अचयागामी न अपाचयागामी, नेवसेक्खानासेक्खं, परित्तम, कामवचरण, न रूपवचरण, न अरूपवचरण, परियपन्नं, नो अपरियपन्नं, अनियातम, अनियनिकं, उपप्पन्नं, चाहि विन्ननेहि विनियेंयं, अनिच्चं, जराभिभूतं।

एवं एकविधेन रूपसंगहो।

एककं.

दुकं

Duvidhena rūpasaṅgaho —

अट्ठि रूपं उपदा, अत्थि रूपं नो उपादा।

अट्ठि रूपं उपादीनं, अत्थि रूपं अनुपदीनं।

अत्थि रूपं उपादीनुपादनीयम्, अत्थि रूपं अनुपादिनुपादनीयम्।

अट्ठि रूपं अनिदस्सानं, अत्थि रूपं अनिदस्सानं।

अट्ठि रूपं सप्पतिघं, अत्थि रूपं अप्पतिघं।

अत्थि रूपं इंद्रियं, अत्थि रूपं न इंद्रियं।

अत्थि रूपं महाभूतं, अत्थि रूपं न महाभूतं।

अट्ठि रूपं विण्णति, अत्थि रूपं न विण्णति।

अत्थि रूपं चित्तसमुत्थानं, अत्थि रूपं न चित्तसमुत्थानं।

अट्ठि रूपं चित्तसाहभु, अत्थि रूपं न चित्तसाहभु।

अट्ठि रूपं चित्तनुपरिवति, अट्ठि रूपं न चित्तनुपरिवति।

अट्ठि रूपं अज्जत्तिकं, अत्थि रूपं बहिरं।

अट्ठि रूपं ओदारिकां, अत्थि रूपं सुखुमं।

अट्ठि रूपं दूरे, अत्थि रूपं संतिके।

अट्ठि रूपं चक्खुसमफसस्सा वत्थु, अत्थि रूपं चक्खुसमफसस्सा न वत्थु। अट्ठि रूपं चक्खुसंफसज्जाय वेदनाय...पे... संन्याय...पे... चेतान्या...पे... चक्कुविनान्नास्स वत्थु, अत्थि रूपं चक्कुविनासा न वत्थु।

अट्ठि रूपं सोतसंफस्ससस्सा...पे... घनसंफस्ससस्सा...पे... जीवसम्फस्ससस्सा...पे... कायसमफस्ससस्सा वत्थु, अत्थि रूपं कायसमफस्ससस्सा न वत्थु। अट्ठि रूपं कायसंफसज्जाय वेदनाय...पे... संन्याय...पे...चेतनाय...पे... कायविनानास्स वत्थु, अत्थि रूपं कायविनानास्स न वत्थु।

अत्थि रूपं चक्खुसंफस्सास्सा अरम्मणं, अत्थि रूपं चक्खुसमफस्सास्सा नरम्मणं। अट्ठि रूपं चक्खुसंफसज्जाय वेदनाय...पे... संन्याय...पे... चेतान्या...पे... चक्कुविनानास्सा अरम्मणं, अत्थि रूपं चक्कुविनास्सा नरामणं।

अट्ठि रूपं सोतसम्फस्ससस्सा...पे... घनसंफस्ससस्सा...पे... जीवसम्फस्ससस्सा...पे... कायसमफस्ससस्सा अरम्मणं, अत्थि रूपं कायसमफस्ससस्सा नाराम्मणं। अट्ठि रूपं कायसंफसज्जाय वेदनाय...पे... संन्याय...पे...चेतनाय...पे... कायवीनानास्सा अरम्मणं, अत्थि रूपं कायावीनास्सा नारामणं।

अट्ठि रूपं चक्खायतनं, अत्थि रूपं न चक्खायतनं। अट्ठि रूपं सोतायतानां...पे... घनायतनं...पे... जीवायतनं...पे... काययतानां, अत्थि रूपं न काययतानां।

अत्थि रूपं रूपायतनं, अत्थि रूपं न रूपायतनं। अट्ठि रूपं सद्दायतनं...पे... गंधायतनं...पे... रसायतनं...पे... फोङ्ठहब्बायतनं, अत्थि रूपं न फोङ्गहब्यतानं।

अट्ठि रूपं चक्खुधातु, अत्थि रूपं न चक्कुधातु। अट्ठि रूपं सोतधातु...पे... घनधातु...पे... जीवधातु...पे... कायधातु, अट्ठि रूपं न कायधातु।

अत्थि रूपं रूपधातु, अत्थि रूपं न रूपधातु। अट्ठि रूपं सद्दधातु...पे... गंधधातु...पे... रसधातु...पे... फोङ्ठबधातु, अत्थि रूपं न फोङ्गधातु।

अट्ठि रूपं चक्कुंद्रियं, अत्थि रूपं न चक्कुंद्रियं। अट्ठि रूपं सोतिन्द्रियं...पे... घनिन्द्रियं...पे... जिव्हिन्द्रियं...पे... कायिन्द्रियम्, अत्थि रूपं न कायिन्द्रियम्।

अट्ठि रूपं इत्थिन्द्रियं, अत्थि रूपं न इत्थिन्द्रियं।

अट्ठि रूपं पुरिसिन्द्रियं, अत्थि रूपं न पुरिसिन्द्रियम्।

अत्थि रूपं जीवितिन्द्रियं, अत्थि रूपं न जीवितिन्द्रियम्।

अट्ठि रूपं कायविन्ति, अत्थि रूपं न कायविन्ति।

अत्थि रूपं वचिविन्नति, अत्थि रूपं न वचिविन्नति।

अत्थि रूपं आकाशधातु, अत्थि रूपं न आकाशधातु।

अत्थि रूपं आपोधातु, अत्थि रूपं न आपोधातु।

अत्थि रूपं रूपस्स लहुता, अत्थि रूपं रूपस्स न लहुता।

अत्थि रूपं रूपस्स मुदुता, अत्थि रूपं रूपस्स न मुदुता।

अत्थि रूपं रूपस्स कम्मन्नता, अत्थि रूपं रूपस्स न कम्मन्नता।

अत्थि रूपं रूपस्स उपाचयो, अत्थि रूपं रूपस न उपाचयो।

अत्थि रूपं रूपस्स संतति, अत्थि रूपं रूपस्स न संतति।

अत्थि रूपं रूपस्स जरता, अत्थि रूपं रूपस्स न जरता।

अत्थि रूपं रूपस्स अनिच्चता, अत्थि रूपं रूपस्स न अनिच्चता।

अत्थि रूपं कबाड़ीकारो आहारो, अत्थि रूपं न कबाड़ीकारो आहारो।

एवं दुविधेन रूपसंगहो।

दुकम्.

टिकां

Tividhena rūpasaṅgaho –

585. यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं उपदा। यं तं रूपं बहिरं, तं अट्ठि उपादा, अत्थि नो उपादा।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं उपादीनां। यं तं रूपं बहिरं, तं अट्ठि उपादीनं, अत्थि अनुपदीनां।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं उपादिन्नुपदनीयम्। यं तं रूपं बहिरं, तं अट्ठि उपादिन्नुपदानियं, अत्थि अनुपदिनुपदानियं।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अनिदासनं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि सनिदासनं, अत्थि अनिदस्सणं।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं सप्पतिघं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि सप्पतिघं, अत्थि अप्पतिघं।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं इंद्रियं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि इंद्रियं, अत्थि न इंद्रियं।

यं तं रूपं अज्जत्तिकं, तं न महाभूतं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न विन्नति। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि विण्णति, अत्थि न विण्णति।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न चित्तसमुत्थानं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि चित्तसमुत्थानं, अत्थि न चित्तसमुत्थानं।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न चित्तसाहभु। यं तं रूपं बहिरं, तं अिट्ठ चित्तसाहभु, अत्थि न चित्तसाहभु।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न चित्तनुपरिवति। यं तं रूपं बहिरं, तं अिट्ठ चित्तनुपरिवति, अत्थि न चित्तनुपरिवति।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं ओदारिकां। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि ओसारिकां, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं संतिके। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके।

यं तं रूपं बहिरं, तं चक्खुसमफसस्सा न वत्थु। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अिट्ठ चक्खुसमफसस्सा वत्थु, अत्थि चक्खुसमफसस्सा न वत्थु।

यं तं रूपं बहिरं, तं चक्खुसमफस्सजाय वेदनाय...पे... संन्या...पे... चेतानाय...पे... चक्खुविनानास्सा न वत्थु। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अत्थि चक्कुविनांस वत्थु, अत्थि चक्कुविनांस वत्थु।

यं तं रूपं बहिरं, तं सोतसंफस्सस्सा...पे... घनसंफस्सस्सा...पे... जीवसम्फस्सस्सा...पे... कायसमफस्सस्सा न वत्थु। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अत्थि कायसमफस्सस्सा वत्थु, अत्थि कायसमफस्सस्सा न वत्थु। यं तं रूपं बहिरं, तं कायासंफसजया वेदनाय...पे... संन्याय...पे... चेतनाय...पे... कायविनानास्सा न वत्थु। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अत्थि कायविनानास्स वत्थु, अत्थि कायविनानास्स न वत्थु।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं चक्खुसमफसस्सा नरम्मणं। यं तं रूपं बहिरं, तं अिट्ठ चक्खुसमफसस्सा अरम्मणं, अत्थि चक्खुसमफस्स्स्स नरम्मणं। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं चक्खुसमफस्सजाय वेदनाय...पे... संन्या...पे... चेतनाय...पे... चक्खुविनानास्सा नरम्मनं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि चक्कुविनांस्स अराम्मनं, अत्थि चक्कुविनांस्स नारम्मणं।

Yaṃ taṃ rūpaṃ ajjhattikaṃ, taṃ sotasamphassassa…pe… ghānasamphassassa…pe… jivhāsamphassassa…pe… kāyasamphassassa nārammaṇaṃ. Yaṃ taṃ rūpaṃ bāhiraṃ, taṃ atthi kāyasamphassassa ārammaṇaṃ, atthi kāyasamphassassa nārammaṇaṃ. यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं कायासंफसजया वेदनाय...पे... संन्याय...पे... चेतनाय...पे... कायवीनांस्स नरम्मणं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि कायविनानास्स अरम्मणं, अत्थि कायविनानास्स नरम्मणं।

यं तं रूपं बहिरं, तं न चक्खायतनं। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अत्थि चक्खायतनं, अत्थि न चक्खायतनं। यम तं रूपं बहिरं, तं न सोतायतानां...पे... न घनायतनं...पे... न जीवायतनं...पे... न कायायतानां। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अत्थि कायायतनं, अत्थि न काययतानां।

यं तं रूपं अज्जत्तिकं, तं न रूपायतनं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपायतनं, अत्थि न रूपायतनं। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न सददायतनं...पे... न गंधायतनं...पे... न रसायतनं...पे... न फोथ्भायतनं। यं तं रूपं बहिरं, तं अिट्ठ फोङ्क्षबयतनं, अत्थि न फोङ्क्षबबायतनं।

यं तं रूपं बहिरं, तं न चक्खुधातु। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अत्थि चक्कुधातु, अत्थि न चक्कुधातु। यं तं रूपं बहिरं, तं न सोतधातु...पे... न घनधातु...पे... न जीवधातु...पे... न कायधातु। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अत्थि कायधातु, अत्थि न कायधातु।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न रूपधातु। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपधातु, अत्थि न रूपधातु। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न सद्दधातु...पे... न गंधधातु...पे... न रसधातु...पे... न फ़ोत्हब्बधातु। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि फोङ्भधातु, अत्थि न फोङ्क्षबधातु।

यं तं रूपं बहिरं, तं न चक्कुंद्रियं। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अट्ठि चक्कुंद्रियं, अत्थि न चक्कुंद्रियं। यम तं रूपं बहिरं, तं न सोतिन्द्रियं...पे... न घनिन्द्रियं...पे... न जिव्हिन्द्रियं...पे... न कायिन्द्रियम्। यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं अत्थि कायिन्द्रियम्, अत्थि न कायिन्द्रियम्।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न इत्थिन्द्रियं। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि इत्थिन्द्रियं, अत्थि न इत्थिन्द्रियं।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न पुरिसिन्द्रियं। यम तं रूपं बहिरं, तं अट्ठि पुरिसिन्द्रियं, अत्थि न पुरिसिन्द्रियम्।

यं तं रूपं अज्जत्तिकं, तं न जीवितिन्द्रियम्। यम तं रूपं बहिरं, तं अत्थि जीवितिन्द्रियं, अत्थि न जीवितिन्द्रियम्।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न कायविनति। यं तं रूपं बहिरं, तं अट्ठि कायविन्ति, अत्थि न कायविनति।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं न वचिविन्नति। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि वचिविन्नति, अत्थि न वचिविन्नति।

यं तं रूपं अज्जत्तिकं, तं न आकाशधातु। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि आकाशधातु, अत्थि न आकाशधातु।

यं तं रूपं अज्जत्तिकं, तं न आपोधातु। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि आपोधातु, अत्थि न आपोधातु।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं रूपस न लहुता। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपस्स लहुता, अत्थि रूपस्स न लहुता।

यं तं रूपं अज्जत्तिकं, तं रूपस न मुदुता। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपस्स मुदुता, अत्थि रूपस्स न मुदुता।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं रूपस न कामनाता। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपस्स कम्मन्नता, अत्थि रूपस्स न कम्मन्नता।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं रूपस न उपचयो। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपस्स उपाचयो, अत्थि रूपस न उपाचयो।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं रूपस न संतति। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपस्स संतति, अत्थि रूपस्स न संतति।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं रूपस न जराता। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपस्स जरता, अत्थि रूपस्स न जरता।

यं तं रूपं अज्झट्टिकं, तं रूपस न अनिच्चता। यं तं रूपं बहिरं, तं अत्थि रूपस्स अनिच्चता, अत्थि रूपस्स न अनिच्चता।

यं तं रूपं अज्जत्तिकां, तं न कबाड़ीकारो आहारो। यं तं रूपं बहिरं, तं अट्ठि कबाड़ीकारो आहारो, अत्थि न कबाड़ीकारो आहारो।

एवं तिविधेन रूपसंगहो।

Tikaṃ.

चतुक्कं

कैटुबिधेन रूपसंगहो –

586. यं तं रूपं उपदा, तं अट्ठि उपादीनं, अत्थि अनुपदीनां। यं तं रूपं नो उपादा, तं अट्ठि उपादीनं, अत्थि अनुपदीनां।

यं तं रूपं उपदा, तं अट्ठि उपादिनुपदानियं, अत्थि अनुपदिनुपदानियं। यं तं रूपं नो उपादा, तं अट्ठि उपादिनुपदानियं, अत्थि अनुपदिनुपदानियं।

यं तं रूपं उपदा, तं अत्थि सप्पतिघं, अत्थि अप्पतिघं। यं तं रूपं नो उपदा, तं अत्थि सप्पतिघं, अत्थि अप्पतिघं।

यं तं रूपं उपदा, तं अत्थि ओदारिकां, अत्थि सुखुमं। यम तं रूपं नो उपदा, तं अत्थि ओदारिकं, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं उपदा, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके। यम तं रूपं नो उपदा, तं अट्ठि दूरे, अत्थि संतिके।

यं तं रूपं उपादीनं, तं अत्थि सनिदासनं, अत्थि अनिदस्सणं। यं तं रूपं अनुपदीनं, तं अत्थि सनिदासनं, अत्थि अनिदस्सणं।

यं तं रूपं उपादिन्नं, तं अत्थि सप्पतिघं अत्थि अप्पतिघं। यं तं रूपं अनुपादिणं, तं अत्थि सप्पतिघं, अत्थि अप्पतिघं।

यं तं रूपं उपादीनं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं। यं तं रूपं अनुपदीनं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं।

यं तं रूपं उपादीनं, तं अत्थि ओसारिकां, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं अनुपदीनं, तं अत्थि ओसारिकां, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं उपादीनं, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके। यं तं रूपं अनुपदीनं, तं अट्ठि दूरे, अट्ठि संतिके।

यं तं रूपं उपादिन्नुपदानियं, तं अत्थि सनिदासनं, अत्थि अनिदस्सणं। यं तं रूपं अनुपादीनुपदानियं, तं अत्थि सनिदासनं, अत्थि अनिदस्सणं।

यं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं, तं अत्थि सप्पतिघं, अत्थि अप्पतिघं। यं तं रूपं अनुपादीनुपादनीयं, तं अट्ठि सप्पतिघं, अत्थि अप्पतिघं।

यं तं रूपं उपादिन्नुपादनीयं, तं अट्ठि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं। यं तं रूपं अनुपादीनुपादनीयं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं।

यं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं, तं अट्ठि ओदारिकां, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं, तं अत्थि ओदारिकां, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके। यं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके।

यं तं रूपं सप्पतिघं, तं अत्थि इंद्रियं, अत्थि न इंद्रियं। यं तं रूपं अप्पतिघं, तं अत्थि इंद्रियं, अत्थि न इंद्रियं।

यं तं रूपं सप्पतिघं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं। यं तं रूपं अप्पतिघं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं।

यम तं रूपं इंद्रियं, तं अत्थि ओदारिकां, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं न इंद्रियं, तं अत्थि ओसारिकां, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं इंद्रियं, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके। यं तं रूपं न इंद्रियं, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके।

यं तं रूपं महाभूतं, तं अत्थि ओदारिकां, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं न महाभूतं, तं अत्थि ओदारिकां, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं महाभूतं, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके। यं तं रूपं न महाभूतं, तं अत्थि दूरे, अत्थि संतिके।

दीठं सुतं मुतं विनातां रूपं।

एवं कैटुबिधेन रूपसंगहो।

चतुक्कम.

पंचकं

पंचविधेन रूपसंगहो –

587. पथविधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वयोधातु, यञ्च रूपं उपदा।

एवं पंचविधेन रूपसंगहो।

पंचकम्.

चक्कं

छब्बिधेन रूपसंगहो -

588. चक्खुविन्येयं रूपं, सोतविंय्यं रूपं, घनविंय्यं रूपं, जिव्हाविन्यं रूपं, कायविन्यंयं रूपं, मनोविन्यायं रूपं।

एवं चब्बिधेन रूपसंगहो।

चक्कं.

सत्तकं

सत्तविधेन रूपसंगहो -

589. चक्खुविन्येयं रूपं, सोतविंय्यं रूपं, घनविंय्यं रूपं, जीवविंयं रूपं, कायविन्यंयं रूपं, मनोधातुविन्यनेयं रूपं, मनोविनाधातुविन्येयं रूपं।

एवं सत्तविधेन रूपसंगहो।

सत्तकम्.

अट्ठकं

अट्ठविधेन रूपसंगहो –

590. चक्खुविन्येयं रूपं, सोतविंय्यं रूपं, घनविंय्यं रूपं, जिव्हाविन्यं रूपं, कायविन्यंयं रूपं, अट्ठि सुखसंफस्सां, अत्थि दुक्खसम्फस्सां, मनोधातुविन्येयं रूपं, मनोविनानाधातुविंय्यं रूपं।

एवं अट्ठविधेन रूपसंगहो।

अट्ठकम्.

नवकं

नवविधेन रूपसंगहो –

591. चक्खुन्द्रियं, सोतिन्द्रियं, घनिन्द्रियं, जिव्हिन्द्रियं कायिन्द्रियं, इत्थिन्द्रियं, पुरीसिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं, यञ्च रूपं न इन्द्रियं।

एवं नवविधेन रूपसंगहो।

नवकम्.

दशकं

दशविधेन रूपसंगहो –

592. चक्खुन्द्रियं, सोतिन्द्रियं, घनिन्द्रियं, जिव्हिन्द्रियं कायिन्द्रियं, इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं, न इन्द्रियं रूपं अत्थि सप्पतिघं, अत्ति अप्पतिघं.

एवं दशविधेन रूपसंगहो।

दशकं.

एकादसकं

एकादशविधेन रूपसंगहो –

593. चक्खायतनं, सोतायतनं, घनायतनं, जीवायतनं, कायायतनं, रूपायतनं, सददायतनं, गन्धायतनं, रसायतनं, फोट्टहब्बायतनं, यञ्च रूपं अनिदासनअप्पतिघं [अनिदासनं अप्पाघं (सि. स्या.)] धम्मायतनपरियपन्नं।

एवं एकादशविधेन रूपसंगहो।

Ekādasakaṃ.

Mātikā.

रूपविभट्टी

Ekakaniddeso

594. सब्बं रूपं न हेतुमेव, अहेटुकमेव, हेतुविप्पयुत्तमेव, सप्पाकायमेव, संखतमेव, रूपमेव, लोकियामेव, सासवमेव, संयोगनीयमेव, गांठनीयमेव, ओघनियामेव, योगानियामेव, निवरनियामेव, परमथमेव, उपदानीयमेव, सांकिलेसिकमेव, अभ्यकतमेव, अनारमणमेव, एसिटासिकामेव, चित्तविप्पयुत्तमेव, नेवविपाकनविपाकधम्मधम्ममेव, असंकिलिट्ठहाससंकिलेसिकमेव, न सविताक्कसविचरामेव, न अवितककविचारमत्तमेव, अवितककविचारमेव, न पितिसाहगतमेव, न सुखसहगतमेव, न उपेक्खसहगतमेव, नेव दस्सानेन न भवनाय पहतब्बमेव, नेव दस्सानेन न भवनाय पहतबहेटुकमेव, नेव अचयागामी न अपाकायागममेव, नेवासेक्खानासेक्खमेव, परित्तमेव, कामवाकरमेव, न रूपवाकरमेव, न अरूपवाकरमेव, परियापन्नामेव, नो अपरियापन्नामेव, अनियातमेव, अनियानिकमेव, उप्पन्नं चहि विन्ननेहि विन्नेय्यामेव, अनिच्चमेव, जराभिभूतमेव।

एवं एकविधेन रूपसंगहो।

Ekakaniddeso.

Dukaniddeso

उपादाभाजनीयं

595. कटमं तं रूपं उपदा? चक्खायतनं, सोतायतनं, घनायतनं, जीवायतनं, कायायतनं, रूपायतनं, सददायतनं, गंधायतनं, रसायतनं, इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं, कायविनति, वसीविनति, आकाशधातु, रूपस्सा लहुता, रूपस्सा मुदुता, रूपस्सा कम्मनता, रूपस्सा उपाकायो, रूपस्सा संतति, रूपस्सा जराता, रूपस्सा अनिक्काटा, kabaḷīkāro āhāro.

596. कटमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु [चक्खु (सि. स्या.)] कटुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासनो सप्पतिघो, येन चक्खुना अनिदासानेना सप्पतिघेना रूपं सनिदासनं सप्पतिघं पासि वा पासति वा पासिस्सति वा पासे वा, चक्खुं पेटं चक्खायतनं पेटं चक्कुधातु पेसा चक्कुंद्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं नेट्टं पेटं नयनं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामोपेसो — इदं तं रूपं चक्खायतनं।

597. कटमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यम्ही चक्खुम्ही अनिदासनमहि सप्पतिघमहि रूपं सनिदासनं सप्पतिघं पतिहनि वा पतिहन्याति वा पतिहनिस्साति वा पतिहनि वा, चक्खुं पेटं चक्खायतनं पेटं चक्कुधातु पेसा चक्कुन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडरं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं नेत्तं पेटं नयनं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं चक्खायतनं.

598. कटमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यं चक्खु अनिदासनं सप्पपतिघं रूपमहि सानिदासनमहि सप्पतिघमहि पतिहनि वा पतिहन्याति वा पतिहनिस्साति वा पतिहनि वा, चक्खुं पेटं चक्खायतनं पेटं चक्कुधातु पेसा चक्कुन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडरं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं नेत्तं पेटं नयनं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं चक्खायतनं.

599. कटमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पातिघो, यं चक्खुं निस्साय रूपं अरब्भा चक्खुसमफस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा…पे… यं चक्खुं निस्साय रूपं अरब्भा चक्खुसमफस्सजा वेदना…पे… संना…पे… केतना…पे… चक्खुविनाणं उप्पज्जि वा उपज्जति व उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा…पे… यम चक्खुं निस्साय रूपरमणो चक्खुसमफसो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्ति वा उप्पज्जे वा…पे… यम चक्खुं निस्साय रूपरमण

चक्खुसमफस्सजा वेदाना...पे...सन्ना...पे...चेतना...पे...चक्कुविनाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उपज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, चक्खुं पेटं चक्खायतनं पेटं चक्कुधातु पेसा चक्कुंद्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पंडरं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं नेट्टं पेटं नयनं पेटं ओरिमं तिरं पेटं सुननो गमो पेसो - इदं तं रूपं चक्खायतनं।

600. कटमं तं रूपं सोतायतनं? यं सोतं कैटुन्नं महाभूतानं उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, येना सोतेन अनिदासानेन सप्पतिघेन सद्दां अनिदासनं सप्पतिघं सुनि वा सुनाति वा सुनिस्सति वा सुने वा, सोतं पेटं सोतायतानां पेटं सोतधातु पेसा सोतिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पंडरं पेटं खेत्टम् पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं सोतायतानां।

601. कटमं तं रूपं सोतायतनं? यं सोतं चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यमहि सोतमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि सद्दो अनिदासणो सप्पतिघो पतिहनि वा पतिहानिस्ति वा पतिहान्निस्से वा, सोतं पेटं सोतायतानां पेटं सोतधातु पेसा सोतिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं सोतायतनं।

602. कटमं तं रूपं सोतायतनं? यं सोतं कैटुन्नं महाभूतानं उपादया पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यं सोतं अनिदासनं सप्पतिघं सद्दामहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहनिस्साति वा पतिहनी वा, सोतं पेटं सोतायतनं पेटं सोतधातु पेसा सोतिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पंडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तिरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं सोतायतनं।

603. कटमं तं रूपं सोतायतनं? यं सोतं कैटुन्नं महाभूतानं उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यं सोतं निस्साय सद्दां अरबभा सोतसाम्फसो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा...पे... यं सोतं निस्साय सद्दं अरबभा सोतासम्पसजा वेदना...पे... सन्ना...पे... केतना...पे... सोताविनानां उप्पज्जि वा उपप्पज्जति वा उपज्जिसति और ऊपर वा...पे... यम सोतं निस्साय सद्दारम्मणो सोतसंफस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... यम सोतं निस्साय सद्दारम्मणो सोतसम्फास्सो उप्पज्जि...पे... सन्ना...पे... चेतना...पे... सोतविनानां उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा, सोतं पेटं सोतायतानां पेटं सोतधातु पेसा सोतिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो — इदं तं रूपं सोतायतनं।

604. कटमं तं रूपं घनायतनं? यं घनं चतुन्नं महाभूतानं उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, येन घनेन अनिदासानेन सप्पतिघेन गंधं अनिदासनं सप्पतिघं घयि वा घयति वा घयिस्सति वा घये वा, घनं पेटं घनायतनं पेटं घनधातु पेसा घनिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पंडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं घनायतनं।

605. कटमं तं रूपं घनायतनं? यं घनं चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यमहि घनमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि गन्धो अनिदासणो सप्पतिघो पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहनिस्साति वा पतिहनि वा, घनं पेटं घनायतनं पेटं घनधातु पेसा घनिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं घनायतनं।

606. कटमं तं रूपं घनायतनं? यं घनं चतुन्नं महाभूतानं उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदास्सणो सप्पतिघो, यं घनं अनिदासणं सप्पतिघं गन्धमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निस्सति वा पतिहणिणे वा, घनं पेटं घनायतनं पेटं घनधातु पेसा घनिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पंडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामोपेसो — इदं तं रूपं घनायतनं।

607. कटमं तं रूपं घनायतनं? यं घनं चतुन्नं महाभूतानं उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यं घनं निस्साय गंधं अरब्भ घनसंफस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं घनं निस्साय गंधं अरब घनसंफस्साज वेदना...पे...सन्ना...पे...चेतना...पे... घनविनाणां उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उपज्जिस्सति वा उपप्पज्जे वा...पे... यम घनं निस्साय

गंधारम्मणो घनसंफास्सो उपज्जि वा उपज्जति वा उपज्जिस्सति वा उपप्पज्जे वा...पे... यां घनं निस्सय गंधरमण घनसम्पसज वेदना...पे... सन्ना...पे...चेतना...पे... घनविनाण उप्पज्जि वा उपज्जति वा उपज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, घनं पेटं घनायतनं पेटं घनधातु पेसा घनिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गमो पेसो - इदं तं रूपं घनायतनं।

608. कटमं तं रूपं जीवायतनं? या जिव्हा चतुन्नं महाभूतानां उपादाय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदास्सणो सप्पतिघो, या जिव्हा जिव्हा अनिदासनाय सप्पतिघाय रसं अनिदासनम् सप्पतिघं सयी वा सयति वा सयिसति वा सये वा, जिव्हा पेसा जिव्हायतनं पेटं जिव्हाधातु पेसा जिव्हिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गमो पेसो - इदं तं रूपं जीवायतनं।

609. कटमं तं रूपं जीवायतनं? या जिव्हा चतुन्नं महाभूतानां उपादाय पसादो अत्ताभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, या जिव्हा जिव्हाय अनिदासनाय सप्पतिघाय रसो अनिदासणो सप्पतिघो पतिहनि वा पतिहन्याति वा पतिहनिस्साति वा पतिहनि वा, जिव्हा पेसा जीवायतनं पेटं जीवधातु पेसा जिव्हिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं जिव्हायतनं।

610. कटमं तं रूपं जीवायतनं? या जिव्हा चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासनो सप्पतिघो, या जिव्हा अनिदासना सप्पतिघा रसमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि पतिहनि वा पतिहन्याति वा पतिहनिस्साति वा पतिहनि वा, जिव्हा पेसा जीवायतनं पेटं जीवधातु पेसा जिव्हिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं जिव्हायतनं।

611. कटमं तं रूपं जीवायतनं? या जिव्हा चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यं जिव्हाहं निस्साय रसं अरब्भ जिव्हासाम्फसो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उपज्जिस्सति वा उपप्पज्जे वा...पे... यं जिव्हाण् निस्साय रसं अरब्भा जिव्हासंफसज वेदना...पे... सन्ना...पे... चेतना...पे... जिव्हाविनानां उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जि सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं जीवं निस्साय रसारम्मणो जीवसम्फसो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जि सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं जीवहं निस्साय रसारमण जीवसंफसज वेदाना...पे...संन्या...पे...चेतना...पे...जीवविनाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, जिव्हा पेसा जीवायतनं पेटं जीवधातु पेसा जिव्हिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं जीवायतनं।

612. कटमं तं रूपं काययतानां? यो कायो चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पातिघो, येना कायेना अनिदासानेना सप्पतिघेन फोथब्बां अनिदासंससप्पतिघां फुसि वा फुसति वा फुसिसति वा फुसे वा, कायो पेसो कायायतनं पेटं कायधातु पेसा कायिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडरं पेटं खेतम् पेटाम वत्थुं पेटं ओरिमं तिरं पेटं सुन्नो गामो पेसो - इदं तं रूपं काययतानां।

613. कटमं तं रूपं काययतानां? यो कायो चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यमहि कायमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि फोङ्क्षहब्बो अनिदासणो सप्पतिघो पतिहनि वा पतिहानति वा पतिहनिस्साति वा पतिहनी वा, कायो पेसो कायायतनं पेटं कायधातु पेसा कयिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं कायायतनं।

614. कटमं तं रूपं काययतानां? यो कायो चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यो कायो अनिदासणो सप्पतिघो फोथ्बमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि पतिहनि वा पतिहानति वा पतिहनिस्साति वा पतिहनी वा, कायो पेसो कायायतनं पेटं कायधातु पेसा कयिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पांडारं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं कायायतनं।

615. कटमं तं रूपं काययतानां? यो कायो चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो अत्तभावपरियपन्नो अनिदासणो सप्पतिघो, यं कायं निस्साय फोथब्बं अरबभा कायसम्फसो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्ति वा उप्पज्जे वा...पे... यं कायं निस्साय फोथथब्बं अरब्भा कायसमफस्सजा वेदाना...पे...सन्या...पे...चेतना...पे... कायवीनाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्ति वा उप्पज्जे वा...पे... यं कायं निस्साय फोथ्हब्बारामणो कायसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जि सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं कायं निस्सया फोथब्बरम्मना कायसमफस्सजा वेदना...पे...सन्ना...पे...चेतना...पे...कायवीनानां उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, कायो पेसो कायायतनं पेटं कायधातु पेसा कायिन्द्रियं पेटं लोको पेसो द्वार पेसा समुद्दो पेसो पंडरं पेटं खेतं पेटं वत्थुं पेटं ओरिमं तीरं पेटं सुन्नो गमो पेसो - इदं तं रूपं काययतानां।

616. कटमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा शनिदासनं सप्पतिघं निलं पीतकं लोहितकं ओदतं कषाकं मंजिठकम् [मंजेठकम् (सि. स्या.)] हरि हरिवाणं अंबंकुरवं दीघं रस्सं अनुं थुलं वट्टं परिमंडलम् कैटुरांसं [कैटुरसां (सि. का.)] छंदसां अठहंसां सोसासां निन्नं थालं छाया अतापो आलोको अंधकारो अब्भा महिका धूमो रजो कैंडामंडलस्स वनिनिभा सूर्यमंडलस्स [सूर्यमंडलस्स (सि. स्या.)] वंडनिभा तारकरूपणं वनिनिभा अदासमंदलस्सा वननिभा मनिसंखमुत्तवेसूरियस्सा वननिभा जतरूपराजतस्सा वननिभा, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादाय वननिभा सनिदासनं सप्पतिघं, यं रूपं सनिदासनं सप्पतिघं चक्खुना अनिदासानेन सप्पतिघेन पासि वा पासति वा पासिस्सति वा पासे वा, रूपं पेटाम रूपायतनं पेटं रूपधातु पेसा - इदं तं रूपं रूपायतनं।

617. कटमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा शनिदासनं सप्पतिघं निलं पीतकं लोहितकं ओदतं कषाकं मंजिथकं हरि हरिवाणं अंबंकुरवनं दीघं रसं अनुं थूलं वंतं परिमंडलं चतुरांसं छंदसां अथाहंसां सोसासां निन्नं थलं छाया अतापो आलोको अंधकारो अब्भा महिका धूमो रजो कैंडामंडलस्सा वननिभा सूर्यमंडलस्स वनिनिभा तारकरुपानं वनिनिभा अदासमंडलस्स वनिनिभा मनिसंखमुत्तवेसूरियस्सा वनिनिभा जातरूपराजतस्सा वननिभा, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा सनिदासनं सप्पतिघं, यमहि रूपमहि सनिदासनमहि सप्पतिघंहि चक्खुं अनिदस्सणं सप्पतिघं पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निस्सति वा पतिहन्नय वा, रूपं पेटं रुपायतनं पेटं रूपधातु पेसा — इदं तं रूपं रूपायतनं.

618. कटमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा शनिदासनं सप्पतिघं निलं पीतकं लोहितकं ओदतं कषाकं मंजिथकं हरि हरिवाणं अंबंकुरवनं दीघं रसं अनुं थूलं वंतं परिमंडलं चतुरांसं छंदसां अथाहंसां सोसासां निन्नं थलं छाया अतापो आलोको अंधकारो अब्भा महिका धूमो रजो कैंडामंडलस्सा वननिभा सूर्यमंडलस्स वनिनिभा तारकरुपानं वनिनिभा अदासमंडलस्स वनिनिभा मनिसंखमुत्तवेसूरियस्सा वनिनिभा जातरूपराजतस्सा वननिभा, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा सनिदासनं सप्पतिघं, यं रूपं सनिदासनं सप्पतिघं चक्खुम्ही अनिदासनमहि सप्पतिघंहि पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निस्सति वा पतिहन्नने वा, रूपं पेटं रुपायतनं पेटं रूपधातु पेसा - इदं तं रूपं रूपायतनं।

619. कटमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा शनिदासनं सप्पतिघं निलं पीतकं लोहितकं ओदतं कषाकं मंजिथकं हरि हरिवाणं अंबंकुरवनं दीघं रसं अनुं थूलं वंतं परिमंडलं चतुरांसं छंदसां अथाहंसां सोसासां निन्नं थलं छाया अतापो आलोको अंधकारो अब्भा महिका धूमो रजो कैंडामंडलस्सा वननिभा सूर्यमंडलस्स वनिनिभा तारकरुपानं वनिनिभा अदासमंडलस्स वनिनिभा मनिसंखमुत्तवेसूरियस्सा वनिनिभा जातरूपराजतस्सा वननिभा, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा सनिदासनं सप्पतिघं, यं रूपं अरब्भा चक्खुं निस्साय चक्खुसंफस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा...पे... यं रूपं अरब चक्खुं निस्साय चक्खुसमफस्सजा वेदाना...पे... सान्या...पे... सीताना...पे... चक्कुविनाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्ति वा उप्पज्जे वा...पे... यं रूपरामणो चक्खुं निस्साय चक्खुसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा...पे... यं रूपरम्मण चक्खुं निस्साय चक्खुसमफस्सजा वेदना...पे... सन्ना...पे... चेतना...पे... चक्खुविनानां उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा, रूपं पेटं रूपायतनं पेटं रूपधातु पेसा - इदं तं रूपं रूपायतनं।

620. कटमं तं रूपं सद्दायतनम्? यो सद्दो कटुन्नं महाभूतानां उपादाय अनिदास्सनो सप्पातिघो भेरीसद्दो मुदिङ्गसाद्दो संखसद्दो पणवसाददो गीतासद्दो वदितसाद्दो सम्मासद्दो पणिसद्दो सत्तनं निग्गोससाददो धतूनं सन्निघटसद्दो वात्ससद्दो उदकसद्दो मनुस्ससद्दो अमानुस्सासद्दो, यो वा

पणन्नोपि अत्थि सद्दो कटुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासनो सप्पतिघो, यं सद्दाम अनिदासनं सप्पतिघं सोतेन अनिदासनेन सप्पतिघेन सुनि वा सुनति वा सुनिसति वा सुने वा, सद्दो पेसो सद्दायतनं पेटं सद्दधातु पेसा - इदं तं रूपं सद्दायतनम्.

621. कटमं तं रूपं सद्दायतनम्? यो सद्दो कटुन्नं महाभूतानां उपादाय अनिदास्सनो सप्पातिघो भेरीसद्दो मुदिङ्गसाद्दो संखसद्दो पणवसाददो गीतासद्दो वदितसाद्दो सम्मासद्दो पणिसद्दो सत्तनं निग्गोससाददो धतूनं सन्निघटसद्दो वतसद्दो उदकासद्दो मनुस्ससद्दो अमानुस्सासद्दो, यो वा पणन्नोपि अत्थि सद्दो कटुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासनो सप्पतिघो, यम्हि सद्दामहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि सोतं अनिदासनं सप्पतिघं पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निसति वा पतिहन्नने वा, सद्दो पेसो सददायतनं पेटं सद्धातु पेसा - इदं तां रूपं सद्दायतनम्।

622. कटमं तं रूपं सद्दायतनम्? यो सद्दो कटुन्नं महाभूतानां उपादाय अनिदास्सनो सप्पातिघो भेरीसद्दो मुदिङ्गसाद्दो संखसद्दो पणवसाददो गीतासद्दो वदितसाद्दो सम्मासद्दो पणिसद्दो सत्तनं निग्गोससाददो धतूनं सन्निघटसद्दो वात्ससद्दो उदकसद्दो मनुस्ससद्दो अमानुस्सासद्दो, यो वा पणन्नोपि अत्थि सद्दो कटुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासनो सप्पातिघो, यो सद्दो अनिदासनो सप्पतिघो सोतमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निस्सति वा पतिहनी वा, सद्दो पेसो सददायतनं पेटं सदधातु पेसा - इदं तं रूपं सद्दायतनम्.

623. कटमं तं रूपं सद्दायतनम्? यो सद्दो कटुन्नं महाभूतानां उपादाय अनिदास्सनो सप्पातिघो भेरीसद्दो मुदिङ्गसाद्दो संखसद्दो पणवसाददो गीतासद्दो वदितसाद्दो सम्मासद्दो पणिसद्दो सत्तनं निग्गोससाददो धतूनं सन्निघटसद्दो वात्ससद्दो उदकसद्दो मनुस्ससद्दो अमानुस्सासद्दो, यो वा पणन्नोपि अत्थि सद्दो कटुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासनो सप्पतिघो, यं सद्दां अरब्भा सोताम् निस्साय सोतासम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं सद्दां अरब सोतं निस्साय सोतासम्फास्जा वेदाना...पे... सन्ना...पे... चेतना...पे... सोतविनानां उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं सद्दारामणो सोतं निस्साया सोतसाम्फसो उप्पज्जि वा उपज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं सद्दारम्मना सोतं निस्साय सोतसंफसज वेदाना...पे...सन्या...पे...चेतना...पे...सोतविन्नानं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, सद्दो पेसो सद्दायतनं पेटं सद्धातु पेसा — इदं तं रूपं सददायतनम्।

624. कटमं तं रूपं गंधायतनं? यो गन्धो चतुन्नं महाभूतानां उपादय अनिदासनो सप्पतिघो मूलगन्धो सारगन्धो तचागन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलागन्धो अमाकगन्धो विसगन्धो सुगन्धो दुग्गन्धो, यो वा पणन्नोपि अट्ठि गंधो चतुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासणो सप्पतिघो, यं गंधं अनिदासनं सप्पतिघं घनेना अनिदासानेन सप्पतिघेन घायि वा घयति वा घयिस्सति व घाये वा, गंधो पेसो गंधायतनं पेटं गंधधातु पेसा - इदं तं रूपं गंधायतनं।

625. कटमं तं रूपं गंधायतनं? यो गन्धो चतुन्नं महाभूतानां उपादय अनिदासनो सप्पातिघो मूलगन्धो सारगन्धो तचागन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलागन्धो अमाकगन्धो विसगन्धो सुगन्धो दुग्गन्धो, यो वा पणन्नोपि अट्ठि गन्धो चतुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासणो सप्पतिघो, यमहि गंधमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि घनं अनिदासनं सप्पतिघं पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निस्सति वा पतीहन्ने वा, गंधो पेसो गंधायतनं पेटं गंधधातु पेसा - इदं तं रूपं गंधायतनं।

626. कटमं तं रूपं गंधायतनं? यो गन्धो चतुन्नं महाभूतानां उपादय अनिदासनो सप्पातिघो मूलगन्धो सारगन्धो तचागन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलागन्धो अमाकगन्धो विसगन्धो सुगन्धो दुग्गन्धो, यो वा पणन्नोपि अट्ठि गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादया अनिदासणो सप्पतिघो, यो गंधो अनिदासणो सप्पतिघो घनमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निस्सति वा पतिहन्ने वा, गंधो पेसो गंधायतनं पेटं गंधधातु पेसा - इदं तं रूपं गंधायतनं।

627. कटमं तं रूपं गंधायतनं? यो गन्धो चतुन्नं महाभूतानां उपादय अनिदासनो सप्पातिघो मूलगन्धो सारगन्धो तचागन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलागन्धो अमाकगन्धो विसगन्धो सुगन्धो दुग्गन्धो, यो वा पणन्नोपि अट्ठि गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादया अनिदास्सणो सप्पतिघो, यं गन्धं अरब घनं निस्साय घनसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... हाँ गंधं अरब घनं निस्साय घनसंफसज वेदना...पे...सन्ना...पे...चेतना...पे... घनविनाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं गंधरामणो घनं निस्साय घनसंफस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं गंधारम्मणो घनं निस्साय

घनसंफस्सजा वेदाना...पे... सन्ना...पे... चेतना...पे... घनविनिनां उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा, गंधो पेसो गंधायतनं पेटं गंधधातु पेसा - इदं तं रूपं गंधायतनं।

628. कटमं तं रूपं रसायतनं? यो रसो कैटुन्नं महाभूतानां उपादय अनिदासनो सप्पतिघो मूलरासो खंडरासो तकरासो पत्तरसो पुप्फरसो फलारसो अम्बिलं मधुरं तित्तकं कटुकं लोनिकां खरिकां लाम्बिलं [लपिलकं (सि.)] कसावो सादु असादु, यो वा पणन्नोपि अत्थि रसो कटुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासणो सप्पतिघो, यं रसं अनिदासनं सप्पतिघं। जिव्हाया अनिदासनाय सप्पतिघाय सयी वा सयति वा सयिसति वा सये वा, रसो पेसो रसायतन पेटं रसधातु पेसा - इदं तं रूपं रसायतनं।

629. कटमं तं रूपं रसायतनं? यो रसो कैटुन्नं महाभूतानां उपादय अनिदासनो सप्पतिघो मूलरासो खंडरासो तकरासो पत्तरसो पुप्फरसो फलारसो अम्बिलं मधुरं तित्तकं कटुकं लोनिकां खरिकां लाम्बिलम् कसावो सादु असादु, यो वा पणन्नोपि अत्थि रसो कटुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासनो सप्पतिघो, यमहि रसमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि जिव्हा अनिदासना सप्पतिघा पातिहाणि वा पतिहानिसति वा पतिहान्निसति वा पतिहान्नि वा, रसो पेसो रसायतनं पेटं रसधातु पेसा - इदं तं रूपं रसायतनम्।

630. कटमं तं रूपं रसायतनं? यो रसो कैटुन्नं महाभूतानां उपादय अनिदासनो सप्पतिघो मूलरासो खंडरासो तकरासो पत्तरसो पुप्फरसो फलारसो अम्बिलं मधुरं तित्तकं कटुकं लोनिकां खरिकां लाम्बिलं कसावो सादु असादु, यो वा पणन्नोपि अत्थि रसो कटुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासनो सप्पतिघो, यो रसो अनिदासनो सप्पतिघो जीवहाय अनिदासनाय सप्पतिघाय पातिहाणि वा पतिहानिसति वा पतिहान्निसति वा पतिहान्नि वा, रसो पेसो रसायतनं पेटं रसधातु पेसा - इदं तं रूपं रसायतनम्।

631. कटमं तं रूपं रसायतनं? यो रसो कैटुन्नं महाभूतानां उपादय अनिदासनो सप्पतिघो मूलरासो खंडरासो तकरासो पत्तरसो पुप्फरसो फलारसो अम्बिलं मधुरं तित्तकं कटुकं लोनिकां खरिकां लाम्बिलं कसावो सादु असादु, यो वा पणन्नोपि अत्थि रसो कटुन्नं महाभूतानां उपादया अनिदासणो सप्पतिघो, यं रसं अरब्भ जीवहं निस्साया जिव्हासम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उपप्पज्जे वा...पे... यं रसं अरब्भ जीवहं निस्साया जिव्हासंफसज वेदना...पे...संन्या...पे...चेतना...पे...जीवविणनां उपज्जि वा उपज्जति वा उप्पज्जिस्ति वा उप्पज्जे वा...पे... यं रसारम्मणो जीवहं निस्साया जिव्हासम्फस्सो उप्पज्जि वा उपज्जति वा उपज्जिस्ति वा उप्पज्जे वा...पे... यं रसारम्मणो जिव्हाम् निस्सय जीवसंफसज वेदाना...पे...संन्या...पे...चेतना...पे...जीवह्विनानां उप्पज्जि वा उपज्जति वा उपज्जिस्ति वा उपप्पज्जे वा, रसो पेसो रसायतनं पेटं रसधातु पेसा - इदं तं रूपं रसायतनं।

632. कटमं तं रूपं इत्थिन्द्रियं? यं इत्थिया इत्थिलिंगं इत्थिनिमितं इत्थिकुट्टं इत्थाकप्पो इत्थट्टं इत्थिभावो [इत्थिटं इत्थिभावो (स्या.)] - इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियम्।

633. कटमं तं रूपं पुरिसिन्द्रियम्? यं पुरिसस्सा पुरिसालिङ्गं पुरिसनिमित्तं पुरिसकुट्टं पुरिसाकप्पो पुरिसत्तं पुरिसभावो – इदं तं रूपं पुरिसिन्द्रियम्।

634. कटमं तं रूपं जीवितिन्द्रियम्? यो तेसं रूपिणं धम्मनां आयु ऋतु यापना यापना इरियाना वत्तना पालना जीवितं जीवितं - इदं तं रूपं जीवितिन्द्रियम्।

635. कटमं तं रूपं कायविनति? या कुसलचित्तसा और अकुशलचित्तसा और अब्यक्कमन्तस्सा और अभिक्कमन्तस्सा और पतिक्कमन्तस्सा और अलोकान्तस्सा और विलोकान्तस्सा और सामिनजेन्तास्सा और पसारेन्तास्सा और कायास्सा थम्भाना संथम्भना संथम्भितत्तं विन्नित्ति विन्नपना विन्नपित्तम् - इदं तं रूपं कायविन्नति।

636. कटमं तं रूपं वचिविन्नति? या कुसलचित्तस वा अकुसलचित्तस वा अभ्यकचित्तस वा वाचा गिरा बयप्पथो उदीरणं घोषो घोषकम्मं वाचा वचिभेदो - अयं वुकाति वाचा। या तय वाक्या विन्नित्तति विन्नपना विन्नपित्तम् - इदं तं रूपं वचिविन्नति।

637. कटमं तं रूपं आकाशधातु? यो आकाशो आकाशगतं अघं अघगतं विवरो विवरगतं असम्फुटथं बिल्लीहि महाभूति - इदं तं रूपं आकाशधातु।

638. कटमं तं रूपं रूपस्स लहुता? या रूपस्सा लहुता लहुपरिणमाता अदन्धनता अवित्थानता - इदं तं रूपं रूपस्स लहुता।

639. कटमं तं रूपं रूपस्स मुदुता? या रूपस्सा मुदुता मदवता अक्क्खहाता अकाथिनाता - इदं तं रूपं रूपस्सा मुदुता।

640. कटमं तं रूपं रूपस्स काम्मनता? या रुपस्सा कम्मन्नता कम्मन्नट्टं कम्मन्नभावो — इदं तं रूपं रुपस्सा कम्मन्नता।

641. कटमं तं रूपं रूपस उपाचयो? यो आयतानां अकायो, सो रूपस्सा उपाकायो - इदं तं रूपं रूपसा उपाकायो।

642. कटमं तं रूपं रूपस्स संतति? यो रूपस्सा उपाचयो, सा रूपस्सा संतति - इदं तं रूपं रूपस्सा संतति।

643. कटमं तं रूपं रूपस्स जरता? या रुपस्सा जरा जीरणता खंडिच्चं पलिच्चं वलित्तचता अयुनो सहानि इन्द्रियानं परिपाको — इदं तं रूपं रुपस्सा जराता।

644. कटमं तं रूपं रूपस अनिच्चता? यो रूपस्सा खायो वायो भेदो परिभेदो अनिच्चता अन्तर्धानम् — इदं तं रूपं रूपा अनिच्चता।

645. कटमं तं रूपं कबाड़ीकारो आहारो? ओदानो कुम्मासो सत्तु मच्छो मानसं खिरं दधि सप्पी नवनीतं तेलं मधु फणितं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं यमहि यमहि जनपद तेसं तेसं◌ं सत्तनं मुखासियां दन्तविखंडनं गलज्जोहरनीयं कुच्चिविट्ठंभनं, याया ओजय सत्ता यापेंती — इदं तं रूपं कबाडिकारो आहारो।

इदं तं रूपं उपदा.

उपादाभाजनीयं.

रूपाकाण्डे पथमभानवरो।

646. कटमं तं रूपं नो उपदा? फ़ोत्हब्बायतनं, आपोधातु।

647. कटमं तं रूपं फोड्ठबबायतनं? पथविधातु तेजोधातु वयोधातु कक्खाँ मुदुकम् संखं फरुसं सुखसम्फस्सं दुक्खसम्फस्सं गरूकं लहुकं, यं फोथब्बं अनिदासनं। सप्पतिघं कायेन अनिदासनेन सप्पतिघेन फुसी वा फुसति वा फुसिसति वा फुसे वा फोथब्बो पेसो फोटोथब्बायतनं पेटं फोटोहब्बधातु पेसा - इदं तं रूपम् phoṭṭhabbāyatanaṃ.

648. कटमं तं रूपं फोऽथबबायतनं? पथविधातु तेजोधातु वयोधातु कक्खाडं मुदुकं संखं फरुसं सुखसंफसां दुक्खसंफस्सां गरूकं लहुकं, यम्हि फोथ्बमहि अनिदासनमहि सप्पतिघमहि कायो अनिदासनो सप्पतिघो पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निस्सति वा पतिहनीने वा, फोथब्बो पेसो फोटोहब्बायतानां पेटं फोटोहब्बधातु पेसा - इदं तं रूपं फोतहब्बायतनं।

649. कटमं तं रूपं फोऽथबबायतनं? पथविधातु तेजोधातु वयोधातु कक्खनं मुदुकम् सङ्हं फरुसं सुखसमफसां दुक्खसमफसां गरूकम लहुकम्, यो फोतहब्बो अनिदासणो सप्पतिघो कायमहि अनिदासनमहि सप्पटिघमहि पतिहनि वा पतिहन्नति वा पतिहन्निस्सति वा पतिहन्नने वा, फोठहब्बो पेसो फोटोहब्बायतनं पेटं फ़ोत्हब्बधातु पेसा - इदं तं रूपं फ़ोऽथब्बायतनं।

650. कटमं तं रूपं फ़ोऽथब्बायतनं? पथविधातु तेजोधातु वयोधातु कक्खाँ मुदुकम् संखं फरुसं सुखसम्फसां दुक्खसमफसां गरूकम लहुकम्, यं फोथ्बबं अरब्भ कायं निस्साया कायासंफसो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे... यं फोथब्बम अरबभा कायाम् निस्साया कायासम्फासजा वेदना...पे... सान्या...पे... सीताना...पे... कायविनानां उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जि वा उप्पज्जि वा...पे... यं फोथब्बरम्माणो कायं निस्साय कायसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्ति वा उप्पज्जे वा...पे... यं फोथ्हब्बरम्मण कायं निस्साय कायासम्पसजा वेदना...पे... सन्ना...पे... चेतना...पे... कायावीनानां उप्पज्जि वा उपज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, फोऽथब्बो पेसो फोऽथबबायतनं पेटं फोऽथबधातु पेसा - इदं तं रूपं फोऽथबबायतनं।

651. कटमं तं रूपं आपोधातु? यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बंधनट्टं रूपस्स - इदं तं रूपं आपोधातु।

इदं तं रूपं नो उपदा।

652. कटमं तं रूपं उपदीनां? चक्खायतनं सोतायतनं घनायतनं जिव्हायतनं काययतानां इत्थिन्द्रियं पुरीसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यम वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोटहब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपं उपादिण्णम्.

653. कटमं तं रूपं अनुपदीनां? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोटोथब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपम् anupādiṇṇaṃ.

654. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयम्? चक्खायतनं...पे... कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मास्सा कटत्त रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोतहब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपं उपादिन्नुपदानियं।

655. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयम्? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता, रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्हब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपम् अनुपादीनुपदनीयम्।

656. कटमं तं रूपं सनिदासनं? रूपायतनं - इदं तं रूपं सनिदासनं।

657. कटमं तं रूपं अनिदासनं? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो — इदं तं रूपं अनिदासनं।

658. कटमं तं रूपं सप्पतिघं? चक्खायतनं सोतायतनं घनायतनं जीवायतनं कायायतनं रूपायतनं सद्दायतनं गंधायतनं रसायतनं फोट्टहब्बायतनं — इदं तं रूपं सप्पतिघं।

659. कटमं तं रूपं अप्पतिघं? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं अप्पतिघं।

660. कटमं तं रूपं इंद्रियं? चक्कुन्द्रियं सोतिन्द्रियं घनिन्द्रियं जिव्हिन्द्रियं कायिन्द्रियं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियम् — इदं तं रूपं इन्द्रियं।

661. कटमं तं रूपं न इन्द्रियं? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न इंद्रियम्।

662. कटमं तं रूपं महाभूतम्? फोथ्बबायतनं आपोधातु - इदं तं रूपं महाभूतम्।

663. कटमं तं रूपं न महाभूतं? चक्खायतनं...पे...कबदिकारो आहारो — इदं तं रूपं न महाभूतम्।

664. कटमं तं रूपं विन्नति? कायविन्नति वचिविन्नति - इदं तं रूपं विन्नति।

665. कटमं तं रूपं न विन्नति? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं न विन्नति।

666. कटमं तं रूपं चित्तसमुत्थानं? कायविननत्ती वचिविननति यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं चित्तजं चित्तहेटुकं चित्तसमुत्थानं रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोटहब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कामना रूपसा उपाकायो रूपस्सा संतति कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं cittasamuṭṭhānaṃ.

667. कटमं तं रूपं न चित्तसमुत्थानां? चक्खायतनं...पे... कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं रूपस्सा जराता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न चित्तजं न चित्तहेतुकं न चित्तसमुत्थानं रूपायतनं सददायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्हब्बायतनं आकाशाधातु आपोधातु रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मन्नाता रूपस्सा उपाचयो रूपस्स संतति कबाधिकारो आहारो — इदं तं रूपं न चित्तसमुत्थानं।

668. कटमं तं रूपं चित्तसाहभु? कायविनन्नति वाचिविनट्टति - इदं तं रूपं चित्तसाहभु।

669. कटमं तं रूपं न चित्तसाहभु? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो — इदं तं रूपं न चित्तसहभु।

670. कटमं तं रूपं चित्तनुपरिवति? कायविन्नति वचिविन्नति — इदं तं रूपं चित्तनुपरिवति।

671. कटमं तं रूपं न चित्तनुपरिवति? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न चित्तनुपरिवति।

672. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकम्।

673. कटमं तं रूपं बहिरं? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं।

674. कटमं तं रूपं ओदारिकं? चक्खायतनं... पे... फोथ्ब्बायतनं — इदं तं रूपं ओदारिकां।

675. कटमं तं रूपं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं सुखुमं।

676. कटमं तं रूपं दूरे? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं दूरे।

677. कटमं तं रूपं संतिके? चक्खायतनं...पे... फोटहब्बायतनं - इदं तं रूपं संतिके।

678. कटमं तं रूपं चक्खुसमफस्सा वत्थु? चक्खायतनं - इदं तं रूपं चक्खुसमफस्सा वत्थु।

679. कटमं तं रूपं चक्खुसमफस्सा न वत्थु? सोतायतानां...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं चक्खुसमफस्सास न वत्थु।

680. कतामं तं रूपं चक्खुसमफसज्जाय वेदनाय...पे...सन्या...पे...चेतनाय...पे...चक्कुविनानास्सा वत्थु? चक्खायतनं - इदं तं रूपं चक्कुविनांस वत्थु।

681. कटमं तं रूपं चक्खुविनांस्स न वत्थु? सोतायतानां...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं चक्खुविनानास्सा न वत्थु।

682. कतमं तं रूपं सोतसंफस्सस्सा...पे... घनसम्फस्सस्सा...पे... जीवसम्फस्सस्सा...पे... कायसमफस्सस्सा वत्थु? काययतानां - इदं तं रूपं कायसमफस्स्स वत्थु।

683. कटमं तं रूपं कायसमफसस्सा न वत्थु? चक्खायतनं...पे...कबदिकारो आहारो - इदं तं रूपं कायसमफस्सस्सा न वत्थु।

684. कतमं तं रूपं कायससम्फसज्जाय वेदनाय...पे...संन्याय...पे...चेतनाय...पे...कायवीनानास्सा वत्थु? काययतानां - इदं तं रूपं कायवीनांस वत्थु।

685. कटमं तं रूपं कायवीनांसस न वत्थु? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं कायवीनानास्सा न वत्थु।

686. कटमं तं रूपं चक्खुसमफसस्सा अरामणं? रूपायतनं - इदं तं रूपं चक्खुसमफसस्सा अराम्मनं।

687. कटमं तं रूपं चक्खुसमफस्सास न अरम्मणं? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं चक्खुसमफसस्सा न अरम्मणं।

688. कतमं तं रूपं चक्खुसमफसज्जाय वेदनाय...पे...संन्या...पे...चेतनाय...पे...चक्कुविनानास्सा अराम्मनम्? रूपायतनं - इदं तं रूपं चक्कुविनानास्सा अराम्मनं।

689. कटमं तं रूपं चक्खुविनांस्स न अरम्मणं? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपं चक्कुविनानास्सा न अरम्मणं।

690. कटमं तं रूपं सोतसंफस्सास्स...पे... घनसम्फस्सस्सा...पे... जीवसम्फस्सस्सा...पे... कायसमंफस्सस्सा अरम्मणं? फ़ोत्हब्बायतनं - इदं तं रूपं कायसमफस्सस्सा अराम्मनं।

691. कटमं तं रूपं कायसमफसस्सा न अराम्मनं? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं कायसमफसस्सा न अरम्मणं।

692. कतमं तं रूपं कायससम्फसज्जाय वेदनाय...पे...संन्याय...पे...चेतनाय...पे...कायवीनानास्सा अरम्मानम्? फ़ोथब्बायतनं — इदं तं रूपं कायवीनांस अराम्मनं।

693. कटमं तं रूपं कायवीनांसस न अरम्मणं? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं कायविनानास्सा न अरम्मणं।

694. कटमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसंददो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं चक्खायतनं।

695. कतमं तं रूपं न चक्खायतनं? सोतायतानां...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं न चक्खायतनं।

696. कतमं तं रूपं सोतायतनं...पे... घनायतनं...पे... जीवायतनं...पे... कायायतनं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसाद...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं काययतानां।

697. कटमं तं रूपं न काययतानां? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न काययतानां।

698. कटमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा...पे... रूपधातु पेसा - इदं तं रूपं रूपायतनं।

699. कटमं तं रूपं न रूपायतनं? चक्खायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो – इदं तं रूपं न रूपायतनं।

700. कतमं तं रूपं सददायतनं...पे... गंधायतनं ...पे... रसायतनं...पे... फोथ्हब्बायतनं? पथविधातु...पे... फोङ्क्षबधातु पेसा - इदं तं रूपं फोङ्क्षबबायतनं।

701. कटमं तं रूपं न फोथबबायतनं ? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं न फोथ्बबायतनं।

702. कटमं तं रूपं चक्कुधातु? चक्खायतनं - इदं तं रूपं चक्कुधातु।

703. कटमं तं रूपं न चक्खुधातु? सोतायतानां...पे... कबाड़ीकारो आहारो – इदं तं रूपं न चक्खुधातु।

704. कटमं तं रूपं सोतधातु...पे...घनधातु...पे...जीवधातु...पे...कायधातु? काययतानां - इदं तं रूपं कायधातु।

705. कटमं तं रूपं न कायधातु? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न कायधातु।

706. कटमं तं रूपं रूपधातु? रूपायतनं - इदं तं रूपं रूपधातु।

707. कटमं तं रूपं न रूपधातु? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं न रूपधातु।

708. कतमं तं रूपं सद्दधातु...पे...गन्धधातु...पे... रसधातु...पे...फोऽथबधातु? फ़ोऽथबबयतानां - इदं तं रूपं फ़ोऽथबधातु।

709. कटमं तं रूपं न फोथ्बधातु? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं न फोथ्बधातु।

710. कटमं तं रूपं चक्कुन्द्रियं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं चक्कुंद्रियम्।

711. कटमं तं रूपं न चक्कुन्द्रियं? सोतायतानां...पे... कबाड़ीकारो आहारो – इदं तं रूपं न चक्खुंद्रियम्।

712. कटमं तं रूपं सोतिन्द्रियं...पे... घनिन्द्रियं...पे... जीवहिन्द्रियां...पे... कायिन्द्रियम्? यो कायो चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसंददो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं कायिन्द्रियम्।

713. कटमं तं रूपं न कायिन्द्रियम्? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न कायिन्द्रियम्।

714. कटमं तं रूपं इत्थिन्द्रियं? यं इत्थिया इत्थिलिंगं इत्थिनिमितं इत्थिकुट्टं इत्थाकप्पो इत्थट्टं इत्थिभावो - इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियम्।

715. कटमं तं रूपं न इत्थिन्द्रियं? चक्खायतनं...पे...कबदिकारो आहारो – इदं तं रूपं न इत्थिन्द्रियम्।

716. कटमं तं रूपं पुरिसिन्द्रियम्? यं पुरिसस्सा पुरिसालिङ्गं पुरिसनिमित्तं पुरिसकुट्टं पुरिसाकप्पो पुरिसत्तं पुरिसभावो – इदं तं रूपं पुरिसिन्द्रियम्।

717. कटमं तं रूपं न पुरिसिन्द्रियम्? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न पुरिसिन्द्रियम्।

718. कटमं तं रूपं जीवितिन्द्रियम्? यो तेसं रूपिणं धम्मनां आयु ऋतु यापना यापना इरियाना वत्तना पालना जीवितं जीवितं - इदं तं रूपं जीवितिन्द्रियम्।

719. कटमं तं रूपं न जीवितिन्द्रियम्? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न जीवितिन्द्रियम्।

720. कटमं तं रूपं कायविनति? या कुसलचित्तसा और अकुशलचित्तसा और अब्यक्कमन्तस्सा और अभिक्कमन्तस्सा और पतिक्कमन्तस्सा और अलोकान्तस्सा और विलोकान्तस्सा और सामिनजेन्तास्सा और पसारेन्तास्सा और कायास्सा थम्भाना संथम्भना संथम्भितत्तं विन्निति विन्नपना विन्नपित्तम् - इदं तं रूपं कायविन्नति।

721. कटमं तं रूपं न कायविन्ति? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न कायविनति।

722. कटमं तं रूपं वचिविन्नति? या कुसलचित्तस वा अकुसलचित्तस वा अभ्याकतचित्तस वा वाचा गिरा बयप्पथो उदीरणं घोषो घोषकम्मं वाचा वचिभेदो, अयं वुकाति वाचा। या तय वाक्या विन्नित्तति विन्नपना विन्नपित्तम् - इदं तं रूपं वचिविन्नति।

723. कटमं तं रूपं न वचिविन्नति? चक्खायतनं...पे...कबडिकारो आहारो - इदं तं रूपं न वचिविन्यति।

724. कटमं तं रूपं आकाशधातु? यो आकाशो आकाशगतं अघं अघगतं विवरो विवरगतं असम्फुटथं बिल्लीहि महाभूति - इदं तं रूपं आकाशधातु।

725. कटमं तं रूपं न आकाशधातु? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न आकाशधातु।

726. कटमं तं रूपं आपोधातु? यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बंधनट्टं रूपस्स - इदं तं रूपं आपोधातु।

727. कटमं तं रूपं न आपोधातु? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न आपोधातु।

728. कटमं तं रूपं रूपस्स लहुता? या रूपस्सा लहुता लहुपरिणमाता अदन्धनता अवित्थानता - इदं तं रूपं रूपस्स लहुता ।

729. कटमं तं रूपं रूपस्स न लहुता? चक्खायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं रूपस्स न लहुता।

730. कटमं तं रूपं रूपस्स मुदुता? या रूपस्सा मुदुता मदवता अक्क्खहाता अकाथिनाता - इदं तं रूपं रूपस्सा मुदुता।

731. कटमं तं रूपं रूपस्स न मुदुता? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं रूपस्स न मुदुता।

732. कटमं तं रूपं रूपस्स काम्मनता? या रुपस्सा कम्मन्नता कम्मन्नट्टं कम्मन्नभावो — इदं तं रूपं रुपस्सा कम्मन्नता।

733. कटमं तं रूपं रूपस्स न कम्मनता? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं रूपस्स न कम्मनता।

734. कतमं तं रूपं रूपस उपचयो? यो आयतानां अकायो, सो रूपस्सा उपाकायो - इदं तं रूपं रूपसा उपाकायो।

735. कतमं तं रूपं रूपस न उपचयो? चक्खायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं रूपस न उपचयो।

736. कटमं तं रूपं रूपस्स संतति? यो रूपस्सा उपाचयो, सा रूपस्सा संतति - इदं तं रूपं रूपस्सा संतति।

737. कतमं तं रूपं रूपस्स न संतति? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं रूपस्स न संतति।

738. कटमं तं रूपं रूपस्स जरता? या रुपस्सा जरा जीरणता खंडिच्च्वं पलिच्च्वं वलित्तचता अयुनो सहानि इन्द्रियानं परिपाको — इदं तं रूपं रुपस्सा जराता।

739. कटमं तं रूपं रूपस न जरता? चक्खायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं रूपस्स न जरता।

740. कटमं तं रूपं रूपस अनिच्चता? यो रूपस्सा खायो वायो भेदो परिभेदो अनिच्चता अन्तर्धानम् — इदं तं रूपं रूपा अनिच्चता।

741. कटमं तं रूपं रूपस्स न अनिच्चता? चक्खायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं रूपस्स न अनिच्चता।

742. कटमं तं रूपं कबाड़ीकारो आहारो? ओदानो कुम्मासो सत्तु मच्छो मानसं खिरं दधि सप्पी नवनीतं तेलं मधु फणितं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं यमहि यमहि जनपद तेसं तेसं सत्तनं मुखासियां दन्तविखंडनं गलज्जोहरनीयं कुच्चिविट्ठंभनं, याया ओजय सत्ता यापेंती — इदं तं रूपं कबाडिकारो आहारो।

743. कटमं तं रूपं न कबाड़ीकारो आहारो? चक्खायतनं...पे... रूपस्सा अनिच्चता - इदं तं रूपं न कबाड़ीकारो आहारो।

एवं दुविधेन रूपसंगहो।

Dukaniddeso.

टिकानिद्देसो

744. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं उपदा? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं उपदा।

745. कटमं तं रूपं बहिरं उपदा? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं उपदा।

746. कटमं तं रूपं बहिरं नो उपदा? फोथ्बबायतनं आपोधातु — इदं तं रूपं बहिरं नो उपदा।

747. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं उपदीनां? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं उपादीनं।

748. कटमं तं रूपं बहिरं उपदीनां? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्स कटत्त रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोथ्बबायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं उपादीनम्।

749. कटमं तं रूपं बहिरं अनुपदीनां? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोटोथब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपम् बहिरं अनुपदिनाम्।

750. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं उपादिन्नुपदनीयम्। चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं उपादिन्नुपदनीयम्।

751. कटमं तं रूपं बहिरं उपादिन्नुपदनीयम्? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्स कटत्त रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोथ्बबायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबीकारो आहारो – इदं तं रूपं बहिरं उपादिनुपादनीयम्।

752. कटमं तं रूपं बहिरं अनुपादिन्नुपदनीयम् ? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोटोथब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाडिकारो आहारो – इदं तं रूपम् बहिरं अनुपादिन्नुपदनीयम्।

753. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं अनिदासनं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्जत्तिकं अनिदासनं।

754. कटमं तं रूपं बहिरं सनिदासनं? रूपायतनं - इदं तं रूपं बहिरं सनिदासनं।

755. कटमं तं रूपं बहिरं अनिदासनं? सद्दायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं अनिदासनं।

756. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं सप्पतिघं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्जत्तिकं सप्पतिघं।

757. कटमं तं रूपं बहिरं सप्पतिघं? रूपायतनं...पे... फोथ्बबायतनं - इदं तं रूपं बहिरं सप्पतिघं।

758. कटमं तं रूपं बहिरं अप्पतिघं? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं अप्पतिघं।

759. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं इन्द्रियं? चक्कुंद्रियं...पे... कायिन्द्रियम् - इदं तं रूपं अज्जत्तिकं इंद्रियं।

760. कटमं तं रूपं बहिरं इंद्रियं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियम् - इदं तं रूपं बहिरं इन्द्रियं।

761. कटमं तं रूपं बहिरं न इन्द्रियं? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न इंद्रियम्।

762. कटमं तं रूपं अजज्जत्तिकं न महाभूतम्? चक्खायतनं... पे... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न महाभूतं।

763. कटमं तं रूपं बहिरं महाभूतम्? फोथ्बबायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं बहिरं महाभूतम्।

764. कटमं तं रूपं बहिरं न महाभूतं? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न महाभूतम्।

765. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न विन्नति? चक्खायतनं... पे... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न विन्नति?

766. कटमं तं रूपं बहिरं विन्नति? कायविन्नति वचिविन्नति - इदं तं रूपं बहिरं विन्नति।

767. कटमं तं रूपं बहिरं न विन्नति? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न विननति।

768. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न चित्तसमुत्थानं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न चित्तसमुत्थानं।

769. कटमं तं रूपं बहिरं चित्तसमुत्थानं? कायावीनाति वाचिविननाति, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं चित्तजं चित्तहेटुकं चित्तसमुत्थानां रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोटहब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कामना रूपसा उपाकायो रूपस्सा संतति कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं चित्तसमुत्थानां।

770. कटमं तं रूपं बहिरं न चित्तसमुत्थानां? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं रूपस्सा जराता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न चित्तजं न चित्तहेतुकं न चित्तसमुत्थानं रूपायतनं सद्दायतनं गंधायतनं रसायतनं फोटहब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कामनानता रूपस्सा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न चित्तसमुत्थानं।

771. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न चित्तसाहभु? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न चित्तसाहभु।

772. कटमं तं रूपं बहिरं चित्तसाहभु? कायविन्नति वचिविन्नति - इदं तं रूपं बहिरं चित्तसाहभु।

773. कटमं तं रूपं बहिरं न चित्तसाहभु? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न चित्तसहभू?

774. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न चित्तनुपरिवति? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न चित्तनुपरिवति।

775. कटमं तं रूपं बहिरं चित्तनुपरिवति? कायविन्नति वचिविन्नति — इदं तं रूपं बहिरं चित्तनुपरिवति।

776. कटमं तं रूपं बहिरं न चित्तनुपरिवति? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न चित्तनुपरिवति।

777. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं ओदारिकां? चक्खायतनं...पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं ओदारिकां।

778. कटमं तं रूपं बहिरं ओदारिकां? रूपायतनं...पे... फोथबबायतनं - इदं तं रूपं बहिरं ओदारिकाम्।

779. कटमं तं रूपं बहिरं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं सुखुमं।

780. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं संतिके? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं संतिके।

781. कटमं तं रूपं बहिरं दूरे? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं दूरे।

782. कटमं तं रूपं बहिरं संतिके? रूपायतनं...पे... फोटहब्बायतनं - इदं तं रूपं बहिरं संतिके।

783. कटमं तं रूपं बहिरं चक्खुसमफसस्सा न वत्थु? रूपायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं चक्खुसमफस्सास न वत्थु।

784. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुसमफस्सा वत्थु? चक्खायतनं - इदं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुसमफस्सा वत्थु।

785. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुसमफसस्सा न वत्थु? सोतायतानां...पे... कायायतानां - इदं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुसमफस्सा न वत्थु।

786. कटमं तं रूपं बहिरं चक्खुसमफसज्जाय वेदनाय...पे... संन्या...पे... चेतान्या...पे... चक्खुविनानास्सा न वत्थु? रूपायतनं...पे...कबडिकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं चक्खुविनानास्सा न वत्थु।

787. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुविनांस वत्थु? चक्खायतनं - इदं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुविनांस वत्थु।

788. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुविनांस्स न वत्थु? सोतायतानां...पे... कायायतानां - इदं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुविनानास्सा न वत्थु?

789. कतमं तं रूपं बहिरं सोतसंफस्सस्सा...पे... घनसंफस्सस्सा...पे... जीवसम्फस्सस्सा...पे... कायसमफस्सस्सा न वत्थु? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं कायसमफसस्सा न वत्थु।

790. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं कायसमफसस्सा वत्थु? काययतानां — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं कायसमफस्स्स वत्थु।

791. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं कायसमफस्स्स न वत्थु? चक्खायतनं... पे... जिव्हायतनं — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं कायसमफसस्सा न वत्थु।

792. कतमं तं रूपं बहिरं कायससम्फसज्जाय वेदनाय...पे... संन्या...पे... चेतना...पे... कायाविनानास्सा न वत्थु? रूपायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं कायवीनानास्सा न वत्थु।

793. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं कायवीनांस वत्थु? काययतानां - इदं तं रूपं अज्झट्टिकं कायवीनांस वत्थु।

794. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं कायवीनांसस न वत्थु? चक्खायतनं... पे... जिव्हायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं कायवीनांस न वत्थु।

795. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुसमफस्सास न अरम्मणं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुसमफसस्सा न अरम्मणं।

796. कटमं तं रूपं बहिरं चक्खुसमफसस्सा अराम्मनं? रूपायतनं — इदं तं रूपं बहिरं चक्खुसमफसस्सा अराम्मनं।

797. कटमं तं रूपं बहिरं चक्खुसमफसस्सा न अरम्मणं? सद्दायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं चक्खुसमफस्सास न अरम्मणं।

798. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकां चक्खुसमफस्सजाय वेदनाय...पे... संन्या...पे... चेतना...पे... चक्खुविनानास्सा न अरम्मणं? चक्खायतनं... पे... कायायतनम् — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खुविनानास्सा न अरम्मणं।

799. कटमं तं रूपं बहिरं चक्खुविनाणस्स अरम्मणं? रूपायतनं — इदं तं रूपं बहिरं चक्खुविनाणस्स अराम्मनं।

800. कटमं तं रूपं बहिरं चक्खुविनांसस न अरम्मणं? सद्दायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं चक्खुविनानास्सा न अरम्मणं।

801. कतमं तं रूपं अज्झट्टिकं सोतसंफस्सस्सा...पे... घनसंफस्सस्सा...पे... जिव्हासमफस्सस्सा...पे... कायसमफस्सस्सा न अरम्मणं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं कायसमफस्स्स न अराम्मनं।

802. कटमं तं रूपं बहिरं कायसमफसस्सा अराम्मनं? फ़ोत्हब्बायतनं — इदं तं रूपं बहिरं कायसमफस्सस्सा अरम्मणं।

803. कटमं तं रूपं बहिरं कायसमफस्स्स न अराम्मनं? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं कायसमफसस्सा न अरम्मणं।

804. कतमं तं रूपं अज्झट्टिकं कायसमफसज्जाय वेदनाय...पे...संन्याय...पे...चेतनाय...पे...कायविनानास्सा न अरम्मणं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं कायवीनांस न अराम्मनं।

805. कटमं तं रूपं बहिरं कायवीनांस अराम्मनं? फ़ोथब्बायतनं — इदं तं रूपं बहिरं कायवीनांस अरामणं।

806. कटमं तं रूपं बहिरं कायवीनांसस न अरम्मणं? रूपायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं कायवीनानास्सा न अरम्मणं।

807. कटमं तं रूपं बहिरं न चक्खायतनं? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न चक्खायतनं।

808. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं अज्जट्टिकं चक्खायतनं।

809. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न चक्खायतनं? सोतायतनं...पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न चक्खायतनं।

810. कतमं तं रूपं बहिरं न सोतायतानां...पे... न घनायतनं...पे... न जीवायतनं...पे... न कायायतानां? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न कायायतनं।

811. कटमं तं रूपं अज्जत्तिकं काययतानां? यो कायो चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं अज्जत्तिकां कायायतनं।

812. कटमं तं रूपं अज्जत्तिकं न काययतानां? चक्खायतनं... पे... जीवायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न कायायतनं।

813. कटमं तं रूपं अज्जत्तिकं न रूपायतनं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न रूपायतनं।

814. कटमं तं रूपं बहिरं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानां उपादय वननिभा...पे... रूपधातु पेसा - इदं तं रूपं बहिरं रूपायतनं।

815. कटमं तं रूपं बहिरं न रूपायतनं? सद्दायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं न रूपायतनं।

816. कतमं तं रूपं अज्झट्टिकं न सददायतनं...पे... न गंधायतनं...पे... न रसायतनं...पे... न फोथ्बबायतनं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न फोथ्बबायतनं।

817. कटमं तं रूपं बहिरं फ़ोऽथब्बायतनं? पथविधातु...पे... फोङ्क्षबधातु पेसा - इदं तं रूपं बहिरं फोङ्क्षबबायतनं।

818. कटमं तं रूपं बहिरं न फोथबबायतनं? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं न फोतहब्बायतनं।

819. कटमं तं रूपं बहिरं न चक्खुधातु? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न चक्खुधातु।

820. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्कुधातु? चक्खायतनं — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्कुधातु।

821. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न चक्खुधातु? सोतायतानां...पे... कायायतानां - इदं तं रूपं अजज्जट्टिकं न चक्कुधातु।

822. कटमं तं रूपं बहिरं न सोतधातु...पे...न घनधातु...पे...न जीवधातु...पे...न कायधातु? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न कायधातु।

823. कटमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायधातु? कायायतनं — इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायधातु।

824. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न कायधातु? चक्खायतनं... पे... जीवायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न कायधातु।

825. कटमं तं रूपं अज्झत्तिकं न रूपधातु? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अजज्जत्तिकं न रूपधातु।

826. कटमं तं रूपं बहिरं रूपधातु? रूपायतनं - इदं तं रूपं बहिरं रूपधातु।

827. कटमं तं रूपं बहिरं न रूपधातु? सद्दायतनं...पे... कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न रूपधातु।

828. कतमं तं रूपं अज्झट्टिकं न सद्दधातु...पे...न गंधधातु...पे...न रसधातु...पे...न फोड्गधातु? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अजज्जत्तिकं न फोथ्बधातु।

829. कटमं तं रूपं बहिरं फ़ोऽथबधातु? फ़ोऽथबबयतानां - इदं तं रूपं बहिरं फ़ोऽथबधातु।

830. कटमं तं रूपं बहिरं न फोतहबधातु? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न फोथ्बधातु।

831. कटमं तं रूपं बहिरं न चक्खुन्द्रियं? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न चक्खुंद्रियम्।

832. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं चक्कुंद्रियं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं अज्जट्टिकं चक्कुंद्रियम्।

833. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न चक्खुंद्रियं? सोतायतानां...पे... कायायतानां - इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न चक्कुंद्रियम्।

834. कटमं तं रूपं बहिरं न सोतिन्द्रियं...पे... न घनिन्द्रियं...पे... न जीविन्द्रियं...पे... न कायिन्द्रियम्? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न कायिन्द्रियम्।

835. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं कायिन्द्रियम्? यो कायो चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं अज्जत्तिकां कायिन्द्रियम्।

836. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न कायिन्द्रियम्? चक्खायतनं... पे... जिव्हायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न कायिन्द्रियम्।

837. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न इत्थिन्द्रियम्? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न इत्थिन्द्रियम्।

838. कटमं तं रूपं बहिरं इत्थिन्द्रियम्? यं इत्थिया इत्थिलिंगं इत्थिनिमितं इत्थिकुट्टं इत्थाकप्पो इत्थट्टं इत्थिभावो - इदं तं रूपं बहिरं इत्थिन्द्रियम्।

839. कटमं तं रूपं बहिरं न इत्थिन्द्रियं? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न इत्थिन्द्रियम्।

840. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न पुरिसिन्द्रियम्? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न पुरिसिन्द्रियम्।

841. कटमं तं रूपं बहिरं पुरिसिन्द्रियम्? यं पुरिसस्सा पुरिसालिङ्गं पुरिसनिमित्तं पुरिसकुट्टं पुरिसाकप्पो पुरिसत्तं पुरिसभावो — इदं तं रूपं बहिरं पुरिसिन्द्रियम्।

842. कटमं तं रूपं बहिरं न पुरिसिन्द्रियम्? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न पुरिसिन्द्रियम्।

843. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न जीवितिन्द्रियम्? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न जीवितिन्द्रियम्।

844. कटमं तं रूपं बहिरं जीवितिन्द्रियम्? यो तेसं रूपिणं धम्मनां आयु ऋतु यापना यापना इरियाना वत्तना पालना जीवितं जीवितंड्रियम् — इदं तं रूपं बहिरं जीवितंद्रियम्।

845. कटमं तं रूपं बहिरं न जीवितिन्द्रियम्? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न जीवितिन्द्रियम्।

846. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न कायविनति? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न कायविनति।

847. कटमं तं रूपं बहिरं कायविनति? या कुसलचित्तसा और अकुशलचित्तसा और अब्यक्कमन्तस्सा और अभिक्कमन्तस्सा और पतिक्कमन्तस्सा और अलोकान्तस्सा और विलोकान्तस्सा और सामिनजेन्तास्सा और पसारेन्तास्सा और कायास्सा थम्भाना संथम्भना संथम्भितत्तं विन्निति विन्नपना विन्नपित्तम् - इदं तं रूपं बहिरं कायविनति।

848. कटमं तं रूपं बहिरं न कायविनति? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं न कायविनति।

849. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न वचिविन्नति? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न वचिविन्यति।

850. कटमं तं रूपं बहिरं वचिविन्नति? या कुसलचित्तस वा अकुसलचित्तस वा अभ्याकतचित्तस वा वाचा गिरा बयप्पथो उदिराणां धोसो घोसकम्मं वाचा वचिभेदो, अयं वुकाति वाचा। या तय वाचाय विन्नित्तति विन्नपना विन्नपित्तम् - इदं तं रूपं बहिरं वाचिविन्नति।

851. कटमं तं रूपं बहिरं न वचिविन्नति? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न वचिविन्यति।

852. कटमं तं रूपं अज्जत्तिकं न आकाशधातु? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न आकाशधातु।

853. कटमं तं रूपं बहिरं आकाशधातु? यो आकाशो आकाशगतं अघं अघगतं विवरो विवरगतं असम्फुटथं बिल्लीहि महाभूति - इदं तं रूपं बहिरं आकाशधातु।

854. कटमं तं रूपं बहिरं न आकाशधातु? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न आकाशधातु।

855. कटमं तं रूपं अज्जत्तिकं न आपोधातु? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकं न आपोधातु।

856. कटमं तं रूपं बहिरं आपोधातु? यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बंधनट्टं रूपस्सा - इदं तं रूपं बहिरं आपोधातु।

857. कटमं तं रूपं बहिरं न आपोधातु? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं न आपोधातु।

858. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं रूपस्सा न लहुता? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं रूपस्सा न लहुता।

859. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स लहुता? या रूपस्सा लहुता लहुपरिणमाता अदन्धनता अवित्थानता - इदं तं रूपं बहिरं रूपस्स लहुता।

860. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स न लहुता? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं बहिरं रूपस्स न लहुता।

861. कटमं तं रूपं अज्जत्तिकं रूपस न मुदुता? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकां रूपस्स न मुदुता।

862. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स मुदुता? या रूपस्सा मुदुता मदवता अक्क्खहाता अकथिनाता - इदं तं रूपं बहिरं रूपस्सा मुदुता।

863. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स न मुदुता? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं रूपस्स न मुदुता।

864. कटमं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्सा न कम्मनता? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्सा न कम्मनता।

865. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स कम्मनता? या रूपस्सा कम्मन्नता कम्मन्नत्तं कम्मन्नभावो — इदं तं रूपं बहिरं रूपस्सा कम्मन्नता।

866. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स न कम्मनता? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं रूपस्सा न कम्मनता।

867. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं रूपस न उपचयो? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकां रूपस न उपचयो।

868. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस उपचयो? यो आयतानां अकायो, सो रूपस्सा उपाकायो - इदं तं रूपं बहिरं रूपासा उपाकायो।

869. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स न उपचयो? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं रूपस्स न उपचयो।

870. कटमं तं रूपं अज्झत्तिकां रूपस्स न संतति? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्जत्तिकां रूपस्सा न संतति।

871. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स संतति? यो रूपस्सा उपाचयो, सा रूपस्सा संतति - इदं तं रूपं बहिरं रूपस्सा संतति।

872. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स न संतति? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं रूपस्स न संतति।

873. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं रूपस न जरता? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं रूपस्सा न जरता।

874. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स जरता? या रुपस्सा जरा जीराणाता खंडिच्चं पलिच्चं वलित्तचता अयुनो सहानि इन्द्रियानं परिपाको — इदं तं रूपं बहिरं रुपस्सा जराता।

875. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस न जरता? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो — इदं तं रूपं बहिरं रूपस्स न जराता।

876. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं रूपस्सा न अनिच्चता? चक्खायतनं... पे... कायायतनं — इदं तं रूपं अज्झट्टिकं रूपस्सा न अनिच्चता।

877. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स अनिच्चता? यो रूपस्सा खायो वायो भेदो परिभेदो अनिच्चता अन्तर्धानम् - इदं तं रूपं बहिरं रूपा अनिच्चता।

878. कटमं तं रूपं बहिरं रूपस्स न अनिच्चता? रूपायतनं...पे... कबाड़ीकारो आहारो – इदं तं रूपं बहिरं रूपस्सा न अनिच्चता।

879. कटमं तं रूपं अज्झट्टिकं न कबाड़ीकारो आहारो? चक्खायतनं... पे... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्जत्तिकां न कबाडिकारो आहारो।

880. कटमं तं रूपं बहिरं कबीकारो आहारो? ओदानो कुम्मासो सत्तु मच्छो मानसं खिरं दधि सप्पी नवनीतं तेलं मधु फणितं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं यमहि यमहि जनपद तेसं तेसंः सत्तनं मुखासियां दंतविखंडनं गलज्जोहरनीयं कुच्चिविट्ठंभनं यया ओजय सत्ता यापेंती – इदं तं रूपं बहिरं कबाडिकारो आहारो।

881. कटमं तं रूपं बहिरं न कबाड़ीकारो आहारो? रूपायतनं...पे... रूपस्सा अनिच्चता - इदं तं रूपं बहिरं न कबाधिकारो आहारो।

एवं तिविधेन रूपसंगहो।

Tikaniddeso.

चतुक्कं

882. कटमं तं रूपं उपादा उपादीनां? चक्खायतनं...पे... कायायतनं, इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनन्नमपि अत्थि रूपं कम्मास्सा कटत्त रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकाशधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपादा उपादीनम्।

883. कटमं तं रूपं उपदा अनुपदीनां? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं आकाशधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपदा अनुपादिनाम्।

884. कटमं तं रूपं नो उपादा उपादीनां? कम्मास्सा कटत्ता फोथ्बबायतनं आपोधातु - इदं तं रूपं नो उपादा उपादिनं।

885. कटमं तं रूपं नो उपदा अनुपदीनां? न कम्मास्सा कटत्ता फोथ्बबायतनं आपोधातु - इदं तं रूपं नो उपादा अनुपदीनां।

886. कटमं तं रूपं उपादा उपादिन्नुपदनीयम्? चक्खायतनं...पे... कायायतनं, इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनन्नमपि अत्थि रूपं कम्मास्सा कटत्त रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकाशधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपादा उपादिनुपदनीयम्।

887. कटमं तं रूपं उपदा अनुपादिन्नुपदनीयम्? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं आकाशधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपदा अनुपादीनुपदनीयम्।

888. कटमं तं रूपं नो उपादा उपादिनुपदानियं? कम्मास्सा कटत्ता फोङ्ठबबायतनं आपोधातु - इदं तं रूपं नो उपादा उपादिनुपदनीयम्।

889. कटमं तं रूपं नो उपादा अनुपादीनुपदनीयम्? न कम्मास्सा कटत्ता फोङ्क्षबयतानां आपोधातु - इदं तं रूपं नो उपादा अनुपादिन्नुपदनीयम्।

890. कटमं तं रूपं उपदा सप्पतिघं? चक्खायतनं... पे... रसायतनं — इदं तं रूपं उपाद सप्पतिघं।

891. कटमं तं रूपं उपदा अप्पतिघं? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं उपाद अप्पतिघं।

892. कटमं तं रूपं नो उपदा सप्पतिघं? फ़ोथब्बायतनं - इदं तं रूपं नो उपदा सप्पतिघं।

893. कटमं तं रूपं नो उपदा अप्पतिघं? आपोधातु - इदं तं रूपं नो उपदा अप्पतिघं।

894. कटमं तं रूपं उपदा ओदारिकां? चक्खायतनं... पे... रसायतनं - इदं तं रूपं उपाद ओसारिकाम्।

895. कतमं तं रूपं उपदा सुखं इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं उपदा सुखुम्।

896. कटमं तं रूपं नो उपदा ओदारिकां? फोथबबायतनं - इदं तं रूपं नो उपदा ओदारिकां।

897. कटमं तं रूपं नो उपदा सुखुमं? आपोधातु - इदं तं रूपं नो उपदा सुखुमं।

898. कटमं तं रूपं उपदा दूरे? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं उपदा दूरे।

899. कटमं तं रूपं उपदा संतिके? चक्खायतनं... पे... रसायतनं — इदं तं रूपं उपदा संतिके।

900. कटमं तं रूपं नो उपदा दूरे? आपोधातु - इदं तं रूपं नो उपदा दूरे।

901. कटमं तं रूपं नो उपदा संतिके? फ़ोत्हब्बायतनं — इदं तं रूपं नो उपदा संतिके।

902. कटमं तं रूपं उपादीनं सनिदासनं? कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं - इदं तं रूपं उपादीनं सनिदासनं।

903. कटमं तं रूपं उपादीनं अनिदासनं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं, इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनन्नमपि अत्थि रूपं कम्मास्सा कटत्त गंधायतनं रसायतनं फोतहब्बयतानां आकाशधातु आपोधातु रूपासा उपाचयो रूपासा संतति कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपं उपादीनं अनिदस्सानं।

904. कटमं तं रूपं अनुपदीनं सनिदासनं? न कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं — इदं तं रूपं अनुपदीनं सनिदासनं।

905. कटमं तं रूपं अनुपादिनां अनिदासनं? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मनता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त गन्धायतनं रसायतनं फोथ्बबायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपं अनुपादिनाम् anidassanaṃ.

906. कटमं तं रूपं उपादीनं सप्पतिघं? चक्खायतनं...पे... कायायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्हब्बायतनं - इदं तं रूपं उपदीनं सप्पतिघं।

907. कटमं तं रूपं उपादीनं अप्पतिघं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपादीनं अप्पतिघं।

908. कटमं तं रूपं अनुपदीनं सप्पतिघं? सद्दायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्ठब्बायतनं - इदं तं रूपं अनुपदीनं सप्पतिघं।

909. कटमं तं रूपं अनुपादिणं अप्पतिघं? कायविननत्ती वाचिविनत्ती रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रुपस्सा कम्मन्नाता रुपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता आकाशधातु अपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाधिकारो आहारो - इदं तं रूपं अनुपदीनं अप्पतिघं।

910. कटमं तं रूपं उपादीनं महाभूतम्? कम्मास्सा कटत्ता फोथ्बबायतनं आपोधातु - इदं तं रूपं उपादीनं महाभूतम्।

911. कटमं तं रूपं उपादीनं न महाभूतं? चक्खायतनं...पे... कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मास्सा कटत्त रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकाशधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो — इदं तं रूपं उपादीनं न महाभूतम्।

912. कटमं तं रूपं अनुपदीनं महाभूतम्? न कम्मस्सा कटत्ता फोथ्बबायतनं आपोधातु - इदं तं रूपं अनुपदीनं महाभूतम्।

913. कटमं तं रूपं अनुपादिनां न महाभूतम्? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं आकाशधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो - इदं तं रूपं अनुपदीनं न महाभूतम्.

914. कटमं तं रूपं उपादीनं ओदारिकां? चक्खायतनं...पे... कायायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्ठब्बायतनं - इदं तं रूपं उपदीनं ओदारिकां।

915. कटमं तं रूपं उपादीनं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपादीनं सुखुमं।

916. कटमं तं रूपं अनुपदीनं ओदारिकां? सद्दायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्ठब्बायतनं - इदं तं रूपं अनुपदिनाम् ओदारिकाम्।

917. कटमं तं रूपं अनुपदीनं सुखुमं? कायविननत्ती वाचिविनत्ती रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रुपस्सा कम्मन्नाता रुपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता आकाशधातु अपोधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो — इदं तं रूपं अनुपदीनं सुखुमं।

918. कटमं तं रूपं उपादीनं दूरे? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपादीनं दूरे।

919. कटमं तं रूपं उपदीनां संतिके? चक्खायतनं...पे... कायायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्ठब्बायतनं - इदं तं रूपं उपदीनं संतिके।

920. कटमं तं रूपं अनुपदीनं दूरे? कायविननत्ती वाचिविनत्ती रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रुपस्सा कम्मन्नाता रुपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता आकाशधातु अपोधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो — इदं तं रूपं अनुपदीनं दूरे।

921. कटमं तं रूपं अनुपदीनं संतिके? सद्दायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्हब्बायतनं - इदं तं रूपं अनुपदीनं संतिके।

922. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं सनिदासनं? कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं — इदं तं रूपं उपादिनुपदनीयं सनिदासनं।

923. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं अनिदासनं? चक्खायतनं... पे... कायायतनं, इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनन्नमपि अत्थि रूपं कम्मास्सा कटत्त गंधायतनं रसायतनं फोतहब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपासा उपाचयो रूपासा संतति कबाधिकारो आहारो — इदं तं रूपं उपादिन्नुपादनीयं अनिदस्सानं।

924. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं सनिदासनं? न कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं - इदं तं रूपं अनुपादिनुपदनीयं सनिदासनं।

925. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं अनिदासनं? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त गन्धायतनं रसायतनं फोथ्बबायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाडिकारो आहारो — इदं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं अनिदासनम्।

926. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं सप्पतिघं? चक्खायतनं...पे... कायायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्हब्बायतनं - इदं तं रूपं उपादिन्नुपादनीयं सप्पतिघं।

927. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं अप्पतिघं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं अप्पतिघं।

928. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं सप्पतिघं? सद्दायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्हब्बायतनं - इदं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं सप्पतिघं।

929. कटमं तं रूपं अनुपादिन्नुपदनीयं अप्पतिघं? कायविननत्ती वाचिविनत्ती रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रुपस्सा कम्मन्नाता रुपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता आकाशधातु अपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाधिकारो आहारो — इदं तं रूपं अनुपादिन्नुपदानियं अप्पतिघं।

930. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपादनीयं महाभूतम्? कम्मास्सा कटत्ता फोथ्बबायतनं आपोधातु — इदं तं रूपं उपादिननुपदानियं महाभूतम्।

931. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं न महाभूतम्? चक्खायतनं...पे... कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मास्सा कटत्त रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकाशधातु रूपस्सा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाधिकारो आहारो — इदं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं न महाभूतम्।

932. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं महाभूतम्? न कम्मस्सा कटत्ता फोथ्बबायतनं आपोधातु - इदं तं रूपं अनुपादिन्नुपदनीयं महाभूतम्।

933. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपादनीयं न महाभूतम्? सद्दायतनं कायविननत्ती वाचिविनति रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रूपस्सा कम्मन्नाता रूपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कत्तत्त रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं आकाशधातु रूपस उपाचयो रूपस संतति कबाधिकारो आहारो — इदं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं न महाभूतं.

934. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं ओदारिकाम्? चक्खायतनं...पे... कायायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्थब्बायतनं - इदं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं ओदारिकाम्।

935. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपादिन्नुपादनीयं सुखुमं।

936. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं ओदारिकाम्? सद्दायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्थब्बायतनं - इदं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं ओसारिकाम्।

937. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपादनीयं सुखुमं? कायविननत्ती वाचिविनत्ती रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रुपस्सा कम्मन्नाता रुपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता आकाशधातु अपोधातु रूपस्स उपाचयो रूपस्स संतति कबाधिकारो आहारो - इदं तं रूपं अनुपादिन्नुपादनीयं सुखुमं।

938. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपदनीयं दूरे? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मस्सा कटत्ता आकाशधातु आपोधातु रूपस्सा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाडिकारो आहारो - इदं तं रूपं उपादिन्नुपादनीयं दूरे।

939. कटमं तं रूपं उपादिन्नुपादनीयं संतिके चक्खायतनं...पे... कायायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोत्हब्बायतनं - इदं तं रूपं उपादिनुपदानियं संतिके।

940. कटमं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं दूरे? कायविननत्ती वाचिविनत्ती रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता रुपस्सा कम्मन्नाता रुपस्सा जरता रूपस्सा अनिच्चता, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता आकाशधातु अपोधातु रूपासा उपाचयो रूपासा संतति कबाधिकारो आहारो - इदं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं दूरे।

941. कटमं तं रूपं अनुपादिन्नुपादनीयं संतिके? सद्दायतनं, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं न कम्मास्सा कटत्ता रूपायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्थब्बायतनं - इदं तं रूपं अनुपादीनुपदनीयं संतिके।

942. कटमं तं रूपं सप्पतिघं इंद्रियं? चक्कुंद्रियं...पे... कायिन्द्रियम् - इदं तं रूपं सप्पतिघं इन्द्रियं।

943. कटमं तं रूपं सप्पतिघं न इन्द्रियं? रूपायतनं...पे... फोथ्बबायतनं - इदं तं रूपं सप्पतिघं न इंद्रियम्।

944. कटमं तं रूपं अप्पतिघं इंद्रियं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियम् - इदं तं रूपं अप्पतिघं इन्द्रियं।

945. कटमं तं रूपं अप्पतिघं न इन्द्रियं? कायविननत्ती वचिविननति...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं अप्पतिघं न इंद्रियम्।

946. कटमं तं रूपं सप्पतिघं महाभूतम्? फ़ोथब्बायतनं - इदं तं रूपं सप्पतिघं महाभूतं।

947. कटमं तं रूपं सप्पतिघं न महाभूतं? चक्खायतनं... पे... रसायतनं - इदं तं रूपं सप्पतिघं न महाभूतं।

948. कटमं तं रूपं अप्पतिघं महाभूतम्? आपोधातु — इदं तं रूपं अप्पतिघं महाभूतम्।

949. कटमं तं रूपं अप्पतिघं न महाभूतं? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं अप्पतिघं न महाभूतं।

950. कटमं तं रूपं इंद्रियं ओदारिकां? चक्कुन्द्रियं...पे... कायिन्द्रियम् - इदं तं रूपं इन्द्रियं ओदारिकाम्।

951. कटमं तं रूपं इंद्रियं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियम् — इदं तं रूपं इन्द्रियं सुखुमं।

952. कटमं तं रूपं न इंद्रियं ओदारिकां? रूपायतनं...पे... फोथबबायतनं - इदं तं रूपं न इन्द्रियं ओदारिकाम्।

953. कटमं तं रूपं न इंद्रियं सुखुमं? कायविननत्ती वचिविननति...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न इन्द्रियं सुखुमं।

954. कटमं तं रूपं इंद्रियं दूरे? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियम् - इदं तं रूपं इन्द्रियं दूरे।

955. कटमं तं रूपं इंद्रियं संतिके? चक्कुन्द्रियं...पे... कायिन्द्रियम् - इदं तं रूपं इंद्रियं संतिके।

956. कटमं तं रूपं न इंद्रियं दूरे? कायविननत्ती वचिविननति...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न इन्द्रियं दूरे।

957. कटमं तं रूपं न इंद्रियं संतिके? रूपायतनं...पे... फोथ्बबायतनं - इदं तं रूपं न इंद्रियं संतिके।

958. कटमं तं रूपं महाभूतं ओदारिकाम्? फ़ोत्हब्बायतनं — इदं तं रूपं महाभूतं ओदारिकाम्।

959. कटमं तं रूपं महाभूतं सुखुमं? आपोधातु - इदं तं रूपं महाभूतं सुखम्।

960. कटमं तं रूपं न महाभूतं ओदारिकाम्? चक्खायतनं... पे... रसायतनं — इदं तं रूपं न महाभूतं ओदारिकां।

961. कटमं तं रूपं न महाभूतं सुखं? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं न महाभूतं सुखुमं।

962. कटमं तं रूपं महाभूतं दूरे? आपोधातु - इदं तं रूपं महाभूतं दूरे।

963. कटमं तं रूपं महाभूतं संतिके? फ़ोत्हब्बायतनं - इदं तं रूपं महाभूतं संतिके।

964. कटमं तं रूपं न महाभूतं दूरे? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं न महाभूतं दूरे।

965. कटमं तं रूपं न महाभूतं संतिके? चक्खायतनं... पे... रसायतनं — इदं तं रूपं न महाभूतं संतिके।

966. रूपायतनं दीठं, सददायतनं सुतं, गंधायतनं रसायतनं फोङ्क्षबबायतनं मुतं, सब्बं रूपं मनसा विनातां। रूपम्.

एवं कैटुबिधेन रूपसंगहो।

चतुक्कम.

पंचकं

967. कटमं तं रूपं पथविधातु? यं कक्खनं खड़गतं [खरिगतं (का.)] कक्खहट्टं कक्खहाभावो अज्झट्टं वा बहिद्धा वा उपादीनं वा अनुपदीनं वा – इदं तं रूपं पथविधातु।

968. कटमं तं रूपं आपोधातु? यं आपो अपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बंधनट्टं रूपा अज्जट्टं वा बहिद्धा वा उपादीनं वा अनुपादिनां वा - इदं तं रूपं आपोधातु.

969. कटमं तं रूपं तेजोधातु? यं तेजो तेजोगतं उस्मा उस्मागतं उसुमं उसुमगतं अज्झट्टं वा बहिद्धा वा उपादीनं वा अनुपादिनां वा - इदं तं रूपं तेजोधातु.

970. कटमं तं रूपं वयोधातु? यं वायो वयोगातं थंभितत्तं रूपस्सा अज्जट्टं वा बहिद्ध वा उपादीनं वा अनुपादिनां वा - इदं तं रूपं वयोधातु।

971. कटमं तं रूपं उपदा? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं उपदा।

एवं पंचविधेन रूपसंगहो।

पंचकम्.

चक्कं

972. रूपायतनं चक्खुविन्येयं रूपं, सददायतनं सोतविंय्यं रूपं, गंधायतनं घनविन्यंयं रूपं, रसायतनं। जिव्हाविन्येयं रूपं, फोथब्बयतनं कायविन्येयं रूपं, सब्बां रूपं मनोविंय्यं रूपं।

एवं चब्बिधेन रूपसंगहो।

चक्कं.

सत्तकं

973. रूपायतनं चक्खुविन्येयं रूपं, सद्दायतनं सोतविंय्यं रूपं, गंधायतनं घनविन्यंयं रूपं, रसायतनं। जिवहविनयं रूपं, फोऽथ्ब्ब्यतनं काय्ाा्ण्ण्ऽयं रूपं, रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोऽथ्भबायतनं मनोधातुविनिन्यायम् रूपं, सब्बं रूपं मनोविनाधातुविन्येयं रूपं।

एवं सत्तविधेन रूपसंगहो।

सत्तकम्.

अट्ठकं

974. रूपायतनं चक्खुविन्येयं रूपं, सद्दायतनं सोतविंय्यं रूपं, गंधायतनं घनविन्यंयं रूपं, रसायतनं। जिव्हाविनयं रूपं, मनापियो फोतथब्बो सुखासमफासो कायविन्येयं रूपं, अमानपियो फोतहब्बो दुक्खासम्फसो कायविनिनेयं रूपं, रूपायतनं सद्दायतनम् गंधायतनं रसायतनं फोटहब्बायतनं मनोधातुविन्येयं रूपं, सब्बं रूपं मनोविनाधातुविंय्यं रूपं।

एवं अट्ठविधेन रूपसंगहो।

अट्ठकम्.

नवकं

975. कटमं तं रूपं चक्कुंद्रियं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं चक्कुंद्रियं।

976. कटमं तं रूपं सोतिन्द्रियम्...पे... घनिन्द्रियम्...पे...जीविन्द्रियम्...पे... कायिन्द्रियम्...पे... इत्थिन्द्रियम्...पे... पुरिसिन्द्रियम्...पे... जीवितिन्द्रियम्? यो तेसं रूपिणं धम्मनां आयु ऋतु यापना यापना इरियाना वत्तना पालना जीवितं जीवितं - इदं तं रूपं जीवितिन्द्रियम्।

977. कटमं तं रूपं न इन्द्रियं? रूपायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इदं तं रूपं न इंद्रियम्।

एवं नवविधेन रूपसंगहो।

नवकम्.

दशकं

978. कटमं तं रूपं चक्कुंद्रियं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसादो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं चक्कुंद्रियम्।

979. कटमं तं रूपं सोतिन्द्रियम्...पे... घनिन्द्रियम्...पे...जीविन्द्रियम्...पे... कायिन्द्रियम्...पे... इत्थिन्द्रियम्...पे... पुरिसिन्द्रियम्...पे... जीवितिन्द्रियम्? यो तेसं रूपिणं धम्मनां आयु ऋतु यापना यापना इरियाना वत्तना पालना जीवितं जीवितं - इदं तं रूपं जीवितिन्द्रियम्।

980. कटमं तं रूपं न इंद्रियं सप्पतिघं? रूपायतनं...पे... फोथ्बबायतनं - इदं तं रूपं न इंद्रियं सप्पतिघं।

981. कटमं तं रूपं न इंद्रियं अप्पतिघं? कायविननत्ती...पे... कबादिकारो आहारो — इदं तं रूपं न इन्द्रियं अप्पतिघं।

एवं दशविधेन रूपसंगहो।

दशकं.

एकादसकं

982. कटमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानां उपादय पसंददो...पे... सुननो गामो पेसो - इदं तं रूपं चक्खायतनं।

983. कतमं तं रूपं सोतायतनं...पे... घनायतनं...पे... जीवायतनं...पे... कायायतनं...पे... रूपायतनं...पे... सददायतनं...पे... गंधायतनं...पे... रसायतनं...पे... फोथ्हब्बायतनं? पथविधातु...पे... फोङ्क्षबधातु पेसा - इदं तं रूपं फोङ्क्षबबायतनं।

984. कटमं तं रूपं अनिदासनं अप्पतिघं धम्मायतनपरियपन्नं? इत्थिन्द्रियं...पे... कबाड़ीकारो आहारो - इदं तं रूपं अनिदासनं अप्पतिघं धम्मायतनपरियपन्नं।

एवं एकादशविधेन रूपसंगहो।

Ekādasakaṃ.

Aṭṭhamabhāṇavāro.

रूपविभट्टी.

रूपकण्डं निहितं।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-परिचयात्मक

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

परिचयात्मक
[पृष्ठ 165] [583] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?[1]

इंद्रिय जगत में, रूप जगत में, निराकार जगत में या उस जीवन में जो अविभाजित है,[2] और भावना, बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंधों से जुड़े अच्छे और बुरे अवस्थाओं के परिणाम[3] साथ ही क्रिया के रूप में जानी जाने वाली वे अवस्थाएँ जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं, न ही कर्म का परिणाम हैं; इसके अलावा सभी रूप हैं;[पृष्ठ 166] और [अंत में] अविभाजित तत्व[4] — ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं।

[684] इस संदर्भ में 'सभी रूप' (सब्बम रूपम) क्या है?

चार महान घटनाएँ[5] और वह रूप जो चार महान घटनाओं से व्युत्पन्न होता है—इसे ही 'सभी रूप' कहा जाता है।[6]

[584-594] यहाँ रूप के निम्नलिखित विश्लेषण की मतिका, या विषय-सूची दी गई है, जिसे मात्रात्मक श्रेणियों के अंतर्गत माना गया है — जो बौद्ध धर्म की सामान्य पद्धति है। कहने का तात्पर्य यह है कि रूप पर सर्वप्रथम अनेक एकल, असंबंधित गुणों के अंतर्गत विचार किया जाता है, फिर द्विभाजित गुणों के अंतर्गत, और फिर [पृष्ठ 167] उन गुणों के अंतर्गत जो एकल रूप से लेने पर समावेशन, विपरीत के अंतर्गत समावेशन, या दोनों से अपवर्जन देते हैं; या जो युग्मों में लेने पर तीन संयोजन प्रदान करते हैं। तब हमें गुणों के युग्मों का संयोजन प्राप्त होता है, जिससे चार संयोजन प्राप्त होते हैं। इसके बाद, रूप पर अधिक आगमनात्मक वर्गीकरणों के अंतर्गत विचार किया जाता है, जैसे कि चार तत्व और पाँचवाँ, उनके व्युत्पन्न, इत्यादि, जैसा कि नीचे दिया गया है।

- फुटनोट:
1. विपाको और किरिया की जांच से नैतिक रूप से अनिर्धारित का विषय पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है।

इसमें दो अन्य प्रजातियाँ शामिल हैं: 1. रूप (या बाह्य घटनाएँ)
2. और निर्वाण (अविभाजित तत्व)।

(असल. 296.)

अतः, वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक घटना के रूप में 'रूप' की निम्नलिखित जाँच, 'विचार' की उत्पत्ति की पूर्वोक्त जाँच से जोड़ने वाले प्रश्न द्वारा प्रेरित होती है, जिसे अरूपिनो धम्म, या निराकार (अशरीरी) चेतना की अवस्थाओं के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

2. अपरियापन्न। यह शब्द, जिसका प्रयोग अक्सर पुस्तक III में किया जाता है, और जिसका उद्देश्य सर्वोच्च की खोज को सभी निम्न उद्देश्यों से अलग करना है, नीचे (§ 992) बताया गया है।

3. मैं यहाँ और अन्यत्र भी अक्सर K के विराम चिह्नों का अनुसरण करता हूँ। हालाँकि, बाद में इसी उत्तर में, K. असंगत है, क्योंकि उसने स्कंधों की सूची से पहले एक कोलन और उसके बाद एक अल्पविराम लगाया है। धारा 983 देखें। संभवतः इनमें से कोई एक गलती है।

4. असंखता च धातु। यह शब्द, जिसे बुद्धघोष और मूल अट्ठकथा (धार्मिक शास्त्र के मुद्रित पाठ में § 1,376 देखें) निर्वाण के साथ जोड़ते हैं, तीसरे खंड में इसके विपरीत 'सर्वरूप' (vp 168, n. 3) के संदर्भ में अक्सर आता है। मुझे नहीं पता कि नैतिक आदर्श की यह, एक प्रकार से, ब्रह्मांडीय अवधारणा पिटकों के पुराने ग्रंथों में मिलती है या नहीं, या वास्तव में टीकाकारों ने भौतिक शब्द को उसके इच्छित अर्थ से अधिक महत्व दिया है - एक ऐसा अर्थ जो शायद बौद्ध धर्म के 'विद्वत्तापूर्ण' युग से उत्पन्न हुआ है। उदाहरण के लिए, इस ग्रंथ के §§ 1016-1018 में, 'अरहतत्व के सर्वोच्च फल' के विपरीत बताए जाने के ठीक बाद, अविभाजित तत्व को निर्वाण के साथ जोड़ना संकलकों को एक गंभीर असंगति में डाल देता है।

मुझे अभी तक प्रथम दो पिटकों में ऐसा कोई अंश नहीं मिला है जो इस पहचान को स्थापित करता हो। मिलिंद-पन्हो में, जो पिटकों और टीकाओं के मध्य के युग की पारंपरिक शिक्षा देता है, हम निर्वाण को एकमात्र असंखतम के रूप में विकसित होते देख सकते हैं। पृष्ठ 268 और आगे देखें। केवी 317-30 की भी तुलना करें।

5. महाभूतानी, अर्थात् चार तत्व, शाब्दिक रूप से, वे वस्तुएँ जो अस्तित्व में आ चुकी हैं, die grossen Gewordenen, τα γυγνοπενα — तत्वों या στοιχεια की तुलना में कहीं अधिक वैज्ञानिक शब्द। आगे नीचे, §§ 597, 647 इत्यादि देखें।

6. रूपम शब्द के विभिन्न निहितार्थ, जैसे वस्तुनिष्ठ घटनाएँ, ठोस या मिश्रित, दृष्टि की वस्तु, इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं के बिना भौतिक अस्तित्व, आदि, मेरी प्रस्तावना (ii) में चर्चा की गई है।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 1

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
 - पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय I - एकल अवधारणाओं के अंतर्गत रूप की व्याख्या

Ekakaniddeso

[पृष्ठ 168] [595]

सभी रूप वह है जो न तो कारण है,

न ही कारण का सहवर्ती है,

कारण से असंबद्ध है,[1] सशर्त है,[2] यौगिक है,[3] रूप से संपन्न है,[4] सांसारिक है,[5] सह-नशा करने वाला है,[6]

[पृष्ठ 169] अनुकूल:

बेड़ियाँ,[7] बंधन,

बाढ़,

बंधन,

बाधाएँ;

संक्रमित,[8] पकड़ के लिए अनुकूल,[9]

भ्रष्टाचार से संबंधित,[10] अनिश्चित,

विचार रहित,[11] न भावना, न बोध, न संश्लेषण,[12] विचार से असंबद्ध,

न नैतिक परिणाम, न नैतिक परिणाम उत्पन्न करने वाला,[13] अविकृत होते हुए भी भ्रष्टाचार से संबंधित,[14] वह नहीं 'जहाँ अवधारणा कार्य करती है और विचार विवेचनात्मक होता है',[15] वह नहीं 'जिसमें अवधारणा का कोई कार्य नहीं होता, बल्कि केवल विवेचनात्मक विचार होता है',

'अवधारणा और विवेचनात्मक विचार के कार्य' से रहित,[पृष्ठ 170] 'आनंद से युक्त' नहीं,

'सुविधा से युक्त'

नहीं, 'निस्वार्थता से युक्त' नहीं,[16] ऐसी कोई चीज नहीं जिससे अंतर्दृष्टि या साधना द्वारा छुटकारा पाया जा सके,

वह नहीं जिसका कारण अंतर्दृष्टि या साधना द्वारा दूर किया जा सके,

पुनर्जन्म से जुड़े संचय की ओर न तो प्रवृत्त और न ही उससे दूर,

न तो विद्यार्थीत्व से संबंधित और न ही उससे परे छात्रत्व,

सीमित,[17] इंद्रियों के ब्रह्मांड से संबंधित,

रूप के ब्रह्मांड से संबंधित नहीं,[18] न ही निराकार के ब्रह्मांड से,

समाहित,

असमाहित नहीं,[19] अपरिहार्य प्रतिशोध को निहित करने वाली कोई चीज नहीं,[20] (नैतिक) मार्गदर्शन के लिए अनुपयोगी,

छह ज्ञान विधियों द्वारा स्पष्ट होने पर बोधगम्य,[पृष्ठ 171] क्षणभंगुर,[21]

क्षय के अधीन। एकल गुणों के माध्यम से विचार किए गए रूप की श्रेणी ऐसी है।[22]

- फुटनोट:

1. ना हेतुम एवा। टीकाकार द्वारा 'कारण' के अर्थों के विश्लेषण के लिए, धारा 1053 के अंतर्गत देखें। यहाँ विशेष अर्थ यह है कि 'रूप' स्वयं किसी नैतिक या अनैतिक परिणाम का आधार या 'मूल' या मानसिक सहयोगी नहीं है। असल. 303. निम्नलिखित दो शब्दों पर धारा 1074, 1076 के अंतर्गत चर्चा की गई है।

2. सप्पक्कायम. देखें. § 1083.

3. संखतम। यह गुण पूर्ववर्ती गुण में निहित है। धारा 1085 देखें। ऊपर पृष्ठ 166, नोट 1 भी देखें।

4. यूपियम, या रूपम एव। विषयसूची (§ 584) में पहला शब्द दिया गया है; के. ने यहाँ दूसरा शब्द दिया है। मुद्रित पाठ के इस खंड से या तो एक शब्द या दूसरा शब्द हटा दिया गया है। सी.वाई. ने दूसरा शब्द दिया है — यूपम एव ति रूपिनो धम्म, आदि। असल. 304.

5. लोकीयम्; लोकुत्तरम् का प्रतिलोम. सी एफ § 1093.

6.ससवम. धारा 1096 आदि देखें।

7. सन्नोजनियम, इत्यादि। इस और इसके बाद के चार शब्दों पर बेड़ियों और अन्य नैतिक उपमाओं के संदर्भ में अलग-अलग चर्चा की गई है। धारा 1113 और उसके बाद के अनुच्छेद देखें।

8.परमत्थम. धारा 1174 देखें: इत्यादि.

9.उपादानीयम्। § 990 और § 1213 आदि देखें।

10.संकिलेसिकम. धारा 993 और धारा 1229 आदि देखें।

11.अनारमणम, विचार या मानसिक वस्तु, निस्संदेह, अरूप-धम्मो से संबंधित है।

12. एसिटासिकम. धारा 1022 देखें.

13. धारा 989 देखें।

14. धारा 994 देखें।

15. ना सवितक्क-सविचरम्। यह और इसके बाद के दो तकनीकी शब्द ध्यान की मानसिक साधना से 'रूप' को अलग करते हैं, भले ही ध्यान का अभ्यास इंद्रियजन्य अस्तित्व से 'रूप के ब्रह्मांड' में प्रवेश करने के लिए किया जाता हो। देखें §§ 160, 168, 161 और 996-998।

16. धारा 999-1001 देखें। ये सभी मानसिक अवस्थाएँ हैं, जो अन्य चार स्कंधों की विशेषताएँ हैं, न कि रिर्पक खंडो की। इसी प्रकार, निम्नलिखित चार सैद्धांतिक अभिव्यक्तियाँ केवल मानसिक और नैतिक श्रेणियों पर ही लागू होती हैं। धारा 1007-1118 देखें।

17. परित्तम. धारा 1019 देखें.

18.Read na ryupavacaram.

19. पृष्ठ 165, नोट 2 देखें।

20. यह और अगला शब्द विचार की नैतिक, अमूर्त श्रेणियों से संबंधित हैं। धारा 1028-1030 और 1291 देखें; साथ ही 1288, 1289 और 277 भी देखें।

21.अर्थात्, टीकाकार टिप्पणी करते हैं, जब यह (चेतना में) मौजूद होता है। 'क्योंकि, सख्ती से कहें तो, दृश्य और अन्य इंद्रिय बोध के संदर्भ में, वे (न ही तानि पढ़ें) भूतकाल और भविष्य का संज्ञान नहीं करते; यह प्रतिनिधि बोध (मनोविनफियानम्) का कार्य है" (असली. 304)।

22. साई. ने उपरोक्त प्रत्येक गुण पर कोई विधिकवाद न होने का कारण यह बताया है कि अगली श्रेणी की तरह कोई सहसंबंधित विलोम शब्द नहीं है, जिससे प्रत्येक पद को अलग किया जा सके (असल. 303)। पुस्तक I में वर्णित प्रक्रिया को देखते हुए, यह शायद ही पर्याप्त है। हालाँकि, जैसा कि उपरोक्त टिप्पणियों से स्पष्ट हो गया होगा, प्रत्येक पद की आगे जाँच की गई है।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 2
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय II - दोहरे गुणों के माध्यम से विचारित रूप की श्रेणी
सकारात्मक और नकारात्मक (दुविधेना रूपसंगाहो)

[पृष्ठ 172] ['वहाँ एक रूप है जो व्युत्पन्न है'] [1]
[596] वह कौन सा रूप है जो व्युत्पन्न होता है?

दृष्टि, गंध,
श्रवण, स्वाद, शारीरिक संवेदनशीलता का क्षेत्र[2]

; [3]

दृश्य, गंध, ध्वनि और स्वाद का क्षेत्र
;

स्त्रीत्व, पुरुषत्व और
जीवंतता की क्षमताएं ;
[पृष्ठ 173] संकेत:
कार्य द्वारा,
वाणी द्वारा; स्थान का तत्व;
उत्प्लावन, >
प्लास्टिसिटी, >
सुगमता, >
एकीकरण, > रूप का
रखरखाव, >
क्षय, >
अनित्यता, >
ठोस पोषण। [597] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि का क्षेत्र है (चक्खयातनम्)?
आँख,[4] यानी सचेत अंग,[5] जो [पृष्ठ 174] महान घटनाओं से उत्पन्न हुआ है, जो स्वयं की प्रकृति का हिस्सा है,[6] अदृश्य और प्रतिक्रियाशील[7]
— जिस आँख से, अदृश्य और [पृष्ठ 175] प्रतिक्रियाशील, कोई[8] देख चुका है, देखता है, देखेगा, या देख सकता है वह रूप जो दृश्यमान और प्रभावकारी है — यह जो दृष्टि है,
दृष्टि का क्षेत्र,
दृष्टि का तत्व,
दृष्टि की क्षमता, यह जो है: 'एक दुनिया',[9] 'एक द्वार',
'एक महासागर',
'प्रकाशमान',
'एक मैदान',
'एक [पृष्ठ 176] आधार',
'एक मार्गदर्शक',
'मार्गदर्शन',
'आगे का किनारा',
एक 'खाली गाँव' — यह वह रूप है जो दृष्टि के क्षेत्र का निर्माण करता है।
[598] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि का क्षेत्र है?
आँख, अर्थात् सचेत अंग, जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न हुआ है, आत्मा के स्वरूप का एक भाग है, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, और जिस पर आँख, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील, दृश्य और प्रभाव डालने वाले रूप का प्रभाव डालती है, प्रभाव डाल चुकी है,[10] प्रभाव डालती है, प्रभाव डालेगी, या डाल सकती है।
— यह जो दृष्टि है,
दृष्टि का क्षेत्र,
दृष्टि का घटक तत्व,
आदि। [धारा 597 के अनुसार जारी रखें]।
[599] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि का क्षेत्र है?

आँख, अर्थात् सचेत अंग, जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न हुआ है, आत्मा के स्वरूप का एक भाग है, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, और यह आँख, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील, दृश्य और प्रतिक्रियाशील रूप पर प्रभाव डालती है, डालती है, डालेगी या डाल सकती है।[11]

— यह जो दृष्टि है,

दृष्टि का क्षेत्र,

आदि। [धारा 597 के अनुसार जारी रखें]।

[600] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि का क्षेत्र है?

आँख, यानी सचेत अंग, चार महान घटनाओं से उत्पन्न, आत्मा की प्रकृति का हिस्सा, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील, (i.) इस पर निर्भर करते हुए कि किस आँख से, किसी दृश्य रूप के परिणामस्वरूप,[12] दृश्य संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है;[13] . . . [पृष्ठ 177] (ii.) और इस पर निर्भर करते हुए कि किस आँख से, किसी दृश्य रूप के परिणामस्वरूप, (उस दृश्य संपर्क से उत्पन्न) एक भावना . . . [या iii.] एक धारणा . . . [या iv.] सोच ... [या v.] एक दृश्य संज्ञान [14] . . . [इसके अलावा, vi.] इस पर निर्भर करते हुए[15] कि कौन सी आँख, और एक दृश्य रूप को अपने विषय के रूप में रखते हुए, दृश्य संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है, (vii.) और इस पर निर्भर करते हुए कि कौन सी आँख, और एक दृश्य रूप को अपने विषय के रूप में रखते हुए, उस दृश्य संपर्क से उत्पन्न एक भावना... [या viii.] एक धारणा... [पृष्ठ 178] [या ix.] सोच... [या x.] दृश्य संज्ञान - यह जो दृष्टि है, दृष्टि का क्षेत्र, आदि।

[धारा 597 के अनुसार जारी रखें].[16] [601-604] वह रूप क्या है जो श्रवण क्षेत्र है?

कान, यानी संवेदी अंग,[17] जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न हुआ है, आत्मा की प्रकृति का हिस्सा है, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, —

वह कौन सा कान है, जो अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, जिसके द्वारा किसी ने अदृश्य और आघात पहुँचाने वाली ध्वनि सुनी है, सुनता है, सुनेगा या सुन सकता है;

जिस कान पर अदृश्य और प्रतिक्रियाशील ध्वनि, अदृश्य और भेदक ध्वनि, भेद चुकी है, भेद रही है, भेदेगी या भेद सकती है;

वह कान, जो अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील ध्वनि पर प्रभाव डालता है, डालता है, डालेगा या डाल सकता है;

यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस कान के माध्यम से, किसी ध्वनि के परिणामस्वरूप, कोई ध्वनि उत्पन्न हुई है, उत्पन्न होती है, उत्पन्न होगी या उत्पन्न हो सकती है:

श्रवण संपर्क; . . . और, इस बात पर निर्भर करते हुए कि किस कान से, [पृष्ठ 179] ध्वनि के परिणामस्वरूप, उस श्रवण संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .

[या] एक बोध . .

[या] विचार . . .

[या] श्रवण बोध; — [आगे] इस बात पर निर्भर करते हुए कि किस कान से, और ध्वनि को अपने विषय के रूप में रखते हुए, श्रवण संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न हुआ है, होगा या हो सकता है, और, इस बात पर निर्भर करते हुए कि किस कान से, और ध्वनि को अपने विषय के रूप में रखते हुए, उस श्रवण संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .

[या] एक बोध . . .

[या] विचार . . .

[या] श्रवण बोध; — यह जो श्रवण है,

श्रवण क्षेत्र,

श्रवण का घटक तत्व,

श्रवण क्षमता, यह जो 'एक दुनिया',

'एक द्वार',

'एक महासागर',

'प्रकाशमान',

'एक क्षेत्र', '

एक आधार',[18] 'आगे का किनारा',

'एक खाली गाँव' — यह वह रूप है जो श्रवण क्षेत्र है।

[605-608] वह कौन सा रूप है जो गंध का क्षेत्र है?

नाक, यानी सचेत अंग, [19] जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न हुआ है, स्वयं की प्रकृति का हिस्सा है, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, — वह कौन सी अदृश्य और प्रतिक्रियाशील नाक है जिसके द्वारा व्यक्ति ने अदृश्य और अप्रत्यक्ष गंध को सूंघा है, सूंघ रहा है, सूंघेगा या सूंघ सकता है;

जिस पर नाक, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील, गंध जो अदृश्य और आक्रामक है, ने प्रभाव डाला है, प्रभाव डालती है, प्रभाव डालेगी या डाल सकती है;

[पृष्ठ 180] वह नाक, जो अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, उस गंध पर प्रभाव डालती है, डालती रही है, डालेगी या डाल सकती है जो अदृश्य और प्रभाव डालने वाली है; —

इस बात पर निर्भर करते हुए कि कौन सी नाक है, किसी गंध के परिणामस्वरूप... इस बात पर निर्भर करते हुए कि कौन सी नाक है, और किसी गंध को अपना विषय बनाकर, उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या उत्पन्न हो सकता है:

गंधीय संपर्क,

और, इस बात पर निर्भर करते हुए कि कौन सी नाक है, किसी गंध के परिणामस्वरूप... इस बात पर निर्भर करते हुए कि कौन सी नाक है, और गंध को अपना विषय मानते हुए, उस घ्राण संपर्क से एक भावना...

[या] एक बोध...

[या] विचार...

[या] घ्राण बोध उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, उत्पन्न होगा या उत्पन्न हो सकता है; — यही गंध है, यह क्षेत्र, यह घटक तत्व, यह क्षमता, यह 'एक दुनिया' है, आदि।

[धारा 604 के अनुसार जारी रखें]।

[609-612] वह कौन सा रूप है जो स्वाद का क्षेत्र है?

जीभ, अर्थात् सचेत अंग,[20] जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न हुई है, आत्मा के स्वरूप का एक भाग है, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील; वह कौन सी अदृश्य और प्रतिक्रियाशील जीभ है जिसके द्वारा व्यक्ति ने अदृश्य और प्रत्यक्ष स्वादों का स्वाद चखा है, चखता है, चखेगा या चख सकता है;

जिसके विरुद्ध अदृश्य और प्रतिक्रियाशील जीभ, अदृश्य और प्रभाव डालने वाले स्वाद, प्रभाव डाल चुके हैं, प्रभाव डालते हैं, प्रभाव डालेंगे या डाल सकते हैं;

वह जीभ, जो अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, ने उन अदृश्य और प्रतिक्रियाशील स्वादों पर प्रभाव डाला है, [पृष्ठ 181] प्रभाव डालती है, डालेगी या डाल सकती है; —

जीभ के प्रकार के आधार पर, एक स्वाद के परिणामस्वरूप... जीभ के प्रकार के आधार पर, और एक स्वाद को विषय बनाकर, उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा, या उत्पन्न हो सकता है:

स्वाद संपर्क, और जीभ के प्रकार के आधार पर, किसी स्वाद के परिणामस्वरूप... जीभ के प्रकार के आधार पर, और किसी स्वाद को विषय बनाकर, उस स्वाद संपर्क से एक भावना

... [या] एक बोध...

[या] विचार...

[या] स्वाद संबंधी अनुभूति उत्पन्न हुई है, उत्पन्न होती है, उत्पन्न होगी या हो सकती है; — यह वह है

स्वाद,

क्षेत्र,

घटक तत्व,

स्वाद की क्षमता,

यह जो 'एक दुनिया' है,

इत्यादि। [धारा 604 के अनुसार जारी रखें]।

[613-616] वह कौन सा रूप है जो शरीर [-संवेदनशीलता] का क्षेत्र है?

शरीर, अर्थात् सचेतन अंग,[21] चार महान घटनाओं से व्युत्पन्न [पृष्ठ 182], आत्मा के स्वरूप का एक भाग है, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील; —
वह शारीरिक संवेदनशीलता, जो अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, जिसके द्वारा व्यक्ति उस अदृश्य और प्रत्यक्ष स्पर्शनीय वस्तु को स्पर्श कर चुका है, स्पर्श करता है, करेगा या कर सकता है;
जिसके विरुद्ध अदृश्य और प्रतिक्रियाशील देह-संवेदना, और अदृश्य और प्रभाव डालने वाली मूर्त वस्तु, प्रभाव डाल चुकी है, प्रभाव डाल रही है, प्रभाव डालेगी या डाल सकती है;
वह शारीरिक संवेदनशीलता, जो अदृश्य और प्रतिक्रियाशील है, उस अदृश्य और प्रतिक्रियाशील मूर्त चीज पर प्रभाव डालती है, डालती रही है, डालेगी या डाल सकती है;
शरीर की किस संवेदनशीलता के आधार पर, किसी मूर्त वस्तु के फलस्वरूप... शरीर की किस संवेदनशीलता के आधार पर, और किसी मूर्त वस्तु को अपने विषय के रूप में रखते हुए, उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा, या उत्पन्न हो सकता है:
स्पर्श संपर्क,[22]
और शरीर की संवेदनशीलता के आधार पर, किसी मूर्त चीज़ के परिणामस्वरूप... शरीर की संवेदनशीलता के आधार पर, और किसी मूर्त चीज़ को अपने विषय के रूप में रखते हुए, उस स्पर्श संपर्क से उत्पन्न हुई है, उत्पन्न होती है, होगी, या उत्पन्न हो सकती है, एक भावना...
[या] एक धारणा...
[या] सोच...
[या] स्पर्श संबंधी अनुभूति; — [23] यह जो शरीर संवेदनशीलता है,
क्षेत्र,
घटक तत्व,
शरीर संवेदनशीलता की क्षमता, यह जो 'एक दुनिया' है,
आदि। [धारा 604 के अनुसार जारी रखें]।
[पृष्ठ 183] [617] वह कौन सा रूप है जो [दृश्य] रूप का क्षेत्र है?
वह रूप जो महान सिद्धांतों से व्युत्पन्न होकर रंग के रूप में प्रकट होता है और प्रभाव उत्पन्न करता है[24] — नीला,[25] पीला,
लाल,[26] सफेद,
काला,[27] गहरा लाल,[28] कांस्य,[29] हरा,[30] आम की कली के रंग का;[31] लंबा,
छोटा,[32] बड़ा,
छोटा,
गोलाकार,
अंडाकार,
वर्गाकार,
षट्भुजाकार,
अष्टभुजाकार,
हेक्काइदेकाभुजाकार; नीचा,
ऊँचा,
छायादार,
चमकीला,
हल्का,
मंद,
सुस्त,
पाला पड़ा हुआ,[33] धुएँदार,
धूल भरा;

रंग में [पृष्ठ 184] चंद्रमा की डिस्क,[34] सूर्य,
तारे,
एक दर्पण,[35] एक रत्न,
एक शंख,
एक मोती,
एक बिल्ली की आँख,[36]
सोना[37] या चांदी;[38] या कोई अन्य रूप जो चार महान घटनाओं से व्युत्पन्न है, दृश्यमान और प्रभाव उत्पन्न करने वाला है - वह रूप, दृश्यमान और प्रभाव उत्पन्न करने वाला, जिसे किसी ने अदृश्य और प्रतिक्रियाशील आंख से देखा है, देखता है, देखेगा या देख सकता है।
— जो दृश्य रूप है, जो दृश्य रूप का क्षेत्र है,
दृश्य रूप का घटक तत्व है — यही वह रूप है जो दृश्य रूप का क्षेत्र है।
[618] वह कौन सा रूप है जो दृश्य रूप का क्षेत्र है?
वह रूप जो महान घटनाओं से व्युत्पन्न होकर रंग के रूप में दृश्यमान होता है और प्रभाव उत्पन्न करता है...[39] जिस दृश्यमान और प्रभाव उत्पन्न करने वाले रूप पर, अदृश्य और प्रभाव डालने वाली आँख ने प्रभाव डाला है, डालती है, डालेगी या डाल सकती है।
— यह जो दृश्य रूप है,
इत्यादि। [धारा 617 के अनुसार जारी रखें]।
[619] वह कौन सा रूप है जो दृश्य रूप का क्षेत्र है?
[पृष्ठ 185] वह रूप जो महान घटनाओं से व्युत्पन्न होकर रंग के रूप में दृश्यमान होता है और प्रभाव उत्पन्न करता है — वह दृश्यमान और प्रभाव उत्पन्न करने वाला रूप अदृश्य और प्रतिक्रियाशील आँख पर प्रभाव डालता है, डालता है, डालेगा या डाल सकता है।
— यह जो दृश्य रूप है,
इत्यादि। [धारा 617 के अनुसार जारी रखें]।
[620] वह कौन सा रूप है जो दृश्य रूप का क्षेत्र है?
वह रूप जो चार महान घटनाओं से व्युत्पन्न होकर दृश्यमान है और प्रभाव उत्पन्न करता है—जिस रूप के परिणामस्वरूप, और आँख पर निर्भर करते हुए, दृश्य संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है...जिस रूप के परिणामस्वरूप और आँख पर निर्भर करते हुए, उस दृश्य संपर्क से उत्पन्न होकर, एक भावना...
[या] एक बोध... [या
] विचार...
[या] दृश्य संज्ञान... [आगे] उस दृश्यमान रूप को अपने विषय के रूप में रखते हुए,[40] और आँख पर निर्भर करते हुए, दृश्य संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है, [पृष्ठ 186] और, उस दृश्यमान रूप को अपने विषय के रूप में रखते हुए, और आँख पर निर्भर करते हुए, एक भावना...
[या] एक बोध...
[या] विचार...
[या] दृश्य संज्ञान... उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है... यह जो दृश्यमान रूप है,
गोला,
दृश्य रूप का घटक तत्व — यही वह रूप है जो दृश्य रूप का गोला है।
[621] वह कौन सा रूप है जो ध्वनि का गोला है?
वह ध्वनि जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होती है, अदृश्य होती है और प्रभाव उत्पन्न करती है, जैसे कि
ढोल की ध्वनि,
तबला की ध्वनि,
शंख की ध्वनि,
टॉमटॉम की ध्वनि,
गायन की ध्वनि,
संगीत की ध्वनि;[41]

टकराव की आवाज़ें,[42] मैनुअल आवाज़ें,[43]
लोगों का शोर,[44]

पदार्थों के टकराव की ध्वनि ,[45] हवा की,[46] पानी की,[47]
मानव और अन्य मानव जैसी ध्वनियाँ, या कोई अन्य ध्वनि[48] जो भी हो, महान घटनाओं से उत्पन्न होती है, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाली — ऐसी ध्वनि, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाली, जैसे कान द्वारा, अदृश्य और प्रतिक्रिया करने वाली, जिसे किसी ने सुना है, सुनता है, सुनेगा, या सुन सकता है...
[622] . . . और जिस ध्वनि पर, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाला, कान, अदृश्य और प्रतिक्रिया करने वाला, टकराया है, टकराता है, टकराएगा, या टकरा सकता है . . .
[623] . . . जो ध्वनि, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाली, [पृष्ठ 187] अदृश्य और प्रतिक्रियाशील कान पर प्रभाव डालती है, डालती है, डालेगी या डाल सकती है . . .
[624] . . . जिसके परिणामस्वरूप ध्वनि और कान पर निर्भर, श्रवण संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है . . . . और[49] . . . उस श्रवण संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .
[या] एक बोध . . .
[या] सोच . . .
[या] श्रवण संज्ञान . . . . . . [आगे] ध्वनि को अपने विषय के रूप में रखते हुए और कान पर निर्भर, श्रवण संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है, . . . और . . . उस श्रवण संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .
[या] एक बोध . . .
[या] सोच . . .
[या] श्रवण संज्ञान; यह जो ध्वनि है, ध्वनि का क्षेत्र और घटक तत्व - यह वह रूप है जो ध्वनि का क्षेत्र है।
[625] वह कौन सा रूप है जो गंध का क्षेत्र है?
वह गंध जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होती है, अदृश्य होती है और प्रभाव उत्पन्न करती है, जैसे जड़ों,
रस,
छाल,
पत्तियों,
फूलों,
फलों की गंध;
कृमि जैसी गंध,
सड़ी हुई गंध,
सुखद और अप्रिय गंध,[50] या [पृष्ठ 188] अन्य कोई भी गंध जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होती है, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाली; ऐसी गंध, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाली, जिसे किसी ने सूंघा है, सूंघता है, सूंघेगा, या सूंघ सकता है, जो अदृश्य और प्रभाव डालने वाली है...
[626] . . . जिस गंध पर, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाली, नाक, अदृश्य और टकराने वाली, टकराई है, टकराती है, टकराएगी या टकरा सकती है . . .
[627] . . . ऐसी गंध, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाली, जो नाक पर टकराई है, टकराती है, टकराएगी या टकरा सकती है, अदृश्य और प्रतिक्रिया करने वाली . . .
[628] . . . जिसके परिणामस्वरूप गंध और नाक पर निर्भर करते हुए, घ्राण संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है . . . और[51] . . . उस घ्राण संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .
[या] एक धारणा . . .
[या] सोच . . .
[या] घ्राण संज्ञान . . . . . . [आगे] गंध को अपनी वस्तु के रूप में रखते हुए और नाक पर निर्भर करते हुए, घ्राण संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है, . . . और . . . उस घ्राण संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .

[या] एक धारणा . . .

[या] सोच . . .

[या] घ्राण संज्ञान; [पृष्ठ 189] यह जो गंध है, गंध का क्षेत्र और घटक तत्व — यह वह रूप है जो गंधों का क्षेत्र है।

[629] वह कौन सा रूप है जो स्वाद का क्षेत्र है?

वह स्वाद जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होता है, अदृश्य होता है और प्रभाव उत्पन्न करता है, जैसे जड़ों,

तनों,

छाल,

पत्तियों,

फूलों,

फलों का स्वाद।

खट्टा,

मीठा,[52] कड़वा,[53] तीखा,[54]

नमकीन,[55] क्षारीय,[56] तीखा,[57] कसैला,[58] अच्छा और मतली लाने वाला स्वाद,[59] या अन्य कोई भी स्वाद जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होता है, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाला - ऐसे स्वाद, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाले, जैसे जीभ के साथ, अदृश्य और प्रतिक्रिया करने वाला, किसी ने चखा है, चखता है, चखेगा, या चख सकता है...

[630] . . . जिसके विरुद्ध स्वाद, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाला, जीभ, अदृश्य और प्रहार करने वाली, प्रहार कर चुकी है, प्रहार करती है, करेगी या कर सकती है . . .

[631] ... एक स्वाद जो अदृश्य है और प्रभाव पैदा करता है, जीभ पर प्रभाव डालता है, डालता है, डालेगा या डाल सकता है, अदृश्य है और प्रतिक्रिया करता है...

[632] . . . जिसके परिणामस्वरूप स्वाद और जीभ पर निर्भर करते हुए, स्वाद संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है . . . [पृष्ठ 190] . . . और[60] . . . उस स्वाद संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .

[या] एक बोध . . .

[या] सोच . . .

[या] स्वाद संबंधी ज्ञान, [आगे] स्वाद को अपने विषय के रूप में रखते हुए और जीभ पर निर्भर करते हुए, स्वाद संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है, . . . और . . . उस स्वाद संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .

[या] एक बोध . . .

[या] सोच ...

[या] स्वाद संबंधी ज्ञान; यही स्वाद है, स्वाद का क्षेत्र और घटक तत्व - यही वह रूप है जो स्वाद का क्षेत्र है।[61]

[633] वह कौन सा रूप है जो स्त्रीत्व (इत्थिंद्रियम) है?

जो स्त्रीत्व से संबंधित है, दिखने में स्त्रीत्व से, विशेषताओं में स्त्रीत्व से, व्यवसाय में स्त्रीत्व से, आचरण में स्त्रीत्व से, स्थिति और अस्तित्व में स्त्रीत्व से — यही वह रूप है जो स्त्रीत्व का निर्माण करता है।[62]

[पृष्ठ 191] [634] वह कौन सा रूप है जो पुरुषत्व (पुरिसिंद्रियम) है?

जो पुरुष का है, दिखने में मर्दाना, विशेषताओं में मर्दाना, व्यवसाय में, आचरण में, स्थिति और अस्तित्व में मर्दाना - यही वह रूप है जो मर्दानगी का निर्माण करता है।[63]

[पृष्ठ 192] [635] वह कौन सा रूप है जो जीवन शक्ति (जीवितिन्द्रियम) है?

इन शारीरिक अवस्थाओं की निरंतरता, उनका अस्तित्व, उनका निरंतर चलना, उनका निरंतर चलते रहना, उनकी प्रगति, निरंतरता, संरक्षण, जीवन, एक क्षमता के रूप में जीवन - यही वह रूप है जो जीवन शक्ति है।[64]

[636] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक संकेत (कयाविन्नत्ति) है?

वह तनाव, वह तल्लीनता, शरीर को तनावग्रस्त करने की वह अवस्था[65], किसी विचार के जवाब में, चाहे वह अच्छा हो, बुरा हो या अनिश्चित हो, आगे बढ़ने वाले, पीछे हटने वाले, टकटकी लगाने वाले, चारों ओर देखने वाले, हाथ पीछे खींचने वाले या उसे आगे बढ़ाने वाले व्यक्ति की ओर से - संकेत, ज्ञात करना, ज्ञात किए जाने की अवस्था - यही वह रूप है जो शारीरिक संकेत का निर्माण करता है।[66]

[पृष्ठ 193] [637] वह कौन सा रूप है जो भाषा द्वारा संकेत है (vacivinnatti)?
वह भाषण, आवाज, उच्चारण, उच्चारण, शोर, शोर मचाना, स्पष्ट भाषण के रूप में भाषा, जो किसी विचार को व्यक्त करती है चाहे वह अच्छा हो, बुरा हो या अनिश्चित हो - इसे भाषा कहते हैं।
और वह संकेत, वह ज्ञात करना, भाषा द्वारा ज्ञात किए जाने की स्थिति — यही वह रूप है जो भाषा द्वारा संकेत का गठन करता है।[67]
[638] वह कौन सा रूप है जो आकाश-धातु का तत्व है?
जो अंतरिक्ष है और अंतरिक्ष से संबंधित है, आकाश है और [पृष्ठ 194] आकाश से संबंधित है,[68] निर्वात है और निर्वात से संबंधित है, और चार महान घटनाओं के संपर्क में नहीं है'[69] - यही वह रूप है जो अंतरिक्ष का तत्व है।
[639] वह कौन सा रूप है जो रूप की हल्कापन (रूपासा लहुता) है?[70]
रूप की वह हल्कापन जो उसकी आसानी से बदलने की क्षमता है, उसकी सुस्ती और जड़ता से मुक्ति है - यही वह रूप है जो रूप का हल्कापन है।
[640] वह कौन सा रूप है जो रूप की प्लास्टिसिटी है?
[पृष्ठ 195] रूप की वह प्लास्टिसिटी जो उसकी कोमलता, चिकनाई, गैर-कठोरता है — यही वह रूप है जो रूप की प्लास्टिसिटी है।
[641] वह कौन सा रूप है जो रूप की सुगमता है?
रूप की वह सुगमता जो इसकी सेवायोग्यता है, इसकी कार्ययोग्य स्थिति है - यही वह रूप है जो रूप की सुगमता है।[71]
[642] वह कौन सा रूप है जो रूप का एकीकरण (उपाकायो) है?
जो रूप का संचय है, वह रूप का एकीकरण है[72] — यह वह रूप है जो रूप का एकीकरण है।
[643] वह कौन सा रूप है जो रूप का अस्तित्व है (रूपस्सा संतति)?
जो रूप का एकीकरण है, वही रूप का सार है। — यही वह रूप है जो रूप का सार है।
[644] वह कौन सा रूप है जो रूप का क्षय है (रूपास्सा जराता)?
रूप का वह क्षय जो बुढ़ापा, जीर्णता, सफेदी, झुर्रियाँ, दिनों की लंबाई में कमी, क्षमताओं की अतिपरिपक्वता है - यही वह रूप है जो रूप का क्षय है।[73]
[पृष्ठ 196] [645] वह कौन सा रूप है जो रूप की अनित्यता है (रूपस्सा अनिक्काता)?
विनाश, रोग, टूटना, रूप का विघटन, वह अनित्यता जो पतन है — यही वह रूप है जो रूप की अनित्यता है।[74]
[646] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक (ठोस) पोषण (कबालिंकरो अहारो) है?[75]
उबले हुए चावल, खट्टी दलिया, आटा, मछली, मांस, दूध, दही, मक्खन, पनीर, तिला-तेल, गन्ने का सिरप, या जो कुछ भी[76] किसी भी क्षेत्र में है जिसे जीवित प्राणी खा सकते हैं, चबा सकते हैं, निगल सकते हैं, उस रस में पचा सकते हैं[77] जिससे जीवित [पृष्ठ 197] प्राणी जीवित रहते हैं - यही वह रूप है जो शारीरिक पोषण है।
यह सब व्युत्पन्न रूप है।
व्युत्पन्नों पर अनुभाग का अंत। प्रारूप संबंधी प्रभाग में उद्धरण हेतु पहला भाग।
['ऐसा कोई रूप नहीं है जो व्युत्पन्न न हो' (कोई उपद नहीं)]।
[647] वह कौन सा रूप है जो व्युत्पन्न नहीं है?[78]
मूर्त का क्षेत्र, तरल तत्व—यह वह रूप है जो व्युत्पन्न नहीं है।
[648] वह कौन सा रूप है जो मूर्त (फोत्थब्बयातनम्) का गोला है? पार्थिव (ठोस) तत्व,
दीप्तिमान (ऊष्मायवी) तत्व,
गैसीय (वायुमंडलीय) तत्व; [79]
कठोर और [पृष्ठ 198] नरम;
चिकना और खुरदरा;
सुखद (आरामदायक) संपर्क,
कष्टदायक संपर्क;
भारी और हल्का[80] — ऐसा मूर्त, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाला,[81] जैसा कि [पृष्ठ 199] शरीर-संवेदनशीलता के साथ, अदृश्य और प्रतिक्रिया करते हुए, किसी ने छुआ है, छूता है, छूएगा, या छू सकता है...

[649] . . . जिसके विरुद्ध मूर्त, अदृश्य, और प्रभाव उत्पन्न करने वाली, शरीर की संवेदनशीलता, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील, टकराई है, टकराती है, टकराएगी, या टकरा सकती है . . .

[650] . . . ऐसा मूर्त, अदृश्य और प्रभाव उत्पन्न करने वाला, जो शरीर-संवेदनशीलता के विरुद्ध टकराया है, टकराता है, टकराएगा या टकरा सकता है, अदृश्य और प्रतिक्रिया करने वाला . . .

[पृष्ठ 200] [651] . . . जिसके परिणामस्वरूप, मूर्त और शरीर-संवेदनशीलता पर निर्भर, शारीरिक संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है . . . और . . . उस शारीरिक संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .

[या] एक धारणा . . .

[या] सोच . . .

[या] शरीर का संज्ञान . . . [आगे,] एक मूर्त वस्तु को अपने विषय के रूप में रखते हुए और शरीर (-संवेदनशीलता) पर निर्भर, शारीरिक संपर्क उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न होता है, होगा या हो सकता है . . . और . . . उस शारीरिक संपर्क से उत्पन्न, एक भावना . . .

[या] एक धारणा . . .

[या] सोच . . .

[या] शरीर का संज्ञान; यह जो मूर्त है, मूर्त का क्षेत्र और तत्व है - यह वह रूप है जो मूर्त का क्षेत्र है।[82]

[652] वह कौन सा रूप है जो द्रव (जलीय) तत्व (अपोधातु) है?

जो तरल है और तरल से संबंधित है, जो [पृष्ठ 201] चिपचिपा[83] है और चिपचिपा से संबंधित है, रूप की एकजुटता[84] — यही वह रूप है जो तरल तत्व है।

यह सब वह रूप है जो व्युत्पन्न नहीं है।

[653] वह कौन सा रूप है[85] जो पकड़ (उपादिन्नम) का मुद्दा है?[86] [पृष्ठ 202]

दृष्टि,

श्रवण,

गंध,

स्वाद,

देह-संवेदनशीलता,

स्त्रीत्व,

पुरुषत्व,

जीवन शक्ति, या कर्म के फलस्वरूप विद्यमान कोई भी रूप, चाहे वह

दृश्य रूपों,

गंधों,

स्वादों,

या स्पर्शनीय के क्षेत्र में हो; अंतरिक्ष का तत्व,

द्रव तत्व,

एकीकरण या रूप का अस्तित्व,[87]

या शारीरिक पोषण—यही वह रूप है जो ग्रहणशीलता का मुद्दा है।

[654] वह कौन सा रूप है जो पकड़ का मुद्दा नहीं है?

ध्वनि का क्षेत्र, शारीरिक और स्वरीय संकेत, हल्कापन, रूप की लचीलापन और सुगमता, रूप का क्षय और अनित्यता, या कोई भी अन्य रूप जो कर्म के फलस्वरूप अस्तित्व में नहीं है, चाहे वह दृश्य रूपों, गंधों, स्वादों या स्पर्शनीयता के क्षेत्र में हो; अंतरिक्ष का तत्व हो या तरलता का; रूप का एकीकरण या अस्तित्व, या शारीरिक पोषण — यही वह रूप है जो पकड़ का परिणाम नहीं है।

[655] वह कौन सा रूप है जो पकड़ का कारण भी है और पकड़ के लिए अनुकूल भी है (उपादिन 'उपादानियम)?

पाँचों इंद्रियों,

स्त्रीत्व, पुरुषत्व और प्राण शक्ति के क्षेत्र, या कर्मों के फलस्वरूप विद्यमान कोई भी अन्य रूप, चाहे वह दृश्य रूपों, गंधों, स्वादों या स्पर्शनीय

रूप में हो। [पृष्ठ 203]

अंतरिक्ष या तरलता के तत्वों में,
एकीकरण में,
या रूप का अस्तित्व
या शारीरिक पोषण में निहित अस्तित्व—यह वह रूप है जो पकड़ का परिणाम भी है और पकड़ के लिए अनुकूल भी है।
[656] वह कौन सा रूप है जो पकड़ का विषय नहीं है, बल्कि पकड़ के लिए अनुकूल है (अनुपदिन्न उपादनीयम्)?[88]
ध्वनि,
शारीरिक और स्वर संकेत, रूप
की हल्कापन,
लचीलापन,
सुगमता,
क्षय और अनित्यता का क्षेत्र, या कोई भी अन्य रूप जो कर्म के कारण नहीं है, चाहे वह
दृश्य रूपों के क्षेत्र में हो,[89] गंध,
स्वाद,
स्पर्शनीय,
अंतरिक्ष या तरलता के तत्व में,
एकीकरण में,
या रूप का अस्तित्व,
या शारीरिक पोषण में - यह वह रूप है जो पकड़ का परिणाम नहीं है बल्कि पकड़ के लिए अनुकूल है।
[657] वह कौन सा रूप है जो दिखाई देता है?
दृश्य रूपों का क्षेत्र—यह वह रूप है जो दिखाई देता है।
[658] वह कौन सा रूप है जो अदृश्य है?
दृष्टि का क्षेत्र... और शारीरिक पोषण - यह वह रूप है जो अदृश्य है।[90]

[पृष्ठ 204] [659] वह कौन सा रूप है जो प्रतिक्रिया करता है और प्रभाव डालता है[91] (सप्पतिघम)? दृष्टि,
श्रवण,
गंध,
स्वाद,
देह-संवेदना के क्षेत्र ;

दृश्य रूपों,
ध्वनियों,
गंधों,
स्वादों, स्पर्शनीय वस्तुओं के क्षेत्र
—यह वह रूप है जो प्रतिक्रिया करता है और प्रभाव डालता है।
[660] वह कौन सा रूप है जो प्रतिक्रिया नहीं करता या टकराता नहीं है?
नारीत्व...और शारीरिक पोषण
— यह वह रूप है जो प्रतिक्रिया नहीं करता या प्रभाव नहीं डालता।
[661] वह कौन सा रूप है जो संकाय (इन्द्रियम) है?
दृष्टि,
श्रवण,

गंध,
स्वाद,
देह-संवेदनशीलता,
स्त्रीत्व,
पुरुषत्व,
जीवन शक्ति की संकाय (या व्यक्तिगत क्षमताएँ)[92] - यही वह रूप है जो संकाय है।
[662] वह कौन सा रूप है जो संकाय नहीं है?
दृश्य रूप के क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण — यह वह रूप है जो संकाय नहीं है।[93]
[पृष्ठ 205] [663] वह कौन सा रूप है जो महान घटना (महाभूतम्) है?
मूर्त का क्षेत्र और तरलता का तत्व—यही वह रूप है जो महान घटना है।
[664] वह कौन सा रूप है जो महान घटना नहीं है?
दृष्टि का क्षेत्र... और शारीरिक पोषण - यह वह रूप है जो महान घटना नहीं है।[94]
[665] वह कौन सा रूप है जो संकेत (विन्नट्टी) है?
शारीरिक और मुखर संकेत [95] — यह वह रूप है जो संकेत है।
[666] वह कौन सा रूप है जो संकेत नहीं है?
दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो संकेत नहीं है।
[667] वह कौन सा रूप है जो विचार से उत्पन्न होता है (चित्त-समुत्थानम्)? [96]

[पृष्ठ 206] शारीरिक और मौखिक संकेत, या विचार से उत्पन्न होने वाला, विचार के कारण उत्पन्न होने वाला कोई भी अन्य रूप, उसका स्रोत विचार में ही है, चाहे वह दृश्य रूपों,
ध्वनियों,
गंधों,
स्वादों या स्पर्शनीय वस्तुओं के क्षेत्र में हो ।
स्थानिक
या तरल तत्व में,
रूप की हल्कापन,
लचीलापन,
सुगमता,
एकीकरण या अस्तित्व में, या शारीरिक पोषण में—यही वह रूप है जो विचार से उत्पन्न होता है।

[668] वह कौन सा रूप है जो विचार से उत्पन्न नहीं होता? पाँचों इंद्रियों,
स्त्रीत्व,
पुरुषत्व और जीवन शक्ति का क्षेत्र ।
रूप का क्षय और क्षणभंगुरता, या कोई भी अन्य रूप जो विचार से उत्पन्न नहीं होता, विचार के कारण नहीं बनता, जिसका स्रोत विचार में नहीं होता, चाहे वह
दृश्य रूपों,
ध्वनियों,
गंधों,
स्वादों
या स्पर्शनीय वस्तुओं के क्षेत्र में हो,

स्थानिक या तरल तत्व में,
हल्केपन,
लचीलेपन
और सुगमता में,
रूप का एकीकरण या अस्तित्व,
या शारीरिक पोषण में निहित रूप—यह वह रूप है जो विचार से उत्पन्न नहीं होता।
[669] वह कौन सा रूप है जो विचार के साथ अस्तित्व में आता है (चित्त-सह-भू)?
[670] वह कौन सा रूप है जो विचार के साथ अस्तित्व में नहीं आता?
उत्तर वही होंगे जो पिछले रिश्तेदारों के जोड़े में दिए गए हैं।
[671] वह कौन सा रूप है जो विचार के बाद आता है (चित्त अनुपरिवत्ति)?
[672] वह कौन सा रूप है जो विचार के अनुरूप नहीं है?
उत्तर वही होंगे जो पिछले रिश्तेदारों के जोड़े में दिए गए हैं।
[पृष्ठ 207] [673] वह कौन सा रूप है जो आत्मा (अज्जत्तिकम्) से संबंधित है?[97]
पांचों इंद्रियों के क्षेत्र—यही वह रूप है जो आत्मा से संबंधित है।
[674] वह कौन सा रूप है जो (स्वयं से) बाह्य है?
पांच प्रकार की इंद्रिय-वस्तुओं का क्षेत्र . . .[98] और शारीरिक पोषण — यह वह रूप है जो (स्वयं से) बाह्य है।
[675] वह कौन सा रूप है जो स्थूल (ओलारिकम) है?
पांचों इंद्रियों और पांचों प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र—यही वह स्थूल रूप है।
[676] वह कौन सा रूप है जो सूक्ष्म (सुखुमम) है?
[पृष्ठ 208] नारीत्व . . . और शारीरिक पोषण — यही वह रूप है जो सूक्ष्म है।[99]
[677] वह कौन सा रूप है जो दूरस्थ (दौरान) है?
नारीत्व...और शारीरिक पोषण—यही वह रूप है जो दूरस्थ है।
[678] वह कौन सा रूप है जो निकट है (संतिके)?
पांचों इंद्रियों और पांचों प्रकार की इंद्रिय-वस्तुओं के क्षेत्र—यही वह रूप है जो निकट है।[100]

[पृष्ठ 209] [आधार (वत्थु).][101]
[679] वह कौन सा रूप है जो दृश्य संपर्क का आधार है (चक्खुसम्फसस्सा वत्थु)?
दृष्टि का दायरा—यह वह रूप है जो दृश्य संपर्क का आधार है।
[680] वह कौन सा रूप है जो दृश्य संपर्क का आधार नहीं है?
श्रवण क्षेत्र . . .[102] और शारीरिक पोषण — यह वह रूप है जो नहीं है, इत्यादि।
[पृष्ठ 210] [681] वह कौन सा रूप है जो भावना का आधार है...
धारणा का...
सोच का...
दृश्य अनुभूति का जो दृश्य संपर्क से उत्पन्न होती है?
दृष्टि का क्षेत्र — यह वह रूप है जो दृश्य अनुभूति[103] का आधार है जो दृश्य संपर्क से उत्पन्न होती है।
[682] वह कौन सा रूप है जो दृश्य संपर्क से उत्पन्न दृश्य अनुभूति का आधार नहीं है?
श्रवण क्षेत्र... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो दृश्य संपर्क से उत्पन्न दृश्य अनुभूति का आधार नहीं है।
[683] वह कौन सा रूप है जो आधार है?
श्रवण . . .
घ्राण . . .
स्वाद . . .[104]

शारीरिक संपर्क? . . .[105] शारीरिक संवेदनशीलता का क्षेत्र — यह वह रूप है जो . . . शारीरिक संपर्क का आधार है।

[684] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक संपर्क का आधार नहीं है?

[पृष्ठ 211] दृष्टि का क्षेत्र... और शारीरिक पोषण - यह वह रूप है जो... शारीरिक संपर्क का आधार नहीं है।

[685] वह कौन सा रूप है जो आधार है?

वह अनुभूति...

वह बोध...

वह सोच...

वह... शरीर का वह ज्ञान जो... शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होता है?

शरीर की संवेदनशीलता का क्षेत्र... यही वह रूप है जो शरीर के उस ज्ञान का आधार है जो शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होता है।

[686] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक संपर्क से उत्पन्न शरीर की अनुभूति का आधार नहीं है?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो शरीर से उत्पन्न ज्ञान आदि का आधार नहीं है।

[मानसिक वस्तु या विचार (अरम्मनम)।]

[687] वह कौन सा रूप है जो दृश्य संपर्क में वस्तु है?

दृश्य रूपों का क्षेत्र — यह वह रूप है जो दृश्य संपर्क में आने वाली वस्तु है।

[688] वह कौन सा रूप है जो दृश्य संपर्क में वस्तु नहीं है?

दृष्टि का क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण[106] — यह वह रूप है जो नहीं है, इत्यादि।

[689] वह कौन सा रूप है जो वस्तु है?

वह अनुभूति...

वह बोध...

वह सोच...

वह दृश्य अनुभूति जो दृश्य संपर्क से उत्पन्न होती है?

[पृष्ठ 212] दृश्य रूपों का क्षेत्र — यह वह रूप है जो वस्तु है... दृश्य अनुभूति में जो दृश्य संपर्क से उत्पन्न होती है।

[690] वह कौन सा रूप है जो [107] दृश्य संपर्क से उत्पन्न दृश्य अनुभूति में वस्तु नहीं है?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो वस्तु नहीं है, इत्यादि।

[691] वह कौन सा रूप है जो वस्तु है?

श्रवण...

गंध...

स्वाद...

शारीरिक संपर्क? . . . का क्षेत्र — यह वह रूप है जो . . . शारीरिक संपर्क में वस्तु है।

[692] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक संपर्क में वस्तु नहीं है?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो शारीरिक संपर्क में आने वाली वस्तु नहीं है।

[693] वह कौन सा रूप है जो वस्तु है?

वह अनुभूति...

वह बोध...

वह सोच...

वह... शरीर का वह ज्ञान जो... शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होता है?

मूर्त का क्षेत्र—यह वह रूप है जो शरीर के संज्ञान में वस्तु है जो शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होता है।

[पृष्ठ 213] [694] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक संपर्क से उत्पन्न शरीर की अनुभूति में वस्तु नहीं है?

दृष्टि का क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण[108] — यह वह रूप है जो वस्तु नहीं है, इत्यादि।

[इंद्रियों का क्षेत्र (आयतनम्)।]

[695] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि का क्षेत्र है?

आँख, यानी, वह सचेत अंग जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होता है... यह जो 'एक खाली गाँव' है - यह वह रूप है जो दृष्टि का क्षेत्र है।[109]

[696] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि के दायरे में नहीं आता?

श्रवण क्षेत्र...और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो दृष्टि क्षेत्र नहीं है।

[697] वह कौन सा रूप है जो श्रवण... गंध... स्वाद... शारीरिक संवेदनशीलता का क्षेत्र है?

शरीर, यानी वह सजीव अंग जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होता है... यह 'एक खाली गाँव' है - यह वह रूप है जो... शरीर-संवेदनशीलता का क्षेत्र है।

[698] वह कौन सा रूप है जो . . . शारीरिक संवेदनशीलता के क्षेत्र में नहीं आता?

[पृष्ठ 214] दृष्टि का क्षेत्र... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो नहीं है, इत्यादि।

[699] वह कौन सा रूप है जो दृश्य रूपों का क्षेत्र है?

वह रूप जो चार महान घटनाओं से व्युत्पन्न होकर रंग के रूप में प्रकट होता है... यह... जो दृश्य रूप का घटक तत्व है - यही वह रूप है जो दृश्य रूपों का क्षेत्र है।

[700] वह कौन सा रूप है जो दृश्य रूपों के क्षेत्र में नहीं आता?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो अस्तित्व में नहीं है, इत्यादि।

[701] वह कौन सा रूप है जो गोले का है?

ध्वनि,

गंध,

स्वाद,

स्पर्शनीय? मिट्टी (ठोस) तत्व... यह वह है... स्पर्शनीय का तत्व - यह वह रूप है जो स्पर्शनीय का क्षेत्र है।[110]

[702] वह कौन सा रूप है जो . . . मूर्त के क्षेत्र में नहीं आता?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो अस्तित्व में नहीं है, इत्यादि।

[तत्व (धातु).]

[703] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि का तत्व है?

दृष्टि का क्षेत्र—यह वह रूप है जो दृष्टि का तत्व है।

[पृष्ठ 216] [704] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि का तत्व नहीं है?

श्रवण क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण[111] — यह वह रूप है जो दृष्टि का तत्व नहीं है।

[705] वह कौन सा रूप है जो दृश्य रूप का तत्व है?

दृश्य रूप का क्षेत्र—यह वह रूप है जो दृश्य रूप का तत्व है।

[706] वह कौन सा रूप है जो दृश्य रूप का तत्व नहीं है?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो अस्तित्व में नहीं है, इत्यादि।

[707] वह कौन सा रूप है जो ध्वनि का तत्व है... गंध का... स्वाद का... स्पर्शनीय का?

. . .[112] मूर्त का क्षेत्र — यह वह रूप है जो . . . मूर्त का तत्व है।

[708] वह कौन सा रूप है जो . . . मूर्त का तत्व नहीं है?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो... मूर्त का तत्व नहीं है।

[संकाय (इन्द्रियम).]

[709] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि की क्षमता है?
आँख, यानी, वह सचेत अंग जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होता है... यह जो 'एक खाली गाँव'[113] है - यह वह रूप है जो दृष्टि की क्षमता है।
[710] वह कौन सा रूप है जो दृष्टि की क्षमता नहीं है?
[पृष्ठ 216] श्रवण क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण[114] — यह वह रूप है जो नहीं है, इत्यादि।
[711] वह कौन सा रूप है जो श्रवण . . . गंध . . . स्वाद . . . . देह-संवेदना की क्षमता है?
शरीर . . .[115], यानी, सचेत सिद्धांत, जो चार महान घटनाओं से प्राप्त होता है . . . यह जो 'एक खाली गाँव' है - यह वह रूप है जो . . . शरीर-संवेदनशीलता की क्षमता है।
[712] वह कौन सा रूप है जो . . . शारीरिक संवेदनशीलता की क्षमता नहीं है?
दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो अस्तित्व में नहीं है, इत्यादि।
[713] वह कौन सा रूप है जो स्त्रीत्व है (शाब्दिक रूप से, स्त्री क्षमता या संभाव्यता)?[116]
जो स्त्रीत्व से संबंधित है, जो दिखने में, विशेषताओं में, व्यवसाय में और व्यवहार में स्त्रीत्व से भरपूर है, जो स्थिति और अस्तित्व में स्त्रीत्व से भरपूर है - यही वह रूप है जो स्त्रीत्व है।
[713ए] वह कौन सा रूप है जो स्त्रीत्व नहीं है?
दृष्टि का क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण — यह वह रूप है जो नहीं है, इत्यादि।[117]
[714] वह कौन सा रूप है जो पुरुषत्व है?
जो पुरुष से संबंधित है, जो दिखने में, विशेषताओं में, व्यवसाय में और व्यवहार में पुरुषोचित है, जो स्थिति और अस्तित्व में पुरुषोचित है - यही वह रूप है जो पुरुषोचितता है।
[715] वह कौन सा रूप है जो पुरुषत्व नहीं है?
धारा 713ए.[118] के अनुसार उत्तर दें।
[पृष्ठ 217] [716] वह कौन सा रूप है जो (जीवन शक्ति की) क्षमता है?
इन शारीरिक अवस्थाओं की निरंतरता, उनका अस्तित्व, उनका निरंतर चलना, उनका निरंतर जारी रहना, उनकी प्रगति, निरंतरता, संरक्षण, जीवन, एक क्षमता के रूप में जीवन - यही वह रूप है जो जीवन शक्ति (की क्षमता) है।
[717] वह कौन सा रूप है जो जीवन शक्ति (की क्षमता) नहीं है?
धारा 713ए के अनुसार उत्तर दें।

[सूचना (vinnatti).]
[718] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक संकेत है?

धारा 636 के अनुसार उत्तर दें।
[719] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक संकेत नहीं है?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यही वह रूप है जो शारीरिक संकेत है।
[720] वह कौन सा रूप है जो मौखिक संकेत है?

धारा 637 के अनुसार उत्तर दें।
[721] वह कौन सा रूप है जो मौखिक संकेत नहीं है?

दृष्टि का क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण — यह वह रूप है जो नहीं है, इत्यादि।[119]

[अंतरिक्ष और तरल पदार्थ।][120]

[722] वह कौन सा रूप है जो अंतरिक्ष का तत्व है?

जो अंतरिक्ष है और अंतरिक्ष से संबंधित है, जो आकाश है और आकाश से संबंधित है, जो निर्वात है और निर्वात से संबंधित है, और जो चार महान घटनाओं के संपर्क में नहीं है - यही वह रूप है जो अंतरिक्ष का तत्व है।

[पृष्ठ 218] [723] वह कौन सा रूप है जो अंतरिक्ष का तत्व नहीं है?

धारा 721 के अनुसार उत्तर दें।

[724] वह कौन सा रूप है जो तरलता का तत्व है?

जो तरल है और तरल से संबंधित है, जो चिपचिपा है और चिपचिपे से संबंधित है; रूप की एकजुटता — यही वह रूप है जो तरलता का तत्व है।

[725] वह कौन सा रूप है जो तरलता का तत्व नहीं है?

उत्तर m § 721 के अनुसार दें।

[रूप के तरीके।]

[726] वह कौन सा रूप है जो रूप की हल्कापन है?

रूप की वह हल्कापन जो उसकी आसानी से बदलने की क्षमता है, उसकी सुस्ती और जड़ता से मुक्ति है - यही वह रूप है जो रूप का हल्कापन है।

[727] वह कौन सा रूप है जो रूप की हल्कापन नहीं है?

दृष्टि का दायरा... और शारीरिक पोषण—यह वह रूप है जो रूप की हल्कापन नहीं है।

[728-731]

रूप की अन्य दो विधाओं 'प्लास्टिसिटी' और 'विल्डिनेस' से संबंधित प्रश्नों का उत्तर §§ 640, 641 में दिए गए विवरणों द्वारा दिया गया है। संबंधित विरोधाभासी शब्दों का वर्णन § 727 के समान शब्दों में किया गया है, अर्थात्: § 596 के अनुसार, पृष्ठ 216, नोट 5 पर दर्शाए गए लोप और सम्मिलन के साथ।

[रूप का विकास।]

[732] वह कौन सा रूप है जो रूप का एकीकरण है?

जो रूप का संचय है, वही रूप का एकीकरण है—यही वह रूप है जो विद्यमान है, इत्यादि।

[733] वह कौन सा रूप है जो रूप का एकीकरण नहीं है?

[पृष्ठ 219] दृष्टि का क्षेत्र... और शारीरिक पोषण —यह वह रूप है जो नहीं है, इत्यादि।

[734-737]

रूप की 'अस्तित्व', 'क्षय' और 'अस्थिरता' तथा उनके विरोधाभासों पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर 'रूप के तरीके' समूह में पूछे गए प्रश्नों के अनुरूप दिया गया है, तीन सकारात्मक पहलुओं का वर्णन §§ 642-645 में किया गया है।

[पोषण।]

[740] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक पोषण है?

इसका उत्तर धारा 646 में दिया गया है।

[741] वह कौन सा रूप है जो शारीरिक पोषण नहीं है?

दृष्टि का दायरा... और रूप की अस्थिरता—यही वह रूप है जो शारीरिक पोषण नहीं है।

ये द्वैत पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणियाँ हैं।
जोड़ियों की व्याख्या का अंत।
- फुटनोट:

1. यह और इसके बाद के इटैलिक में लिखे शीर्षक विषय-सूची, § 585, इत्यादि से उद्धृत किए गए हैं — atthi rupam upada, और फिर से, atthi rupam no upada। अपादान क्रिया हमारे मुहावरे 'qua derived' — रूप व्युत्पन्न के रूप में — से मिलती जुलती है। § 584 और § 597, इत्यादि में क्रियापद up ad ay a का प्रयोग किया गया है। निर्भर करना, मुक्त नहीं होना, इसका भावार्थ है (Asl. BOO, 305)। 'ग्राउंडेड इन' एक अनुमानित अनुवाद था, जिसका शाब्दिक अर्थ 'पकड़ लेना' है।

2. आयतनम। इस शब्द का अर्थ (मेरी प्रस्तावना देखें) सरलतः 'क्षेत्र', स्थान, सीमा, गेबिएट है।

3. शाब्दिक अर्थ: शरीर। उपनिषदों में 'त्वचा' शब्द का प्रयोग किया गया है। हमारे आधुनिक शब्द 'त्वचा संवेदनशीलता' से तुलना करें, जो 'स्पर्श' का विस्तारित रूप है, यानी 'स्पर्शी इंद्रिय'। संबंधित वस्तुनिष्ठ 'स्पष्ट क्षेत्र' को व्युत्पन्न वस्तुओं में वर्गीकृत किया गया है। अनुच्छेद 647 देखें।

4. चक्खु, जिसका अर्थ है दृष्टि, देखने की क्षमता और आँख। हालाँकि, इस संदर्भ में 'आँख' को देखने की क्षमता या दृश्य इंद्रिय के रूप में समझा जाना चाहिए, न कि किसी शारीरिक अंग या 'मांस-चक्खु' के रूप में। शास्त्र में आँख का वर्णन इस प्रकार है: सर्वप्रथम संपूर्ण जीव (ससंभर-चक्खु)। एक गुहा में स्थित मांस का गोला, जो नीचे सॉकेट-हड्डी और ऊपर भौंह की हड्डी से, किनारों पर आँख के कोणों से, भीतर मस्तिष्क से और बाहर पलकों से घिरा होता है।
इसमें चौदह घटक हैं:
चार तत्व,
उन पर निर्भर छह गुण, अर्थात् रंग, गंध, स्वाद, जीवन का रस, रूप (संथानम) और संयोजन (संभवो);
जीवन शक्ति,
प्रकृति,
शरीर संवेदनशीलता (कयप्पसाडो)
और दृश्य संवेदी अंग।
अंतिम चार का मूल कर्म में निहित है।
जब 'संसार' किसी स्पष्ट रूप से फैली हुई श्वेत वस्तु को देखकर आँख को महसूस करता है, तो वह केवल आँख के आधार (या स्थान - वस्तु) को ही महसूस करता है। और यह मांस का गोला, जो तंत्रिका तंतुओं द्वारा मस्तिष्क से जुड़ा है, श्वेत, काला और लाल है, और इसमें ठोस, द्रव, प्रकाशमान और गैसीय पदार्थ समाहित हैं। यह रसों की अधिकता के कारण श्वेत, पित्त की अधिकता के कारण काला, रक्त की अधिकता के कारण लाल, ठोस की अधिकता के कारण कठोर, द्रव की अधिकता के कारण द्रवयुक्त, प्रकाशमान की अधिकता के कारण प्रज्वलित और गैसीय की अधिकता के कारण कंपकंपीशील है। परन्तु वह संवेदी अंग (पास अदो) जो वहाँ स्थित है, अंतर्निहित है, और चार महान सिद्धांतों से उत्पन्न है - यही दृश्य इंद्रिय (पासदचक्खु) है।
संयुक्त आँख के काले वृत्त के मध्य और सामने स्थित, उसके चारों ओर सफेद वृत्त (ध्यान दें कि परितारिका या तो स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती है या स्वयं ही 'काला वृत्त' है) और दृष्टि के वृत्त में, उस क्षेत्र में जहाँ आस-पास के शरीरों के आकार दिखाई देने लगते हैं (यहाँ पाठ में कुछ चूक प्रतीत होती है), यह सात नेत्र झिल्लियों में इस प्रकार व्याप्त है जैसे छिड़का हुआ तेल सात रुई की बत्तियों में व्याप्त हो जाता है। और इस प्रकार यह चार तत्वों की सहायता से, पोषण करते हुए, बांधते हुए, परिपक्व होते हुए, गतिमान (समुदिरण) - एक शिशु राजकुमार और उसकी चार दाइयों की तरह, जो उसे खिलाती, नहलाती, कपड़े पहनाती और पंखा झुलाती हैं - शारीरिक (उतु) और मानसिक दोनों प्रकार के पोषण से पोषित, जीवन की (सामान्य) अवधि द्वारा संरक्षित, रंग, गंध, स्वाद आदि से युक्त, आकार में एक जूँ के सिर के बराबर - विधिवत रूप से दृश्य ज्ञान के केंद्र का द्वार स्थापित करता है।
जैसा कि धर्मगुरु (सारिपुत्त) ने कहा है: जिस दृष्टि से वह रूपों को देखता है,

वह छोटी और नाजुक होती है, मानो जूं के सिर के समान हो। मूल पाठ में इस अनुच्छेद की विस्तृत संरचना टीकाकार की शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। 'ज्ञान' के बाद 'आदि' शब्द का क्या अर्थ है, यह मुझे स्पष्ट नहीं है। लेकिन यह अभिव्यक्ति प्रत्येक इंद्रिय के वर्णन में आती है। हार्डी की पुस्तक 'मैन ऑफ बुद्धिज्म', पृष्ठ 419 में दिए गए वर्णन को देखें।

5. पसादो। साई. आगे कहते हैं कि इस शब्द का चयन करके, बुद्ध ने दूसरी (भौतिक) आंख को अस्वीकार कर दिया। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, पिछली टिप्पणी में उद्धृत अब तक अज्ञात श्लोक ही एकमात्र प्रारंभिक उदाहरण हैं जहाँ पसादो शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है स्पष्टता, चमक, शांति, विश्वास, और यह शब्द ग्रहणशील और प्रतिक्रियाशील इंद्रिय-क्रिया को दर्शाता है। यह समझना आसान नहीं है कि बौद्धों ने इस संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग कैसे किया। इसका प्रयोग अन्य सभी इंद्रियों के लिए समान रूप से किया जाता है, इसलिए इंद्रिय संबंधी अर्थ का दृष्टि की विशिष्ट प्रकृति से कोई संबंध नहीं था (जब तक कि इसे अन्य सभी संवेदनाओं का प्रतीक न बना दिया गया हो)। कारणवाचक रूप से लेने पर इसका अर्थ संभवतः या तो वह हो सकता है जो स्पष्ट करता है - एक प्रकटकर्ता, मानो {cf. बोथल और कोथ - प्रसादन}, या वह जो संतुष्ट करता है {बेरुहिगेन}, दोनों अर्थ 'उत्पाद' या 'आधार' के बजाय मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया पर जोर देते हैं।

6.अत्तभाव-परियपन्नो। 'यहाँ शरीर और पाँच स्कंधों को आत्मा का स्वरूप कहा गया है, मूर्ख लोगों की उस प्रथा के अनुसार जो कहते हैं, "यह मैं ही हूँ"
(असल. 308).
इस प्रकार, 'अत्तभावो' का प्रयोग महान गुरु द्वारा जीववादी शब्दावली के प्रति एक रियायत थी।

7. 'अर्थात, प्रभाव और प्रतिक्रिया आंख में ही स्थापित हो जाते हैं'
(वही)।

8. ayam satto द्वारा पुनर्कथन किया गया, कोई भी दिया गया व्यक्ति (ibid.).

9. यह और इसके बाद की उपमाएँ सुत्त पिटक में इंद्रियों पर लागू किए गए रूपकों के उद्धरण हैं। उदाहरण के लिए, 'खाली गाँव' की उपमा श्लोक 4, 174 में मिलती है।
- सुन्नो गमो ति खो, भिक्खवे, चन्नम अज्झत्तिकाणं [? आयतनं] अधिवचनम्।
'द्वार' शब्द का प्रयोग, जो टीकाओं के युग में इंद्रिय-अंग के लिए नियमित शब्द था, मेरा मानना है कि सुत्त पिटक में शायद ही कभी किया जाता है, और वह भी केवल एक काव्यात्मक अलंकार के रूप में, तकनीकी शब्द के रूप में नहीं।
Cf., उदाहरण के लिए, indriyesuguttadvaro (डी आई., 63, 250)।
बुद्धघोष ने विभिन्न उपमाओं का सरल शब्दों में पुनर्कथन किया है।
क्षय और क्षीणता के कारण 'संसार';
'द्वार', प्रथागत उपयोग के कारण;
'महासागर', अपनी अतृप्तता के कारण;
'प्रकाशमान', अपनी शुद्धता के कारण;
संपर्क आदि के उत्पन्न होने (विकास) के कारण 'क्षेत्र';
'आधार', अपने निश्चित स्थान के कारण;
'मार्गदर्शन', 'मार्गदर्शन', क्योंकि यह आत्म-प्रकृति को दर्शाने में अग्रणी भूमिका निभाता है, जिसमें सहमति और मतभेद दोनों दिखाई देते हैं;
'यहाँ का किनारा', क्योंकि यह 'इस जीवन के शरीर' (या व्यक्तित्व, सक्कयम) में समाहित है;
'खाली गाँव', क्योंकि यह कई लोगों के लिए सामान्य है, क्योंकि यहाँ कोई मुखिया नहीं है (अर्थात, अहंकार या आत्मा। 'कई' का अर्थ है व्यक्ति को घटकों के समूह के रूप में माना जाना चाहिए।)

यह देखा जा सकता है कि 'मार्गदर्शन' और 'मार्गदर्शन' को छोड़कर, सभी उपमाओं का प्रयोग शेष सभी अर्थों के लिए समान रूप से किया गया है। साईं पिटकों में दी गई इन दो उपमाओं की व्याख्या के अनुसार, इन्हें प्रत्येक अर्थ के लिए ही प्रयोग किया जाना चाहिए था। हालांकि, पिटकों में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों के लिए बुद्धघोष जिम्मेदार नहीं हैं। फिर भी, यह थोड़ा निराशाजनक है कि वे इस चूक का स्पष्टीकरण देने का कोई प्रयास नहीं करते, जबकि इसका मनोवैज्ञानिक औचित्य अवश्य है।

10. इस उत्तर में, सी.वाई. (पृष्ठ 309) के अनुसार, अनैच्छिक दृश्य संवेदना का वर्णन किया गया है, जैसे कि जब बिजली किसी ऐसे व्यक्ति की दृष्टि में चमकती है जो उसे नहीं देख रहा होता है।

11. यहाँ (असली. 309) स्वैच्छिक इंद्रिय-छाप का वर्णन किया गया है - उस प्रक्रिया का वर्णन किया गया है जब कोई व्यक्ति 'अपनी इच्छा से किसी वस्तु को देखने की कोशिश करते हुए अपनी दृष्टि को केंद्रित करता है'।

12.चक्कम निस्साय, रूपम अरबभा।

13. यहां पाठ में ... pe ... होना चाहिए, जैसा कि अन्य चार अर्थों के लिए संबंधित अनुच्छेद में है। नोट 4 देखें। K में भी यह अनजाने में छूट गया है।

14. यहां चक्खुविनफियानानी, चेतना के चौथे प्रकार (चेतना) या विचार को प्रतिस्थापित करता है, जो पुस्तक I, अध्याय i में दिए गए आठ प्रकार के विचारों के संदर्भ में 'संपर्क' द्वारा उत्पन्न होने वाली चेतना की श्रृंखला में सर्वत्र वर्णित है। चिंतन (चेतना) विचारों की एक ऐसी श्रृंखला को दर्शाता है जो संवेदना द्वारा उत्पन्न होती है और जिसका दृश्य वस्तु से कोई विशेष संबंध नहीं होता। दूसरी ओर, दृश्य संज्ञान देखी गई वस्तु को विशेष रूप से ध्यान में रखता है। या संभवतः इन दोनों को लगभग प्रक्रिया और उत्पाद के अनुरूप माना जा सकता है। दोनों शब्दों के बारे में ऊपर कही गई बातों की तुलना करें, पृष्ठ 8, नोट 1।

15. के द्वारा § § 604, 608, 612, 616 में संबंधित अंशों और बुद्धघोष की टिप्पणियों को देखते हुए, मुझे लगता है कि निम्नलिखित अंश को गलती से पाठ में चक्खुम पेटम शब्दों से पहले छोड़ दिया गया है: - ... पे ... यम चक्खुम निस्साया रूपरम्मानो चक्खुसम्फसो उप्पाज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिसति वा उप्पज्जे वा, यम चक्खुम निस्साय रूपरम्मना चक्खुसमफस्सज वेदना...पे...सन्ना...पे...चेतना...पे...चक्कुविन्नानं उप्पज्जि वा उपप्पज्जति वा उप्पज्जि वा उप्पज्जे वा।
धारा 620 भी देखें।

16. साइ. (310) के अनुसार, इस उत्तर को पूरी तरह से दोहराने पर दस अलग-अलग उत्तर प्रकट होते हैं, जिनमें से प्रत्येक की शुरुआत इस वाक्यांश से होती है: 'अर्थात आँख', इत्यादि, 'स्वयं, अदृश्य और प्रतिक्रियाशील'। इन्हें संक्षेप में और सामान्यीकृत रूप से इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है: (i.) इंद्रिय-अंग और इंद्रिय-उत्तेजनाओं द्वारा वातानुकूलित इंद्रिय-अनुभूति या संपर्क।
(ii.) परिणामी भावना।
(iii.-v.) परिणामी बौद्धिक अवस्थाएँ।
(vi.) इंद्रिय-अंग और इंद्रिय-विषय के विचार द्वारा वातानुकूलित इंद्रिय-अनुभूति या संपर्क। (vii.-x.) (ii.-v.)
में वर्णित परिणामी अवस्थाएँ । (i.) और (vi.) नामक प्रक्रियाओं के बीच सटीक अंतर क्या था, यह अभी तक निश्चित रूप से निर्धारित करना आसान नहीं है।

17. यह, कान के समग्र अंग के भीतर स्थित है, और बारीक लाल बालों से अच्छी तरह से सुसज्जित है, और इसका आकार एक छोटी उंगली के आकार (अंगुली-वेथानाका) जैसा है। (असल. 310.) तुलना करें हार्डी, लोक. सीआई7.

18. 'मार्गदर्शक' आदि के लोप पर, पृष्ठ 175, नोट 4 देखें।

19. यह 'संपूर्ण नासिका अंग की गुहा के भीतर स्थित है, जो देखने में बकरी के खुर जैसा दिखता है'। (असल. 310)। तुलना करें हार्डी, लोक. सिट. संभवतः खुर की कल्पना नीचे से की गई है।

20. यह 'संपूर्ण स्वाद तंत्र के मध्य भाग के ऊपर स्थित है, देखने में कमल के पत्ते के ऊपरी भाग जैसा'। (असल., वही) तुलना करें हार्डी, उद्धृत स्थान। ऐसा प्रतीत होता है कि तालु को स्वाद तंत्र में शामिल नहीं किया गया था।

21. कायो का क्षेत्र— टिप्पणी इस प्रकार है (AsL 311)— पूरे शरीर पर इस प्रकार फैला हुआ है जैसे तेल सूती कपड़े में समा जाता है। अपेक्षाकृत अविभेदित अंग के इस गुण को छोड़कर, यह इंद्रिय अन्य इंद्रियों के साथ समन्वित है। इस आपत्ति के उत्तर में कि यदि संवेदी सतह वास्तव में इतनी व्यापक हो कि वह भ्रमित अनुभूतियाँ उत्पन्न करे, यह प्रतिवाद किया जाता है कि यदि वह इतनी व्यापक न हो, तो स्पर्श अनुभूतियों को पर्याप्त रूप से विभेदित नहीं किया जा सकता। वास्तव में, शरीर-इंद्रिय सर्वव्यापी भी है और सर्वव्यापी नहीं भी। सर्वव्यापी इस हद तक नहीं कि वह देखी या चखी गई वस्तुओं में भी मौजूद हो।

हम संवेदनाओं को रेत के कणों की तरह अलग-अलग करके उनका विश्लेषण नहीं कर सकते, इसीलिए कहा जाता है कि गुण वस्तु में समाहित हो जाते हैं। फिर भी, प्रत्येक इंद्रिय अपने विशिष्ट संदेश देती है।
पश्चिमी मनोविज्ञान के संदर्भ में मैंने जो कुछ संक्षेप में प्रस्तुत किया है, उसका सार मुझे यही प्रतीत होता है। यह टीका, बेशक, इंद्रियों के सिद्धांत के अन्य पहलुओं की तरह ही, प्रारंभिक और अनिश्चित है; फिर भी यह नहीं भूलना चाहिए कि लगभग पचास वर्ष पहले ही अर्न्स्ट वेबर की पुस्तक 'डेर टास्टसिन अंड दास गेमिंगेफिल' प्रकाशित हुई थी, जिसमें त्वचा के विभिन्न क्षेत्रों की स्पष्ट या अस्पष्ट स्पर्श संवेदनाओं को व्यक्त करने की क्षमता की तुलना के सकारात्मक परिणाम प्रस्तुत किए गए थे।

22. शाब्दिक अर्थ, शारीरिक संपर्क।

23. शाब्दिक रूप से, शरीर का संज्ञान, जैसा कि धारा 443 अनुक्रम में वर्णित है।

24. सप्पतिघम, यहाँ इसका अर्थ है प्रतिक्रिया और प्रभाव उत्पन्न करना (जनकम)। असल. 317.

25. उम्मापुप्पम, या अलसी के फूल की तुलना में। ऊपर अनुच्छेद 246 के अंतर्गत नीलम पर मेरी टिप्पणी देखें। यहाँ इस शब्द को एक नीले फूल द्वारा दर्शाया गया है, जिसे हम स्वयं नीले रंग के एक प्रकार के रूप में उद्धृत कर सकते हैं। फिर भी यहाँ भी शब्द की व्यापकता और अनिश्चितता व्यक्त होती है। क्योंकि हेमचंद्र के हवाले से बोथल और इओथ के अनुसार, उमा का प्रयोग रात के लिए किया जाता है।

26. जैसे कि क्रमशः प्टेरोस्पर्मम एसरीफोलियम और पेंटापेट्रो फोएनिसिया के फूल (वही)। मैं इन्हें चाइल्डर्स के संदर्भ में दे रहा हूँ।

27. जैसे भोर का तारा और कोयला (वही)।

28. विटेक्स नेगिउइडो और कनाविरा वृक्षों की लाल कलियों की तरह (वही)।

29. हरि, पाठ में छोड़ा गया है, लेकिन के. और सी. में दिया गया है (वही)।

जबकि, 'हरित्तचहेमवन्नम काममम सुमुक्खपकम' श्लोक में हरि को स्वर्णिम (सुवन्नम) कहा गया है, क्योंकि इसे अन्यत्र गढ़े हुए सोने (जतरूपम) के साथ लिया गया है, इसलिए यहाँ इसका अर्थ काला (समम) है।
(वही)।
सी एफ जाट. वी. 216, सामा ति सुवन्ना-सामा।

30. हरी घास का रंग (वही)।

31.के. और साइ. ने अंबंकुरवन्नम पढ़ा।

32. मेरी प्रस्तावना देखें, जिसमें 'लंबा' और 'छोटा' को केवल अप्रत्यक्ष रूप से दृष्टि के विषय के रूप में दर्शाया गया है। 'उपरोक्त सात दृश्य किसी आधार (वत्थु) के संदर्भ के बिना प्रस्तुत किए गए हैं; निम्नलिखित सामान्य उपयोग के अनुसार हैं।'
(वही)।

33. इसका अर्थ है बादल छाए हुए और हिम हूँ — जो क्रमशः पाला, हिमपात या ओस हो सकता है। चूंकि संकेत केवल चमक-विपरीतता की ओर है, इसलिए संभवतः पाले की चमक का तात्पर्य है।

34. निम्नलिखित शब्द, जैसा कि साइ. (वही) कहता है, चमक की विभिन्नताओं को दर्शाते हैं। इसके बाद थोड़ी अनावश्यक खगोल विज्ञान की जानकारी दी गई है। चंद्रमा का गोला, अर्थात् चंद्रदेव का निवास, 49 योजन का है, सोने का बना है और उस पर चांदी की छत है। सूर्य का गोला 50 योजन का है, सोने का बना है और उस पर क्रिस्टल की छत है। नक्षत्र, विभिन्न देवताओं के निवास, 7, 8 या 10 योजन के हैं और सात रत्नों से बने हैं। नीचे चंद्रमा और ऊपर सूर्य के बीच 1 योजन की दूरी है। नक्षत्रों को अपनी कक्षा में दो वर्ष लगते हैं। वे और सूर्य तेजी से चलते हैं, चंद्रमा धीरे चलता है। कभी चंद्रमा आगे चलता है, कभी पीछे।

35. कांसे का (असली. 318)।

36. यह रत्न नहीं है; यह बांस के रंग का है (वही)।

37. 'मास्टर का रंग'
(वही)।

38. कहपानों के अंतर्गत, अर्थात् चांदी के सिक्के के अंतर्गत, तांबे, लकड़ी और लाख के मसाका शामिल किए जाएंगे (वही)। विन. iii. 238 से उद्धृत।

39. इस और अगले दो उत्तरों में, के. के अनुसार, धारा 617 में दी गई विशिष्ट रूपों की सूची का प्रत्येक बार पूर्ण रूप से अभ्यास किया जाना है।

40. मुद्रित पाठ में, रूपराममनम के स्थान पर रूपराममनन और दो पंक्तियों के बाद रूपराममनन पढ़ें। इसी प्रकार अन्य अर्थों के लिए, अनुच्छेद 624 आदि देखें। मैं के. में दिए गए पाठ का अनुसरण करता हूँ, इस शब्द को सक्खुसम्फसजो के साथ-साथ वेदना, सन्ना आदि के साथ विशेषण बनाता हूँ। अनुच्छेद 600 (जिस अंश को मैंने पाठ में पुनः शामिल किया है), अनुच्छेद 604 आदि में दिए गए समान अंशों की तुलना करें।
मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे यह समझ नहीं आता कि चक्खुम निस्साया को स्थानांतरित करने से क्या लाभ होता है, जिससे के. के पाठ के अनुसार यह विशेषण और संज्ञा के बीच में आ जाता है, इन इंद्रिय-कर्म उत्तरों में समरूपता से परे, जहाँ हर जगह कर्म को प्राथमिकता

दी जाती है। लेकिन इससे के. का पाठ अमान्य नहीं हो जाता। अरम मा नम मानसिक प्रक्रिया का एक शब्द है, न कि केवल इंद्रिय-कार्य का, जैसा कि रूपम: चक्खु के संबंध से संकेत मिलता है।

41.अर्थात्, वीणा और अन्य तार वाले वाद्ययंत्रों की ध्वनि (असली. 319)।

42. उदाहरण के लिए, घंटों और कैस्टनेटों का (वही)।

43.अर्थात्, ताली बजाने का (वही)।

44.अर्थात्, भीड़ में जब शब्द और अक्षर अविभेदनीय हो गए हों (वही)।

45.अर्थात, पेड़ों के आपस में रगड़ने से, या ब्लॉकों के टकराने से (वही)। विन. टेक्स्ट्स, iii. 213, n.

46.अर्थात्, हवा के रूप में हवा (वही)।

47.अर्थात्, पीटे हुए या बहते पानी का (वही)।

48.अर्थात् सरकंडे फाड़ना, कपड़ा फाड़ना इत्यादि (वही)।

49. धारा 620 में दृश्य रूपों के लिए जारी रखें।

50. बुद्धघोष कहते हैं, सुगंधो, दुगंधो - ये, अर्थात् वांछित गंध और अवांछित गंध, सभी गंधों को समाहित कर लेते हैं। वे यही बात अच्छे और बुरे स्वादों (सादु, असदु, अनुच्छेद 629) के लिए भी कहते हैं। अनुच्छेद 648 में, स्पर्शनीय वस्तुओं में सुखद स्पर्श और कष्टदायक स्पर्श का उल्लेख मिलता है। लेकिन टीकाकार स्पर्शों में सुखवादी मूल्यों के लिए वैसा व्यापक दावा नहीं करते जैसा कि गंधों और स्वादों में करते हैं। जैसा कि हमने देखा है, पाठ में दृष्टि या स्पर्श के संबंध में भी सुखवादी अर्थ नहीं दिया गया है।
यह रोचक है क्योंकि यह बौद्ध मनोविज्ञान को, उसकी तीव्र लेकिन प्रारंभिक अंतर्ज्ञान शक्ति के साथ, हमारे आधुनिक मनोविज्ञान के संपर्क में लाता है। हम कहते हैं कि किसी विशेष इंद्रिय द्वारा बाह्य जगत के बारे में हमारा ज्ञान जितना अधिक बढ़ता है, वह इंद्रिय तटस्थ भावना से उतनी ही अधिक जुड़ जाती है। और यह दृष्टि, स्पर्श और श्रवण ही हैं जो हमें अधिकांश ज्ञान प्रदान करते हैं।
अरस्तू केवल गंध की इंद्रिय के संदर्भ में टिप्पणी करते हैं कि हम किसी भी गंध को बिना किसी सुखद या दुखद अनुभूति से जोड़े भेद नहीं पाते, जो मनुष्य में इस इंद्रिय की अपूर्णता को दर्शाता है। अपूर्ण, अर्थात्, भेद करने की सूक्ष्मता में, क्योंकि स्पर्श इस संदर्भ में सबसे परिपूर्ण इंद्रिय है (डी. एन. II. 9)।

51. धारा 624, टिप्पणी देखें।

52. छाछ (तक्कम्बिलम) को विशिष्ट खट्टे स्वाद के रूप में बताया गया है, जबकि गाय के दूध से बना घी (गोसाप्पी) मीठे स्वाद का एक प्रकार है। लेकिन, श्रीमान कहते हैं, कसैले पदार्थ (कसवम) में मीठा मिलाकर रख देने से उसकी सारी मिठास नष्ट हो जाती है, और यही बात कच्ची चीनी और क्षारीय पदार्थों के साथ भी होती है। हालांकि, घी को रख देने से उसका रंग और गंध तो चली जाती है, लेकिन उसका स्वाद नहीं बदलता। इसलिए यह परम मीठा (एकान्त-मधुरम) है (असल. 320)।

53. उदाहरण के लिए, निम्ब-वृक्ष का फल (वही)।

54.उदाहरण के लिए, अदरक और काली मिर्च (वही)।

55. उदाहरण के लिए, समुद्री नमक (वही)।

56. उदाहरण के लिए, बैंगन (वटिंगनाकातिरम) या हरे ताड़ के अंकुर (नारियल गोभी) (वही)।

57. उदाहरण के लिए, जैसे बेर, या फेरोनिया एलिफेंटम, आदि (वही)।

58. उदाहरण के लिए, पीला हरितकम (मायरोबलन)। इस सभी वनस्पति संबंधी ज्ञान के लिए मैं पहले की तरह ही चाइल्डर्स डिक्शनरी का ऋणी हूँ।

59.सदु असादु. देखें § 625, एन. 1.

60. धारा 624, एन देखें।

61. मूर्त क्षेत्र के लिए, नीचे देखें, धारा 648.

62. शाब्दिक रूप से, स्त्री की क्षमता, उसकी संभाव्यता। 'रूप' के अंतर्गत, जिसे साइ. (321) यहाँ लिंगम (= संथानम, तुलना करें मिल. 133, 134) का अर्थ मानता है, वह उन शारीरिक अनुपातों को इंगित करता है जिनमें स्त्री, सामान्यतः, पुरुष से भिन्न होती है - छोटे हाथ, पैर और चेहरा, ऊपरी धड़ कम चौड़ा, निचला धड़ चौड़ा। विशेषताएँ (निमित्तम) वे हैं जिनसे स्त्री की पहचान होती है (संजनम), बाहरी शारीरिक चिह्नों (जैसे दाढ़ी न होना, न ही दांत, जिनमें कुछ जानवरों के दांत शामिल होते प्रतीत होते हैं) और पहनावे के तरीके।
'व्यवसाय' (कुट्टम = क्रिया) के अंतर्गत लड़कियों के विशिष्ट मनोरंजन का संकेत मिलता है - टोकरियों, मूसल [और ओखली], और गुड़ियों (? शाब्दिक रूप से, छोटी बेटियाँ, धितालिकाया क्लंति) के साथ खेलना, और मत्तिकवाकम से धागा कातना, चाहे वह कुछ भी हो।
'व्यवहार' के अंतर्गत, महिलाओं के चलने, खड़े होने, बैठने, लेटने और खाने में 'विस्तार की कमी' (एक विसदम) का उल्लेख किया गया है; ये सभी क्रियाएँ महिलाएं अधिक नज़ाकत से और कम आत्मविश्वास के साथ करती हैं। यदि कोई पुरुष इस प्रकार व्यवहार करता है, तो उसके बारे में कहा जाता है, 'वह स्त्री की तरह चलता है!'
स्त्री की 'स्थिति और अस्तित्व', जो उसके मूल स्वभाव का निर्माण करते हैं, 'कर्म से उत्पन्न होते हैं और गर्भाधान से ही अपना स्रोत प्राप्त करते हैं'।
अन्य स्त्रीत्व संबंधी लक्षण जीवन के दौरान उसकी 'संभाव्यता' से विकसित होते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे बीज से वृक्ष अपने सभी अंगों सहित समय के साथ विकसित होता है। यह 'इंद्रियम्' आँखों से नहीं, बल्कि मन से (मनो) देखा जा सकता है। यह एक अमूर्त अवधारणा है। और यह एक लिंग के लिए वैसा नहीं है जैसा दृष्टि आदि दूसरे लिंग के लिए होता है।

63. स्त्री को दिया जाने वाला उच्च स्थान एक ऐसा कथन है जो बौद्ध धर्म (और भारतीय धर्म) की विशिष्ट विशेषता है, ठीक वैसे ही जैसे 'चंद्रमा और सूर्य' कहना। निःसंदेह, इन दोनों का स्रोत मानव जाति के इतिहास या प्रागैतिहासिक काल में बहुत गहराई में निहित है। टीकाकार पुरुष विशेषताओं का वर्णन करते हुए इनके विपरीत अर्थों का उल्लेख करते हैं, यहाँ तक कि 'वीरतापूर्ण और युद्धप्रिय स्वभाव' का भी, जिसे यदि कोई स्त्री अपनाती है तो उसे 'पुरुष की तरह व्यवहार करने वाली' कहा जाता है।
ऐसा कहा जाता है कि लड़के अपने विशिष्ट खेलों में व्यस्त रहते हैं, जिनमें वे गाड़ी और हल चलाते हैं, और गड्ढों के चारों ओर रेत के टीले बनाते हैं और उन्हें जलाशय कहते हैं।
फिर वे कहते हैं कि ये यौन भेद आदिम युगों में जीवन के दौरान विकसित हुए हैं; तब से, गर्भाधान के माध्यम से और उनमें से कुछ के व्यक्तिगत जीवन में, ये परस्पर परिवर्तित होते रहते हैं। इसके बाद वे उभयलिंगीता के उन मामलों का उल्लेख करते हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे संप्रदाय के सदस्यों में पाए गए हैं।

जैसा कि हम उम्मीद कर सकते हैं, वह अपने लिंग के प्रति सजग भी है और कर्म के सिद्धांत को इस पर अनोखे ढंग से लागू करता है। 'दोनों में से, पुरुष के लिंग-चिह्न श्रेष्ठ (उत्तमम्) हैं, जबकि स्त्री के निम्न (हीनम्) ।' अतः, पुरुष के लिंग-चिह्न अत्यंत बुरे कर्मों से नष्ट हो जाते हैं, जबकि स्त्री के लिंग-चिह्न सामान्य अच्छे कर्मों से स्थापित होते हैं। दूसरी ओर, स्त्री के लिंग-चिह्न सामान्य बुरे कर्मों से नष्ट हो जाते हैं, जबकि पुरुष के लिंग-चिह्न अत्यंत अच्छे कर्मों से स्थापित होते हैं। 'इस प्रकार, दोनों बुरे कर्मों से नष्ट होते हैं और अच्छे कर्मों से प्राप्त होते हैं।'

इस प्रकार, हमारे टीकाकार प्लेटो की स्थिति के अधिक करीब हैं, बजाय एक विशिष्ट धार्मिक ब्रह्मचारी की स्थिति के, और उनका मानना है कि स्त्री बुराई करने में अधिक शक्तिशाली नहीं है, बल्कि अच्छाई या बुराई दोनों को समेटने में कमजोर है।

64. 'जो कुछ कहना था, वह निराकार (रूपहीन) अवस्थाओं से संबंधित जीवन शक्ति के संदर्भ में पहले ही कहा जा चुका है।' (प्रश्न 323. धारा 19 देखें)।

65.कयो को =सरिराम कहा जाता है; संभवतः इसे 'शरीर संवेदनशीलता' या स्पर्श इंद्रिय (असल. 324) के लिए प्रयुक्त कायो से अलग करने के लिए, या फिर सामान्य रूप से इंद्रिय-अनुभव से (पृष्ठ 43, नोट 3)।

66. टीकाकार ने कायविनफिअत्ती का विश्लेषण कुछ बिखरे हुए अंदाज़ में किया है। उनके विचारों का सार, जैसा कि मैं समझता हूँ, निम्नलिखित है: शारीरिक क्रिया द्वारा किए गए किसी भी संचार में (जिसमें पशुओं से मनुष्यों और इसके विपरीत संचार शामिल हैं) जो बात प्रकट होती है, वह उस समय व्यक्ति की स्थिति (भावो), उसका स्व (सयम) और उसका उद्देश्य (अधिप्पयो) होता है; दूसरे शब्दों में, कैसे, कौन या क्या और किसलिए। और यह शारीरिक प्रवाह (विप्पंदनेन) द्वारा होता है।

इसके बाद वह उन विचारों के प्रकारों को वर्गीकृत करता है जो 'संकेत उत्पन्न करने' की प्रवृत्ति रखते हैं, अन्य किसी में यह प्रवृत्ति नहीं होती है।

वे हैं -

इंद्रिय जगत से संबंधित आठ अच्छे विचार (§§ 1-159), और अंतर्ज्ञान से संबंधित विचार (अभिनिल चित्तम)।

बारह बुरे विचार (§§ 365-430)।

आठ महान क्रिया-विचार, दो सीमित क्रिया-विचार, और एक क्रिया-विचार जो रूप के ब्रह्मांड से संबंधित है और जिसने अंतर्ज्ञान प्राप्त कर लिया है, ये सभी मिलकर ग्यारह अनिश्चित विचार बनाते हैं।

अंत में वे हमें अपने 'द्वारों' (द्वारकथा) के सिद्धांत की ओर निर्देशित करते हैं। मेरी प्रस्तावना देखें। (असल. 323-4)

67. वैसीविन्नाट्टी को शारीरिक संकेत के समान ही शब्दशः वर्णित किया गया है, जिसमें 'शारीरिक प्रवाह' के स्थान पर 'स्वर शोर' का प्रयोग किया गया है। 'शोर करना' को विभिन्न तरीकों से शोर करने के रूप में समझा जाना चाहिए। 'स्पष्ट वाणी' (शाब्दिक रूप से, खंडित वाणी) केवल कर्कश ध्वनि (भंगो) नहीं है, बल्कि यह संचार के लिए उपयोग की जाने वाली विभाजित स्वर अभिव्यक्ति है (असल. 325)।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि क्या विचारों का संचार या पंजीकरण भाषा का ऐतिहासिक रूप से पूर्व कार्य है, इस समस्या के संबंध में, बुद्धघोष, अपने भेद करने की क्षमता के बावजूद, यहां भाषा द्वारा संकेत देने को भाषण के कार्यों में से केवल एक के रूप में संदर्भित नहीं करते हैं।

इससे भी अधिक विचित्र बात यह है, और भाषा के इस विशिष्ट पहलू से अधिक प्रासंगिक होने के कारण, कि वह जाति के पंजीकृत विचारों के मौखिक संचार को ध्यान में नहीं रखता है।

68. बुद्धघोष की व्युत्पत्ति (असल. 325) अकासो शब्द को 'बिना जोते' से व्युत्पन्न करती है - वह जिसे जोता, काटा या तोड़ा नहीं जा सकता - जो होमर के ατρνγετος αιθηρ ατρνγετη θαλασσα और यूरिपिड्स के ακαρπιστα πεδια (असल. 326) की याद दिलाता है। 'आकाश' को वह प्रहार करने - अघम, अ-घटतनियम - से जोड़ता है, जो प्रहार करने योग्य नहीं है।

अकासो, वे आगे कहते हैं, वह है जो रूपों को सीमांकित करता है, उन्हें घेरता है और उन्हें प्रकट करता है। इसके माध्यम से, इस प्रकार सीमित रूपों में, हमें ये धारणाएँ प्राप्त होती हैं - इसलिए ऊपर, इसलिए नीचे, इसलिए आर-पार।

69. असम्फुत्तम चतुहि महाभूतेहि। यद्यपि इस ग्रंथ में आकाश को चार तत्वों से अलग माना गया है और पिटकों में इसे सामान्यतः पाँचवें तत्व के रूप में नहीं गिना जाता, फिर भी महा इल्हुलवाद सूत्र (एम. i. 423) में, जब गौतम अपने पुत्र को मानव शरीर की संरचना में तत्वों के वितरण के बारे में बता रहे होते हैं, तो वे आकाशधातु को अन्य चार धातुओं के साथ इस प्रकार जोड़ते हैं मानो वह पाँचवें तत्व के समान हो। पुराने उपनिषदों में इसे सामान्यतः चार तत्वों के साथ ही रखा गया है, यद्यपि एक पूर्ण सूची में नहीं।
तैत्तिरीय उपसंहार में, यह आत्मा से उत्पन्न होने वाले एकमात्र प्रत्यक्ष व्युत्पन्न के रूप में प्रकट होता है; वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, पौधे आदि, जिनमें से पहला आकाश से उत्पन्न होता है, शेष सभी एक दूसरे से क्रमानुसार उत्पन्न होते हैं।
असम्फुत्तम शब्द को निज्जतकम (या निस्सातम) के रूप में व्यक्त किया गया है, और इसका अर्थ यह हो सकता है कि अंतरिक्ष चारों तत्वों के साथ उस तरह से मिश्रित नहीं होता जिस तरह वे एक दूसरे के साथ मिश्रित होते हैं।
पाली भाषा में 'से संबंधित' को -गतम कहते हैं।

70. ऊपर दिए गए अनुच्छेद 42-47 की तुलना इस और निम्नलिखित दो उत्तरों से करें। पदार्थ की प्लास्टिसिटी के उदाहरण के रूप में बेहद अच्छी तरह से तैयार की गई खाल दी गई है (असली. 326)।

71. सोना जो शुद्ध (सुधंत, अच्छी तरह से फूंका हुआ) है, उसे आमतौर पर 'सुचारू' सामग्री के रूप में दिया गया है (वही)।

72.बुद्धघोष स्पष्ट रूप से यहाँ (यो के लिए) so rupassa upacayo पढ़ते हैं, और अगले खंड में sa rupassa (या के लिए) (असली. 827)। यह केवल §§ 732, 733 में पाठ द्वारा अपनाया गया है। के. so और sa पढ़ते हैं।
यह और अगला भाग वस्तुओं के अस्तित्व में आने की प्रक्रिया को सूत्रबद्ध करते हैं। एकीकरण को (असल. 327) विभिन्न क्षेत्रों के संचयी प्रभाव (आयतननम अचयो) के रूप में समझाया गया है, क्योंकि वे बार-बार पुनरुत्पादित होते हैं। इस शब्द का अर्थ है विकास की पूर्णता। अचयो या निब्बत्ति, उपचयो या वद्धि के समान है, जैसे नदी के किनारे जलाशय में पानी का उमड़ना, पानी के छलकने के समान है, जबकि सन्तति या पावत्ति (निर्वाह या निरंतरता) पानी के अतिप्रवाह और बहने के समान है।
ये सभी जन्म और विकास (जातिरूपास्सा) की घटना की अभिव्यक्तियाँ हैं।

73. यह एक प्रचलित सूत्र है, और यह एम. i. 49; एस. ii. 2, और 42 में मिलता है। साइ. (असल. 328) बताते हैं कि 'क्षयता' आदि तीन पद समय बीतने के साथ होने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं; अंतिम दो पद उनसे निकाले जाने वाले निष्कर्ष को दर्शाते हैं। जिस प्रकार बाढ़ या जंगल की आग का पता उसके मार्ग में उगने वाली घास और पेड़ों की स्थिति से लगाया जा सकता है, उसी प्रकार हम अपने दांतों, बालों और त्वचा की स्थिति से अपने जीवन और क्षमताओं के बारे में अनुमान लगा सकते हैं।

74. यह और पिछला खंड चीजों के क्षय और लुप्त होने का सूत्रबद्ध वर्णन करते हैं। टीकाकार ने जन्म-विकास, क्षय और मृत्यु की तुलना मानव जाति के तीन शत्रुओं से की है, जिनमें से पहला उसे गड्ढे में गिरा देता है, दूसरा उसे नीचे फेंक देता है और तीसरा उसका सिर काट देता है (असली. 329)।

75. शाब्दिक रूप से, निवाला भोजन बना। इसे तीन अमूर्त पोषक तत्वों से अलग करने के लिए 'शारीरिक' (या ठोस) शब्द पर्याप्त है। पृष्ठ 30 देखें।

76. इनके नीचे जड़ें और फल आते हैं। असल. 330.

77. इस खंड पर, जहाँ 'रूप' को विकास आदि को बनाए रखने के पहलू से देखा जाता है, टीकाकार एक संक्षिप्त व्याख्या देते हैं जिसमें शारीरिक सत्य की झलक हास्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत की गई है। वे कहते हैं (असल. 330-332), कि यहाँ भोजन को सर्वप्रथम उसके मूर्त रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि ओजा में उसका विकसित सार है। जहाँ पहला जोखिम को दूर करता है, वहीं दूसरा संरक्षक है।

और खतरा यह है कि जब भोजन नहीं मिलता, तो कर्मों से उत्पन्न आंतरिक ऊष्मा पेट की दीवारों को जकड़ लेती है, जिससे व्यक्ति 'मुझे भूख लगी है; मुझे कुछ खाने को दो!' कहकर चिल्लाता है और बाहरी भोजन मिलने पर ही अपनी आंतों को मुक्त करता है। इस आंतरिक ऊष्मा की तुलना एक छाया-राक्षस से की जाती है, जो मनुष्य की छाया में प्रवेश करके भूख लगने पर उसके सिर को काटता है, जिससे वह चिल्ला उठता है।
जब दूसरे लोग मदद के लिए आते हैं, तो राक्षस अपना चंगुल छोड़कर उन पर हमला करता है।
कुद्रुष अनाज जैसे मोटे खाद्य पदार्थों के मामले में, ओज को कमजोर और थोड़े समय के लिए ही पोषण देने वाला कहा जाता है, जबकि घी आदि का सेवन करने से व्यक्ति को पूरे दिन किसी अन्य भोजन की आवश्यकता नहीं होती है। फिर जीवों को उनके भोजन की गुणवत्ता के बढ़ते क्रम में वर्गीकृत किया जाता है, जिसकी शुरुआत मगरमच्छों से होती है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे कंकड़ निगलते हैं, फिर मोर, लकड़बग्घे और हाथी आते हैं, उसके बाद अन्य पक्षी, फिर सीमावर्ती निवासी, नगरवासी, राजा और अंत में यम और परनिमित्तवासवत्ती देवता आते हैं, जो अत्यंत उत्तम भोजन का आनंद लेते हैं।

78. 'जिस प्रकार व्युत्पन्न रूप को केवल इसी प्रकार से व्युत्पन्न किया जाता है, किसी अन्य तरीके से नहीं, उसी प्रकार, यह कहना कि यह व्युत्पन्न नहीं है, यह कहने के समतुल्य है कि यह व्युत्पन्न नहीं हो सकता।'
असल. 333.
संभवतः यहाँ प्रयुक्त नकारात्मक रूप (उपदा नहीं) इस पहलू की अपेक्षाकृत अनैतिक प्रकृति का एक तकनीकी चिह्न है। दूसरी ओर, उपदा का प्रयोग दार्शनिक अर्थ में किया जाता है।
तुलना करें डी. i. 17 के साथ एम. i. 148 — अनुपदा विमुत्तो और अनुपदा परिनिब्बानत्तम।

नीचे दिए गए अनुच्छेद 1210 और 1213 भी देखें।

79. प्रस्तुत कार्य के सामान्य मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुरूप, जो वस्तुएँ अन्य वस्तुओं से व्युत्पन्न नहीं होतीं (जिनका अन्य वस्तुओं में कोई आधार या समर्थन नहीं होता), उन्हें इंद्रिय-बोध के पहलू के अंतर्गत माना जाता है। वे मूर्त या अमूर्त हो सकती हैं। ऊपर प्रयुक्त सामूहिक शब्द, अर्थात् महान घटनाएँ या प्राणी (महाभूतनी, § 584 इत्यादि) के स्थान पर अब तत्व (धातु) शब्द का प्रयोग किया गया है। ये दोनों शब्द अ. i. 222 में एक साथ आते हैं।
बाद वाले शब्द का प्रयोग चार तत्वों के महान या अद्भुत व्युत्पन्नों को दर्शाने के लिए किया जा सकता है, जो भौतिक या नैतिक रूप से महान हों, जैसे कि (विन. 2. 240) जब सागर और उसके 'महान जीव' धम्म और उन अद्भुत घटनाओं, यानी उन मनुष्यों का उदाहरण देते हैं जो इसके माध्यम से निर्वाण की खोज कर रहे हैं या उसे प्राप्त कर चुके हैं। दूसरी ओर, धातु, जैसा कि साइ. ने निरंतर 'सजगता' के साथ एक बार फिर इंगित किया है, आधार या आत्मा की अनुपस्थिति को दर्शाता है। असल. 332.
चारों तत्वों के आवश्यक लक्षणों के बारे में, नीचे दिए गए अनुच्छेद 962-965 देखें, साथ ही निम्नलिखित टिप्पणी भी देखें।

80. इन चार युग्मों में से पहले दो और अंतिम युग्म पृथ्वी तत्व के अनेक पहलू या रूप हैं (अस्लि. 332), और इन्हें क्रमशः कठोर और गैर-कठोर, चिकना और खुरदरा (आरी जैसा), भारी और हल्का के रूप में वर्णित किया गया है। ये प्रतिरोध के रूपों, अर्थात् सक्रिय स्पर्श, या मांसपेशियों की संवेदनशीलता के गुणांक के साथ त्वचा की संवेदनशीलता के हमारे आधुनिक दृष्टिकोण से लगभग पूरी तरह मेल खाते हैं। बौद्ध दृष्टिकोण में, जैसा कि हाल के मनोविज्ञान को छोड़कर बाकी सभी में कमी रही है, मांसपेशियों के कारक की उपस्थिति की समझ का अभाव है; दूसरी ओर, यह तार्किक रूप से अधिक समरूप है क्योंकि यह 'हल्कापन' को वहाँ प्रस्तुत करता है जहाँ डॉ. बैन, उदाहरण के लिए, 'दबाव' को प्रस्तुत करते हैं - जो एक और सकारात्मक तत्व है।
सुखद स्पर्श को ऐसी वस्तु के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसकी इच्छा सुखद अनुभूति के कारण होती है; इसके विपरीत, कष्टदायक स्पर्श होता है। तीनों तत्व इनमें से किसी एक प्रकार के स्पर्श के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं: ठोसता के संदर्भ में, पैरों की मालिश करते समय कोमल हथेलियों वाले सेवक द्वारा किया गया सुखद स्पर्श अनुभव होता है, और कठोर हाथों से मालिश करने पर इसका विपरीत अनुभव होता है। ऊष्मा तत्व से, हमें सर्दियों में गर्म तवे का सुख मिल सकता है, या गर्मियों में इसका विपरीत अनुभव हो सकता है।
वायु तत्व से हमें गर्मियों में पंखा चलाने का सुख मिल सकता है, या सर्दियों में इसकी असुविधा हो सकती है। असल. 332, 333.

81. साइ. यहाँ इंद्रिय बोध में ध्यान देने योग्य एक बिंदु पर चर्चा करता है जो चेतना और अवचेतना के संबंध में आधुनिक यूरोपीय सिद्धांतों को रेखांकित करने के कारण दिलचस्प है (असल. 333)। इंद्रिय की एक ठोस वस्तु में, स्पर्शनीयता के तीनों रूप, अर्थात् तीनों तत्व (ठोस, गर्म, हवादार), सभी मौजूद हो सकते हैं।
क्या वे सभी एक ही झटके में चेतना के क्षेत्र (अपाथम) में आ जाते हैं?
हाँ, आ जाते हैं।
इस प्रकार आने पर, क्या वे देहबोध पर प्रभाव डालते हैं?
हाँ, डालते हैं।
जब इस प्रकार उन्हें (मानसिक) वस्तु बना दिया जाता है, तो क्या शरीर का ज्ञान एक ही झटके में उत्पन्न हो जाता है?
नहीं।
क्यों?
इस प्रकार: मानसिक वस्तुएँ या तो जानबूझकर संवेदन द्वारा या अंतर्प्रवेश द्वारा निर्मित होती हैं। (बाद वाला शब्द - ussado - अधिक शाब्दिक रूप से निष्कासन या प्रमुखता है, लेकिन दोनों शब्द यह दर्शाते हैं कि स्वैच्छिक ध्यान के विपरीत अनैच्छिक ध्यान का तात्पर्य है।)
अब जब कोई जानबूझकर दबाव के माध्यम से उबले हुए चावल के गोले की कठोरता या कोमलता का परीक्षण कर रहा होता है, तो गर्मी और वाष्प मौजूद होते हैं, लेकिन ध्यान ठोस पदार्थ पर ही केंद्रित होता है।
यदि गर्म पानी को हाथ से परखा जाए, तो भले ही उसमें ठोस और वाष्प (पदार्थ) मौजूद हों, ध्यान ऊष्मा पर ही केंद्रित होता है। इसी प्रकार, यदि गर्म मौसम में खिड़की पर शरीर पर ठंडी हवा चलने दी जाए, तो ठोस और ऊष्मा दोनों मौजूद होते हैं, लेकिन ध्यान वायु तत्व पर ही जाता है।
या फिर अनैच्छिक अनुभवों को लें: यदि आप ठोकर खाते हैं, या अपना सिर किसी पेड़ से टकराते हैं, या किसी कंकड़ को चबाते हैं, तो गर्मी और हवा मौजूद होती है, लेकिन घुसपैठ करने वाली वस्तु ठोस पदार्थ होती है।
इसी प्रकार, गर्म सतह पर चलने या तूफान से बहरे हो जाने के संदर्भ में भी यही बात लागू होती है। तीनों तत्व एक ही क्षण में एक समान रूप से अनुभव नहीं किए जाते। शरीर-चेतना की विस्तारित सतह के संदर्भ में, शरीर का ज्ञान केवल उसी स्थान पर उत्पन्न होता है जहाँ चेतना की सतह पर प्रभाव पड़ता है, उदाहरण के लिए, जब कंधे के घाव को कलम से धोया जाता है (या पट्टी बांधी जाती है; देखें विन. ii. 115 और अनुवाद), तो कंधे की काया-पासादो पर प्रभाव पड़ता है, या वह तीव्र हो जाती है, और वहीं ज्ञान उत्पन्न होता है।
और जहाँ अतीत की छाप सबसे प्रबल होती है, वहीं सबसे पहले संज्ञान उत्पन्न होता है।

82.बुद्धघोष सामान्यतः इंद्रियों के संदर्भ में, संवेदनाओं के एक समूह या 'विचार के विषय' से दूसरे समूह में संक्रमण का मनोवैज्ञानिक विवरण देते हैं, जो अब 'ध्यान की गति' का वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले शब्दों से बहुत अलग नहीं है (असल. 334)।
हम एक वस्तु से दूसरी वस्तु की ओर बढ़ते हैं।
जानबूझकर झुकाव से, या
अत्यधिक प्रभावशालीता की अनुभूति से (ajjhasayato va visayadhimattato va).
उदाहरण के लिए,
किसी तीर्थस्थल को प्रणाम करने से, एक श्रद्धालु मूर्ति को श्रद्धांजलि अर्पित करने और उस पर की गई नक्काशी और चित्रों का चिंतन करने के लिए प्रवेश करने का इरादा बनाता है।
किसी विशाल पर्वतमाला का चिंतन करते समय, एक व्यक्ति संगीत की ध्वनि से प्रभावित होता है, और फिर पास लाए गए फूलों और अगरबत्ती की सुगंध से भी प्रभावित होता है।
83. शाब्दिक अर्थ है तेल (स्नेहो)। आकाशधातु के वर्णन से तुलना करें, धारा 638।

84. यह अनेक तत्वों से निर्मित किसी वस्तु में नम या द्रव तत्व का पहलू है। अपो-धातु का एक आवश्यक 'लक्षण' है 'पग्घरनम्', यानी प्रवाह। धारा 963 देखें। परन्तु 'रूप की संसंजनशीलता का अर्थ है किसी ठोस पदार्थ की वह संसंजन अवस्था जिसमें ठोस की अधिकता

हो' (असल. 335)। क्योंकि द्रव तत्व के संसंजन बल से ही लोहे के पिंड या अन्य वस्तुएँ कठोर बनती हैं। इसी प्रकार पत्थरों, पहाड़ों, ताड़ के पेड़ों, हाथीदांतों, सींगों आदि के मामले में भी।
इसलिए बुद्धघोष तत्वों के परस्पर संबंधित क्षेत्रों और उनके एक-दूसरे के निकट होने की स्थिति पर चर्चा करते हैं, जैसे कि चिपचिपी चीजें, उदाहरण के लिए, जमा हुआ तरल या उबलता पानी। हालांकि, दूषित पांडुलिपियों के कारण विवेचन के कुछ भाग समझना कठिन है। उनका निष्कर्ष यह है कि यद्यपि तत्व एक घटना के रूप में अपनी स्थिति में भिन्न हो सकते हैं, लेकिन उनका मूल स्वरूप कभी नहीं बदलता, चाहे वह कितना भी अप्रत्यक्ष क्यों न हो।
और वह एक अभी तक असंपादित सूत्र (अत्थानापरिकप्पा सूत्र) का हवाला देते हैं, लेकिन जिसे ए. आई. 222 में दोहराया गया है, कि चार तत्वों के लिए अपने मूल चरित्र को बदलना आसान है, निर्वाण के साधक (महान छात्र) के लिए अपनी उच्च स्थिति को बदलना आसान है (असल. 336)।

85. यहाँ सहसंबंधित पदों के शेष जोड़े दिए गए हैं, जो द्वैत पहलू के अंतर्गत रूप की श्रेणियों का निर्माण करते हैं।

86. शाब्दिक रूप से, 'जिसे पकड़ लिया गया है' या 'पकड़ लिया गया है'। इस और संबंधित शब्दों पर 'पकड़ने पर समूह', § 1213 आदि के अंतर्गत चर्चा की गई है। यह निराशाजनक है कि 'पकड़ ली गई' वस्तुओं की सूची में दो वस्तुओं को छोड़कर, या कर्म के प्रभाव से अस्तित्व में आई वस्तुओं (दोनों वाक्यांश लगभग समानार्थक हैं), साइ. किसी भी वस्तु के समावेश पर चर्चा नहीं करता है।
उदाहरण के लिए, कोई यह सुनना पसंद करता कि सभी इंद्रिय-विषयों में से, केवल ध्वनि ही 'पकड़ने का विषय क्यों नहीं है' (देखें कर्म के परिणाम के रूप में ध्वनि से संबंधित विधर्म, केवी 466), और क्यों अंतरिक्ष और तरलता के तत्व पकड़ का विषय हो सकते हैं और नहीं भी हो सकते हैं, या उनका इससे किसी भी तरह से क्या लेना-देना है।)
ऊपर उल्लिखित दो बिंदुओं के संबंध में, साइ. (337) पूछता है, 'यह कैसे है कि "क्षय और अनित्यता" को कर्म के प्रदर्शन के कारण क्या है और क्या नहीं है, इसके संबंध में वर्गीकृत किया गया है?'
इन्हें उस श्रेणी में रखा गया है जो समझने का मुद्दा नहीं है।
जो कुछ कर्म के अलावा अन्य परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ है, उसे "कर्म के निष्पादन के कारण नहीं..." के अंतर्गत शामिल किया जाता है।
और चूंकि ये दोनों रूप न तो कर्म से उत्पन्न होते हैं, न ही कर्म के अतिरिक्त किसी अन्य रूप-उत्पादक परिस्थिति से, इसलिए इन्हें कर्म के संदर्भ में वर्गीकृत नहीं किया जाता है। इन्हें कैसे प्राप्त किया जाता है, यह बाद में स्पष्ट हो जाएगा।'

87.रूपसंतति के लिए, रूपसंतति पढ़ें।

88. इस द्वंद्व यौगिक के पहले भाग में लगा निषेधात्मक शब्द उत्तरार्ध पर लागू नहीं होता। सभी रूप उपदानीय हैं - देखें § 595 और तुलना करें ध. एस. § 1538। अतः, जैसा कि हमें प्राप्त होता है, सकारात्मक उत्तर प्राप्त करना, यदि उपदानीय को नकारात्मक माना जाए, तो विरोधाभास के नियम का स्पष्ट उल्लंघन होगा। वितरित नकारात्मक को अनुपदिन्नुपदानीय द्वारा दिया गया है, जैसा कि § 992 में है।

89. मैंने सद्दयातनम् को हटा दिया है और अगली पंक्ति में अपोधातु को जोड़ा है, जैसा कि § 654 के अनुरूप है। सी/. §§ 747, 750, और के.

90. धारा 658 में दिया गया उत्तर अपने संक्षिप्त अंश के साथ बार-बार आता है, लेकिन उस पूर्व उत्तर को इंगित करना आसान नहीं है जिसका यह संक्षिप्त रूप है। क्योंकि धारा 653 और 655 में 'दृश्य रूप' शामिल है, जो कि 'बेतुका' है। और इनमें 'ध्वनि' शामिल नहीं है, जो अदृश्य है। मेरा सुझाव है कि धारा 596 का संदर्भ दिया गया है, जिसका अर्थ है कि 'दृश्य रूप का क्षेत्र' को छोड़ देना चाहिए। धारा 596 के अन्य सभी पद, यदि उन्हें विशुद्ध रूप से अमूर्त संवेदनशीलता या संवेदना, या अमूर्त विचारों के रूप में समझा जाए, तो दृष्टि से अपंग हैं।

कबालिनकारो अहारो में भी, केवल वस्तु, या पोषण की अवधारणा का मूर्त रूप ही दिखाई देता है। इसी प्रकार, यद्यपि शारीरिक हाव-भाव दिखाई देते हैं, फिर भी दिया गया 'संकेत' अनुमान का विषय है, एक मानसिक रचना है।

91. दोनों शब्दों को धारा 597 आदि में दिए गए अर्थ के विस्तृत सिद्धांत में लागू किया गया है।

92. इन संक्षिप्त उत्तरों के लिए अनुच्छेद 596 को मानक मानते हुए, हम यह मान सकते हैं कि ये दोनों अनुच्छेद (अनुच्छेद 659 और 660) उस उत्तर को आपस में विभाजित करते हैं। प्रभाव और प्रतिक्रिया, जैसा कि यहाँ समझा जाता है, पूरी तरह से संवेदना के क्षेत्र से संबंधित हैं। इस कृति में अन्यत्र 'पतिघो' शब्द का भावनात्मक और नैतिक महत्व है, और इसका अर्थ है घृणा, अरुचि। अनुच्छेद 1060 देखें।

धारा 93.§ 596 को भी इंद्रियम् अनुभागों द्वारा अलग-अलग रूप से विभाजित किया गया प्रतीत होता है। जो इंद्रियम् नहीं है, जिसमें ह्वै^इ^ नहीं है, वह पाँच प्रकार की इंद्रिय-वस्तुएँ, संकेत, स्थान, रूप के तीन गुण और अमूर्त विचार में निरूपित रूप के विकसित होते पुनर्जन्म का क्रम है।

94. रिश्तेदारों की यह जोड़ी विपरीत रूप से लिए गए विशेषताओं की पहली जोड़ी के साथ मेल खाती है: अव्युत्पन्न और व्युत्पन्न रूप (पृष्ठ 172-97)।

95. ऊपर देखें, धारा 636, 637. दूसरे रिश्तेदार के बारे में संक्षिप्त उत्तर संभवतः धारा 596 में दी गई पूरी सूची होगी, सूचना के दो तरीकों को छोड़कर।

96. नीचे देखें, धारा 1195, 1196, और ऊपर, धारा 636, टिप्पणी।
यहां, पिछले दस प्रश्नों पर मौन रहने के बाद, साइ. अपनी दृष्टांत कथा को पुनः आरंभ करता है (पृष्ठ 337), हालांकि, इन अस्पष्ट भेदों पर अधिक प्रकाश नहीं डालता। यह और अगले दो प्रश्न-उत्तर युग्म किसी प्रकार के रूप को एक बुद्धिमान कर्ता के साथ संबंध में लाते हैं। और इसका सबसे शुद्ध उदाहरण वे घटनाक्रम हैं जो तब सामने आते हैं जब कर्ता स्वयं को अभिव्यक्त कर रहा होता है।
इसमें कहा गया है कि अभिव्यक्ति या संकेत स्वयं विचार से उत्पन्न नहीं होता, परन्तु फिर भी यह कहा जाता है कि इसका स्रोत विचार है क्योंकि वे घटनाएँ (हावभाव और वाणी) जिन पर संकेत निर्भर करता है, विचार से प्रत्यक्ष रूप से प्रेरित होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम कहते हैं कि वृद्धावस्था और मृत्यु अनित्यता हैं (क्योंकि वे इस विचार की विषयवस्तु का हिस्सा हैं)। जहाँ विचार है, वहाँ विचार की अभिव्यक्ति भी है।
लेकिन धारा 669 में वर्णित सहवर्तीता को विचार, भावना और अन्य मानसिक प्रक्रियाओं के बीच उत्पन्न होने वाली सहवर्तीता के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। संभवतः वह धारा 1 में उल्लिखित मानसिक जटिलता और इसी प्रकार की अन्य जटिलताओं का उल्लेख कर रहे हैं।

97. नीचे देखें, धारा 1044, 1045। यह पहले ही उल्लेख किया जा चुका है (पृष्ठ 59, नोट जे.), कि 'अज्जत्तम', 'अज्जत्तिकम्' हमारे आधुनिक मनोवैज्ञानिक शब्द 'व्यक्तिपरक' या व्यक्ति के सचेत अनुभव से संबंधित किसी भी चीज़ के साथ पूरी तरह से मेल नहीं खाता है। इसका तात्पर्य किसी भी व्यक्तिगत जीव, भौतिक या मानसिक, से संबंधित किसी भी चीज़ से है।
इसलिए, यहाँ 'स्वयं' शब्द को संकीर्ण आध्यात्मिक या यहाँ तक कि मनोवैज्ञानिक अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए, बल्कि ठोस व्यक्ति या अत्तभवो के समतुल्य समझा जाना चाहिए (ऊपर देखें, पृष्ठ 175, नोट 1)।
इसका प्रयोग उन सभी घटकों के अर्थ में किया जाता है जिनमें प्रोफेसर डब्ल्यू. जेम्स ने आत्मा को विभाजित किया है, सिवाय अंतिम घटक के, अर्थात् भौतिक आत्मा (शरीर, वस्त्र, परिवार, घर, संपत्ति: बौद्ध केवल पहले घटक को ही स्वीकार करेंगे, मुझे लगता है),
सामाजिक आत्मा (दूसरों से मान्यता),
और आध्यात्मिक आत्मा (मानसिक क्षमताएं या प्रवृत्तियां)।
('मनोविज्ञान के सिद्धांत', 1892, खंड 292-296)

केवल चौथे घटक, 'शुद्ध अहंकार' को ही बौद्ध धर्म द्वारा अस्वीकार किया गया था, जैसा कि बाईस शताब्दियों बाद ह्यूम द्वारा भी किया गया था। हालाँकि, अनुच्छेद 161 और 1207 में स्पष्ट रूप से अधिक 'व्यक्तिपरक' उपयोग की तुलना करें।
मुझे बहिराम या बहिद्ध पर (अपेक्षाकृत) आधुनिक समकक्ष 'उद्देश्य' थोपने में समान अनिच्छा महसूस हुई है (देखें § 1045)।

98. इसे पूरी तरह से पढ़ने पर, यह धारा 596 के उत्तरार्ध से मेल खाना चाहिए, जो 'दृश्यमान रूप के क्षेत्र' से शुरू होता है।

99. साइ., ओलरिकम को थुलम से जोड़कर व्याख्या करते हुए बताते हैं कि इसका संबंध इंद्रिय-विषयों के भौतिक स्वरूप और इंद्रियजन्य प्रभाव से है, जबकि सुखुमम इसके विपरीत अर्थ रखता है। मेरी धारणा के अनुसार (पृष्ठ 203, नोट 3), बाद वाले वर्ग के अंतर्गत कामुकता और जीवन शक्ति, संकेत, स्थान, रूप के गुण और भोजन में पोषक तत्व की इंद्रियां आती हैं। इस द्वंद्व के प्रयास की शक्ति आधुनिक पश्चिमी मानसिकता के लिए विचित्र और अस्पष्ट है।
यह अभिधम्म के संकलन की तिथि से भी पहले की परंपरा का संकेत देता है, जो उपनिषदों के प्रारंभिक काल जितनी पुरानी है - एक ऐसे समय का जब भौतिक और अभौतिक, विस्तारित और अविस्तारित के बीच कोई निश्चित विरोधाभास नहीं था।
हमने देखा है कि इंद्रियाँ, यद्यपि 'अदृश्य' हैं, फिर भी उन्हें 'रूप' के प्रकारों के रूप में माना गया है - बल्कि, बाद के उपनिषदों ने उनके आकार और आकृति की परंपरा को संरक्षित रखा है। और मेरा मानना है कि जिस प्रकार प्राचीन उपनिषदों में आत्मा एक धुंधली, अगोचर, लेकिन 'भौतिक शरीर का भौतिक प्रतिरूप' थी, और जिस प्रकार 'जब कोई प्रारंभिक यूनानी दार्शनिक 6v की बात करता है, तो उसका अर्थ अस्तित्व नहीं, बल्कि शरीर होता है' (बर्नेट, 'प्रारंभिक यूनानी दर्शन', 27), उसी प्रकार इन दो उत्तरों में विभाजित सूची में सभी वस्तुएँ भौतिक 'रूप' हैं, चाहे वे प्रत्यक्ष, प्रभावशाली और सर्वव्यापी हों या अप्रत्यक्ष, सूक्ष्म और रहस्यमय हों।

100.Cy. के अनुसार, 'ड्यूर' उस चीज़ को संदर्भित करता है जिसे समझना या भेदना कठिन होने के कारण इंद्रियजन्य प्रभाव से नहीं पहचाना जा सकता, चाहे वह शाब्दिक रूप से दूर हो या पास। इसके विपरीत, 'सैंट टिक' उन चीजों को संदर्भित करता है जो इंद्रियों के लिए स्पष्ट होती हैं, भले ही वे दूर हों। प्रत्येक विभाजन की विषयवस्तु पिछले विभाजन की विषयवस्तु से मेल खाती है, और हम देखते हैं कि जहाँ इंद्रिय-बोध का क्षेत्र अपेक्षाकृत स्पष्ट और स्थूल विषय है, वहीं यौन सार, जीवन शक्ति आदि, यहाँ तक कि भोजन में मौजूद पोषक तत्व भी उतने ही अस्पष्ट, अव्यक्त या अपेक्षाकृत दुर्गम पाए जाते हैं, जितने कि वे सूक्ष्म या सूक्ष्म थे। Asl. 337.

101. अनुच्छेद 653 से अनुच्छेद 961 तक टीकाकार मौन धारण कर लेते हैं और पाठक को यह कहकर विदा करते हैं कि 'गोले' आदि की व्याख्या (अनुच्छेद 695-741) में विवेचन विधि ऊपर की तुलना में अधिक विस्तृत है, और यह भी कि त्रिक की श्रेणी (अनुच्छेद 742 आदि) को समझना आसान है। पाठक को इस भाग का सार अधिक आसानी से समझने में सहायता करने के लिए, मैंने कुछ शीर्षक जोड़े हैं ताकि यह इंगित किया जा सके कि 'रूप' पर विचार करने के दृष्टिकोण में कब परिवर्तन होता है।
इस प्रकार, हमने ज्ञान प्राप्ति की व्यक्तिपरक प्रक्रिया में आधार (वत्थु) के पहलू के अंतर्गत रूप पर विचार किया है, जिसमें बोधित वस्तु आदि शामिल हैं।
सभी उत्तरों में, जहाँ भी कमियाँ पाई जाती हैं, अन्यथा निर्दिष्ट न होने पर, सूत्र धारा 596 का उत्तर प्रतीत होता है, जिसमें एक या अधिक पद हटा दिए गए हैं, और प्रत्येक विशिष्ट द्विविभाजन प्रक्रिया द्वारा आवश्यक अर्थ के अनुसार 'मूर्त के क्षेत्र' का कभी-कभी सम्मिलन किया गया है।

102. मानक उत्तर, धारा 596 का संदर्भ लेने पर यह स्पष्ट होगा कि वर्तमान उत्तर में नकारात्मक शब्दों में 'दृश्य रूप' या दृष्टि की वस्तुएँ शामिल हैं। यहाँ, वस्तु का अर्थ है आसन, मूर्त रूप या जिसे हम भौतिक आधार कह सकते हैं। हालाँकि, जब इंद्रिय-उत्तेजना की प्रक्रिया की अंततः कल्पना की गई, तो प्रभावी परिणाम इंद्रिय-अंग (और हृदय) में घटित हुआ माना गया। इंद्रिय-वस्तु को संपर्क का अरम्मनम परिभाषित किया गया। धारा 687 देखें।

103. पाठ के अंग्रेज़ी या सियामी संस्करण में, रूपम और चक्खुविन्नानस्सा के बीच कोई अंतराल नहीं दिखता है, लेकिन संदर्भ से स्पष्ट है कि उत्तर प्रश्न में उल्लिखित चारों मानसिक प्रक्रियाओं से संबंधित है। हमेशा की तरह, केवल अंतिम शब्द का ही स्पष्ट उत्तर दिया गया है। अनुच्छेद 682 और 686 में भी चारों प्रक्रियाओं को समझना आवश्यक है।

104. जिव्हा संफससस्सा मुद्रित पाठ से हट गया है।

105. यहाँ, बेशक, श्रवण, गंध और स्वाद के क्षेत्रों को समझें, और निम्नलिखित तीन रिक्त स्थानों में संपर्क के संबंधित रूपों को समझें। अगले दो उत्तरों में भी इसी प्रकार आगे बढ़ें।

106.अर्थात्, धारा 596 की तरह, केवल 'दृश्य रूपों का क्षेत्र' को छोड़कर, और संभवतः 'मूर्त का क्षेत्र' सम्मिलित करना।

107. मुद्रित पाठ में नकारात्मक कण अवश्य दिया जाना चाहिए।
इस और अगले वाक्यों में मौजूद कमियों को पिछले वाक्यों में मौजूद कमियों के अनुरूप ही भरना होगा। अतः, इस प्रश्न में, पिछले प्रश्न में उल्लिखित तीन अन्य मानसिक प्रक्रियाओं को समझना होगा; उत्तर धारा 596 के उत्तर के समान ही होगा, जिसमें केवल 'दृश्य रूपों का क्षेत्र' को छोड़कर 'स्पष्ट रूपों का क्षेत्र' शामिल होगा। और इसी प्रकार आगे भी।

108.अर्थात, धारा 596 को दोहराएँ (जिसमें 'मूर्त का क्षेत्र' प्रवेश नहीं करता है)।

109. यहां दिए गए उत्तर और धारा 697 में संक्षेपित चार प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट रूप से उन उत्तरों के रूप में हैं जो इंद्रिय-प्रतिक्रिया के वर्तमान सिद्धांत (धारा 597-616) की व्याख्या करते हैं। इसी प्रकार, वस्तुनिष्ठ रूप से लिए गए इंद्रिय संबंधी प्रश्नों (धारा 699, 701) के उत्तरों के लिए धारा 617-632, 648-651 देखें।
चारों उत्तरों में विरोधाभासों का वर्णन धारा 596 की पुनरावृत्ति द्वारा किया गया प्रतीत होता है, जिसमें प्रत्येक मामले में संबंधित सकारात्मक शब्द पर प्रश्न में उल्लिखित विशिष्ट मद का लोप किया गया है, और संभवतः 'मूर्तता के क्षेत्र' को शामिल किया गया है।

110. मुद्रित पाठ में 'रूपम फोट्टाब्बयातनम्' पढ़ें। उत्तर निश्चित रूप से चार अलग-अलग उत्तरों में से अंतिम है, पहले तीन उत्तर समझे जा चुके हैं।

111.यहाँ धारा 596 में दिए गए उत्तर को पहले पद को छोड़कर, 'मूर्तता का क्षेत्र' डालकर प्रदान करें।

112. यहाँ, बेशक, अन्य तीन इंद्रियों के क्षेत्रों को शामिल करें।

113. पूर्ण सूत्र के लिए, धारा 597 देखें।

114.अर्थात, धारा 596 के अनुसार उत्तर दें, पहले आइटम को छोड़कर, और 'मूर्तता का क्षेत्र' डालें।

115. धारा 601, 605, 609, 613 देखें।

116. धारा 633-635 देखें।

117.[713ए] मुद्रित पाठ में अनजाने में छूट गया है।

118.§§ 713ए, 715, और 717 संभवतः § 596 के समान हैं, प्रत्येक प्रश्न द्वारा बहिष्कृत शब्द के क्रमिक लोप के साथ, और हमेशा 'मूर्त के क्षेत्र' के सम्मिलन के साथ।

119. पुनः, इन दो नकारात्मक श्रेणियों में, धारा 596 का पालन संभवतः संबंधित लोपों और सम्मिलनों के साथ किया जाता है। पृष्ठ 209, टिप्पणी 1 देखें।

120. धारा 638, 652 से तुलना करें।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 3

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
 - पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय III - त्रिविध पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणियाँ
त्रिक की व्याख्या
 [1]

[पृष्ठ 220] [742-744] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत[2] और व्युत्पन्न?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और व्युत्पन्न?

दृश्य रूप का क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण.[3]

(iii.) बाह्य और व्युत्पन्न नहीं?

मूर्त और तरल तत्व का क्षेत्र।

[745-747] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और हड़पने का मुद्दा?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

[पृष्ठ 221] (ii.) बाह्य और लोभ का मुद्दा? स्त्रीत्व,
पुरुषत्व,
जीवन शक्ति, या कर्मों के फलस्वरूप विद्यमान कोई अन्य रूप,

चाहे वह दृश्य रूप, गंध,

स्वाद
या स्पर्शनीय रूप के क्षेत्र में हो ,

स्थानिक या द्रव तत्व में,
रूप के एकीकरण या अस्तित्व में,
या शारीरिक पोषण में।[4] (iii.) बाह्य और पकड़ का मुद्दा नहीं? ध्वनि का क्षेत्र,
शारीरिक और मुखर संकेत, रूप
की हल्कापन,
लचीलापन,
सुगमता,
क्षय
और अनित्यता, या कोई अन्य रूप जो मौजूद है जो कर्म के कारण नहीं है,

चाहे वह दृश्य रूप के क्षेत्र में हो,[5] गंध,
स्वाद,
या स्पर्शनीय,

स्थानिक या तरल तत्व
आदि में। [द्वितीय भाग के अनुसार जारी रखें।]

[748-750] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है और इसमें लोभ का मुद्दा भी शामिल है तथा लोभ के लिए अनुकूल भी है? (ii.) क्या यह बाह्य है और इसमें लोभ का मुद्दा भी शामिल है तथा लोभ के लिए अनुकूल भी है? (iii.) क्या यह बाह्य है और इसमें लोभ का मुद्दा नहीं है, परन्तु लोभ के लिए अनुकूल है?

उत्तर, क्रम में लिए गए, जेवेसेडिंग त्रिक के समान हैं।[6]

[751-753] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और अदृश्य?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और दृश्यमान?

दृश्य रूप का क्षेत्र।

(iii.) बाह्य और अदृश्य?

ध्वनि का क्षेत्र... और शारीरिक पोषण[7]

[पृष्ठ 221] [754-756] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और प्रतिक्रियात्मक (प्रभावित करना)?[8]

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और आक्षेपकारी?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र।

(iii.) बाह्य और गैर-प्रभावित?[9]

सेक्स[10] . . . और शारीरिक पोषण.

[757-759] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और एक संकाय?

इंद्रियों की पाँच शक्तियाँ।

(ii.) बाह्य और एक संकाय?

कामुकता और स्फूर्ति।

(iii.) बाह्य और संकाय नहीं?

दृश्य रूप का क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण.[11]

[760-762] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत घटना है और महान घटनाओं में से एक नहीं है?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और महान घटनाओं से संबंधित?

मूर्त और तरल तत्व का क्षेत्र।[12]

(iii.) बाह्य घटना है, न कि महान घटनाओं में से एक?

[अन्य चार प्रकार की इंद्रिय-वस्तुओं][13] के क्षेत्र . . . और शारीरिक पोषण।

[763-765] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत, सूचना नहीं?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और सूचना?

शारीरिक और मौखिक संकेत.[14]

[पृष्ठ 223] (iii.) बाह्य और सूचना नहीं?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[766-768] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और विचार से उत्पन्न?[15]

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाहरी और विचार से उत्पन्न? शारीरिक और मौखिक संकेत, या कोई अन्य रूप जो विचार से उत्पन्न होता है, विचार के कारण होता है, आदि। [धारा 667 के अनुसार जारी रखें]।

(iii.) बाह्य और विचार से उत्पन्न नहीं? सेक्स और जीवन शक्ति,
रूप का क्षय और अनित्यता, या कोई अन्य रूप जो मौजूद है जो विचार से उत्पन्न नहीं होता,
विचार के कारण नहीं होता, आदि। [धारा 668 के अनुसार जारी रखें]।

[769-771] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है और किसी विचार के साथ अस्तित्व में नहीं आता है?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य है और विचार के साथ ही अस्तित्व में आता है?

शारीरिक और मौखिक संकेत।

(iii.) बाह्य है और अस्तित्व में नहीं आता, इत्यादि?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[772-774] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और किसी विचार के बाद का नहीं? (ii.) बाहरी और किसी विचार के बाद का? (iii.) बाहरी और किसी विचार के बाद का?

उत्तर, क्रमानुसार लेने पर, पिछले तीन प्रश्नों के उत्तरों के समान हैं।

[775-777] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और सकल?[16]

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

[पृष्ठ 224] (ii.) बाह्य और स्थूल?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र।

(iii.) बाह्य और सूक्ष्म?

यौन संबंध...और शारीरिक पोषण।

[778-780] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और निकट?[17]

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और दूरस्थ?

यौन संबंध...और शारीरिक पोषण।

(iii.) बाह्य और निकट?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र।

[781-783] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) बाह्य और दृश्य संपर्क का आधार नहीं?[18]

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

(ii.) व्यक्तिगत और दृश्य संपर्क का आधार?

दृष्टि का दायरा।

(iii.) व्यक्तिगत, न कि दृश्य संपर्क का आधार?

अन्य चार इंद्रियों का क्षेत्र।

[784-786] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह बाहरी है और भावना का आधार नहीं है

...
धारणा का...
सोच का... दृश्य संपर्क से उत्पन्न
दृश्य अनुभूति का

? (ii.) क्या यह व्यक्तिगत है और भावना का आधार है[19]... दृश्य संपर्क से उत्पन्न दृश्य अनुभूति का? (iii.) क्या यह व्यक्तिगत है और भावना का आधार नहीं है... दृश्य संपर्क से उत्पन्न दृश्य अनुभूति का?

उत्तर पिछले तीन प्रश्नों के समान हैं।

[पृष्ठ 225] [787-789] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) बाह्य तथा श्रवण...
घ्राण...
स्वाद...
शारीरिक संपर्क का आधार नहीं ?

पांच प्रकार की इंद्रिय वस्तुओं के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

(ii.) व्यक्तिगत और . . . शारीरिक संपर्क का आधार?

अन्य चार इंद्रियों के क्षेत्र क्रमशः।

(iii.) व्यक्तिगत और शारीरिक संपर्क का आधार नहीं?

दृष्टि, श्रवण, गंध और स्वाद का क्षेत्र।

[790-792] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह बाह्य है और शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होने

वाली भावना,
बोध,
चिंतन और
शरीर के ज्ञान
का आधार नहीं है? (ii.) क्या यह व्यक्तिगत है और शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होने वाले शरीर के ज्ञान का आधार है? (iii.) क्या यह व्यक्तिगत है और शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होने वाले शरीर के ज्ञान का आधार नहीं है?

पिछले तीन प्रश्नों के समान उत्तर, क्रमानुसार।

[793-795] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है, न कि दृश्य संपर्क के अवसर पर बोधित वस्तु?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाहरी और दृश्य संपर्क के अवसर पर बोधित वस्तु?

दृश्य रूप का क्षेत्र।

(iii.) क्या यह बाहरी वस्तु है, न कि वह वस्तु जिसे दृश्य संपर्क के अवसर पर समझा गया हो?

अन्य चार प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[पृष्ठ 226] [796-798] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है और उस भावना,
बोध,
चिंतन,
दृश्य अनुभूति का विषय नहीं है
जो दृश्य संपर्क से उत्पन्न होती है? (ii.) क्या यह बाह्य है और दृश्य अनुभूति का विषय है? (iii.) क्या यह बाह्य है और दृश्य अनुभूति का विषय नहीं है?

पिछले तीन प्रश्नों के समान उत्तर, क्रमानुसार।

[799-801] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है, न कि श्रवण...
घ्राण...
स्वाद...
शारीरिक संपर्क के अवसर पर अनुभव की गई वस्तु ?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और वह वस्तु जो शारीरिक संपर्क के अवसर पर बोधित होती है?

मूर्त वस्तुओं का क्षेत्र।

(iii.) बाह्य वस्तु, न कि शारीरिक संपर्क के अवसर पर बोधित वस्तु?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[802-804] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और वस्तु नहीं

वह अनुभूति...
वह बोध...
वह सोच...
वह... शरीर का वह ज्ञान
जो... शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होता है?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

[पृष्ठ 227] (ii.) बाह्य और शरीर के संज्ञान का विषय जो शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होता है?

मूर्त चीजों का क्षेत्र...

(iii.) बाह्य और शरीर आदि के संज्ञान का विषय नहीं।

अन्य चार प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[805-807] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) बाह्य और दृष्टि क्षेत्र से बाहर?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

(ii.) व्यक्तिगत और दृष्टि का दायरा?

आँख, यानी वह सचेत अंग जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होता है... यह जो 'एक खाली गाँव' है - यह, आदि।[20]

(iii.) व्यक्तिगत है, दृष्टि क्षेत्र से बाहर?

अन्य चार इंद्रियों के क्षेत्र।

[808-810] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह बाह्य क्षेत्र है और श्रवण, गंध, स्वाद या शारीरिक संवेदनशीलता के दायरे से बाहर है?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

(ii.) व्यक्तिगत और . . . शारीरिक संवेदनशीलता का क्षेत्र?

शरीर, यानी सचेत अंग, जो महान घटनाओं से उत्पन्न होता है... यह जो 'एक खाली गाँव' है - यह, इत्यादि।

(iii.) व्यक्तिगत और शारीरिक संवेदनशीलता के दायरे से बाहर?

अन्य चार इंद्रियों के क्षेत्र।

[811-813] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत और दृश्य रूप के दायरे से बाहर?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

[पृष्ठ 228] (ii.) बाह्य और दृश्य रूप का क्षेत्र?

वह रूप जो चार महान घटनाओं से व्युत्पन्न होकर रंग के रूप में दिखाई देता है... यह जो दृश्य रूप का तत्व है - यह, आदि।[21]

(iii.) बाह्य और दृश्य रूप के दायरे से बाहर?

अन्य चार प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[814-816] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है और ध्वनि, गंध, स्वाद या स्पर्शनीयता के क्षेत्र से संबंधित नहीं है?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और क्षेत्र... मूर्त का?

मिट्टी (ठोस) तत्व, आदि... यह वह है जो मूर्त का घटक तत्व है - यह, आदि.[22]

(iii.) बाह्य और . . , मूर्त के दायरे से बाहर? अन्य चार प्रकार की इंद्रिय-वस्तुओं के दायरे . . . और शारीरिक पोषण।

[817-819] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) बाह्य तत्व, दृष्टि का तत्व नहीं?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

(ii.) व्यक्तिगत और दृष्टि का तत्व?

दृष्टि का दायरा।

(iii.) व्यक्तिगत तत्व, न कि दृष्टि का तत्व?

अन्य चार इंद्रियां।

[820-822] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह बाह्य तत्व है, न कि श्रवण, गंध, स्वाद या शारीरिक संवेदनशीलता का तत्व?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

(ii.) व्यक्तिगत और . . . शारीरिक संवेदनशीलता का तत्व?

शरीर की संवेदनशीलता का क्षेत्र...

[पृष्ठ 229] (iii.) व्यक्तिगत और . . , शरीर-संवेदनशीलता का तत्व नहीं? अन्य चार इंद्रियों के क्षेत्र।

[823-825] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत, न कि दृश्य रूप का तत्व?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और दृश्य रूप का तत्व?

दृश्य रूपों का क्षेत्र।

(iii.) बाह्य तत्व, दृश्य रूप का तत्व नहीं?

अन्य चार प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[826-828] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है, न कि ध्वनि, गंध, स्वाद या स्पर्शनीय तत्व?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और . . , मूर्त तत्व?

मूर्त वस्तुओं का क्षेत्र।

(iii.) बाह्य और . . . मूर्त का तत्व नहीं?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[829-831] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) बाह्य, न कि दृष्टि का भ्रम?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

(ii.) व्यक्तिगत और दृष्टि की कल्पना?

दृष्टि का दायरा।

(iii.) क्या यह व्यक्तिगत है, दृष्टि क्षमता नहीं?

अन्य चार इंद्रियों के क्षेत्र।

[832-834] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह बाह्य है, न कि श्रवण, गंध, स्वाद या शारीरिक संवेदनशीलता?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[पृष्ठ 230] (ii.) व्यक्तिगत और . . . शारीरिक संवेदनशीलता की क्षमता?

शरीर, यानी वह सचेत अंग जो चार महान घटनाओं से उत्पन्न होता है... यह जो 'एक खाली गाँव' है - यह, इत्यादि।

(iii.) व्यक्तिगत, न कि... शारीरिक संवेदनशीलता की क्षमता?

अन्य चार इंद्रियों के क्षेत्र।

[835-837] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है, न कि नारीत्व की संभाव्यता?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र

(ii.) बाह्यता और स्त्रीत्व?

जो स्त्री से संबंधित हो, दिखने में स्त्री जैसी हो, इत्यादि।

[धारा 633 के अनुसार जारी रखें] .

(iii.) बाहरी गुण, न कि स्त्रीत्व?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[838-840] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह व्यक्तिगत है, न कि पुरुषत्व की संभाव्यता? इत्यादि।

इस त्रिक में प्रश्न और उत्तर ठीक उसी प्रकार के हैं जैसे पूर्वोक्त में हैं, धारा 634 (ii) का उत्तर है।

[841-843]

यह त्रिक 'जीवन शक्ति' पर है, और 'नारीत्व' पर भी बिल्कुल अनुरूप है, धारा 635 को (ii.) में प्रतिस्थापित किया गया है।

[844-846] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्यक्तिगत सूचना, न कि शारीरिक सूचना?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र।

(ii.) बाह्य और शारीरिक संकेत?

वह तनाव, आशय, शरीर की तनावपूर्ण अवस्था, आदि। [धारा 636 के अनुसार जारी रखें]।

(iii.) बाह्य संकेत, न कि शारीरिक संकेत?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।

[पृष्ठ 231] [847-849]

यह त्रिक 'स्वर संकेत' पर है, और उपरोक्त के समान, धारा 637 को दूसरे प्रश्न के उत्तर के रूप में उद्धृत किया गया है।

[850-876]

यहां दस त्रिक दिए गए हैं जो निम्नलिखित दस गुणों की उपस्थिति या अनुपस्थिति, यानी व्यक्तिगत या बाह्य सूचना, पर आधारित हैं — जो कि पेयर्स (§§ 722-741) के अनुसार श्रेणियों के अंत में दिए गए गुणों के समान हैं: स्थान का तत्व, रूप का एकीकरण,
तरलता का तत्व, रूप
का अस्तित्व, रूप का हल्कापन, रूप का क्षय
, रूप की प्लास्टिसिटी,
रूप की अनित्यता, रूप की सुगमता और शारीरिक पोषण। इन प्रत्येक त्रिक में प्रश्न और उत्तर 'शारीरिक संकेत' (§§ 844-846) पर दिए गए अंतिम त्रिक के समान हैं, केवल भिन्न तत्व पूछे गए रूप का विशिष्ट प्रकार और प्रत्येक त्रिक के दूसरे उत्तर में उसकी परिभाषा है।

इस प्रकार प्रश्नों की संरचना इस प्रकार है:

(i.) व्यक्तिगत और नहीं . . .
(ii.) बाहरी और . . .
(iii.) बाहरी और नहीं . . .[23]

ये त्रिविध पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणियाँ हैं।

त्रिक की व्याख्या का अंत।

- फुटनोट:
1. स्वयं या गैर-स्वयं के रूप के साथ-साथ किसी अन्य गुण की उपस्थिति या अनुपस्थिति के संयोजन में लिए गए रूप के इस लंबे विश्लेषण को पढ़ने की नीरसता को कम करने के लिए, मैंने त्रिक को समूहित करने का एक तरीका आजमाया है। मैंने उस स्थिर विशेषता, अंतिम कथन, जिसे साइ. (पृष्ठ 55) में अप्पना कहा गया है, के प्रत्येक उत्तर को भी संक्षिप्त किया है। पिछले उत्तर देखें।

2. अजझत्तिकम्। 'व्यक्तिगत' शब्द शायद अधिक सटीक रूप से 'पुग्गलिकम्' से मेल खाता है, लेकिन यह 'स्वयं का' या 'स्वयं से संबंधित' की तुलना में कम जटिल है, जबकि साथ ही यह एक गलत अनुवाद भी नहीं है। पृष्ठ 207, नोट 1 देखें।

3. यह संभवतः अभी भी धारा 596 को संदर्भित करता है, जिसे इन दोनों पहले उत्तरों द्वारा 'मूर्त क्षेत्र' के समावेश के बिना ही पूर्ण माना जा सकता है, जो (iii.) के अंतर्गत आता है। पिछला अध्याय देखें।

4.तुलना करें धारा 653, 654.

5. मुद्रित पाठ में यहाँ दोहराया गया सद्दयातनम, के. में छोड़ दिया गया है।

6.750 में कटट्टा से पहले कम्मासा पढ़ें।

7. धारा 596 से पहले की तरह भरें।

8. पृष्ठ 175, नोट 2 और पृष्ठ 183, नोट 1 देखें।

9. सपतिघम के स्थान पर अप्पतिघम पढ़ें।

10. यह शब्द दोनों लिंगों के इंद्रियों के लिए एक सुविधाजनक संक्षिप्त रूप में प्रयोग किया जाता है। देखें धारा 596।

11. धारा 596 से पहले की तरह आपूर्ति करें।

12. धारा 647 आदि देखें।

13.वास्तव में 'दृश्य रूप का...' नोट 1 देखें।

14. धारा 636, 637 देखें।

15. धारा 667 आदि देखें।

16. धारा 675 आदि देखें।

17. धारा 677 आदि देखें।

18. धारा 679 आदि देखें।

19. 'आधार' पर इस और निम्नलिखित वाक्यों में कमियों के संबंध में, देखें § 681 इत्यादि और टिप्पणियाँ।

20. इसके लिए और निम्नलिखित त्रिकों में इसी प्रकार के उत्तरों के लिए § 597 इत्यादि देखें।

21. धारा 617 देखें।

22. धारा 648 देखें।

23. मुद्रित पाठ में कई चूक हैं, जो त्रिक की समरूपता को भंग करती हैं, जैसे: आकाशधातु पर प्रश्न एवं उत्तर (iii) (धारा 851 के बाद); रूपास्सा उपाचयो पर प्रश्न एवं उत्तर (iii) (धारा 865 के बाद); रूपास्सा संतति पर प्रश्न एवं उत्तर (i) (धारा 865 के बाद)। यदि इन्हें विधिवत रूप से शामिल किया जाता, तो इस अध्याय के अंत में प्रश्नों (और उत्तरों) की संख्या 876 के बजाय 879 हो जाती। यदि त्रिक को इसी प्रकार समूहीकृत किया गया होता, तो ये चूक संभव नहीं होतीं।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 4

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
 - पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय IV - चार पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणियाँ
 [पृष्ठ 232] [1]

[व्युत्पत्ति — कर्म का परिणाम।]

[877-880] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्युत्पन्न और ग्रहण करने का मुद्दा?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र; कामुकता और जीवन शक्ति की क्षमताएं, या कर्म के फलस्वरूप विद्यमान कोई भी अन्य रूप, चाहे वह दृश्य रूपों के क्षेत्र में हो,[2] गंध, या स्वाद, अंतरिक्ष का तत्व, रूप का एकीकरण या अस्तित्व, या शारीरिक पोषण,

[पृष्ठ 231] (ii.) व्युत्पन्न है, न कि समझने का मुद्दा?

ध्वनियों का क्षेत्र, शारीरिक और मुखर संकेत, रूप की हल्कापन, प्लास्टिसिटी और सुगमता, या कोई भी अन्य रूप जो मौजूद है जो कर्म के कारण नहीं है [पृष्ठ 233] निर्मित, चाहे वह दृश्य रूपों, गंधों या स्वादों के क्षेत्रों में हो, अंतरिक्ष का तत्व हो, रूप का एकीकरण या निर्वाह हो, या शारीरिक पोषण हो।

(iii.) व्युत्पन्न नहीं और समझने का मुद्दा?

कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ यह रूप, जो मूर्त और द्रव तत्वों के क्षेत्र में आता है।

(iv.) अव्युत्पन्न और बोध का मुद्दा नहीं?

यह रूप कर्मों के फलस्वरूप नहीं है, जो मूर्त और तरल तत्व के क्षेत्र में आता है।

[व्युत्पत्ति — कर्म का उत्पादन।]

[881-884] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्युत्पन्न और दोनों ही लालच का परिणाम और उसके अनुकूल? (ii.) व्युत्पन्न और लालच का परिणाम नहीं बल्कि उसके अनुकूल?[3] (iii.) अव्युत्पन्न और दोनों ही लालच का परिणाम और उसके अनुकूल? (iv.) अव्युत्पन्न और लालच का परिणाम नहीं बल्कि उसके अनुकूल?[4]

चारों उत्तर क्रमशः पिछले समूह के उत्तरों के समान हैं।

[व्युत्पत्ति — प्रभाव।]

[885-888] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्युत्पन्न और प्रभावकारी?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र, और दृश्य रूप, ध्वनि, गंध और स्वाद के क्षेत्र।

(ii.) व्युत्पन्न और गैर-प्रभावित?

यौन संबंध...और शारीरिक पोषण।

(iii.) व्युत्पन्न और प्रभावकारी?

मूर्त वस्तुओं का क्षेत्र।

(iv.) अव्युत्पन्न और गैर-प्रभावित?

तरल तत्व।

[पृष्ठ 234] [व्युत्पत्ति — बल्क।]

[889-892] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्युत्पन्न और स्थूल? (ii.) व्युत्पन्न और सूक्ष्म? (iii.) अव्युत्पन्न और स्थूल? (iv.) व्युत्पन्न और सूक्ष्म?

उत्तर क्रमशः पूर्ववर्ती समूह के उत्तरों के समान हैं।

[व्युत्पत्ति — निकटता।]

[893-896] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) व्युत्पन्न और दूरस्थ?

यौन संबंध...और शारीरिक पोषण।

(ii.) व्युत्पन्न और निकट?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र, और दृश्य रूप, ध्वनि, गंध और स्वाद के क्षेत्र।

(iii.) अव्युत्पन्न और दूरस्थ?

तरल तत्व।

(iv.) अव्युत्पन्न और निकट?

मूर्त वस्तुओं का क्षेत्र।

[कर्म का कार्य — दृश्यता।]

[897-900] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) समझने और देखने का मुद्दा?

कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाला दृश्य रूप।

(ii.) ग्रहणशीलता और अदृश्यता का मुद्दा? पाँचों इंद्रियों के क्षेत्र;
कामुकता और जीवन शक्ति, या कर्मों के फलस्वरूप विद्यमान कोई अन्य रूप।

चाहे वह गंध, स्वाद, या स्पर्शनीयता के क्षेत्र में हो,
स्थान या तरलता के तत्व हों,
रूप का एकीकरण या निर्वाह हो, या शारीरिक पोषण हो। (iii.) क्या यह समझने[5] और दृश्यता का मुद्दा नहीं है?

दृश्य स्वरूप का वह क्षेत्र जो कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न नहीं होता।

[पृष्ठ 235] (iv.) क्या यह पकड़ और अदृश्यता का मुद्दा नहीं है? ध्वनि का क्षेत्र,
शारीरिक और मुखर संकेत, रूप की
हल्कापन,
लचीलापन, सुगमता, रूप का क्षय, या अनित्यता, या कोई अन्य रूप जो कर्म के कारण नहीं है,

चाहे वह गंध के क्षेत्र में हो, या स्वाद के क्षेत्र में, या स्पर्शनीयता के क्षेत्र में,
स्थान के तत्वों में हो, या तरलता के क्षेत्र में,
रूप के एकीकरण या अस्तित्व में हो,
या शारीरिक पोषण में हो।

[कर्म का प्रभाव।]

[901-904] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) हड़पने और अतिक्रमण करने का मुद्दा?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र, या कर्म के फलस्वरूप दृश्य रूप, गंध, स्वाद या स्पर्शनीय रूप में विद्यमान अन्य कोई भी रूप। (ii) ग्रहणशीलता और अनावेगशीलता का मुद्दा?

कामुकता या जीवन शक्ति, या कर्म के माध्यम से उत्पन्न कोई भी अन्य रूप जो अंतरिक्ष या तरलता के तत्वों में,
रूप के एकीकरण या अस्तित्व में,
या शारीरिक पोषण में निर्मित होता है। (iii.) क्या यह पकड़ और अतिक्रमण का मुद्दा नहीं है?

ध्वनि का क्षेत्र, या कोई भी अन्य रूप जो अन्य चार प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्रों में कर्म के कारण नहीं बनता है।

(iv.) क्या यह पकड़ और अप्रभावितता का मुद्दा नहीं है? शारीरिक और मौखिक संकेत, रूप
की हल्कापन,
लचीलापन,
सुगमता,

क्षय, या क्षणभंगुरता, या कोई अन्य रूप जो मौजूद है जो अंतरिक्ष या तरलता के तत्वों में, रूप के एकीकरण या अस्तित्व में, या शारीरिक पोषण में
कर्म के कारण नहीं है ।

[कर्म का कार्य — महान घटना।]

[905-908] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) समझने और महान घटना का मुद्दा?

कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली मूर्त और तरल अवस्था का क्षेत्र।

[पृष्ठ 236] (ii.) क्या यह महान घटना नहीं बल्कि अभिलाषा का मुद्दा है? पाँचों इंद्रियों,
कामुकता,
जीवन शक्ति, या कर्म के फलस्वरूप विद्यमान अन्य कोई भी रूप, अंतरिक्ष के तत्व में,
रूप के एकीकरण या अस्तित्व में,
या शारीरिक पोषण में विद्यमान हैं। (iii.) क्या यह अभिलाषा का मुद्दा नहीं बल्कि महान घटना है?

मूर्त और तरल तत्वों का वह क्षेत्र जो कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न नहीं होता।

(iv.) क्या यह न तो ग्रहणशीलता का मुद्दा है और न ही कोई महान घटना? ध्वनि का क्षेत्र,
शारीरिक और स्वरीय संकेत, रूप
की हल्कापन,
लचीलापन,
सुगमता,
क्षय
और अनित्यता, या कोई भी अन्य रूप जो कर्म के फलस्वरूप अस्तित्व में नहीं है,

चाहे वह दृश्य रूप, गंध या स्वाद के क्षेत्र में हो,
अंतरिक्ष के तत्व में हो,
रूप के एकीकरण या अस्तित्व में हो,
या शारीरिक पोषण में हो।

[कर्म का कार्य — थोक।]

[909-912] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) स्थूल और स्थूल का मुद्दा? (ii.) स्थूल और सूक्ष्म का मुद्दा? (iii.) स्थूल और स्थूल का मुद्दा नहीं? (iv.) स्थूल और सूक्ष्म का मुद्दा नहीं?[6]

उत्तर क्रमशः अगले पूर्ववर्ती समूह में दिए गए चार उत्तरों से एक को छोड़कर समान हैं (§§ 901-904)।

[कर्म का कार्य — निकटता।]

[913-916] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) क्या यह निकटता और दूरी का मुद्दा है? (ii.) क्या यह निकटता और निकटता का मुद्दा है? (iii.) क्या यह निकटता और दूरी का मुद्दा नहीं है? (iv.) क्या यह निकटता और निकटता का मुद्दा नहीं है?

पिछले समूह (अर्थात, धारा 901-904) में दिए गए उत्तरों के समान उत्तर, लेकिन पहले और दूसरे उत्तरों का क्रम उलट दिया गया है, साथ ही तीसरे और चौथे उत्तरों का क्रम भी उलट दिया गया है।

[पृष्ठ 237] [917-936]

अगले चार-चार के पाँच समूहों में, रूप को
(क) 'पकड़ने का मुद्दा और पकड़ के लिए अनुकूल' और या तो
'दृश्यमान',[7] 'प्रभावित करने वाला', 'एक महान घटना', 'स्थूल' या 'दूरस्थ', या इन पाँचों के विपरीतार्थक शब्दों के क्रमानुसार संयोजन के रूप में माना जाता है; (ख) 'पकड़ने का मुद्दा नहीं, बल्कि पकड़ के लिए अनुकूल' और ऊपर उल्लिखित पाँचों गुणधर्म और उनके विपरीतार्थक शब्द क्रमानुसार।
इस प्रकार प्रश्न पिछले पाँच समूहों (§§ 897-916) के प्रश्नों के समान हैं, और उत्तर भी समान हैं।

[प्रभाव — संकाय।]

[937-940] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) प्रभाव और संकाय?

पांचों इंद्रियों की क्षमताएँ।

(ii.) प्रभाव डालने वाला, न कि संकाय?

इंद्रिय-विषयों के पाँच प्रकार।

(iii.) गैर-प्रभावित और सुविधा?

कामुकता और स्फूर्ति।

(iv.) अप्रभावित और संकाय नहीं?

शारीरिक और मौखिक संकेत... और शारीरिक पोषण।

[प्रभाव — महान घटना।]

[941-944] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) प्रभाव और एक महान घटना? मूर्त का क्षेत्र।

(ii.) प्रभाव डालने वाला और कोई बड़ी घटना नहीं? दृश्य रूप, ध्वनि, गंध और स्वाद के क्षेत्र।

(iii.) गैर-टकराव और एक महान घटना? द्रव तत्व।

(iv.) अप्रभावित और कोई बड़ी घटना नहीं? सेक्स... और शारीरिक पोषण।

[पृष्ठ 238] [संभाव्यता (संभाव्यता) — थोक।]

[945-948] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) संकाय और सकल?

पांचों इंद्रियों की क्षमताएँ।

(ii.) संकाय और सूक्ष्म?

कामुकता और स्फूर्ति।

(iii.) गैर संकाय और सकल?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र।

(iv.) सरलता और सूक्ष्मता?

सूचना...और शारीरिक पोषण।

[संभाव्यता (संभाव्यता) — निकटता।]

[949-952] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) फैसिड्टी और रिमोट?

कामुकता और स्फूर्ति।

(ii.) संकाय और निकट?

पांचों इंद्रियों की क्षमताएँ।

(iii.) गैर-फैक्टी और दूरस्थ?

सूचना...और शारीरिक पोषण।

(iv.) गैर संकाय और निकट?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र।

[महान घटना — बल्क।]

[953-956] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) एक महान घटना और स्थूल?

मूर्त वस्तुओं का क्षेत्र।

(ii.) एक महान घटना और सूक्ष्म?

तरल तत्व।

(iii.) कोई बड़ी घटना नहीं और स्थूल?

पांचों इंद्रियों और दृश्य रूप, ध्वनि, गंध और स्वाद के क्षेत्र।

(iv.) कोई बड़ी घटना नहीं, बल्कि सूक्ष्म घटना?

यौन संबंध...और शारीरिक पोषण।

[पृष्ठ 239] [महान घटना — निकटता।]

[957-960] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) एक महान घटना और दूरस्थ?

तरल तत्व।

(ii.) एक महान घटना और निकट?

मूर्त वस्तुओं का क्षेत्र।

(iii.) कोई बड़ी घटना नहीं और दूरस्थ?

कामुकता और स्फूर्ति।

(iv.) कोई बड़ी घटना नहीं और निकट?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र और दृश्य रूप, ध्वनि, गंध और स्वाद के क्षेत्र।

[रूप जैसा देखा, सुना, कल्पना किया और समझा गया है।]

[961]

(i.) दृश्य रूप का क्षेत्र देखा गया रूप है, (ii.) ध्वनि का क्षेत्र सुना गया रूप है, (iii.) गंध, स्वाद और स्पर्शनीय का क्षेत्र कल्पित रूप है,[8] [पृष्ठ 240] (iv.) सभी रूप मन द्वारा ज्ञात रूप हैं।[9]

ये चार पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणियाँ हैं।

चार-चार के समूहों का अंत।

- फुटनोट:
1. इस विभाजन में तार्किक विधि काफी परिचित है, अर्थात् (जहाँ बड़े अक्षर सकारात्मक और छोटे अक्षर नकारात्मक पदों को दर्शाते हैं), AB, Ab, aB, ab। संयुक्त युग्म में पहला पद, अपने नकारात्मक के साथ, एक सापेक्ष स्थिरांक है, जिसमें केवल छह ही हैं, अर्थात्, व्युत्पन्न रूप की अवधारणा, कर्म के उत्पाद के रूप में, कर्म को उत्पन्न करने वाले के रूप में (शाब्दिक रूप से, कर्म-संबंधी या कर्म-युक्त), इंद्रियों को प्रभावित करने वाले के रूप में, एक क्षमता के रूप में, और तत्वों में से एक के रूप में (अर्थात, व्युत्पन्न का विपरीत, सकारात्मक रूप से परिकल्पित)।

इन छह में से अंतिम पांच को अपेक्षाकृत परिवर्तनशील शब्द के रूप में उपयोग किया जाता है, जिसमें तीन अन्य को जोड़ा जाता है: स्थूलता या कोमलता, दूरी और दृश्यता के संबंध में रूप की अवधारणा।

2. ध्वनि और कर्म के बारे में, पृष्ठ 201, नोट 4 देखें।

3. धारा 656, नोट 1 देखें।

4. उत्तर में kammassa से पहले na पढ़ें।

5. मुद्रित पाठ में अनुपदिन्नम पढ़ें।

6. इस प्रश्न के उत्तर में मुद्रित पाठ में अपोधातु शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है। देखें धारा 892 और 880।

7. पहले प्रश्न के उत्तर में, धारा 917 में, कम्मास्सा से पहले ना पढ़ें।

8. मुतम। मेरा मानना है कि इस समूह के पहले तीन सदस्य एक पुरानी परंपरा के अवशेष हैं, जो उस युग से संबंधित हैं जब पांचों इंद्रियों को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा समन्वित नहीं किया गया था, जैसा कि पहले के बौद्ध संप्रदाय द्वारा किया गया था, और जब मनो और उसका कार्य, जिसे यहां (आंशिक रूप से) इस पुराने भूतकालिक कृदंत द्वारा व्यक्त किया गया है, अधिक अस्पष्ट रूप से समझा जाता था।

उदाहरण के लिए, प्रश्न उपनिषद में, जो अभिधम्म से पुराना हो भी सकता है और नहीं भी, या तो पाँचों इंद्रियों को ऊपर बताए अनुसार मनुष्य के अंतर्गत आँख और कान के रूप में वर्गीकृत किया गया है, या केवल अंतिम दो को ही जीवन के दिव्य तत्वों के समान माना गया है। यदि यह तर्क दिया जाए कि पूर्व व्याख्या तर्कसंगत नहीं है, तो यह याद रखना चाहिए कि कहीं अधिक पुराने बृहदारण्यक उपनिषद (i., 5, 3) में कहा गया है कि मनुष्य द्वारा, जैसे हम पीछे से स्पर्श किए जाने पर जानते हैं।

ऐसा लगता है मानो परंपरा यह कहने का प्रयास कर रही हो कि दृष्टि या श्रवण की सहायता के बिना, गंध, स्वाद और स्पर्श के लिए, बाह्य कारण या संभावित मूर्त मानसिक अनुभूति को समझने के लिए दृष्टि या श्रवण की तुलना में अनुमान, मानसिक निर्माण और कल्पना के अधिक प्रयास की आवश्यकता होती है। बुद्धघोष, जो यहाँ अपने दृष्टांत (असल. 338) को पुनः प्रस्तुत करते हैं, mutam का अर्थ munitva janitabbatthena और phusitva pi nanuppattikaranato से लगाते हैं।

9.मनसा विन्नतम अर्थात मनोविन्नानेन जनितब्बम। वही.
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 5

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय V - पंचस्तरीय दृष्टिकोण के अंतर्गत रूप की श्रेणी
पंचविधेना रूपासंगहो
[पृष्ठ 241] [962-966] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) पृथ्वी-तत्व (पथवि-धातु)?[1]

जो कठोर,
खुरदरा,
कठोरता,
दृढ़ता है, चाहे वह स्वयं का हो,[2] या बाह्य,
या पकड़ का परिणाम हो,[3] या पकड़ का परिणाम न हो। [पृष्ठ 242] (ii.) द्रव-तत्व (अपोधातु)?

जो तरल है, तरल से संबंधित है,
चिपचिपा है, जो चिपचिपा है उससे संबंधित है,
रूप की एकजुटता, चाहे वह स्वयं की हो,
या बाह्य हो,
या पकड़ का मुद्दा
हो या न हो, पकड़ का मुद्दा हो।[4] (iii.) ज्वाला-तत्व (तेजोधातु)?[5]

जो ज्वाला है, ज्वाला से संबंधित है,
ऊष्मा है, ऊष्मा से संबंधित है,
गर्म है, जो गर्म है उससे संबंधित है, चाहे वह स्वयं का हो,
या इत्यादि, [जैसा कि पहले में है जारी रखें]।

(iv.) वायु-तत्व (वयोधातु)?

जो हवा है, वह हवा से संबंधित है [उतार-चढ़ाव], रूप का
मुद्रास्फीति,[6]
चाहे वह स्वयं का हो,
या, आदि। [पृष्ठ 243] (क्रिया) व्युत्पन्न?[7]

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र... और ठोस पोषण।

इस प्रकार, पांच पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी है।

पांच सदस्यों के समूह का अंत।

- फुटनोट:

1. पृथ्वी तत्व का आवश्यक लक्षण (लक्खनम्) 'कठोरता' (कक्खलट्टम्, एएसएल, 332) बताया गया है। संभवतः बौद्धों के लिए इसका अर्थ वही रहा होगा जो हम 'ठोस' से समझते हैं, क्योंकि इसका तात्पर्य घनत्व से है, न कि तरल या गैसीय अवस्था से, और कठोरता के स्थान पर ठोसता शब्द का प्रयोग करना आकर्षक रहा होगा। लेकिन पहला शब्द अस्पष्ट है, क्योंकि इसका अर्थ समतल सतह का विपरीत हो सकता है, और कक्खलट्टम् को इस अर्थ में विवश नहीं किया जा सकता। फिर, दूसरे शब्द का विपरीत न तो तरल है और न ही समतल, बल्कि नरम या लचीला है। इसके अलावा, मिल. 67 में बजरी या पत्थर के वर्णन में इसके प्रयोग की तुलना करें, जहाँ हमें निश्चित रूप से 'कठोर' शब्द का प्रयोग करना चाहिए। पथविधातु के अन्य लक्षण आधार स्थापित करना (पतित्तनम्) और स्वीकार करना (संपच्चनम्) बताए गए हैं, बाद वाले शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है।

2. अज्हट्टम. धारा 673, टिप्पणी, और धारा 742, टिप्पणी देखें।

3. टीका के पृष्ठ 338 पर, जहाँ उपादिन्नम को न कम्मसमुत्थनम एव कहा गया है, वहाँ ऋणात्मक कण किसी त्रुटि के कारण आ गया होगा, क्योंकि उपादिन्नम मूलतः कर्म के कारण होता है। देखें ध. एस., §§ 653,* 654; एएसएल, पृष्ठ 46, 337 (§ 664), आदि। बुद्धघोष कहते हैं कि सामान्यतः यहाँ शरीर की अस्थि संरचना (स्वयं का सबसे ठोस भाग, शरीरत्तकम) का उल्लेख है। क्योंकि यह उपादिन्नम हो भी सकता है और नहीं भी, जब इसे ग्रहण की गई, पकड़ी गई या संक्रमित की गई वस्तु के रूप में दर्शाया जाता है, तो यह पूरी तरह से ग्रहण का परिणाम होता है।

4. धारा 652, टिप्पणी देखें। अपोधातु के आवश्यक लक्षण प्रवाह (पग्घरनम), विस्तार या फैलाव (ब्रुहनम, सीजे. पृ. 12, टिप्पणी 3, मिल. 317) और संघ (संगहो, अस्ल., वही) बताए गए हैं। अंतिम शब्द संभवतः उस बात को व्यक्त करने का प्रयास हो सकता है जिसे हम मोटे तौर पर 'पानी हमेशा अपना स्तर स्वयं खोज लेता है' कहते हैं। आंतरिक या व्यक्तिगत अपो पित्त, कफ, मवाद, रक्त, पसीना, सीरम, आँसू आदि के रूप में वितरित होता है। एम. आई. 42.

5. बौद्ध ग्रंथों में कभी भी अग्गी या अग्नि का उल्लेख नहीं है। इसके आवश्यक गुण (असल., वही) ऊष्मा, पकना, परिपक्व होना (परिपचनम) और कोमल होना बताए गए हैं। ऊष्मा के कारण ही भोजन और पेय पदार्थ पचते हैं। एम,, लोक. सिट.

6. पाठ में यहाँ चंबित्तत्तम् और थम्भितत्तम् दोनों का उल्लेख है, जिनका अर्थ है उतार-चढ़ाव (कंपन) और मुद्रास्फीति। हालाँकि, अत्थसालिनी में कहीं भी पहले शब्द का प्रयोग वायु के लिए नहीं किया गया है; बाद वाले शब्द को, जिसमें 'वि-' का प्रयोग अधिक प्रभावी है, वायु का विशिष्ट चिह्न बताया गया है, इस तत्व की अन्य विशेषताएँ हैं आगे की ओर गति (समुदिरणम्) और नीचे की ओर बल (अभिनिहारम् - sic lege, Cfl D. i.*76; M. i. 119; Asl. 332)। बुद्धघोष चंबित्तत्तम् पर मौन रहते हैं, लेकिन थम्भितत्तम् की व्याख्या करते हैं। यद्यपि यह निश्चित रूप से निर्णायक नहीं है, फिर भी तरलता के वर्णन में समानांतर शब्द बंधनत्तम् रूपासा (सामंजस्य) के लिए केवल एक ही शब्द थम्भितत्तम् रूपासा ही उपयुक्त प्रतीत होता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि के. चंबित्तत्तम् को छोड़ देते हैं। इन सभी आधारों पर, मुझे इस शब्द के मूल समावेश पर संदेह करने की प्रवृत्ति होगी। वायो की विशेषता को दर्शाने के लिए चुना गया उदाहरण कमल और नरकट के आवरण या तनों का है जो 'हवा से भरे' होते हैं, या पवन (वातपुन्नानी) से भरे होते हैं।

7. व्युत्पन्न (अप ए दा) (i.) से (iv.) का विलोम है। धारा 647, 648 देखें।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 6

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय VI - छह पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी
[पृष्ठ 244] [967]

(i.) दृश्य रूपों का क्षेत्र दृष्टि द्वारा अनुभव किए जाने योग्य रूप है, (ii.) ध्वनियों का क्षेत्र श्रवण द्वारा अनुभव किए जाने योग्य रूप है, (iii.) गंधों का क्षेत्र सूंघने द्वारा अनुभव किए जाने योग्य रूप है, (iv.) स्वादों का क्षेत्र स्वाद द्वारा अनुभव किए जाने योग्य रूप है, (v.) स्पर्शनीय रूपों का क्षेत्र देह-संवेदना द्वारा अनुभव किए जाने योग्य रूप है। (vi.) सभी रूप मन द्वारा अनुभव किए जाने योग्य रूप हैं।

इस प्रकार, छह पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी है।

छह सदस्यों के समूह का अंत।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 7

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय VII - सात पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी
[पृष्ठ 245] [968]

(i.) दृश्य रूप का क्षेत्र वह रूप है जिसे दृष्टि द्वारा जाना जा सकता है, (ii.) ध्वनि का क्षेत्र वह रूप है जिसे श्रवण द्वारा जाना जा सकता है, (iii.) गंध का क्षेत्र वह रूप है जिसे सूंघने द्वारा जाना जा सकता है, (iv.) स्वाद का क्षेत्र वह रूप है जिसे स्वाद द्वारा जाना जा सकता है, (v.) स्पर्शनीय का क्षेत्र वह रूप है जिसे शरीर की संवेदनाओं द्वारा जाना जा सकता है।

[969]

(vi.) दृश्य रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद और स्पर्शनीय रूप के क्षेत्र विचारणीय तत्व द्वारा बोधगम्य रूप हैं। (vii.) समस्त रूप प्रतिनिधिक बोधगम्य रूप हैं।

इस प्रकार सात पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी है।

ग्रुप ऑफ सेवन का अंत।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 8

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय VIII - आठ पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी
[पृष्ठ 246] [970]

(i.) दृश्य रूप का क्षेत्र वह रूप है जिसे आँख से जाना जा सकता है। (ii.) ध्वनि का क्षेत्र वह रूप है जिसे कान से जाना जा सकता है। (iii.) गंध का क्षेत्र वह रूप है जिसे नाक से जाना जा सकता है। (iv.) स्वाद का क्षेत्र वह रूप है जिसे जीभ से जाना जा सकता है। (v.) स्पर्श द्वारा प्राप्त होने वाला सुखद स्पर्श वह रूप है जिसे शरीर द्वारा जाना जा सकता है। (vi.) स्पर्श द्वारा प्राप्त होने वाला अप्रिय स्पर्श वह रूप है जिसे शरीर द्वारा जाना जा सकता है। (vii.) पाँच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र वे रूप हैं जिन्हें विचार द्वारा जाना जा सकता है। (viii.) सभी रूप वे रूप हैं जिन्हें प्रतिनिधिक बोध द्वारा समझा जा सकता है।

इस प्रकार, आठ पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी है।

ग्रुप ऑफ एट का अंत।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 9

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय IX - नौ गुना पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी
[पृष्ठ 247] [971-973] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) दृष्टि की क्षमता? (ii.) श्रवण की क्षमता? (iii.) गंध की क्षमता? (iv.) स्वाद की क्षमता? (v.) शारीरिक संवेदनशीलता की क्षमता? (vi.) नारीत्व की संभाव्यता? (vii.) पुरुषत्व की संभाव्यता? (viii.) जीवन शक्ति की संभाव्यता?

आठ उत्तर वे हैं जो आठ संकायों या संभाव्यताओं के मूल विवरणों में दिए गए हैं (§§ 597, 601, 605, 609, 613, 633-535)।

(ix.) वह कौन सा रूप है जो फैकल्टी नहीं है? पाँच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र . . .[1] और शारीरिक पोषण।

नौ पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी ऐसी ही होती है।

ग्रुप ऑफ नाइन का अंत।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 10

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय X - दस गुना पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी
[पृष्ठ 248] [974, 975]

पहले आठ प्रश्न और उत्तर पिछले समूह के पहले आठ प्रश्नों और उत्तरों के समान हैं।

[976, 977] वह कौन सा रूप है जो है

(ix.) संकाय नहीं बल्कि प्रभाव डालने वाला?

पांच प्रकार के इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र।

(x.) नॉटफैसिड्टी और नॉन इम्पिंगिंग?

सूचना . . .[1] और शारीरिक पोषण.

इस प्रकार दस पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी है।

दस सदस्यों के समूह का अंत।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक 2-अध्याय 11

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 2 - प्रपत्र

अध्याय XI - ग्यारह गुना पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी
[पृष्ठ 249] [978, 979] वह कौन सा रूप है जो है

(i.) दृष्टि का क्षेत्र? (ii.) श्रवण का क्षेत्र? (iii.) गंध का क्षेत्र? (iv.) स्वाद का क्षेत्र? (v.) शारीरिक संवेदनशीलता का क्षेत्र? (vi.) दृश्य रूप का क्षेत्र? (vii.) ध्वनि का क्षेत्र? (viii.) गंध का क्षेत्र? (ix.) स्वादों का क्षेत्र? (x.) स्पर्शनीय का क्षेत्र?

उत्तर क्रमशः धारा 597, 601, 605, 609, 613, 617, 621, 625, 629, 649 के अनुसार हैं।

[980]

(xi.) वह कौन सा रूप है जो अदृश्य, अप्रभावित और [मानसिक] अवस्थाओं के क्षेत्र में समाहित है?[1]

यौन संबंध...और शारीरिक पोषण।

ग्यारह पहलुओं के अंतर्गत रूप की श्रेणी ऐसी ही होती है।

ग्यारह सदस्यों के समूह का अंत।

प्रपत्र के विभाजन का अंत।

पाठ के लिए आठवें भाग का अंत।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पाली-अंग्रेजी संस्करण-अध्याय 3

धम्मसंगनी अध्याय 3

3. निक्खेपकण्डं

टिकानिकखेपं

985. कटमे धम्म कुसल? तिनि कुसलमूलानि – अलोभो, अदोसो, अमोहो; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म कुसल।

986. कतमे धम्म अकुसाला? तिनि अकुशलमुलानि – लोभो, दोसो, मोहो; तदेकत्था च किलेसा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म अकुशला।

987. कटमे धम्म अभ्यक्ता? कुसलकुशलानं धम्मनां विपाक कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्खन्धो, संनाक्खन्धो, संखारक्खन्धो, विनान्नक्खन्धो; ये च धम्म किरिया नेव कुसल नकुशला न च कम्मविपाक; सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म अभ्यक्ता।

988. कतमे धम्म सुखाय वेदनाय संपयुत्ता? सुखाभूमियं कामवकेरे, रूपावकेरे, अपरियापन्ने, सुखं वेदानां थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो सन्नाक्खन्धो, शंखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म सुखाय वेदनाय संपयुत्ता।

989. कतमे धम्म दुक्खाय वेदनाय संपयुत्ता? दुक्खभूमियं कामवकेरे, दुक्खं वेदानां थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो – इमे धम्म दुक्खाय वेदनाय संपयुत्ता।

990. कतमे धम्म अदुक्खमसुखाय वेदनाय संपयुत्ता? अदुक्खमासुखभूमियं कामवकेरे, रूपावकेरे, अरूपावकेरे, अपरियापन्ने, अदुक्खमासुखं वेदानां थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो सन्नाक्खन्धो, शंखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो – इमे धम्म अदुक्खमसुखाय वेदनाय संपयुत्ता।

991. कटमे धम्म विपाका? कुसलकुशलानं धम्मनां विपाक कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म विपाका।

992. कतमे धम्म विपाकधम्मधम्म? कुसलकुशल धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो - इमे धम्म विपाकधम्मधम्म।

993. कतमे धम्म नेवविपाकनविपकधम्मधम्म? ये च धम्म किरिया नेव कुसल नकुशला न च कम्मविपाक, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म नेवविपाकनविपकधम्मधम्म।

994. कतमे धम्म उपादिन्नुपादनीय? सासव कुसलकुशलानं धम्मनां विपाक कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; यञ्च रूपं कम्मास्सा कटत्ता - इमे धम्म उपादिनुपदनीय।

995. कतमे धम्म अनुपादिनुपादनीय? सासव कुसलकुशल धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; ये च धम्म किरिया नेव कुसल नकुशला न च कम्मविपाक; यञ्च रूपं न कम्मास्सा कटत्ता - इमे धम्म अनुपादिनुपदनीय।

996. कतमे धम्म अनुपादिन्नुपादनीय? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असन्खता च धातु - इमे धम्म अनुपदीननुपदनीय।

997. कतमे धम्म सांकिलिट्ठसंकिलेसिका? तिनि अकुशलमुलानि — लोभो, दोसो, मोहो; तदेकत्था च किलेसा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म संकिलिट्ठसंकिलेसिका।

998. कतमे धम्म असांकिलीठसंकिलेसिका? सासाव कुसलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपक्खन्धो, वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विणनक्खन्धो - इमे धम्म असंकिलित्थसंकिलेशिका।

999. कतमे धम्म असांकिलित्थासन्किलेसिका? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म असांकिलीथसासंकिलेसिका।

1000. कतमे धम्म सवितक्कसविचारः? सवित्तक्कसविचराभूमियं कामवकेरे, रूपावकेरे, अपरियापन्न, वितक्कविचारे थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो - इमे धम्म सवितक्कसविचार।

1001. कतमे धम्म अवितक्कविचारमत्ता? अवितक्कविचारमत्तभूमियं रूपावकेरे, अपरियापन्न, विचारं थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो - इमे धम्म अवित्तक्कविचारमत्ता।

1002. कतमे धम्म अवित्तक्काविचार? अवित्तक्काविचारभूमियं कामवकेरे, रूपावकेरे, अरूपावकेरे, अपरियापन्ने; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म अवित्तक्काविचार।

1003. कतमे धम्म पितिसाहगता? पितिभूमियं कामवकेरे, रूपावकेरे, अपरियापन्न, पितिम थापेत्वा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो - इमे धम्म पितिसाहगता।

1004. कतमे धम्म सुखसहगाता? सुखाभूमियं कामवकेरे, रूपावकेरे, अपरियापन्ने, सुखं थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म सुखसहगता।

1005. कतमे धम्म उपेक्खसहगता? उपेक्खभूमियं कामवकेरे, रूपावकेरे, अरूपावकेरे, अपरियापन्न, उपेक्खं थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म उपेक्खसहगता।

1006. कतमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा? तिनि संयोगनि - सक्कयादिति, विचिकीच्चा, सिलब्बतपरमसो।

1007. तत्थ कतामा सक्कयादिति? इधा अस्सुत्वा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावि अरियाधम्मस्सा अकोविदो अरियाधम्मे अविनीतो सप्पुरिसानां अदस्सावि सप्पुरिसाधम्मस्सा अकोविदो सप्पुरिसाधम्मे अविनीतो रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवंतम् वा अत्तनं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मि वा अत्तनं। वेदानां अट्टतो समनुपस्सति, वेदनावंतं वा अत्तनं, अत्तानि वा वेदानां, वेदनाय वा अत्तनं। सन्न्यां अत्ततो समनुपस्सति, सन्नावंतं वा अत्तनं, अत्तानि वा सन्न्यां, सान्याय वा अत्तानाम्। संखरे अत्ततो समनुपस्सति, संखरावन्तं वा अत्तनं, अत्तनि वा संखरे, संखरेसु वा अत्तनं। विनाणं अट्टतो समनुपस्सति, विनाणवंतं वा अत्तनं, अत्तानि वा विनानां, विनानास्मिं वा अत्तनं। या एवरुपा दितिथि दितिथिगतं दितिथिगहनम् दितिथिकांतारो दितिविशुकायिकाम् [दिथिविसुकायितम् (सि.)] दितिविविप्फंडितम् दितिथिसांयोजनं गाहो पतिग्गाहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्छट्टं तिथथायतनं विपरियासग्गहो — अयं वुकाति सक्कयदिति।

1008. तथा कतमा विचिकीच्चा? सत्थरि कंखति विकिसिच्छति, धम्मे कंखति विकिसिच्छति, संघे कंखति विकिसिच्छति, सिक्खाय कंखाति विचिकिचति, पुब्बंते कंखति विचिकिचति, अपरंते कंखति विकिसिच्छति, पब्बंतापरंते कंखति विचिकिचति, इदप्पक्कयता पतिच्चासमुप्पन्नेसु धम्मेसु कंखति विकिकिचति। या एवरुपा कंखा कंखायणा कंखायितट्टं विमति विकिसिच्चा द्वेधाकं द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो असप्पना परिस्पना अपरियोगहाना थंभितत्तम् चित्तस्स मनोविलेखो - अयं वुक्काति विकिसिच्चा।

1009. तत्थ कतमो सिलब्बतपरमसो? इतो बहिद्ध समानब्राह्मणं 'सिलेन शुद्धि, वतेन शुद्धि, सिलब्बतेन शुद्धि' या एवरूपा दिदिथिगतं दितिघहनं दितिकांतरो दितिविशुकायिकं दितिथिविप्पंदितं दितिथिसंयोजनं गाहो पतिग्गहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्चट्टं तित्थायतनं विपरियासग्गहो — अयं वुकाति sīlabbataparāmāso.

1010. इमानी तिनि संयोगनि; तदेकत्था च किलेसा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मं वाचिकम्मं मनोकम्मम् - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा।

1011. कटमे धम्म भवनाय पहतब्बा? अवसेसो लोभो, दोसो, मोहो; तदेकत्था च किलेसा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म भवनाय पहतब्बा।

1012. कतमे धम्म नेवा दस्सानेन न भवनाय पहतब्बा? कुसलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो ; सब्बनचा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नेवा दस्सानेन न भवनाय पहतब्बा।

1013. कतमे धम्म दस्सानेन पहतबहेतुका? तिनि संयोगनि - सक्कयादिति, विचिकीच्चा, सिलब्बतपरमसो।

1014. तत्थ कतामा सक्कयादिति...पे... अयं वुच्चति सक्कयादितिथि।

1015. तत्थ कतमा विसिकिच्चा...पे... अयं वुक्कति विसिकिच्चा।

1016. तत्थ कतमो सिलब्बतपरमासो...पे... अयं वुकाति सिलब्बतपरमासो।

1017. इमानि तिनि संयोगनि; तदेकत्था च किलेसा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बहेतुका। तिनि संयोगनि - सक्कयादिथि, विचिच्चा, सिलब्बतपरमसो - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा। तदेकठो लोभो, दोसो, मोहो — इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बहेतु। तदेकत्था च किलेसा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बहेतुका।

1018. कटमे धम्म भवनाय पहतबहेतुका? अवसेसो लोभो, दोसो, मोहो — इमे धम्म भवनाय पहतबहेतु। तदेकत्था च किलेसा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म भवनाय पहतब्बहेतुका।

1019. कतमे धम्म नेवा दस्सानेन न भवनाय पहतबहेतुका? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामावचरा रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्खन्धो, संनाक्खन्धो, संखारक्खन्धो, विनान्नक्खन्धो; सब्बनचा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नेवा दस्सानेन न भवनाय पहतबहेतुका।

1020. कतमे धम्म अचयागमिनो? सासव कुसलकुशल धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; वेदानाक्खन्धो...पे... विनाणक्खन्धो - इमे धम्म अचायागामिनो।

1021. कतमे धम्म अपाकायगामिनो? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना - इमे धम्म अपाकायगामिनो।

1022. कतमे धम्म नेवा अचायागामी न अपाकायागामिनो? कुसलकुशलानं धम्मनां विपाक कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; ये च धम्म किरिया नेव कुसल नकुशला न च कम्मविपाक; सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नेव अचयागामी न अपाकयागामिनो।

1023. कटमे धम्म सेक्खा? कट्टारो मग्गा अपरियापन्ना, हेथिमानी च तिनि समानाफलनि - इमे धम्म सेक्खा।

1024. कतमे धम्म असेक्खा? उपरिथिमं [उपरीमं (स्या.)] अरहट्टफलं - इमे धम्म असेक्खा।

1025. कटमे धम्म नेवासेक्खानासेक्खा? ते धम्मे थपेत्वा, अवसेसा कुशलाकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नेवासेक्खानासेक्खा।

1026. कटमे धम्म परित्ता? सब्बेव कामवचरा कुसलकुशलब्यकाता धम्म; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म परित्ता।

1027. कटमे धम्म महग्गता? रूपावचारा, अरूपावचारा, कुसलब्यकाता धम्म; वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म महग्गता।

1028. कटमे धम्म अप्पमना? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अप्पमाना।

1029. कटमे धम्म परित्तरम्मना? परिते धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म परित्तरम्मना।

1030. कटमे धम्म महग्गतरम्मना? महग्गते धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म महग्गतरम्मना।

1031. कटमे धम्म अप्पमानारमन्ना? अप्पमने धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म अप्पमानरामनना।

1032. कतमे धम्म हिना? तिनि अकुशलमुलानि — लोभो, दोसो, मोहो; तदेकत्था च किलेसा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म हीना।

1033. कतमे धम्म मज्झिमा? सासाव कुसलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, रूपकखंडो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म मज्झिमा।

1034. कटमे धम्म पनिता? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म पनिता।

1035. कतमे धम्म मिच्चत्तनीयता? पञ्च कम्मानि अनंतारिकानि, या च मिच्छदिथिनियता - इमे धम्म मिच्छत्तनियाता।

1036. कतमे धम्म सम्मत्नियता? कट्टारो मग्गा अपरियापन्ना - इमे धम्म सम्मत्तनीयता।

1037. कतमे धम्म अनियता? ते धम्मे थपेत्वा, अवसेसा कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म अनियता।

1038. कटमे धम्म मग्गरम्मना? अरियामग्गं अरब्भा ये उप्पजंति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म मग्गरमण।

1039. कटमे धम्म मग्गहेतुका? अरियामग्गसामंगिस्सा मग्गंगनि थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म मग्गहेतुका। अरियामग्गासांगिसा सम्मादिथि मग्गो सेवा हेतु च, सम्मादिथिं थपेत्वा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विन्ननाक्खण्डहो - इमे धम्म मग्गहेतुका। अरियामग्गासमंगिसा अलोभो, अदोसो, अमोहो — इमे धम्म मग्गहेतु। तंसम्पायुत्तो वेदानाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म मग्गहेतुका।

1040. कतमे धम्म मग्गाधिपतिनो? अरियामग्गं अधिपतिं करित्वा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म मग्गाधिपतिनो। अरियामग्गसामन्गिस्सा विमानसाधिपतेयं मग्गं भावयंतस्सा विमानसं थपेत्वा; तंसम्पायुत्तो वेदानाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म मग्गाधिपतिनो।

1041. कतमे धम्म उप्पन्ना? ये धम्म जाता भूत संजाता निब्बट्टा अभिनिब्बट्टा पतुभूता उप्पन्ना समुप्पन्ना उत्थिता समुत्थिता उप्पन्ना उप्पन्नसेन संघहिता, रूपं [रूपा (बहुसु)], वेदाना, सन्ना, संखारा, विनाणं - इमे धम्म उप्पन्ना।

1042. कटमे धम्म अनुप्पन्ना? ये धम्म अजात अभूत असंजता अनिब्बत्ता अनभिनिब्बत्ता अपातुभूता अनुप्पन्ना असामुप्पन्ना अनुथिता असामुथिता अनुप्पन्ना अनुप्पन्नासेना संघहिता, रूपं, वेदना, संना, संखारा, विनाणं - इमे धम्म अनुप्पन्ना।

1043. कतमे धम्म उप्पादिनो? कुसलकुशलानं धम्मनां अविपक्कविपाकनं विपाका कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; यञ्च रूपं कम्मास्सा कटत्ता उप्पज्जिसति — इमे धम्म उप्पादिनो।

1044. कतमे धम्म अतिता? ये धम्म अतिता निरुद्ध विगत विपरिणता अथंगता अबभट्टंगता उप्पज्जित्वा विगता अतीता अतितानसेना संघहिता, रूपं, वेदाना, सन्ना, संखारा, विनाणं - इमे धम्म अतिता।

1045. कटमे धम्म अनागता? ये धम्म अजात अभूत असंजता अनिब्बत्ता अनाभिनिब्बत्ता अपातुभूता अनुप्पन्ना असामुप्पन्ना अनुथिता असामुथिता अनागत अनागतसेन संगहिता, रूपं, वेदना, संना, संखारा, विनाणं - इमे धम्म अनागता।

1046. कतमे धम्म पच्चुप्पन्ना? ये धम्म जाता भूत संजाता निब्बट्टा अभिनिब्बट्टा पतुभूता उप्पन्ना समुप्पन्ना उत्थिता समुत्थिता पच्चुप्पन्ना पच्चुप्पन्नसेना संघहिता, रूपं, वेदना, संना, संखारा, विनाणं - इमे धम्म पच्चुप्पन्ना।

1047. कटमे धम्म अतितरम्मना? अतिते धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसिटासिका धम्म - इमे धम्म अतितरम्मना।

1048. कटमे धम्म अनागतारम्मना? अनागते धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म अनागतारम्मना।

1049. कटमे धम्म पच्चुप्पन्नारम्मना? पक्कुप्पन्ने धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म पच्चुप्पन्नरमण्णा।

1050. कतमे धम्म अज्झट्टा? ये धम्म तेसं तेसं सत्तानं अज्झट्टं पच्चट्टं नियतं पतिपुग्गलिका उपादिन्ना, रूपं, वेदाना, संना, संखरा, विनाना - इमे धम्म अज्झट्टा।

1051. कतमे धम्म बहिद्धा? ये धम्म तेसं तेसं परसत्तनं परपुग्गलानं अज्झट्टं पच्चट्टं नियतं पतिपुग्गलिका उपादिन्ना, रूपं, वेदाना, सन्ना, संखारा, विनाणं - इमे धम्म बहिद्धा।

1052. कतमे धम्म अज्झत्तबहिद्धा? तदुभयं — इमे धम्म अज्झत्तबहिद्धा।

1053. कटमे धम्म अज्झत्तरम्मना? अजज्जते धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म अजज्जतरम्मना।

1054. कतमे धम्म बहिद्धारम्मना? बहिद्ध धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म बहिद्धारम्मना।

1055. कतमे धम्म अजज्जत्तबहिद्धारम्मना? अज्झट्टबहिद्ध धम्मे अरब्भा ये उप्पज्जन्ति चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म अजज्जट्टबहिद्धारम्मना।

1056. कतमे धम्म सन्निदस्सानसप्पतिघा? रूपायतनं - इमे धम्म सानिदासंससप्पतिघा।

1057. कतमे धम्म अनिदस्सानसप्पतिघा? चक्खायतनं, सोतायतनं, घनायतनं, जीवायतनं, कायायतनं, सद्दायतनं, गंधायतनं, रसायतनं, फोथ्हब्बायतनं - इमे धम्म अनिदासनसाप्पतिघा।

1058. कतमे धम्म अनिदासनप्पतिघा? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो; यञ्च रूपं अनिदासनं अप्पतिघं धम्मायतनपरियपन्नं; असंखता च धातु - इमे धम्म अनिदासनप्पातिघा।

Tikaṃ.

दुकनिकखेपं

हेतुगोच्चकं

1059. कतमे धम्म हेतु? तयो कुसलहेतु, तयो अकुशलहेतु, तयो अभ्याकहेतु, नव कामवचराहेतु च रूपवचराहेतु, च अरूपवचराहेतु, च अपरियापन्नाहेतु।

1060. तथा कतामे तैयो कुशलहेतु? अलोभो, अदोसो, अमोहो।

1061. तत्थ कतमो अलोभो? यो अलोभो अलुभना अलुभितट्टं असरगो असराज्जना असरज्जितत्तं अनाभिज्ज अलोभो कुसलमूलं - अयं वुच्चति अलोभो।

1062. तत्थ काटामो अदोसो? यो अदोसो अदुस्साना अदुस्सीत्तं मेत्ति मेट्टयाना मेत्तयितत्तं अनुदा अनुदायान अनुदायितत्तं हितेसिता अनुकम्पा अब्यपादो अब्यपज्जो अदोसो कुसलमूलम् - अयं वुक्काति अदोसो।

1063. Tattha katamo amoho? दुक्खे नाणं, दुक्खसमुदाय नाणं, दुक्खनिरोधे नाणं, दुक्खनिरोधगामिनीया पतिपदाय नाणं, पुब्बंते नाणं, अपरंते नानणं, पुब्बनतापरंते नानणं, इदप्पाचयता पटिकसमुप्पन्नेसु धम्मेसु सानणं, या एवरूप पणना पजानन विकयो पविकयो धम्मविकयो सल्लक्खाना उपलक्खना पक्कुपलक्खाना पण्डिकचं कोसलं नेपुन्नं वेभब्या चिंता उपपरिक्खा भूरि मेधा परिणायिका विपश्यना सम्पजान्नं पटोदो पणिन पणिनिन्द्रियम् पन्नबलं पन्नसत्थं पन्नपसाददो पणनालोको पणनाओभासो पणनपज्जतो पणनरत्नं अमोहो धम्मविकयो सम्मदिति - अयं वुक्कति अमोहो.

Ime tayo kusalaheū.

1064. तत्थ कतामे तैयो अक्सलहेतु? लोभो, दोसो, मोहो।

1065. Tattha katamo lobho? यो रागो सारागो अनुनायो अनुरोधो नंदी नंदीरागो [नंदीरागो (सि.)] चित्तस्स सारागो इच्छा मुच्चा अज्जहोसानं गेधो पालीगेधो सांगो पांको एजा माया जनिका संजननि सिब्बिनि [सिब्बानी (सि.)] जालिनि सरिता विसात्तिका सुत्तं विसाता अयुहिनि [अयुहनि (सि. स्या.)] दुतिया पाणिधि भवनेति वनं वनाथो संथावो सिनेहो अपेक्खा पतिबंधु के तौर पर असीसाना असीसितत्तम् [आसिसन असीसितत्तम (सि. स्या.)] रूपासा सद्दासा गंधासा रसासा फोथब्बासा लाभासा धनासा पुत्तसा जीवितसा जप्पा पजप्पा अभिजप्पा जप्पा जप्पा जप्पना जप्पीत्तं लोलुप्पं लोलुप्पयाना लोलुप्पयितट्टं पुच्चानजिकाता [पुञ्चिकता (स्या.) पुच्चिकता (सी.)] साधुकमायता अधम्मरागो विस्मालोभो निकांति निष्कामना पत्तन पिहना संपतन कामतंहा भवतंहा विभावतंहा रूपतंह अरूपतंहा निरोधतंहा रूपतंहा सद्दतंहा गंधतंहा रसतंहा फोथब्बतंहा धम्मतंहा ओघो योगो गांठो उपादानं अवरणं निवारणं चादानं बंधनं उपक्किलसो अनुसयो परियुत्थानं लता वेविचं दुक्खमूलं दुक्खनिदानं दुक्खप्पभावो मरापासो मरबसिसं माराविसयो तन्हानादि तन्हाजलं तन्हागद्दुलं तन्हासमुद्दो अभिज्ज लोभो अकुसलमूलं - अयं वुच्चति लोभो।

1066. तत्थ कतमो दोसो? अनात्थम् मे अचरति अघातो जयति, अनात्थम् मे कैरातिति अघातो जयति, अनात्थम् मे अचरति अघातो जयति, पियास्सा मे मनपास्सा अनात्थम् अचरी...पे... अनात्थम् चरति...पे... अनात्थम् कैरिसतिति अघाटो जयति, अप्पियास्सा मे अमानपासा अत्थं अचरी...पे... अत्थं कैरति...पे... अत्थं कैरिसतिति अघाटो जयति, अट्ठाने वा पण अघाटो जयति। यो इवरूपो सीतास्स अघाटो पतिघातो पतिघं पतिविरोधो कोपो पाकोपो संपककोपो दोसो पदोसो संपदोसो सीतास्स बयापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्जहना कुज्जितट्टं दोसो दुस्साना दुस्सीत्तं बयापत्ति ब्यापजना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पतिविरोधो चंडिक्कं असुरोपो अनत्तमनाता चित्तस्स - अयं वुक्काति दोसो।

1067. तत्थ कतमो मोहो? दुक्खे अण्णां, दुक्खसमुदाय अण्णां, दुक्खनिरोधे अण्णां, दुक्खनिरोधगामिनीया पतिपादया अण्णां, पुब्बंते अण्णाण्, अपरंते अण्णाणं, पुब्बनतापरंते अण्णाणं, इदप्पक्कयता पटिकसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अण्णाणं, यम इवरूपं अण्णाणं अडस्सणं अनाभिसमायो अनुबोधो असम्बोधो अप्पतिवेधो असंगहना अपरियोगहना असमापेक्खना अपाचक्कवेखना अपाक्कक्खकम्मं दुम्मेजझां बल्यां असंपजान्नं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जघो अविज्जयोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुत्थानं अविज्जलंगी मोहो अकुशलमूलं - अयं वुकाति मोहो।

Ime tayo akusalahetū.

1068. तत्थ कतामे तैयो अभ्यकथेतु? कुसलानां वा धम्मनां विपाकाटो किरियाब्यकतेसु वा धम्मेसु अलोभो अदोसो अमोहो - इमे तयो अभ्याकथेतु।

1069. तत्थ कतमे नव कामवचराहेतु? तयो कुशलहेतु, तयो अकुशलहेतु, तयो अभ्याकहेतु - इमे नव कामवचराहेतु।

1070. तत्थ कतमे च रूपावचराहेतु? तयो कुसलहेतु, तयो अभ्यकहेतु - इमे च रूपावचराहेतु।

1071. तत्थ कतामे च अरूपावचराहेतु? तयो कुसलहेतु, तयो अभ्याकहेतु - इमे च अरूपावचराहेतु।

1072. तत्थ कतामे च अपरियापन्नहेतु? तयो कुशलहेतु, तयो अभ्याकहेतु - इमे च अपरियापन्नाहेतु।

1073. तथा कतामे तैयो कुशलहेतु? अलोभो, अदोसो, अमोहो।

1074. तत्थ कतमो अलोभो? यो अलोभो अलुभना अलुभितट्टं असरगो असराज्जना असरञ्जितत्तं अनाभिज्ज अलोभो कुसलमूलं - अयं वुच्चति अलोभो।

1075. तत्थ काटामो अदोसो? यो अदोसो अदुस्साना अदुस्सीत्तं...पे... अब्यपादो अब्यपज्जो अदोसो कुसलमूलं - अयं वुक्काति अदोसो।

1076. Tattha katamo amoho ? दुक्खे नाणं, दुक्खसमुदाय नाणं, दुक्खनिरोधे नाणं, दुक्खनिरोधगामिनीया पतिपदाय नाणं, पुब्बंते नाणं, अपरंते नानणं, पुब्बनतापरंते नानणं, इदप्पाचयता पटिकसमुप्पन्नेसु धम्मेसु सानणं, या एवरूप पणना पजानन विकयो पविकयो धम्मविकयो सल्लक्खाना उपलक्खना पक्कुपलक्खाना पण्डिकचं कोसलं नेपुन्नं वेभब्या चिंता उपपरिक्खा भूरि मेधा परिणायिका विपश्यना सम्पजान्नं पटोदो पणिन पणिनिन्द्रियम् पन्नबलं पन्नसत्थं पन्नपसाददो पणनालोको पणनाओभासो पणनपजजोतो पणनरत्नं अमोहो धम्मविकायो सम्मदिथि धम्मविकयसंबोझाङ्गो मग्गंगं मग्गपरियापन्नं - अयं वुच्चति अमोहो।

Ime tayo kusalaheū.

1077. तत्थ कतामे तैयो अभ्यकथेतु? कुसलानां धम्मनां विपाकतो अलोभो अदोसो अमोहो - इमे तयो अभ्यकथेतु। इमे च अपरियापन्नहेतु - इमे धम्महेतु।

1078. कतमे धम्म न हेतु? ते धम्मे थपेत्वा, अवसेसा कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म न हेतु।

1079. कतमे धम्म सहेतुका? तेहि धम्मेहि ये धम्म सहेतुका वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म सहेतुका।

1080. कतमे धम्म अहेतुका? तेहि धम्मेहि ये धम्म अहेतुका वेदनाक्खन्धो...पे... विनाणक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म अहेतुका।

1081. कतमे धम्म हेतुसम्पायुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो — इमे धम्म हेतुसंपयुत्ता।

1082. कतमे धम्म हेतुविप्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता वेदानाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म हेतुविप्पयुत्ता।

1083. कतमे धम्म हेतु सेवा सहेतुका च? लोभो मोहेना हेतु सेवा सहेतुको सीए, मोहो लोभेना हेतु सेवा सहेतुको सीए, दोसो मोहेना हेतु सेवा सहेतुको सीए, मोहो दोसेना हेतु सेवा सहेतुको सीए; अलोभो अदोसो अमोहो, ते अण्णामन्नं हेतु सेवा सहेतुका च - इमे धम्म हेतु सेवा सहेतुका च।

1084. कतमे धम्म सहेतुका सेवा न च हेतु? तेहि धम्मेहि ये धम्म सहेतुका ते धम्मे थपेत्वा, वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म सहेतुका सेवा न च हेतु।

1085. कतमे धम्म हेतु सेवा हेतुसम्पायुत्त च? लोभो मोहेना हेतु सेवा हेतुसंपायुत्तो सीए, मोहो लोभेना हेतु सेवा हेतुसंपायुत्तो सीए, दोसो मोहेना हेतु सेवा हेतुसंपायुत्तो सीए, मोहो दोसेना हेतु सेवा हेतुसंपायुत्तो सीए; अलोभो अदोसो अमोहो, ते अण्णामन्नं हेतु सेवा हेतुसंपयुत्त च - इमे धम्म हेतु सेवा हेतुसंपयुत्त च।

1086. कतमे धम्म हेतुसम्पायुत्त सेवा न च हेतु? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता ते धम्मे थपेत्वा, वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म हेतुसम्पायुत्त सेवा न च हेतु।

1087. कतमे धम्म न हेतु सहेतुका? तेहि धम्मेहि ये धम्म न हेतु सहेतुका वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म न हेतु सहेतुका।

1088. कतमे धम्म न हेतु अहेतुका? तेहि धम्मेहि ये धम्म न हेतु अहेतुका वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म न हेतु अहेतुका।

Cūḷantaradukaṃ

1089. कटमे धम्म सप्पक्कया? पंचकखंड - रूपकखंडो, वेदानाकखंडो, संनाक्खखंडो, शंखरक्खंधो, विन्नन्नकखंडो - इमे धम्म सप्पक्कया।

1090. कतमे धम्म अप्पाकाया? असन्खता धातु - इमे धम्म अप्पाकाया।

1091. कतमे धम्म संखता? येव ते धम्म सप्पक्कया, तेव ते धम्म संखता।

1092. कतमे धम्म असन्खता? यो एव सो धम्मो अप्पाकायो, सो एव सो धम्मो असंखतो।

1093. कतमे धम्म सन्निदासना? रूपायतनं - इमे धम्म सन्निदासना।

1094. कतमे धम्म अनिदासना? चक्खायतनं...पे... फोटहब्बायतनं, वेदानाक्खखंडो...पे... विन्ननक्खखंडो, यञ्च रूपं अनिदासनं अप्पतिघं धम्मायतनपरियपन्नं, असंखता च धातु - इमे धम्म अनिदासना।

1095. कटमे धम्म सप्पतिघा? चक्खायतनं...पे... फोटहब्बायतनं - इमे धम्म सप्पतिघा।

1096. कतमे धम्म अप्पतिघा? वेदानाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, यञ्च रूपं अनिदासनं अप्पतिघं धम्मायतनपरियपन्नं, असन्खता च धातु - इमे धम्म अप्पतिघा।

1097. कतमे धम्म रूपिनो? चत्तारो च महाभूत चतुन्नच महाभूतानां उपादय रूपं - इमे धम्म रूपिनो।

1098. कतमे धम्म अरुपिनो? वेदनाक्खन्धो...पे... विनाणक्खन्धो, असन्खता च धातु - इमे धम्म अरुपिनो।

1099. कतमे धम्म लोकिया? सासव कुसलकुशलाब्यक्त धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, रूपकखंडो...पे... विनाणकखंडहो - इमे धम्म लोकिया।

1100. कटमे धम्म लोकुत्तारा? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म लोकुत्तरा।

1101. कतमे धम्म केनचि विन्नेया, केनचि न विन्नेय्य? ये ते धम्म चक्खुविन्येय, न ते धम्म सोतविन्यय; ये वा पना ते धम्म सोतविन्येया, न ते धम्म चक्खुविन्येय। ये ते धम्म चक्कुविन्येया, न ते धम्म घनविनीय्या; ये वा पना ते धम्म घनविनीया, न ते धम्म चक्कुविनीया। ये ते धम्म चक्खुविन्येया, न ते धम्म जिव्हाविन्येया; ये वा पना ते धम्म जिव्हाविन्येया, न ते धम्म चक्खुविन्येया। ये ते धम्म चक्कुविन्येया, न ते धम्म कायविन्येय; ये वा पना ते धम्म कायविन्येया, न ते धम्म चक्खुविन्येया। ये ते धम्म सोतविनीय्या, न ते धम्म घनविनीय्या; ये वा पना ते धम्म घनविनीया, न ते धम्म सोताविनीया। ये ते धम्म सोतविन्येया, न ते धम्म जिव्हाविन्येया; ये वा पना ते धम्म जिव्हाविन्येया, न ते धम्म सोताविन्येया। ये ते धम्म सोतविन्येया, न ते धम्म कायविन्येय; ये वा पना ते धम्म कायविन्येया न ते धम्म सोतविन्येया। ये ते धम्म सोतविन्येया, न ते धम्म चक्खुविन्येय; ये वा पना ते धम्म चक्कुविन्येया, न ते धम्म सोतविन्येया। ये ते धम्म घनविन्येया, न ते धम्म जिव्हाविन्येय; ये वा पना ते धम्म जिव्हाविन्येया, न ते धम्म घनविनिय्या। ये ते धम्म घनविनीय्या, न ते धम्म कायाविनीया; ये वा पना ते धम्म कायविनीया, न ते धम्म घनविनीया। ये ते धम्म घनविनीय्या, न ते धम्म चक्खुविनीया; ये वा पना ते धम्म चक्कुविन्येया, न ते धम्म घनविनीय्या। ये ते धम्म घनविनीय्या, न ते धम्म सोताविनीया; ये वा पना ते धम्म सोतविनीया, न ते धम्म घनविनीया। ये ते धम्म जिव्हाविन्येया, न ते धम्म कायविन्येया; ये वा पना ते धम्म कायविन्येया, न ते धम्म जिव्हाविन्येया। ये ते धम्म जिव्हाविन्येया, न ते धम्म चक्खुविन्येया; ये वा पना ते धम्म चक्खुविन्येया, न ते धम्म जिव्हाविन्येया। ये ते धम्म जिव्हाविन्येया, न ते धम्म सोताविन्येया; ये वा पना ते धम्म सोतविन्येया, न ते धम्म जिव्हाविन्येया। ये ते धम्म जिव्हाविन्येया, न ते धम्म घनविनिय्या; ये वा पना ते धम्म घनविनीया, न ते धम्म जीवविनीया। ये ते धम्म कायविन्येया, न ते धम्म चक्खुविन्येय; ये वा पना ते धम्म चक्कुविन्येया, न ते धम्म कायविन्येया। ये ते धम्म कायाविन्येया, न ते धम्म सोताविन्येया; ये वा पना ते धम्म सोतविन्येया, न ते धम्म कायविन्येया। ये ते धम्म कायाविन्येया, न ते धम्म घनविन्येया; ये वा पना ते धम्म घनविनीया, न ते धम्म कायविनीया। ये ते धम्म कायाविन्येया, न ते धम्म जिव्हाविन्येया; ये वा पना ते धम्म जिव्हाविन्येया, न ते धम्म कायविन्येया। इमे धम्म केनचि विन्निय्या केनचि न विन्निय्या।

आसवगोच्चकं

1102. कतमे धम्म आसव? कत्तारो आसव - कामसावो, भावसावो, दिट्ठासावो, अविज्जासावो।

1103. तत्थ कतमो कामसवो? यो कामेसु कामच्छंदो कामरागो कामानंदी कामतन्हा कामसिनेहो कामपरिषाहो काममुच्च कामज्जोसानं — अयं वुकाति कामसावो।

1104. तत्थ कतमो भावसवो? यो भावेसु भवचंदो [भवच्चंदो (सि. स्या.)] भावरागो भवनंदी भवतंहा भावसिनेहो भवपरिषाहो भवमुच्च भावज्जोसानं - अयं वुकाति भावासावो।

1105. तत्थ कतमो दिट्ठसवो? सस्सतो लोकोति वा, अस्स्सतो लोकोति वा, अन्तव लोकोति वा, अनन्ता लोकोति वा, तं जीवं तं सरिरन्ति वा, अन्नं जीवं अन्नं सरिरन्ति वा, होति तथागतो परम् मरणाति वा, न होति तथागतो परं मरणाति वा, होति च न च होति तथागतो परं मरणाति वा, नेव होति न न होति तथागतो परं मरणाति वा; या इवरूपा दितिथि गतं दितिथिगहनं दितिथिकांतारो दितिविशुकायिकां दितिथिविप्पंदितं दितिथिसंयोजनं गहो पतिग्गाहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्छट्टं तिट्ठायतनं विपरियासग्गाहो — अयं वुच्चति दिट्ठसावो। सब्बापि मिच्छदिथि दिट्ठसवो।

1106. तत्थ कतमो अविज्जासवो? दुक्खे अणनाणं, दुक्खसमुदये अण्णां, दुक्खनिरोधे अण्णां, दुक्खनिरोधगामिनीया पतिपदाय अण्णां, पुब्बंते अण्णां, अपरंते अण्णाणं, पुब्बनतापरंते अण्णाणं, इदप्पक्कयता पटिकसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अण्णां यं इवरूपं अण्णाणं अडस्सणं अनाभिसमायो अनुबोधो असम्बोधो अप्पतिवेधो असंगहना अपरियोगहना असमापेक्खना अपाचक्कवेखना अपाक्ककक्खकम्मं दुम्मेजझां बल्यां असंपजान्नं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जघो अविज्जयोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुत्थानं अविज्जलंगी मोहो अकुसलमूलं — अयं वुच्चति अविज्जासावो।

Ime dhammā āsavā.

1107. कतमे धम्म नो आसव? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना वेदानाक्कखंडो...पे...विनाणक्कखंडो; सब्बाञ्च रूपं असन्खता च धातु - इमे धम्म नो आसव।

1108. कतमे धम्म सासव? कुसलकुशलाब्यक्त धम्म कामवकार, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म सासव।

1109. कतमे धम्म अनासव? अपरियापन्ना मग्गा च मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अनासव।

1110. कतमे धम्म आसवसंपयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म आसवसंपयुत्त।

1111. कतमे धम्म आसवविप्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म आसवविप्पयुत्त।

1112. कतमे धम्म आसव सेवा सासव च? तेयेव आसव आसव सेवा च.

1113. कतमे धम्म सासव सेवा नो च आसव? तेहि धम्मेहि ये धम्म सासावा, ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा सासावा कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामावचरा, रूपावचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म ससाव सेवा नो च आसव।

1114. कतमे धम्म आसव सेवा आसवसंपयुत्त च? कामसावो अविज्जासवेण आसवो सेवा आसवसंपयुत्तो च, अविज्जासावो कामासवेण आसवो सेवा आसवसंपयुत्तो च, भावसावो अविज्जासवेण आसवो सेवा आसवसंपयुत्तो च, अविज्जासावो भावसवेण आसवो सेवा आसवसंपयुत्तो च, दिट्ठसवो अविज्जासवेण आसवो सेवा आसवसंपयुत्तो च, अविज्जासवो दितहासवेण आसवो सेवा आसवसंपयुत्तो च - इमे धम्म आसव सेवा āsavasampayuttā ca.

1115. कतमे धम्म आसवसंपयुत्त सेवा नो च आसव? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता, ते धम्मे थपेत्वा वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म आसवसंपयुत्त सेवा नो च आसव।

1116. कतमे धम्म आसवविप्पयुत्त ससाव? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता सासाव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, रूपकखंडो...पे... विनाणनकखंडो - इमे धम्म आसवविप्पयुत्त सासव.

1117. कतमे धम्म आसवविप्पयुत्त अनासव? अपरियापन्ना मग्ग च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म आसवविप्पयुत्त अनासव।

निक्खेपकाण्डे पथमभानवरो।

संयोजनगोच्चकं

1118. कतमे धम्म समन्वय? दश संयोजनानि - कामरागसंयोजनां, पतिघसंयोजनं, मनसंयोजनं, दितिहिसंयोजनं, विकिकीचासंयोजनं, सिल्बतपरमसयोजनं, भावरागसंयोजनं, इस्सासंयोजनं, मच्छरियासंयोजनं, अविज्जासंयोजनं।

1119. तत्थ कतमं कामरागसंयोजनं? यो कामेसु कामच्छन्दो कामरागो कामनंदी कामतन्हा कामसिनेहो कामपरिषाहो काममुच्च कामज्जोसानं – इदं वुकाति कामरागसंयोजनम्।

1120. तत्थ कतमं पतिघसयोजनं? अनात्थम् मे अचरति अघातो जयति, अनात्थम् मे कैरातिति अघातो जयति, अनात्थम् मे अचरति अघातो जयति, पियास्सा मे मनपास्सा अनात्थम् अचरी...पे... अनात्थम् चरति...पे... अनात्थम् कैरिसतिति अघाटो जयति, अप्पियास्सा मे अमानपासा अत्थं अचरी...पे... अत्थं कैरति...पे... अत्थं कैरिसतिति अघाटो जयति, अट्ठाने वा पण अघाटो जयति। यो इवरूपो सीतास्स अघाटो पतिघातो पतिघं पतिविरोधो कोपो पाकोपो संपककोपो दोसो पदोसो संपदोसो सीतास्स बयापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्जहना कुज्जितट्टं दोसो दुस्साना दुस्सीत्तं बयापत्ति ब्यापजना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पतिविरोधो चंडिक्कं असुरोपो अनत्तमनाता चित्तस्स - इदं वुक्कति पतिघसयोजनं।

1121. तत्थ कतमं मनसंयोजनं? सेयोहमस्मिति मानो, सदिसोहमस्मिति मानो, हिनोहमस्मिति मानो। यो इवारूपो मनो मन्नणा मन्नित्तं उन्नति उन्नमो [उणति उणमो (स्या.)] धजो संपग्गहो केतुकाम्यता चित्तस्स - इदं वुक्कति मनसंयोजनं।

1122. तत्थ कतमं दितिथिसंयोजनं? सस्सतो लोकोति वा, अस्स्सतो लोकोति वा, अन्तव लोकोति वा, अनन्ता लोकोति वा, तं जीवं तं सरिरन्ति वा, अन्नं जीवं अन्नं सरिरन्ति वा, होति तथागतो परम् मरणाति वा, न होति तथागतो परं मरणाति वा, होति च न च होति तथागतो परं मरणाति वा, नेव होति न न होति तथागतो परं मरणाति वा; या इवरूपा दितिथि गतं दितिथिगहनं दितिथिकांतारो दितिविशुकायिकां दितिथिविप्पंदितं दितिथिसंयोजनं गहो पतिग्गाहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्चट्टं तिथथायतनं विपरियासग्गहो — इदं वुक्कति दितिथिसंयोजनम्। हपेत्वा सिलब्बतपरमसासंयोजनं सब्बापि मिच्छदिथि दितिथिसंयोजनं।

1123. तत्थ कतमं विकिसिच्चासयोजनं? सत्थरि कंखति विकिसिच्छति, धम्मे कंखति विकिसिच्छति, संघे कंखति विकिसिच्छति, सिक्खाय कंखाति विचिकिचति, पुब्बंते कंखति विचिकिचति, अपरंते कंखति विकिसिच्छति, पब्बंतापरंते कांखति विकिसिच्छति, इदप्पाच्चयता पतिच्चासमुप्पन्नेसु धम्मेसु कांखाति विकिसिच्छतिः या एवरुपा कंखा कंखायणां कंखायितत्तं विमति विकिसिच्चा द्वेधाकं द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो असप्पना परिस्पन्ना अपरियोगहाना थंभितट्टं चित्तस्स मनोविलेखो - इदं वुक्कति विकिसिचासंयोजनम्।

1124. तत्थ कतमं सिलब्बतपरमससंयोजनं? इतो बहिद्ध समानब्राह्मणं सिलेना शुद्धि वतेन शुद्धि सिलब्बतेन शुद्धि; या इवरूपा दितिथि गतं दितिथिगहनं दितिथिकांतारो दितिविशुकायिकां दितिथिविप्पंदितं दितिथिसंयोजनं गहो पतित्थाहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्चत्तं तिट्ठायतनं विपरियासग्गहो — इदं वुक्कति सिलब्बतपरमसासंयोजनं।

1125. तत्थ कतमं भावरागसंयोजनं? यो भावेसु भवचंदो भवरगो भवनंदी भवतनहा भवसिनेहो भवपरिषाहो भवमुच्च भवज्जोसानं - इदं वुच्चति भवरागसंयोजनम्।

1126. तत्थ कतमम् इस्सासंयोजनम्? या परलाभसक्करगरुकरमनानवंदनपूजनासु इस्सा इस्सयाना इस्सयितत्तं उसुयणा उसुयितत्तं [उसुया उस्सुयाना उस्सुयितट्टं (का.)] - इदं वुक्काति इस्सासंयोजनम्.

1127. तत्थ क्तमं मच्छर्यसंयोजनं? पञ्च मच्छरियम् - अवासमच्चरियम्, कुलमच्चरियम्, लाभमच्चरियम्, वनमच्चरियम्, धम्ममच्चरियम्। यं इवरूपं मच्छेरं मच्छरायणं मच्छरायितत्तं वेविचं कादरियां कटुकान्कुकाता अग्गहितट्टं चित्तस्स - इदं वुक्काति मच्छरियसंयोजनं।

1128. तत्थ कतमं अविज्जासंयोजनं? दुक्खे अण्णां, दुक्खसमुदाय अण्णां, दुक्खनिरोधे अण्णां, दुक्खनिरोधगामिनीया पतिपादया अण्णां, पुब्बंते अण्णाण्, अपरंते अण्णाणं, पुब्बनतापरंते अण्णाणं, इदप्पक्कयता पटिकसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अण्णां यं इवरूपं अण्णाणं अडस्सणं अनाभिसमायो अनुबोधो असम्बोधो अप्पतिवेधो असंगहना अपरियोगहना असमापेक्खना अपाचक्कवेखना अपाक्कक्खकम्मं दुम्मेजझां बल्यां असंपजान्नं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जघो अविज्जयोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुत्थानं अविज्जलंगी मोहो अकुशलमूलम् — इदं वुच्चति अविज्जासंयोजनम्।

Ime dhammā saṃyojanā.

1129. कतमे धम्म नो संयोग? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नो संयोग।

1130. कतमे धम्म समन्वय? सासव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवकार, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म संयोजनिया।

1131. कतमे धम्म असंयोजनिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म असंयोजनिया।

1132. कतमे धम्म संयोगसंपयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो — इमे धम्म संयोजनसंपयुत्त।

1133. कतमे धम्म संयोगविप्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म संयोगविप्पयुत्त।

1134. कतमे धम्म समन्वय सेवा च? तनेव संयोगानि समन्वया सेवा च।

1135. कतमे धम्म समन्वय्य सेवा नो च समन्वय? तेहि धम्मेहि ये धम्म संयोगिया, ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा सासव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामावचरा, रूपावचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म समन्वय सेवा नो च समन्वय।

1136. कतमे धम्म समन्वय सेवा च? कामरागासंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोगाञ्चेव संयुक्तसंपयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनाम् कामरागासंयोजनेना संयुक्ताञ्चेव संयुक्तसंपयुत्तञ्च, पतिघसंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोगाञ्चेव संयुक्तसंपयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयुक्ताञ्चेव संयुक्तसंपयुत्तञ्च, मनसंयोजनम् avijjāsaṃyojanena saṃyojanañceva saṃyojanasampayuttañca, avijjāsaṃyojanaṃ mānasaṃyojanena saṃyojanañceva saṃyojanasampayuttañca, diṭṭhisaṃyojanaṃ avijjāsaṃyojanena saṃyojanañceva saṃyojanasampayuttañca, avijjāsaṃyojanaṃ diṭṭhisaṃyojanena saṃyojanañceva saṃyojanasampayuttañca, vicikicchāsaṃyojanaṃ avijjāsaṃyojanena संयोजनाञ्चेव संयोजनासंपयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं विकिसिछासंयोजनेन संयोजनाञ्चेव संयुक्तासंपयुत्तञ्च, सिलब्बतापरमसासंयोजनाँ अविज्जासंयोजनेन संयोगाञ्चेव संयुक्तसंपयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं सिलब्बतपरमसासंयोजनेन संयुक्ताञ्चेव संयुक्तसंपयुत्तञ्च, भवरागसंयोजनं अविज्जासंयोजनेण संयोजनाञ्चेव संयोजनासंपयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनाँ भावरागासंयोजनेन संयोजनाञ्चेव संयुक्तासंपयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनाम् इस्सासंयोजनेना संयुक्ताञ्चेवा, मैकचरियासंयोजनाम् अविज्जासंयोजनेना संयुक्ताञ्चेवा संयमसंपयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं मैक्चार्यसंयोजनेन संयोगाञ्चेव संयुक्तसंपयुत्तञ्च - इमे धम्म समन्वय सेवा संयोगसंपयुत्त च।

1137. कतमे धम्म संयोगसंपयुत्त सेवा नो च संयोग? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता, ते धम्मे थपेत्वा वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म संयोगसंपयुत्त सेवा नो च संयोगना।

1138. कतमे धम्म संयोगविप्पयुत्ता समन्वय? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता ससाव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म संयोगविप्पयुत्ता संयोगनिया।

1139. कतमे धम्म संयोगविप्पयुत्त अससंयोगनीय? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म संयोगविप्पयुत्त असंयोजनीय।

गंथागोच्चकं

1140. कतमे धम्म गंथा? कत्तारो गंथा - अभिज्झा कायगंथो, ब्यापादो कयागंथो, सिलब्बतपरमसो कायगंथो, इदं सच्चभिनिवेशो कायगंथो।

1141. तत्थ कतमो अभिज्झा कायगन्थो? यो रागो सारागो अनुनयो अनुरोधो नंदी नंदीरागो चित्तस्स सारागो इच्छा मुच्चा अज्झोसनं गेधो पालिगेधो सांगो पंको एजा माया जनिका संजननि सिब्बिनी जालिनी सरिता विसत्तिका सुत्तं विसाता अयुहिनि दुतिया पाणिधि भवनेति वनं वनथो संथावो सिनेहो अपेक्खा पतिबंधु असा असिसाना असिसितत्तम रूपसा सद्दासा गन्धसा रसासा फोथब्बासा लाभासा धनासा पुत्तसा जीवितसा जप्पा पजप्पा अभिजप्पा जप्पा जप्पाना जप्पितट्टं लोलुप्पां लोलुप्पयाना लोलुप्पयितट्टं पुच्चानजिकाता साधुकाम्यता अधम्मरागो विसामलभो निकांति निष्कामना पत्तन पिहाना संपतन कामतंहा भवतंह विभवतंह रूपतण्हा रूपतंह अरूपतंहा निरोधतंहा रूपतंहा सद्दतन्हा गंधतंहा रसतंहा फोतहब्बतंहा धम्मतंहा ओघो योगो गांठो उपादानं अवरणं निवारणं चादानं बंधनं उपक्किलसो अनुसयो परियुत्थानं लता वेविच्चं दुक्खमूलं दुक्खनिदानं दुक्खप्पभावो मरापासो मरबसिसं माराविसयो तंहनादि तंहजालं तंहागद्दुलं तन्हासमुद्दो अभिज्झा लोभो अकुशलमूलं - अयं वुच्चति अभिज्झा कायगन्थो।

1142. तत्थ कतमो ब्यापादो कायगन्थो? अनत्थम् मे अचरी ति अघातो जयति, अनत्थम् मे कैरातिति अघातो जयति, अनत्थम् मे अचरति अघातो जयति, पियास्सा मे मनपास्स अनत्थम् अचरी...पे... अनत्थम् कैरति...पे... अनात्थम् कैरिसतिति अघाटो जयति, अप्पियास्सा मे अमानपासा अत्थं अचरी...पे... अत्थं कैरति...पे... अत्थं कैरिसतिति अघाटो जयति, अट्ठाने वा पण अघाटो जयति। यो इवरूपो सीतास्स अघाटो पतिघातो पतिघं पतिविरोधो कोपो पाकोपो संपककोपो दोसो पदोसो संपदोसो सीतास्स बयापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्जहना कुज्जितट्टं दोसो दुस्साना दुस्सीत्तं बयापत्ति ब्यापजना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पतिविरोधो चंडिक्कं असुरोपो अनत्तमनाता चित्तस्स - अयं वुक्कति ब्यापादो कायगंथो।

1143. तत्थ कतमो सिलब्बतपरमसो कायगन्थो? इतो बहिद्ध समानब्राह्मणं सिलेण शुद्धि, वतेन शुद्धि, सिलब्बतेन शुद्धिः या एवरूपा दिदिथिगतं दितिघहनं दितिकांतरो दितिविशुकायिकं दितिथिविप्पंदितं दितिथिसंयोजनं गाहो पतितहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्चट्टं तित्थायतनं विपरियासग्गहो — अयं वुक्काति सिलब्बतपरमसो कायगन्थो।

1144. तत्थ कतमो इदंससच्चाभिनिवेशो कायगन्थो? सस्सातो लोको, इदामेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; अस्स्सतो लोको, इदामेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; अंतवा लोको, इदामेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; अनंतवा लोको, इदमेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; तं जीवं तं शरीरं, इदमेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; अन्नं जीवं अन्नं शरीरं, इदमेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; होति तथागतो परं मरणा, इदमेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; न होति तथागतो परं मरणा, इदमेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; होति च न च होति तथागतो परं मरणा, इदमेव सच्चं मोघमन्नन्ति वा; नेव होति न न होति तथागतो परं मरणा, इदामेव सच्चं मोघमन्नन्ति वाः या एवरुपा दितिदिथिगतं दितिघहनं दितिकांतरो दितिविशुकायिकं दितिथिविप्पंदितं दितिथिसंयोजनं गाहो पतितहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्चट्टं तित्थायतनं विपरियासग्गहो — अयं वुकाति इदंससच्चाभिनिवेशो कायगन्थो। हपेत्वा सिलब्बतपरमसं कायगंथं सब्बापि मिच्छदिथि इदंससच्चभिनिवेशो कायगंथो।

Ime dhammā ganthā.

1145. कतमे धम्म नो गंथा? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बन्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नो गंथा।

1146. कतमे धम्म गंथनिया? सासव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवकार, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म गंठनिया।

1147. कटमे धम्म अगन्थनिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अगन्थानिया।

1148. कतमे धम्म गन्थासम्पायुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो – इमे धम्म गंथसम्पायुत्ता।

1149. कतमे धम्म गन्थविप्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं असन्खता च धातु - इमे धम्म गन्थाविप्पयुत्ता।

1150. कतमे धम्म गंथा सेवा गंथानिया च? तेव गंथा गंथा सेवा गंथानिया च।

1151. कतमे धम्म गंथानिया सेवा नो च गंथा? तेहि धम्मेहि ये धम्म गंथनिया, ते धम्मे थापेत्वा अवसेसा सासव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामावचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म गंठनिया सेवा नो च गंथा।

1152. कतमे धम्म गंथा सेवा गंथासंपयुत्त च? सिलब्बतपरमसो कायगंठो अभिज्झाकायगन्थेन गंथो सेवा गंथासम्पायुत्तो च, अभिज्झाकायगंथो सिलबटपरमसेना कायगंथेना गंथो सेवा गंथासम्पायुत्तो च, इदंससच्चाभिनिवेशो कायगंठो अभिज्झाकायगंठेन गंथो सेवा गंथासंपयुत्तो च, अभिज्झाकायगंथो इदंससच्चाभिनिवेशेण कायगंथेन गंथो सेवा गंथासम्पायुत्तो च - इमे धम्म गंथा सेवा गंथासम्पायुत्तो च।

1153. कतमे धम्म गन्थासम्पायुत्त सेवा नो च गन्था? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता, ते धम्मे थपेत्वा वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म गंथसम्पयुत्त सेवा नो च गंथा।

1154. कतमे धम्म गंठविप्पयुत्त गंथनिया? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता ससाव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म गंथाविप्पयुत्ता गंथनिया।

1155. कतमे धम्म गन्थविप्पयुत्त अगन्थनीय? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म गंथविप्पयुत्त अगन्थनिया।

ओघगोच्चक।

1156. कतमे धम्म ओघा? कट्टारो ओघा...पे... इमे धम्म ओघविप्पयुत्ता ओघानिया।

योगगोच्चकं

1157. कतमे धम्म योग? कत्तारो योग...पे... इमे धम्म योगविप्पयुत्त योगानिया।

नीवरणगोच्चकं

1158. कटमे धम्म निवारण? च निवारणाण् [निवारणाणि (स्या.)] - कामच्छंदनिवराणं, ब्यापदानीवराणं, थिनमिद्धनिवराणं, उद्धचक्ककुक्कुक्कनिवराणं, विचिकीच्चानिवरणम्, अविज्जानिवरणम्।

1159. तत्थ कतमं कामच्छंदनिवरणम्? यो कामेसु कामच्छन्दो कामरागो कामनंदी कामतन्हा कामसिनेहो कामपरिषाहो काममुच्च कामज्जोसानं – इदं वुकाति कामच्छंदनिवरनम्।

1160. तत्थ कतमं ब्यापदानिवरणं? अनत्थम् मे अचरति अघातो जयति, अनत्थम् मे चरतिति अघातो जयति; अनत्थं मे कैरिससति अघाटो जयति; पियास्सा मे मनापासा अत्थं अकारी...पे...अनाथं कैराति...पे...अनत्थं कैरिसति अघाटो जयति, अप्पियास्सा मे

अमानपासा अत्थं अकारी...पे...अत्थं कैराति...पे...अत्थं कैरिसाति अघाटो जयति, अट्ठाने वा पण अघातो जयति। यो इवरूपो सीतास्स अघाटो पतिघातो पतिघं पतिविरोधो कोपो पाकोपो संपककोपो दोसो पदोसो संपदोसो सीतास्स बयापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्जहना कुज्जितट्टं दोसो दुस्साना दुस्सीत्तं बयापत्ति ब्यापजना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पतिविरोधो चंडिक्कं असुरोपो अनत्तमनाता चित्तस्स — इदं वुक्कति ब्यापदानीवरनम्।

1161. तत्थ कतमं पतलीमिद्धनिवरनं? अट्ठि थिनं, अत्थि मिद्धं।

1162. तत्थ कतमं थिनं? या चित्तस्स अकलता अकम्मन्नता ओलियाना सल्लियाना लीनां लियाना लियायितट्टं थिनं थियाना थियितट्टं चित्तस्स — इदं वुक्कति थिनं।

1163. तत्थ कतमं मिद्धं? या कायस्सा अकलता अकम्मन्नता ओनाहो परियोनाहो अंतोसामोरोधो मिद्धं सोप्पं पचालयिका सोप्पं सुपना सुपित्तं - इदं वुकाति मिद्धं। इति इदान्च थिनं, इदञ्च मिद्धम् — इदं वुकाति थिनमिद्धनिवरनम्।

1164. तत्थ कतमं उद्धाच्चक्कुक्कनिवरणम्? अट्ठि उद्धक्कं, अत्थि कुक्कुक्कं।

1165. तत्थ कतमं उद्धाचं? यं चित्तस्स उद्धक्कं अवुपासमो चेतासो विक्खेपो भंट्टट्टं चित्तस्स - इदं वुक्कति उद्धक्कं।

1166. तत्थ कतमं कुक्कुक्कं? अकाप्पिये कप्पियासंनिता, कप्पिये अकाप्पियासंनिता, अवज्जे वज्जसंनिता, वज्जे अवज्जसंनिता। यं इवरूपं कुक्कुक्कं कुक्कुच्चायन कुक्कुच्चयितत्तं चेतासो विप्पतिसारो मनोविलेखो - इदं वुक्काति कुक्कुक्कं। इति इदान्च उधक्कं, इदञ्च कुक्कुक्कं - इदं वुकाति उद्च्चक्कुक्कनिवरणम्।

1167. तत्थ कतमं विकिसिच्छनिवरणम्? सत्थरि कंखति विकिसिच्छति, धम्मे कंखति विकिसिच्छति, संघे कंखति विकिसिच्छति, सिक्खाय कंखाति विचिकिचति, पुब्बंते कंखति विचिकिचति, अपरंते कंखति विकिसिच्छति, पब्बंतापरंते कंखति विचिकिचति, इदप्पक्कयता पतिच्चासमुप्पन्नेसु धम्मेसु कंखति विकिकिचति। या एवरुपा कंखा कंखायणा कंखायितट्टं विमति विकिसिच्चा द्वेधाकं द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो असप्पना परिस्पना अपरियोगहाना थंभितत्तम् चित्तस्स मनोविलेखो — इदं वुक्कति विचिकिचनिवरनम्।

1168. तत्थ कतमं अविज्जानिवरणम्? दुक्खे अण्णां, दुक्खसमुदाय अण्णां, दुक्खनिरोधे अण्णां, दुक्खनिरोधगामिनीया पतिपादया अण्णां, पुब्बंते अण्णाण्, अपरंते अण्णाणं, पुब्बनतापरंते अण्णाणं, इदप्पक्कयता पटिकसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अण्णां यं इवरूपं अण्णाणं अडस्सणं अनाभिसमायो अनुबोधो असम्बोधो अप्पतिवेधो असंगहना अपरियोगहना असमापेक्खना अपाचक्कवेखना अपाक्कक्खकम्मं दुम्मेजझां बल्यां असंपजान्नं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जघो अविज्जयोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुत्थानं अविज्जलंगी मोहो अकुशलमूलम् — इदं वुच्चति अविज्जानिवरणम्।

Ime dhammā nīvaraṇā.

1169. कटमे धम्म नो निवारण? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नो निवारण।

1170. कटमे धम्म निवारनीय? सासव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवकार, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म निवारनिया।

1171. कतमे धम्म अनिवरनीय? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अनिवरनिया।

1172. कतमे धम्म निवारणसंपयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म निवारणसंपयुत्त।

1173. कटमे धम्म निवारणविप्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म निवारणविप्पयुत्त।

1174. कतमे धम्म निवारण सेवा च? तनेव निवारणानि निवारणा सीव निवारणिया च।

1175. कतमे धम्म निवारणिय सेवा नो च निवारण? तेहि धम्मेहि ये धम्म निवारणिया, ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा ससाव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म निवारनिया सेवा नो च निवारण।

1176. कतमे धम्म निवारण सेवा च? कामच्छंदनिवरणं अविज्जानिवरणे निवरणन्सेव निवरणसंपयुत्तञ्च, अविज्जानिवरणं कामच्छंदनिवरणे निवरणन्सेव निवारणसंपयुत्तञ्च, ब्यापदानिवरणं अविज्जनिवरणे निवरणन्सेव निवारणसंपयुत्तञ्च, अविज्जानिवरणं ब्यापदानिवरनेन निवारणन्सेवा निवारणसंपयुत्तञ्च, थिन्नमिद्धनिवरं अविज्जनिवरणेन निवारणसेवा निवारणसंपयुत्तञ्च, अविज्जानिवरणं थिनिमिद्धनिवरणेन निवारणान्सेव निवारणसंपयुत्तञ्च, उद्धाच्चनिवरणं अविज्जानिवरणेन निवारणंसेवा निवारणसंपयुत्तञ्च, अविज्जानिवरणम् उद्धाच्चनिवरणेण निवरणन्सेव निवारणसंपयुत्तन्च, कुक्कुक्कनिवरनम् अविज्जानिवरणे निवारणसेव निवारणसंपयुत्तनचा, अविज्जानिवरनं कुक्कुक्कनिवरनेन निवारणान्सेव निवारणसंपयुत्तञ्च, विकिच्चानिवरं अविज्जनिवरणेन निवरणन्सेव निवरणसंपयुत्तञ्च, अविज्जानिवरणम् विचिकिच्चनिवरनेण निवारणांसेव निवारणसंपयुत्तञ्च, कामच्छंदनिवरं उद्धाच्चनिवरणेण निवारणाञ्चेव निवारणसंपयुत्तञ्च, कामच्छंदनिवरणं उद्धाच्चनिवरणं कामच्छंदनिवरणेण निवरणन्सेव निवरणसंपयुत्तञ्च, बयापादनिवरं उधक्कनिवरणेण निवरणाञ्चेव निवरणसंपयुत्तञ्च, उद्धाच्चनिवरणं ब्यापदानिवरणेन निवारणसेव निवारणसंपयुत्तन्च, उधचक्कनिवरं उधच्चकनिवरणेन निवारणसमेव निवारणसंपयुत्तनच, उधचक्कनिवरं थिनमिद्धनिवरनेन निवारणसेव निवारणसंपयुत्तन्च, कुक्कुक्कनिवरं उधचक्कनिवरणेण निवारणससेवा निवारणसंपयुत्तञ्च, उधचक्कनिवरं कुक्कुक्कनिवरनेन निवारणान्सेव निवारणसंपयुत्तञ्च, विकिचच्चाणिवरणं उद्धक्कनिवरणेन निवारणंसेवा निवारणसंपयुत्तञ्च, उद्च्चच्चाणीवरणम् विकिसिच्चानिवरणेण निवरणाञ्चेव निवरणसंपयुत्तञ्च, अविज्जानिवरणं उद्धाच्चानिवरणेण निवरणाञ्चेव निवरणसंपयुत्तञ्च, उद्धाच्चनिवरणं अविज्जानिवरणेन निवारणांसेव निवारणसंपयुत्तन्च - इमे धम्म निवारण सेवा च।

1177. कतमे धम्म निवारणसंपयुत्त सेवा नो च निवारण? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्त, ते धम्मे थपेत्वा वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म निवारणसंपयुत्त सेवा नो च निवारण।

1178. कटमे धम्म निवारणविप्पयुत्त निवारणिया? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता सासव कुसलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म निवारणविप्पयुत्ता निवारणिया।

1179. कटमे धम्म निवारणविप्पयुत्त अनिवरनिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असंखता च धातु - इमे धम्म निवारणविप्पयुत्त अनिवरनिया।

परमासगोच्चकं

1180. कतमे धम्म परमसा? दितिथिपरमसो.

1181. तत्थ कतमो दितिथिपरमसो? सस्सतो लोकोति वा, अस्स्सतो लोकोति वा, अन्तव लोकोति वा, अनन्ता लोकोति वा, तं जीवं तं सरिरन्ति वा, अन्नं जीवं अन्नं सरिरन्ति वा, होति तथागतो परम् मरणाति वा, न होति तथागतो परं मरणाति वा, होति च न च होति तथागतो परं मरणाति वा, नेव होति न न होति तथागतो परं मरणाति वाः या इवरूपा दिथि दिथिगतं दितिघहनं दितिकांतारो दितिविशुकायिकां

दितिथिविप्फंडितं दितिथिसंयोजनं गाहो पतितहो अभिनिवेसो परमासो कुम्मग्गो मिच्चापथो मिच्चत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गहो – अयं वुकाति दितिथिपरमासो। सब्बापि मिच्छादिथि दितिथिपरमसो।

Ime dhammā parāmāsā.

1182. कतमे धम्म नो परमसा? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नो परमासा।

1183. कटमे धम्म परमार्थ? सासव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवकार, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म परमार्थ।

1184. कटमे धम्म अप्रमठ? अपरियापन्ना मग्ग च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अप्रमठ।

1185. कतमे धम्म परमासम्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म परमसंपयुत्त।

1186. कतमे धम्म परमसविप्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म परमसविप्पयुत्त।

1187. कतमे धम्म परमसा सेवा परमार्थ च? स्वेवे परमसो परमसो सेवा परमार्थो च।

1188. कतमे धम्म परमार्थ सेवा नो च परमसा? तेहि धम्मेहि ये धम्म परमार्थ, ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा ससाव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म परमार्थ सेवा नो च परमसा।

1189. कतमे धम्म परमसविप्पयुत्त परमार्थ? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता ससाव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म परमसविप्पयुत्त परमार्थ।

1190. कतमे धम्म परमसविप्पयुत्त अप्रमठ? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म परमसाविप्पयुत्त अप्रमठ।

महंतरादुकां

1191. कतमे धम्म सरम्मना? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो – इमे धम्म सरम्मना।

1192. कटमे धम्म अनारम्मना? सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म अनारम्मना।

1193. कटमे धम्म चित्त? चक्खुविनाणं, सोतविनानां, घनविनानां, जीवविनानां, कायविनानां, मनोधातु, मनोविनानाधातु - इमे धम्म चित्त।

1194. कटमे धम्म नो चित्त? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म नो चित्त।

1195. कटमे धम्म चेतसिका? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो – इमे धम्म चेतसिका।

1196. कतमे धम्म एसिटासिका? चित्तञ्च, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म एसिटासिका।

1197. कतमे धम्म चित्तसंपयुत्त? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो - इमे धम्म चित्तसम्पायुत्त।

1198. कतमे धम्म चित्तविप्पयुत्त? सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म चित्तविप्पयुत्त। चित्तं न वट्टब्बं – चित्तेन संपयुत्तन्तिपि, चित्तेन विप्पयुत्तन्तिपि।

1199. कतमे धम्म चित्तसंशथ? वेदानाक्खन्धो, संनाक्खन्धो, संखरक्खन्धो – इमे धम्म चित्तसंशत्था।

1200. कतमे धम्म चित्तविसंशथा? सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म चित्तविसंशथ। चित्तं न वट्टब्बं – चित्तेन संसंतहन्तिपि, चित्तेन विसंसंशांत्तिपि।

1201. Katame dhammā cittasamuṭṭhānā? Vedanākkhandho, saññākkhandho, saṅkhārakkhandho; kāyaviññatti vacīviññatti; यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं चित्तजं चित्तहेतुकं चित्तसमुत्थानं रूपायतनं सददायतनं गंधायतनं रसायतनं फोथ्हब्बायतनं आकाशधातु अपोधातु रूपस्सा लहुता रूपस्सा मुदुता कामनानाता रूपसा उपाचयो रूपस्सा संतति कबाधिकारो आहारो – इमे धम्म चित्तसमुत्थाना।

1202. कटमे धम्म नो चित्तसमुत्थाना? चित्तञ्च, अवसेसंञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म नो चित्तसमुत्थाना।

1203. कतमे धम्म चित्तसहभूनो? वेदनाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, कायाविन्ति, वाचिविनत्ती - इमे धम्म चित्तसाहाभुनो।

1204. कतमे धम्म नो चित्तसहभूनो? चित्तञ्च, अवसेसंञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म नो चित्तसहभूनो।

1205. Katame dhammā cittānuparivattino? Vedanākkhandho, saññākkhandho, saṅkhārakkhandho, kāyaviññatti, vacīviññatti – ime dhammā cittānuparivattino.

1206. कतमे धम्म नो चित्तनुपरिवत्तिनो? चित्तांक, अवसेसंच रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नो चित्तनुपरिवत्तिनो।

1207. कतमे धम्म चित्तसंशमुत्थाना? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो – इमे धम्म चित्तसंशठसमुत्थाना।

1208. कतमे धम्म नो चित्तसंशमुत्थाना? चित्तञ्च, सब्बाङ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म नो चित्तसंस्थासमुत्थाना।

1209. कतमे धम्म चित्तसंशस्तसमुत्थानसहभूनो? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो – इमे धम्म चित्तसंशस्तसमुत्थानसाहाभुनो।

1210. कतमे धम्म नो चित्तसंशसमुत्थानसाहाभुनो? चित्तञ्च, सब्बाङ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म नो चित्तसंशमुत्थानसाहाभुनो।

1211. कतमे धम्म चित्तसंशस्तसमुत्थाननुपरिवत्तिनो? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो - इमे धम्म चित्तसंशस्तसमुथ्थाननुपरिवत्तिनो।

1212. कतमे धम्म नो चित्तासंसथसमुत्थाननुपरिवत्तिनो? चित्तांक, सब्बाङ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नो चित्तसंशमुथंहनुपरिवत्तिनो।

1213. कटमे धम्म अज्जत्तिका? चक्खायतनं...पे... मनायतनं - इमे धम्म अज्जत्तिका।

1214. कटमे धम्म बहिरा? रूपायतनं...पे...धम्मायतनं - इमे धम्म बहिरा।

1215. कटमे धम्म उपादा? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इमे धम्म उपादा।

1216. कतमे धम्म नो उपदा? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विनान्नक्खन्धो, चत्तारो च महाभूत, असन्खता च धातु - इमे धम्म नो उपदा।

1217. कटमे धम्म उपादिन्ना? सासव कुसलकुशलानं धम्मनां विपाक कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; यञ्च रूपं कम्मास्सा कटत्ता — इमे धम्म उपादिन्ना।

1218. कटमे धम्म अनुपदिना? सासव कुसलकुशल धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; ये च धम्म किरिया नेव कुसल नकुशला न च कम्मविपाक, यञ्च रूपं न कम्मस्सा कटत्ता, अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अनुपादिना.

उपादानगोच्चकं

1219. कटमे धम्म उपादान? कत्तारि उपदाननि - कामुपादनं, दितहुपादनं, सिल्लब्बतुपादनं, अत्तवदुपादनं [कामुपादनं दितहुपादानं सिल्लब्बतुपदानं अत्तवदुपादानं (सि.)]।

1220. तत्थ कतमं कमुपादनम्? यो कामेसु कामच्छंदो कामरागो कामानंदी कामतन्हा कामसिनेहो कामपरिषाहो काममुच्च कामज्जोसानं - इदं वुकाति कामुपादनं।

1221. तत्थ कतमं दीथुपादानं? नत्थि दिनं, नत्थि यिट्ठं, नत्थि हुतां, नत्थि सुक्तदुक्कतनं कम्मनं फलं विपाको, नत्थि अयं लोको, नत्थि पारो लोको, नत्थि माता, नत्थि पिता, नत्थि सत्ता ओपापतिका, नत्थि लोके समानाब्राह्मण सम्मग्गता [समग्गता (का.)] सम्मापतिपन्ना, ये इमाञ्च लोकं पराञ्च लोकं सयानं अभिन्न सच्चिकत्व पवेदेंति - या एवरुपा दितिथि दिथिगतं दितिथिगाहनं दितिकांतारो दितिथिविसुकायिकां दिदिथिविपफंडितं दितिथिसंयोजना गहो पतितहो अभिनिवेसो परमासो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्चट्टं तित्थायतनं विपरियासग्गहो - इदं वुक्कति दित्हुपदानां। हपेत्वा सिल्लब्बतुपदानञ्च अत्तवदुपादनच सब्बापि मिच्छदिथि दितिथुपादनम्।

1222. तत्थ कतमं सिल्लब्बतुपदानं? इतो बहिद्ध समानब्राह्मणं सिलेन शुद्धि, वतेन शुद्धि, सिलब्बतेन शुद्धि - या एवरूपा दिदिथिगतं दितिघहनं दितिकांतरो दितिविशुकायिकं दितिथिविप्पंदितं दितिथिसंयोजनं गाहो पतितहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्चट्टं तित्थायतनं विपरियासग्गहो — इदम वुकाति सिलाब्बतुपदानं।

1223. तत्थ कतमम् अत्तवदुपादनम्? इधा अस्सुत्वा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावि अरियाधम्मस्सा अकोविदो अरियाधम्मे अविनीतो सप्पुरिसानां अदस्सावि सप्पुरिसाधम्मस्सा अकोविदो सप्पुरिसाधम्मे अविनीतो रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवंतम् वा अत्तनं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मि वा अत्तनं। वेदानां...पे... सन्नं...पे... संखरे...पे... विनाणं अत्ततो समनुपस्सति, विनाणवंतं वा अत्तनं, अत्तानि वा विनानास्मि। वा अत्तनं. या इवरूपा दितिथि दितिथिगतं दितिथिगहनं दितिथिकांतारो दितिविशुकायिकां दितिथिविप्पंदितं दितिथिसंयोजनं गाहो पतित्थाहो अभिनिवेशो परमसो कुम्मग्गो मिच्छपथो मिच्चट्टं तिट्ठायतनं विपरियासग्गहो — इदं वुक्कति अत्तवदुपादनम्।

Ime dhammā upādānā.

1224. कटमे धम्म नो उपादान? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नो उपदान।

1225. कतमे धम्म उपदानिया? सासव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवकार, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म उपदानिया।

1226. कतमे धम्म अनुपदनीय? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अनुपादनीय।

1227. कतमे धम्म उपादानसंपयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म उपादानसंपयुत्त।

1228. कतमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता।

1229. कतमे धम्म उपादान सेवा उपादानिय च? तनेव उपादाननि उपादान सीव उपादानिय च।

1230. कतमे धम्म उपादानिय सेवा नो च उपादान? तेहि धम्मेहि ये धम्म उपादानिया, ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा सासव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म उपादानिय सेवा नो च उपादान।

1231. कतमे धम्म उपादान सेवा उपादानसंपयुत्त च? दिट्ठुपादानं कामुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसंपयुत्तञ्च, कामुपादानं दिष्ठुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसंपयुत्तञ्च, सिल्लब्बतुपादानं कामुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसंपयुत्तञ्च, कामुपादानं सिल्लब्बतुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसंपयुत्तञ्च, अत्तवदुपदानाम् कामुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसंपयुत्तञ्च, कामुपादानं अत्तवादुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसंपयुत्तञ्च - इमे धम्म उपादान सीवा उपादानसंपयुत्त च.

1232. कतमे धम्म उपादानसंपयुत्त सेवा नो च उपादान? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्त, ते धम्मे थपेत्वा वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म उपादानसंपयुत्त सेवा नो च उपादान।

1233. कतमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता उपदानिया? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता सासाव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता उपदानिया।

1234. कतमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता अनुपादनीय? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता अनुपादनीय।

निक्खेपकंडे दुतियाभानवरो।

किलेसगोच्चकम्

1235. कतमे धम्म किलेसा? दासा किलेसवत्थुनि - लोभो, दोसो, मोहो, मानो, दितिथि, विचिकच्चा, थिनं, उद्धाक्कं, अहिरिकां, अनोट्टप्पां।

1236. Tattha katamo lobho? यो रागो सारागो अनुनयो अनुरोधो नंदी नंदीरागो चित्तस्स सारागो इच्छा मुच्चा अज्झोसनं गेधो पालिगेधो सांगो पंको एजा माया जनिका संजननि सिब्बिनी जालिनी सरिता विसत्तिका सुत्तं विसाता अयुहिनि दुतिया पाणिधि भवनेति वनं

वनथो संथावो सिनेहो अपेक्खा पतिबंधु असा असिसाना असिसितत्तम रूपसा सद्दासा गन्धसा रसासा फोथब्बासा लाभासा धनासा पुत्तसा जीवितसा जप्पा पजप्पा अभिजप्पा जप्पा जप्पाना जप्पितट्टं लोलुप्पां लोलुप्पयाना लोलुप्पयितट्टं पुच्चानजिकाता साधुकाम्यता अधम्मरागो विसामलभो निकांति निष्कामना पत्तन पिहाना संपतन कामतंहा भवतंह विभवतंह रूपतण्हा रूपतंह अरूपतंहा निरोधतंहा रूपतंहा सद्दतन्हा गंधतंहा रसतंहा फोतहब्बतंहा धम्मतंहा ओघो योगो गांठो उपादानं अवरणं निवारणं चादानं बंधनं उपक्किलसो अनुसयो परियुत्थानं लता वेविच्चं दुक्खमूलं दुक्खनिदानं दुक्खप्पभावो मरापासो मरबसिसं माराविसयो तंहनादि तंहजालं तंहागद्दुलं तन्हासमुद्दो अभिज्झा लोभो अकुसलमूलं - अयं वुच्चति लोभो।

1237. तत्थ काटामो दोसो? अनात्थम् मे अचरति अघातो जयति, अनात्थम् मे कैरातिति अघातो जयति, अनात्थम् मे अचरति अघातो जयति, पियास्सा मे मनपास्सा अनात्थम् अचरी...पे... अनात्थम् चरति...पे... अनात्थम् कैरिसतिति अघाटो जयति, अप्पियास्सा मे अमानपासा अत्थं अचरी...पे... अत्थं कैरति...पे... अत्थं कैरिसतिति अघाटो जयति, अट्ठाने वा पण अघाटो जयति। यो इवरूपो सीतास्स अघाटो पतिघातो पतिघं पतिविरोधो कोपो पाकोपो संपककोपो दोसो पदोसो संपदोसो सीतास्स बयापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्जहना कुज्जितट्टं दोसो दुस्साना दुस्सीत्तं बयापत्ति ब्यापजना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पतिविरोधो चंडिक्कं असुरोपो अनत्तमनाता चित्तस्स - अयं वुक्काति दोसो।

1238. तत्थ कतमो मोहो? दुक्खे अण्णां, दुक्खसमुदाय अण्णां, दुक्खनिरोधे अण्णां, दुक्खनिरोधगामिनीया पतिपादया अण्णां, पुब्बंते अण्णाण्, अपरंते अनानां, पुब्बनतापरंते अनानां, इदप्पक्कयता पाटिकसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अनानां। यं एवरूपं अण्णाणं अदस्सणं अनाभिसमायो अननुबोधो असम्बोधो अप्पतिवेधो असंगहना अपरियोगहना असमपेक्खणा अपाचकेवेक्खना अपाक्ककक्खकम्मं दुम्मेज्झाम् बाल्यं असंपजान्नं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जघो अविज्जयोगो अविज्जनुसयो अविज्जापरियुतहनं अविज्जलंगी मोहो अकुसलमूलं - अयं वुकाति मोहो।

1239. तत्थ कतमो मानो? सेयोहमस्मिति मानो, सदिसोहमस्मिति मानो, हिनोहमस्मिति मानो; यो इवरूपो मनो मन्नना मन्नित्तं उन्नति उन्नमो धजो संपग्गहो केतुकाम्यता चित्तस्स - अयं वुकाति मानो।

1240. तत्थ कतम दिति? सस्सतो लोकोति वा, अस्स्सतो लोकोति वा, अन्तव लोकोति वा, अनन्ता लोकोति वा, तं जीवं तं सरिरन्ति वा, अन्नं जीवं अन्नं सरिरन्ति वा, होति तथागतो परम् मरणाति वा, न होति तथागतो परं मरणाति वा, होति च न च होति तथागतो परं मरणाति वा, नेव होति न न होति तथागतो परं मरणाति वाः या इवरूपा दिथि दिथिगतं दितिघहनं दितिकांतारो दितिविशुकायिकां दितिथिविप्फंडितं दितिथिसंयोजनं गाहो पतितहो अभिनिवेसो परमासो कुम्मग्गो मिच्चापथो मिच्चत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गहो — अयं वुकाति दितिथि। सब्बापि मिच्छदिति दितिथि।

1241. तथा कतमा विचिकीच्चा? सत्थरि कांखति विचिकिचति, धम्मे कांखति विचिकिचति, संघे कांखति विकिसिच्छति, संघे कांखति विचिकिचति, पुब्बंते कांखति विचिकिचति, पुब्बंते कांखति विचिकिचति, अपरंते कांखति विकिसिच्छति, पुब्बंतापरंते कांखति विकिसिच्चति, इदप्पक्कयता पतिच्चासमुप्पन्नेसु धम्मेसु कांखति विकिसिच्छतिः या एवरूपा कंखा कंखायणा कंखायितत्तं विमति विकिसिच्चा द्वेधाकं द्वेधापथो संशयो, अनेकंसग्गाहो असप्पना परिस्पन्ना अपरियोगहाना थंभितट्टं चित्तस्स मनोविलेखो - अयं वुक्काति विकिसिच्चा।

1242. तत्थ कतमं थिनं? या चित्तस्स अकलता अकम्मन्नता ओलियाना सल्लियाना लीनां लियाना लियायितट्टं थिनं थियाना थियितट्टं चित्तस्स — इदं वुक्कति थिनं।

1243. तत्थ कतमं उद्धाचं? यं चित्तस्स उद्धक्कं अवुपासमो चेतासो विक्खेपो भंट्टट्टं चित्तस्स - इदं वुक्कति उद्धक्कं।

1244. तत्थ कतमं अहिरिकं? यं न हिरियति हिरियितब्बेन, न हिरियति पापकाणं अकुशलनं धम्मनं समापत्तिया - इदं वुच्चति अहिरिकाम्।

1245. तत्थ कतमं अनोत्प्पं? यं न ओट्टप्पति ओट्टप्पितब्बेन, न ओट्टप्पति पापकनं अकुशलनं धम्मणं समापत्तिया - इदं वुक्कति अनोत्प्पट्टम्।

Ime dhammā kilesā.

1246. कतमे धम्म नो किलेसा? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म नो किलेसा।

1247. कतमे धम्म संकिलेशिका? सासव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवकार, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म संकिलेशिका।

1248. कतमे धम्म असंकिलेसिका? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असन्खता च धातु - इमे धम्म असन्किलेसिका।

1249. कटमे धम्म संकिलित्था? तिनि अकुशलमुलानि – लोभो, दोसो, मोहो; तदेकंठ च किलेसा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विन्ननक्खन्धो, तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म सांकिलिट्ठा.

1250. कटमे धम्म असंकिलिट्ठा? कुसलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म असंकिलिट्ठा।

1251. कतमे धम्म किलेसासम्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता वेदनाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो – इमे धम्म किलेसासंपयुत्ता।

1252. कतमे धम्म किलेसविप्पयुत्त? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे...विन्यान्नक्खन्धो; सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म किलेसाविप्पयुत्त।

1253. कतमे धम्म किलेसा सेवा संकिलेशिका च? तेव किलेसा किलेसा सेवा संकिलेशिका च।

1254. कतमे धम्म संकिलेशिका सेवा नो च किलेसा? तेहि धम्मेहि ये धम्म संकिलेशिका, ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा सासव कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामावचरा, रूपावचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म संकिलेशिका सेवा नो च किलेसा।

1255. कतमे धम्म किलेसा सेवा संकिलिथ च? तेव किलेसा किलेसा सेवा संकिलिथा च।

1256. कतमे धम्म संकिलित्थ सेवा नो च किलेसा? तेहि धम्मेहि ये धम्म संकिलिट्ठा, ते धम्मे थपेत्वा वेदनाक्खन्धो...पे... विणनक्कखंडो - इमे धम्म संकिलिट्ठा सेवा नो च किलेसा।

1257. कतमे धम्म किलेसा सेवा किलेसासम्पयुत्त च? लोभो मोहेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, मोहो लोभेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, दोसो मोहेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, मोहो दोसेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, मानो मोहेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, मोहो मानेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए सीए, दितिथि मोहन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्त सीए, मोहो दितिथिया किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, विकिसिच्चा मोहन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्त सीए, मोहो विकिकीचाया किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, थिनं मोहेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, मोहो थिनेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, उधक्कं मोहेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, मोहो उधचसेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, अहिरिकां

मोहेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, मोहो अहिरिकेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, एनोट्टप्पां मोहेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, मोहो अनोत्ताप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तो सीए, लोभो उद्धासेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, उधक्कम लोभेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, दोसो उद्धासेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तो सीए, उधक्कम डोसेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, मोहो उधचकैं किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तो सीए, उधचकैं मोहेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, मनो उधचकैं किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, उद्धक्कं मानेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, दितिथि उद्धास्सेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्त च, उधक्कम दिठिया किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्च, विसिकिचचा उद्धाचसेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन च, उधक्कं विकिसिचाया किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, थिनम उधचसेन किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, उधक्कम थिनेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, अहिरिकाम उधचसेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, उधचक्कम अहिरिकेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, अनोत्पम उधचसेन किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, उधक्कम एनोट्टप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, लोभो अहिरिकेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, अहिरिकां लोभेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, ऐसा करो अहिरिकेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, अहिरिकां दोसेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, मोहो अहिरिकेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तो सीए, अहिरिकां मोहेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, मानो अहिरिकां किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, अहिरिकाम् मानेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, दितिथि अहिरिकेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्त च, अहिरिकम् दिठिया किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्च, विसिकिच अहिरिकेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्त च, अहिरिकाम् विकिसिचाय किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, थिनम अहिरिकेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, अहिरिकाम थिनेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, उधक्कम अहिरिकेन किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, अहिरिकाम उधचसेन किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, एनोट्टप्पन अहिरिकेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, अहिरिकाम् एनोट्टप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, लोभो एनोट्टप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, एनोट्टप्पन लोभेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, दोसो एनोट्टप्पेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुट्टो सीए, एनोट्टप्पम डोसेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का,मोहो अनोत्तप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, अनोत्तप्पन मोहेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, मानो अनोत्तप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तो सीए, अनोत्तप्पम मानेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, दिदिथि अनोत्तप्पेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्त च, अनोत्पम दिथिय किल्सो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, विकिसिच्चा अनोत्तप्पेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्त च, अनोत्पम विसिकिचया किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्का, थिनं अनोत्तप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, एनोट्टप्पन थिनेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, उधक्कम एनोट्टप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, एनोट्टप्पां उधच्चेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, अहिरिकां एनोट्टप्पेना किलेसो सेवा किलेससम्पायुत्तन्का, एनोट्टप्पां अहिरिकेना किलेसो सेवा किलेसासम्पायुत्तन्च - इमे धम्म किलेसा सेवा किलेसासम्पायुत्त च।

1258. कतमे धम्म किलेसासम्पयुत्त सेवा नो च किलेसा? तेहि धम्मेहि ये धम्म संपयुत्ता ते धम्मे थपेत्वा वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो - इमे धम्म किलेसासम्पयुत्त सेवा नो च किलेसा।

1259. कतमे धम्म किलेसाविप्पयुत्त संकिलेशिका? तेहि धम्मेहि ये धम्म विप्पयुत्ता सासव कुसलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म किलेसाविप्पयुत्त संकिलेशिका।

1260. कतमे धम्म किलेसाविप्पयुत्त असंकिलेशिका? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म किलेसविप्पयुत्त असंकिलेसिका।

पिट्ठिदुकम्

1261. कतमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा? तिनि संयोगनि - सक्कयादिति, विचिकीच्चा, सिलब्बतपरमसो।

1262. तत्थ कतामा सक्कयादिति? इधा अस्सुत्वा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावि अरियाधम्मस्सा अकोविदो अरियाधम्मे अविनीतो सप्पुरिसानां अदस्सावि सप्पुरिसाधम्मस्सा अकोविदो सप्पुरिसाधम्मे अविनीतो रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवंतम् वा अत्तनं, अत्तनि वा

रूपं, रूपस्मि वा अत्तनं। वेदानां...पे... सन्नं...पे... संखरे...पे... विनाणं अत्ततो समनुपस्सति, विनाणवंतं वा अत्तनं, अत्तानि वा विनाणं, विनानास्मिम् वा अत्तनं. या इवरूप दिति दितिथिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुक्कति सक्कयादिति।

1263. तथा कतमा विचिकीच्चा? सत्थरि कांखति विचिकीच्चति...पे... थंभितट्टं चित्तस्स मनोविलेखो - अयं वुच्चति विचिकीच्चा।

1264. तत्थ कतमो सिलब्बतपरमसो? इतो बहिद्ध समानब्राह्मणं सिलेना शुद्धि वतेन शुद्धि सिलाब्बतेन शुद्धि - या एवरूपा दिदिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुकाति सिलब्बतपरमसो। इमानि तिनि संयोगनि, तदेकंठ च किलेसा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विनाणकखंडहो, तंसमुत्थानां कायकम्मं वाचिकम्माम् मनोकम्मम् - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा।

1265. कतमे धम्म न दस्सानेन पहतब्बा? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म न दस्सानेन पहतब्बा।

1266. कटमे धम्म भवनाय पहतब्बा? अवसेसो लोभो दोसो मोहो, तदेकंठ च किलेसा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, तंसमुत्थानं कायकम्मं, वचिकम्मं मनोकम्मं - इमे धम्म भवनाय पहतब्बा.

1267. कटमे धम्म न भवनाय पहतब्बा? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बन्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म न भवनाय पहतब्बा।

1268. कटमे धम्म दस्सानेन पहतबहेतुका? तिनि संयोगनि - सक्कयादिति, विचिकीच्चा, सिलब्बतपरमसो।

1269. तत्थ कतामा सक्कयादिति? इधा अस्सुत्वा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावि अरियाधम्मस्सा अकोविदो अरियाधम्मे अविनीतो सप्पुरिसानां अदस्सावि सप्पुरिसाधम्मस्सा अकोविदो सप्पुरिसाधम्मे अविनीतो रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवंतम् वा अत्तनं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मि वा अत्तनं। वेदानां...पे... सन्नं...पे... संखरे...पे... विनाणं अत्ततो समनुपस्सति, विनाणवंतं वा अत्तनं, अत्तानि वा विनाणं, विनानास्मिम् वा अत्तनं. या इवरूप दिति दितिथिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुक्कति सक्कयादिति।

1270. तथा कतमा विचिकीच्चा? सत्थरि कांखति विचिकीच्चति...पे... थंभितट्टं चित्तस्स मनोविलेखो - अयं वुच्चति विचिकीच्चा।

1271. तत्थ कतमो सिलब्बतपरमसो? इतो बहिद्ध समानब्राह्मणं सिलेना शुद्धि वतेन शुद्धि सिलाब्बतेन शुद्धि - या एवरूपा दिदिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुकाति सिलब्बतपरमसो। इमानि तिनि संयोगनि, तदेकंठ च किलेसा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विनाणकखंडो, तंसमुत्थानं कयाकम्मं, वसीकम्मं, मनोकम्मम् - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बहेतुका। तिनि संयोगनि - सक्कयादिथि, विचिच्चा, सिलब्बतपरमसो - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा। तदेकठो लोभो दोसो मोहो — इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बहेतु। तदेकत्था च किलेसा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म दस्सानेना पहतबहेतुका.

1272. कतमे धम्म न दस्सानेन पहतबहेतुका? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशलाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बनचा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म न दस्सानेन पहतब्बहेतुका।

1273. कटमे धम्म भवनाय पहतबहेतुका? अवसेसो लोभो दोसो मोहो - इमे धम्म भवनाय पहतबहेतु। तदेकंठ च किलेसा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म भवनाय पहतबहेतुका.

1274. कटमे धम्म न भवनाय पहतबहेतुका? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सब्बनचा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म न भवनाय पहतबहेतुका।

1275. कटमे धम्म सवितक्का? सवितक्कभूमियं कामावके रूपावकेर अपरियापन्न, वितक्कम थपेत्वा, तंसम्पायुत्तो वेदानाक्खन्धो...पे... विनाणक्कखंडो - इमे धम्म सवितक्क।

1276. कटमे धम्म अवित्क्का? अवितक्कभूमियं कामवकेरे रूपावकेरे अरूपावकेरे अपरियापन्न; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; विटक्को च, सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म अवित्क्का।

1277. Katame dhammā savicārā? Savicārabhūmiyaṃ kāmāvacare rūpāvacare apariyāpanne, vicāraṃ ṭhapetvā, taṃsampayutto vedanākkhandho, saññākkhandho, saṅkhārakkhandho, viññāṇakkhandho — ime dhammā savicārā.

1278. कटमे धम्म विचार? अविचारभूमियं कामवकेरे रूपावकेरे अरूपावकेरे अप्रियाने; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; विचारो च, सब्बाञ्च रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म विचार।

1279. कटमे धम्म सप्पितिका? सप्पितिकाभूमियं कामावके रूपावकेर अपरियापन्ने, पीतिं थापेत्वा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विनन्नाकखण्डो - इमे धम्म सप्पितिका।

1280. कटमे धम्म अप्पितिका? अप्पितिकाभूमियं कामवकेरे रूपावकेरे अरूपावकेरे अपरियापन्न; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; पिटि च, सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म अप्पितिका।

1281. कतमे धम्म पितिसाहगता? पीतिभूमियं कामावके रूपावकेर अपरियापन्न, पीतिं थपेत्वा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विनन्नाक्खन्धो - इमे धम्म पितिसाहगता।

1282. कतमे धम्म न पितिसाहगता? न पितृभूमियं कामवकेरे रूपावकेरे अरूपावकेरे अप्रियाने; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; पिटि च, सब्बान्चा रूपं, असंखता च धातु - इमे धम्म न पतिसहगाता।

1283. कतमे धम्म सुखसहगाता? सुखाभूमियं कामावके रूपावकेर अपरियापन्ने, सुखं थपेत्वा, तंसम्पायुत्तो सन्नाक्खान्धो, संखरक्खान्धो, विनानाक्खण्डो - इमे धम्म सुखसहागता।

1284. कतमे धम्म न सुखसहगाता? न सुखभूमियं कामवकेरे रूपावकेरे अरूपावकेरे अप्रियाने; वेदानाक्कखंडो...पे... विनाणक्कखंडो; सुखञ्च, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म न सुखसहगता।

1285. कतमे धम्म उपेक्खसहगता? उपेक्खभूमियं कामावकेरे रूपावकेरे अरुपावकेरे अपरियापन्न, उपेक्खं थपेत्वा, तंसम्पायुत्तो सन्नाक्खान्धो, संखराक्खाण्डो, विनानाक्खण्डो - इमे धम्म उपेक्खसहागता.

1286. कतमे धम्म न उपेक्खसहगता? न उपेक्खभूमियं कामावकेरे रूपावकेरे अपरियापन्ने, वेदानाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, उपेक्खा च, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म न उपेक्खसहागता.

1287. कटमे धम्म कामवचरा? हेठहतो अविसिनिरयं परियंतं करित्वा, उपरितो परनिम्मितावसवत्ति देवे [परनिम्मितवसवत्तिदे (सि. का.)] अंतो करित्वा, यं एतस्मिं अंतरे एत्थावकार एत्थ परियपन्ना खंडधातु आयताना, रूपं वेदाना संखरा विनाशं — इमे धम्म कामवचरा।

1288. कतमे धम्म न कामवचरा? रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना - इमे धम्म न कामवचरा।

1289. कटमे धम्म रूपवचरा? हेठहतो ब्रह्मलोकं परियंतं करित्वा, उपरितो अकनिट्ठे देवे [अकनिट्ठदेवे (सि. का.)] अंतो करित्वा, यं एतस्मिं अंतरे एत्थावकारा एत्था परियपन्न समापन्नस्सा वा उपप्पन्नस्सा वा दिट्ठधम्मसुखविहारस्सा [दितिथधम्मसुखविहारस्सा (का.)] और चित्तसिटासिका धम्म - इमे धम्म रूपावकारा।

1290. कटमे धम्म न रूपवचरा? कामवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना - इमे धम्म न रूपवचरा।

1291. कटमे धम्म अरूपवकारा? हेठहतो आकाशान्चायतनुपगे देवे परियंतं करित्वा, उपरितो नेवासंन्यानासंन्यातनुपगे देवे अंतो करित्वा, यं एतस्मिं अंतरे एत्थावकार एत्थ परियपन्ना समपन्नस्सा वा उपप्पन्नस्सा वा दिट्ठधम्मसुखविहारिस्स वा चित्तसेटसिका धम्म - इमे धम्म अरुपवकारा।

1292. कतमे धम्म न अरूपवचरा? कामवचरा, रूपवचरा, अपरियापन्ना - इमे धम्म न अरूपवचरा।

1293. कतमे धम्म परियापन्ना? सासव कुसलकुशलाब्यक्त धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, रूपकखंडो...पे... विनाणकखंडहो - इमे धम्म परियपन्ना।

1294. कतमे धम्म अपरियापन्ना? मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अपरियपन्ना।

1295. कतमे धम्म नियमिका? कट्टारो मग्गा अपरियापन्ना - इमे धम्म निय्यनिका।

1296. कतमे धम्म अनियानिका? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म अनियिका।

1297. कतमे धम्म नियता? पञ्च कम्मानि अनंतारिकानि, या च मिच्छादिति नियता, कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना - इमे धम्म नियता।

1298. कतमे धम्म अनियाता? ते धम्मे थपेत्वा अवसेसा कुसलकुशालाब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म अनियता।

1299. कटमे धम्म सौत्तरा? सासव कुसलकुशलब्यकाता धम्म कामवकार, रूपवचरा, अरूपवचरा; रूपकखंडो...पे...विनाणकखंडहो - इमे धम्म सौत्तरा।

1300. कतमे धम्म अनुत्तारा? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलनि च, असंखता च धातु - इमे धम्म अनुत्तारा।

1301. कटमे धम्म शरणा? तिनि अकुशलमुलानि लोभो, दोसो, मोहो; तदेकंठ च किलेसा, तंसम्पायुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे... विन्ननक्खन्धो, तंसमुत्थानं कायकम्मम, वाचिकम्मम, मनोकम्मम - इमे धम्म सरणा।

1302. कटमे धम्म अरणा? कुसलब्यकाता धम्म कामवचरा, रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना; वेदानाक्खन्धो...पे... विन्नन्नक्खन्धो, सब्बाञ्च रूपं, असन्खता च धातु - इमे धम्म अरणा।

अभिधम्मदुकम्.

सुत्तंतिकदुकनिकखेपं

1303. कतमे धम्म विज्जाभागिनो? विजयाय संपयुत्तका धम्म - इमे धम्म विज्जाभागिनो।

1304. कतमे धम्म अविज्जाभागिनो? अविज्जाय संपयुत्तका धम्म - इमे धम्म अविज्जाभागिनो।

1305. कतमे धम्म विज्जुपमा? हेथिमेसु तिसु अरियामग्गेसु पन्ना - इमे धम्म विज्जुपमा।

1306. कतमे धम्म वाजीरूपमा? उपरिथिमे अरहतमग्गे पन्ना - इमे धम्म वाजीरूपमा।

1307. कतमे धम्म बाला? अहिरिकांच अनोत्तप्पनचा - इमे धम्म बाला। सब्बेपि अकुसाला धम्म बला।

1308. कटमे धम्म पंडिता? हिरि च ओट्टप्पनचा - इमे धम्म पंडिता। सब्बेपि कुशला धम्म पंडिता।

1309. कटमे धम्म कान्हा? अहिरिकांच अनोत्तप्पनचा - इमे धम्म कान्हा। सब्बेपि अकुसाला धम्म कान्हा।

1310. कटमे धम्म सुक्का? हिरि च ओट्टप्पनचा - इमे धम्म सुक्का? सब्बेपि कुसल धम्म सुक्खा।

1311. कटमे धम्म तपनिया? कायदुच्चरिताम्, वासिदुच्चरिताम्, मनोदुच्चरिताम् – इमे धम्म तपनिया। सब्बेपि अकुसाला धम्म तपनिया।

1312. कटमे धम्म अतपनीय? कायासुचरितम्, वसीसुचरितम्, मनोसुचरितम् - इमे धम्म अतापनीय। सब्बेपि कुसल धम्म अतपनीय।

1313. कटमे धम्म अधिवचन? या तेसं तेसं धम्मनं संख समाना पन्नत्ती वोहारो नामं नमकमं नामधेय्यं निरुति ब्याञ्जनं अभिलापो - इमे धम्म अधिवचन। सब्बेव धम्म अधिवचनपथ।

1314. कतमे धम्म निरुति? या तेसं तेसं धम्मनं संखा समान्ना पन्नत्ती वोहारो नामं नमकमं नामधेय्यं निरुति ब्याञ्जनं अभिलापो – इमे धम्म निरुति। सब्बेव धम्म निरुत्तिपथा।

1315. कटमे धम्म पन्नति? या तेसं तेसं धम्मनं संखा समान्ना पन्नत्ती वोहारो नामं नमकमं नामधेय्यं निरुति ब्याञ्जनं अभिलापो - इमे धम्म पन्नति। सब्बेव धम्म पन्नतिपथ।

1316. तत्थ कतमं नामं? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, विन्नन्नक्खन्धो, असन्खता च धातु – इदं वुच्चति नामं।

1317. तत्थ कतमं रूपं? चत्तरो च महाभूत, चतुन्नच महाभूतानां उपादय रूपम् - इदं वुच्चति रूपम्।

1318. तथा कतमा अविज्जा? यं अन्नणं अडस्सणं...पे... अविज्जालंगी मोहो अकुसलमूलं - अयं वुकाति अविज्जा।

1319. तत्थ कतमा भवतन्हा? यो भावेसु भवचंदो...पे... भावज्जोसानं - अयं वुच्चति भवतंहा।

1320. तत्थ कतम भवदिथि? भविष्यसति अत्ता च लोको चति, या एवरुपा दितिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुच्चति भवादिति।

1321. तत्थ कतम विभावदिथि? न भविष्यसति अत्ता च लोको चति, या एवरूपा दितिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुच्चति विभवादिति।

1322. तत्थ कतामा सस्सतादिथि? सस्सतो अत्ता च लोको चति, या एवरुपा दितिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुच्चति सस्सतादिति।

1323. तत्थ कतामा उच्छेददिति? उच्छिज्जिसति अत्ता च लोको चति, या एवरूपा दितिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुकाति उच्छेदिदिथि।

1324. तत्थ कतमा अन्तव दिति? अंतवा अत्ता च लोको चति, या एवरुपा दितिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुच्चति अंतवा दितिथि।

1325. तत्थ कतमा अनन्तवा दितिथि? अनंतवा अत्ता च लोको चति, या एवरुपा दितिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुच्चति अनंतवा दितिथि।

1326. तत्थ कतामा पुब्बन्तानुदिति? पुब्बनं अरब्भा य उप्पज्जति दितिथि दितिथिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुच्चति पुब्बंतनुदिति।

1327. तत्थ कतम अपरान्तानुदिति? अपरान्तं अरब्भ य उप्पज्जति दिदिथि दितिगतं...पे... विपरियासग्गहो - अयं वुच्चति अपरान्तानुदिति।

1328. तत्थ कतमं अहिरिकं? यं न हिरियति हिरियितब्बेन, न हिरियति पापकाणं अकुशलनं धम्मनं समापत्तिया - इदं वुच्चति अहिरिकाम्।

1329. तत्थ कतमं अनोत्प्पं? यं न ओट्टप्पति ओट्टप्पितब्बेन, न ओट्टप्पति पापकनं अकुशलनं धम्मणं समापत्तिया - इदं वुक्कति अनोत्प्पट्टम्।

1330. तथा कतामा हिरि? यं हिरियति हिरियितब्बेन, हिरियति पापकाणं अकुशलनं धम्मनं समापत्तिया - अयं वुकाति हिरी।

1331. तत्थ कटमं ओट्टप्पं? यं ओट्टप्पति ओट्टप्पितब्बेण, ओट्टप्पति पापकानं अकुशलनं धम्मणं समापत्तिया — इदं वुक्कति ओट्टप्पाम्।

1332. तत्थ कतमा दोवाकसता? सहधम्मिके वुक्कामाने दोवाकासायं दोवाकासियाम् दोवाकासटा विप्पतिकुलग्गाहिता विपक्कनिकासाता अनादारियं अनादारता अग्रवता अप्पिस्सवता - अयं वुक्काति दोवाकासाता।

1333. तथा कतमा पापमित्तता? ये ते पुग्गला अस्सद्धा दुस्सिला अप्पसुता मच्छरिनो दुप्पन्न, या तेसां सेवना निसेवना संसेवना भजना संभाजना भट्टि संभति तंसम्पावंकटा - अयं वुक्कति पापमित्तता।

1334. तथा कतमा सोवकसता? सहधम्मिके वुक्कामाने सोवकास्सयं सोवकैसियां सोवकासटा अप्पतिकुलग्गाहिता अविपक्कनिकासता सगारवता सदारियं सदारता सप्पतिस्सावता - अयं वुक्काति सोवाकसता।

1335. तत्थ कतमा कल्याणमित्ता? ये ते पुग्गला सद्धा सिलवंतो बहुसुता चागवंतो पन्नवंतो, या तेसां सेवना निसेवाना संसेवना भजना संभाजना भट्टी संभति तंसमपवंकटा - अयं वुकाति कल्याणमित्तता।

1336. तथा कतमा अपत्तिकुसलता? पणकापि अपत्तिक्खंडा अपत्तियो, सत्तपि अपत्तिक्खंडा अपत्तियो। या तसं अपत्तिनं अपत्तिकुसलता पञ्जाना...पे... अमोहो धम्मविकैयो सम्मादिति - अयं वुच्चति अपत्तिकुसलता।

1337. तथा कतमा अपत्तिवुथनाकुसलता? या ताहि अपत्तिहि वुथनाकुसलता पन्निना पजाना...पे... अमोहो धम्मविकायो सम्मदिथि - अयं वुच्चति अपत्तिवुथनाकुसलता।

1338. तथा कतमा समापत्तिकुसलता? अत्थि सवितक्कसविचार समापत्ति, अत्थि अवित्क्कविचारमत्ता समापत्ति, अत्थि अवित्क्कविचार समापत्ति। या तसं समापत्तिनं समापत्तिकुसलता पणिना पजानना...पे... अमोहो धम्मविकैयो सम्मादिथि - अयं वुच्चति समापत्तिकुसलता।

1339. तत्थ कतम समापत्तिवुथनाकुसलता? या ताहि समापत्तिहि वुथनाकुसलता पन्निना पजाना...पे... अमोहो धम्मविकायो सम्मदिथि - अयं वुच्चति समापत्तिवुथनाकुसलता।

1340. तथा कतमा धातुकुशलता? अथारस धातुयो चक्कुधातु रूपधातु चक्खुविनाधातु, सोतधातु सदधातु सोतविनानाधातु, घनधातु गंधधातु घनविनाधातु, जिव्हाधातु रसधातु जिव्हाविनाधातु, कायधातु फोथ्बधातु कायविनाधातु, मनोधातु धम्मधातु मनोविनानाधातु। या तसं धातुं धातुं धातु पजानन...पे... अमोहो धम्मविकैयो सम्मादिति - अयं वुच्चति धातुकुसलता।

1341. तत्थ कतमा मानसिकारकुसलाता? या तसं धातुं मानसिकाराकुसलता पन्नना पजानन...पे... अमोहो धम्मविकयो सम्मदिथि - अयं वुच्चति मनसिकराकुशलता।

1342. तथा कतामा आयतनकुशलता? द्वादशायतनानि - चक्खायतनं, रूपायतनं, सोतायतनं, सद्दायतनं, घनायतनं, गन्धायतनं, जीवायतनं, रसायतनं, कायायतनं, फोथ्बबायतनं, मनायतनं, धम्मायतनं। या तेसं आयतनं आयतनकुशलता पन्ना पजानन...पे... अमोहो धम्मविचयो सम्मदिथि - अयं वुक्कति आयतनकुशलता।

1343. तत्थ कतमा पतिच्चसमुप्पदकुशलता? अविज्जापच्चाय संखरा, संखरापच्चय विनाणं, विन्यानपच्चया नामरूपप, नामरूपपच्चय संख्यातनं, साशायतनपच्चय फासो, फस्सापच्चया वेदाना, वेदानापच्चया तन्हा, तन्हापच्चया उपादानं, उपादानपच्चया भावो, भवपच्चया जाति, जातिपच्चया जरामरणम् सोकापरिदेवदुक्खदोमनसुपासयसा संभवंती; एवेमेतस्सा केवलास्सा दुक्खक्खनधास्सा समुदयो होतिति। या तत्थ पन्ना पजाना...पे... अमोहो धम्मविकायो सम्मदिथि - अयं वुच्चति पतिच्चासमुप्पादकुशलता।

1344. तथा कतमा थनकुसलता? ये ये धम्म येसं येसं धम्मनं हेतु पकाया उपपादाय [उपादाय (सि. का.)] तं तं थनन्ति, या तत्थ पणना पजाना...पे... अमोहो धम्मविकायो सम्मादिथि - अयं वुक्कति थनाकुसलता।

1345. तत्थ कतमा आठानकुशलता? ये ये धम्म येसं येसं धम्मनं न हेतु न पकाया उपपादया तं तं अठहनन्ति, या तत्थ पणना पजाना...पे... अमोहो धम्मविकायो सम्मादिथि - अयं वुक्कति अट्ठानकुसलता।

1346. तत्थ कतमो अज्जावो? या अज्जवता अजिम्हता अवंक्ता अकुटिलता - अयं वुच्चति अजजवो।

1347. तत्थ कतमो मद्दवो? या मुदुता मद्दवता अक्क्खहता अकाथिनाता निकचित्त - अयं वुच्चति मद्दवो।

1348. तथा कतमा खांति? या खांति खमनता अधिवासनता अचंडिक्कं अनसुरोपो अत्तमनता चित्तस्स - अयं वुकाति खांति।

1349. तत्थ कतमं सोरक्कं? यो कायिको अवितिक्कमो, वाचासिको अवितिक्कमो, कायिकावाकसिको अवितिक्कमो - इदं वुक्काति सोरक्कम। सब्बोपि सिलासनवरो सोराक्कं।

1350. तत्थ कतमम् सखाल्यम्? या सा वाचा अंडका कक्कासा परकटुका परभिसज्जनी कोधासामंता असामाधिसंवत्निका, तथरूपिं वाचं पहाया या सा वाचा नेडा कनसुखा पेमानिया हदयंगमा पोरि बहुजनकांता बहुजनमानापा तथारुपिं वाचं भासिता होति; या तत्थ सञ्हावाचटा सखिलवाचटा अफरुसावाचटा - इदं वुक्कति सखाल्यम्।

1351. तत्थ कतमो पतिसंथारो? द्वे पतिसंथारा - अमिसपतिसंथारो च धम्मपतिसंथारो च। इधेकाको पतिसंथारेणो होति अमिसाप्तिसंथारेण वा धम्मपतिसंथारेण वा - अयं वुक्काति पतिसंथारो।

1352. तत्थ कतामा इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता? इधेक्कको चक्खुना रूपं दिस्व निमित्तग्गहि होति अनुब्यञ्जनग्गहि। यत्वधिकरणमेनं चक्कुंद्रियं असवुतं विहारं अभिज्झादोमनसा पापका अकुशला धम्म अनवस्सवेयुं, तस्स संवराय न पतिपज्जति, न रक्खति चक्कुंद्रियं, चक्खुन्द्रिये न संवरं आपज्जति। सोतेन सददां सुत्वा...पे... घनेन गंधं घयित्वा...पे... जिव्हाय रसं सैयित्वा...पे... कायेन फोथब्बम फुसित्वा...पे... मनसा धम्मं विन्याया निमित्तग्गाहि होति अनुब्यञ्जनगाहि। यत्वाधिकारमेनं मनिन्द्रियं असवुतं विहारं अभिज्झादोमनसा पापका अकुशल धम्म अनवस्सवेयुं, तस्स सावराय न पतिपज्जति, न रक्खति मनिन्द्रियं, मनिन्द्रिये न संवरं आपज्जति. या इमेसं चन्नं इन्द्रियानं अगुत्ती अगोपना अनारक्खो असनवारो - अयं वुक्कति इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता।

1353. तथा कतमा भोजने अमत्तन्नुता? इधेकाक्को अप्पतिसंखा अयोनिसो आहारम् आहारेति दवाया मदाय मन्दनाय विभूषणाय। या तत्थ असंतुथिता अमत्तन्नुता अप्पतिसंखा भोजने - अयं वुकाति भोजने अमत्तन्नुता।

1354. तत्थ कतमा इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता? इधेक्कको चक्खुना रूपं दिस्व न निमित्तग्गहि होति न अनुब्यंजनग्गहि। यत्वधिकरणमेनं चक्कुंद्रियं असवुतं विहारं अभिज्झादोमनसा पापका अकुशला धम्म अनवस्सवेयुं, तस्स संवराय पतिपज्जति, रक्खति चक्कुंद्रियं, चक्खुन्द्रिये संवरं आपज्जति। सोतेन सददां सुतवा...पे... घनेन गंधं घयित्वा...पे... जिव्हाय रसं सैयित्वा...पे... कायेन फोथब्बम फुसित्वा...पे... मनसा धम्मं विन्याय न निमित्तग्गाहि होति नानुब्यञ्जनगाहि। यत्वाधिकारमेनं मनिन्द्रियं असवुतं विहारं अभिज्झादोमानस्सा पापाका अकुशल धम्म अनवस्सवेयुं, तस्स सावराय पतिपज्जति, रक्खति मनिन्द्रियं, मनिन्द्रिये संवरं आपज्जति. या इमेसं चन्नं इन्द्रियानं गुत्ती गोपना अरक्खो संवरो - अयं वुक्कति इन्द्रियेसु गुट्टाद्वारता।

1355. तथा कतमा भोजने मत्तन्नुता? इधेकाको पतिसंखा योनिसो अहारं अहारेति - नेव दवया न मदाय न मन्दनाय न विभुसनाय यावदेव इमास्सा कायास्सा हितिया यापनाय विहिंसुपरतिया ब्रह्मचर्यानुग्गहाय, इति पुराणाञ्च वेदानां पतिहंखामि, नवाञ्च वेदानां न उपपादेस्सामि, यत्र च मे भविष्यसति अनवज्जता च फासुविहारो बिल्ली. या तत्थ संतुथिता मत्तन्नुता पतिसंखा भोजने - अयं वुकाति भोजने मत्तन्नुता।

1356. तत्थ कतमं मुट्ठसच्चं? या असति अननुस्सति अप्पिस्सति असति असारणाता अधारनता पिलापनाता सम्मुसनता - इदं वुक्कति मुत्थसक्कं।

1357. तत्थ कतमं असंपजान्नं? यं अन्नानं अडस्सानं...पे... अविज्जलंगी मोहो अकुसलमूलं - इदं वुक्कति असंपजान्नं।

1358. तथा कतम सति? या सति अनुस्सति पतिसति सति शरणता धारणाता अपिलपनता असम्मुसनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति - अयं वुच्चति सति।

1359. तत्थ कतमं संपजान्नं? या पन्ना पजाना...पे... अमोहो धम्मविकयो सम्मदिति - इदं वुक्कति संपजान्नं।

1360. तत्थ कतमं पतिसंखानबलं? या पन्नना पजाना...पे... अमोहो धम्मविकयो सम्मदिथि - इदं वुक्कति पतिसंखानबलं।

1361. तत्थ कतमं भावनाबलं? या कुसलानां धम्मनां असेवना भावना बहुलिकम्म - इदं वुच्चति भावनाबलं। सत्तपि बोज्झांगा भावनाबलं।

1362. तत्थ कतमो समथो? या चित्तस्स तिथि...पे... सम्मासमधि - अयं वुच्चति समथो।

1363. तथा कतमा विपश्यना? या पन्नना पजाना...पे... अमोहो धम्मविकयो सम्मदिथि - अयं वुच्चति विपश्यना।

1364. तत्थ कतमं समथनिमित्तं? या चित्तस्स तिथि...पे... सम्मासमधि - इदं वुच्चति समथनिमित्तम्।

1365. तत्थ कतमं पग्गहनिमित्तम्? यो चेतासिको वीर्यारम्भो...पे... सम्मावायमो - इदं वुच्चति पग्गानिमित्तम्।

1366. तत्थ कतमो पगगाहो? यो चेतासिको वीर्यारंभो...पे...सम्मावायमो - अयं वुच्चति पग्गाहो।

1367. तत्थ कतमो अविक्खेपो? या चित्तस्स तिथि...पे... सम्मासमधि - अयं वुच्चति अविक्खेपो।

1368. तथा कतमा सिलविपत्ति? यो कायिको विटिककमो, वाचासिको विटिककमो, कायिकावाकसिको विटिककमो — अयं वुक्काति सिलाविपत्ति। सब्बमपि दुस्सिल्यं सिलविपत्ति।

1369. तत्थ कतमा दितिथिविपत्ति? नत्थि दिनं, नत्थि यिट्ठं, नत्थि हुतां, नत्थि सुक्तदुक्कतनं कम्मनं फलं विपाको, नत्थि अयं लोको, नत्थि पारो लोको, नत्थि माता, नत्थि पिता, नत्थि सत्ता ओपापतिका, नत्थि लोके समानाब्राह्मण सम्मग्गता सम्मपतिपन्न ये इमाञ्च लोकं पराञ्च लोकं सयं अभिना सच्चिकत्व पवेदेंतिः या इवरूपा दिति दिथिगतं...पे... विपरियासग्गहो — अयं वुच्चति दितिथिविपत्ति। सब्बापि मिच्छादिथि दिथिविपत्ति।

1370. तथा कतमा सिलसम्पदा? यो कायिको अवितिक्कमो, वाचासिको अवितिक्कमो, कायिकावाकसिको अवितिक्कमो — अयं वुच्चति सिलसम्पदा। सब्बोपि सिलासनवरो सिलसम्पदा।

1371. तत्थ कतमा दितिथिसंपदा? अत्थि दिनं, अत्थि यिट्ठं, अत्थि हुतां, अत्थि सुक्तदुक्कतनं कम्मणं फलं विपाको, अत्थि अयं लोको, अत्थि परो लोको, अत्थि माता, अत्थि पिता, अत्थि सत्ता ओपपतिका, अत्थि लोके समानाब्राह्मण सम्मग्गता सम्मापतिपन्ना ये इमाञ्च लोकं पराञ्च लोकं सयानं अभिन्न सच्चिकत्व पवेदेंतिः या इवरूपा पञ्जाना...पे... अमोहो धम्मविकैयो सम्मादिथि - अयं वुच्चति दितिथिसंपदा। सब्बापि सम्मदिथि दितिथिसंपदा।

1372. तथा कतमा सिलविशुद्धि? यो कायिको अवितिक्कमो, वाचासिको अवितिक्कमो, कायिकावाकसिको अवितिक्कमो — अयं वुच्चति सिलाविशुद्धि। सब्बोपि सिलासनवरो सिलविशुद्धि।

1373. तत्थ कतम दितिविशुद्धि? कम्मास्साकाटानां सैकानुलोमिकानां मग्गासमंगिस्सा नानाणं फलसामंगिस्सा नानाणं।

1374.दितिथिविशुद्धिको पनाति - या पणना पजाना...पे... अमोहो धम्मविशुद्धिको सम्मादिति।

1375.यथादिथिस्सा च पधानन्ति - यो चेतासिको वीर्यारम्भो...पे... सम्मावायमो।

1376.संवेगोति - जातिभयं जराभयं ब्याधिभयं मरणभयं। संवेजनीयं [संवेजनीयं (सि.)] थाहनन्ति - जाति जरा ब्याधि मरणं।

1377.संविग्गस्सा च योनिसो पधानन्ति - इधा भिक्खु अनुप्पन्नं पापकाणं अकुशलनं धम्मणं अनुप्पदाय चंदं जनेति वयमति वीर्यं आरभति चित्तं पग्गनहाति पदहति, उप्पन्नानं पापकाणं अकुशलनं धम्मणं पहानय चंदं जनेति वयमति वीर्ययं आरभति चित्तं पग्गनहति पदहति, अनुप्पन्ननं कुसलानां धम्मनं उपपादाय चंदं जनेति वयमति वीर्यं अरभति चित्तं पग्गनहति पदहति, उप्पन्नं कुसलानां धम्मनां धम्मनं तीथिया असम्मोसया भय्योभवाय वेपुलाय भवनाय पारिपुरिया चंदं जनेति वयमति वीर्यं आरभति चित्तं पग्गनहाति पदहति।

1378.असंतुट्ठहिता च कुसालेसु धम्मेसुति - या कुसलानां धम्मनां भवनाय असंतुष्टहस्स भय्योकाम्यता।

1379.अप्पटिवनिता च पधानस्मिन्ति - या कुसलानां धम्मनां भवनाय सक्कक्ककिरीयता सताच्चकिरियता अथिताकिरियता एनोलिनावुत्तिता अनिकखिटचांदता अनिखित्तधुरता असेवना भावना बहुलिकम्माम्।

1380.विज्जति - तिस्सो विज्जा - पुब्बेनिवासनुस्सति नानणं विज्जा, सत्तनं कटुपपते नानणं विज्जा, आसवनं खाये नानणं विज्जा।

1381.विमुत्ति - द्वे विमुत्तियो - चित्तस्स [चित्तस्स च (सि. स्या.)] अधिमुत्ति, निब्बाणञ्च।

1382.खाये नानन्ति - मग्गासमन्गिस्सा नानणं।

1383.अनूप्पदे नाणन्ति - फलसामंगिस्सा नाणनम्।

निक्खेपकाण्डं निहितं ।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 1
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
  - भाग 1

अध्याय I - तीन जुड़वा बच्चों का समूह
टिकम
[पृष्ठ 250] [1]
[981] कौन से राज्य अच्छे हैं?
अच्छे (कर्म) के तीन मूल,[2] अर्थात्, कामवासना का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव; [पृष्ठ 251] भावना, बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध जब वे उन तीन मूलों से जुड़े होते हैं; जो भी क्रिया, शारीरिक, वाचिक और मानसिक,[3] उन तीन मूलों से उत्पन्न होती है।
[982] कौन से राज्य बुरे हैं?
बुरे (कर्म) के तीन मूल, अर्थात् कामवासना, घृणा, सुस्ती; उनसे जुड़े भ्रष्टाचार;[4] भावना, बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध जब ये उनसे जुड़े होते हैं; जो भी क्रिया, शारीरिक, वाचिक और मानसिक, उनसे उत्पन्न होती है।
[983] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अनिश्चित हैं?
इंद्रिय, रूप, या निराकार जगत में, या [अविभाजित जीवन] में प्रभावी होने वाली अच्छी और बुरी अवस्थाओं के परिणाम;[5] भावना, बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध,[6] इसके अलावा, क्रिया-विचार के रूप में जानी जाने वाली अवस्थाएँ,[7] जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं, न ही कर्म के परिणाम हैं; अंत में, सभी रूप और अविभाजित तत्व।[8]

[984] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो सहजता की भावना से जुड़ी हैं?

बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध[9] (स्वयं [पृष्ठ 252] भावना को छोड़कर) सहजता प्रदान करने वाली मिट्टी में [चेतना के उत्पन्न होने से] जुड़ी अवस्थाएँ हैं,[10] चाहे वह इंद्रिय या रूप के संसार से संबंधित हो, या उस जीवन से जो अविभाजित है।

[985] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो कष्टदायक भावना से जुड़ी हैं?

बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध (स्वयं भावना को छोड़कर) वे अवस्थाएँ हैं जो इंद्रिय-संबंधी जगत से संबंधित कष्टमय भूमि में उत्पन्न होने वाली चेतना से जुड़ी होती हैं।

[986] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो ऐसी भावना से जुड़ी हैं जो न तो दर्दनाक है और न ही सुखद?

बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध (स्वयं भावना को छोड़कर) तटस्थ भूमि में उत्पन्न होने वाली चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ हैं, चाहे वह इंद्रिय, रूप, या निराकार जगत से संबंधित हो, या उस जीवन से जो अविभाजित है।

[987] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो परिणाम हैं?

अच्छे और बुरे राज्यों के परिणाम जो इंद्रिय, रूप और निराकार के जगत में और उस जीवन में जो अविभाजित है; [दूसरे शब्दों में] चार स्कंध।[11]

[पृष्ठ 253] [988] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जिनमें परिणामी अवस्थाएँ शामिल हैं?[12]

इंद्रिय, सजीव और निराकार जगत से संबंधित अच्छी और बुरी अवस्थाएँ, या वह जीवन जो अविभाजित है; [दूसरे शब्दों में] चार स्कंध।

[989] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो न तो परिणाम हैं और न ही उनमें परिणामी अवस्थाओं को शामिल करने का गुण है?

वे अवस्थाएँ जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं, और न ही कर्मों का परिणाम हैं; वे सभी एक अविभाजित तत्व का निर्माण करती हैं।

[990] वे कौन से राज्य हैं जो हड़पने का मुद्दा भी हैं और इसके लिए अनुकूल भी हैं?[13]

सह-नशा[14] इंद्रिय, रूप या निराकार के जगत में प्रभावी होने वाली अच्छी और बुरी अवस्थाओं के परिणाम; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; इसके अलावा, ऐसा रूप जो कर्म के कारण होता है।

[991] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो लोभ का मुद्दा नहीं हैं, बल्कि लोभ के लिए अनुकूल हैं?

इंद्रियों, रूपों और निराकारों के जगत में प्रभावी होने वाली अच्छी और बुरी सह-नशे की अवस्थाएँ; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; इसके अलावा, क्रियाविचार के रूप में जानी जाने वाली वे अवस्थाएँ जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्म का परिणाम हैं; साथ ही ऐसा रूप जो कर्म के कारण उत्पन्न नहीं हुआ है।

[992] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो न तो हड़पने का मुद्दा हैं और न ही इसके अनुकूल हैं?

[पृष्ठ 254] वे पथ जो असंलग्न हैं,[15] और पथों के फल,[16] और असंयोजित तत्व।

[993] वे कौन से राज्य हैं जो भ्रष्ट और हानिकारक हैं?[17]

बुरे कर्मों के तीन मूल कारण, अर्थात् कामवासना, घृणा और सुस्ती; उनसे जुड़े हुए विकार; उनसे जुड़े हुए चार स्कंध; और उनसे उत्पन्न होने वाली सभी क्रियाएँ, चाहे शारीरिक हों, वाचिक हों या मानसिक।

[994] वे कौन से राज्य हैं जो भ्रष्ट नहीं बल्कि हानिकारक हैं?

अच्छी और अनिश्चित सह-नशा अवस्थाएँ जो इंद्रिय, रूप और निराकार के जगत में प्रभावी होती हैं; दूसरे शब्दों में, पाँच[18] स्कंध।

[पृष्ठ 255] [995] वे कौन से राज्य हैं जो न तो भ्रष्ट हैं और न ही हानिकारक?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं, और उन मार्गों के फल और अमिश्रित तत्व।

[996] वे कौन से राज्य हैं 'जिनमें अवधारणा काम करती है और विचार विवेचनात्मक होता है'?[19]

चार स्कंध (अवधारणा और विवेचनात्मक विचार को छोड़कर)[20] जो जुड़े हुए हैं[21] [चेतना के साथ उत्पन्न] ऐसी मिट्टी में जो अवधारणा और विवेचनात्मक विचार के कार्य के लिए अनुकूल हो, चाहे वह इंद्रिय जगत से संबंधित हो या रूप जगत से, या उस जीवन से जो असंलग्न है।

[997] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं 'जिनमें अवधारणा का कोई कार्य नहीं होता है, बल्कि केवल विचार विवेचनात्मक होता है'?[22]

वे चार स्कंध (विवेचनात्मक विचार को छोड़कर) जो चेतना के उदय से जुड़े होते हैं, ऐसी भूमि में जो अवधारणा के नहीं, बल्कि केवल विवेचनात्मक विचार के कार्य के लिए अनुकूल हो, चाहे वह रूप के जगत से संबंधित हो या उस जीवन से जो अविभाजित है।

[998] वे कौन से राज्य हैं जो 'अवधारणा और विचार विवेचनात्मक के कार्य से रहित' हैं?[23]

वे चारों स्कंध जो अवधारणा और तार्किक विचार से रहित भूमि में उत्पन्न होने वाली चेतना से जुड़े हैं, चाहे वह इंद्रियों, रूपों, निराकारों के जगत से संबंधित हो या उस जीवन से जो अविभाजित है; वे सभी रूप और अविभाजित तत्व हैं।

[पृष्ठ 256] [999] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो आनंद के साथ होती हैं?

आनंद उत्पन्न करने वाली मिट्टी में उत्पन्न होने वाली चेतना से जुड़े चार स्कंध (आनंद को छोड़कर), चाहे वह इंद्रियों या रूप के जगत से संबंधित हो या उस जीवन से जो अविभाज्य है।

[1000] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो सहजता के साथ आती हैं?

[24] बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध (सुविधा को छोड़कर) जो सहजता प्रदान करने वाली मिट्टी में [उत्पन्न होने वाली चेतना के साथ] जुड़े होते हैं, चाहे वह इंद्रिय या रूप के जगत से संबंधित हो, या उस जीवन से जो अविभाजित है।

[1001] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो निःसंकोचता के साथ होती हैं?

बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध (निरासत को छोड़कर) जो निरासत के अनुकूल भूमि में उत्पन्न होने वाली चेतना से जुड़े होते हैं, चाहे वह रूपमय जगत से संबंधित हो या निराकार से, या उस जीवन से जो अविभाजित है।

[1002] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जाना है?[25]

[पृष्ठ 257] तीन बेड़ियाँ,[26] अर्थात्, व्यक्तित्व का सिद्धांत, उलझन और मात्र नियम और अनुष्ठान का संक्रमण।

इस संदर्भ में

[1003] 'व्यक्तिवाद का सिद्धांत' क्या है?[27]

[पृष्ठ 258] जब इस संसार में[28] अज्ञानी,[29] औसत[30] मनुष्य जो श्रेष्ठ पुरुषों को नहीं देखता,[31]

जो समझता नहीं, और न ही [पृष्ठ 259] श्रेष्ठ पुरुषों के सिद्धांत के अनुसार प्रशिक्षित है[32],

जो अच्छे पुरुषों को नहीं देखता, [33] जो समझता नहीं, और न ही अच्छे पुरुषों के सिद्धांत के अनुसार प्रशिक्षित है, वह मानता है

(1) स्वयं को शारीरिक रूप में, या

(2) शारीरिक रूप धारण किए हुए, या

(3) शारीरिक रूप को स्वयं में विद्यमान मानता है, या

(4) स्वयं को शारीरिक रूप में विद्यमान मानता है[34] या

(5) स्वयं को भावना के रूप में, या

(6) भावना धारण किए हुए मानता है, या

(7) भावना को स्वयं में विद्यमान मानता है, या

(8) स्वयं को भावना में विद्यमान मानता है; या

(9) स्वयं को बोध के रूप में, या

(10) बोध धारण किए हुए मानता है, या

(11) बोध को स्वयं में विद्यमान मानता है, या

(12) स्वयं को बोध में विद्यमान मानता है; या

(13) स्वयं को संश्लेषण के रूप में, या

(14) संश्लेषण धारण किए हुए मानता है, या

(15) संश्लेषण को स्वयं में विद्यमान मानता है, या

(16) स्वयं को संश्लेषण में विद्यमान मानता है; या

(17) स्वयं को बुद्धि के रूप में, या

(18) बुद्धि धारण किए हुए मानता है, या

(19) बुद्धि को स्वयं में विद्यमान मानता है, या

(20) स्वयं को बुद्धि में विद्यमान मानता है

— फिर इस तरह की राय,

राय में चलना,

राय का जंगल, राय का वीरान इलाका, [पृष्ठ 260] राय का कठपुतली शो, राय की हाथापाई,

राय की बेड़ी,

इसकी पकड़ और दृढ़ता,

इसकी ओर झुकाव,

इससे संक्रमित होना,
यह टेढ़ा रास्ता, गलत राह, गलत होना,
यह 'पार करने की जगह',
पकड़ की यह अस्थिरता
इसे व्यक्तित्व का सिद्धांत कहा जाता है।
[1004] 'भ्रम' क्या है?
संदेह करना, असमंजस में पड़ना,
(1) गुरु के बारे में संदेह करना, उलझन में पड़ना,
(2) सिद्धांत के बारे में संदेह करना, उलझन में पड़ना,
(3) आदेश के बारे में,
(4) अनुशासन के बारे में,
(5) अतीत, भविष्य, अतीत और भविष्य दोनों के बारे में,
(6) क्या कारण-निर्धारित अवस्थाओं का कोई निश्चित कारण है[35]
— यह इसी प्रकार का संदेह है,
संदेह की यह प्रक्रिया है,
यह दुविधा है, उलझन है, व्याकुलता है, ध्यान भटकना है, चौराहे पर खड़े होना है;
पतन है, समझ की अनिश्चितता है;
टालमटोल है, संकोच है,
पूरी तरह से समझने में असमर्थता है,
मन की कठोरता है, मानसिक पीड़ा है।
इसे उलझन कहा जाता है।[36]
[1005] मात्र नियम और अनुष्ठान का संक्रमण क्या है?
हमारे सिद्धांत से बाहर संन्यासियों और ब्राह्मणों द्वारा माना जाने वाला सिद्धांत,[37] कि शुद्धि नैतिक आचरण के नियमों से प्राप्त होती है,
कि शुद्धि अनुष्ठानों से प्राप्त होती है,
कि शुद्धि नैतिक आचरण के नियमों और अनुष्ठानों से प्राप्त होती है[38]
— इस तरह की राय, [पृष्ठ 261] मात्र राय में चलना,
राय का यह जंगल, राय
का यह वीरान इलाका,
राय का यह कठपुतली शो,
राय की खींचतान,
राय की बेड़ी,
इसकी पकड़ और दृढ़ता, इसकी
ओर झुकाव,
इससे संक्रमित होना,
यह टेढ़ा रास्ता, गलत राह, गलत होना,
यह 'पार करने का स्थान',
पकड़ की यह अस्थिरता
इसे मात्र नियम और रीति-रिवाजों का संक्रामक प्रभाव कहा जाता है।
[1006]
ये तीन बंधन, और उनसे जुड़े भ्रष्टाचार,[39] और उनसे जुड़े चार स्कंध, साथ ही उनसे उत्पन्न होने वाली क्रिया, शारीरिक, वाचिक और मानसिक — ये वे अवस्थाएँ हैं जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जाना है।
[1007] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिन्हें संस्कृति द्वारा दूर किया जाना है?[40]

[पृष्ठ 262] जो भी काम, घृणा और सुस्ती शेष रह जाती है, और उनसे जुड़े हुए सभी दोष; उनसे जुड़े हुए चारों स्कंध; उनसे उत्पन्न होने वाली कोई भी क्रिया, शारीरिक, वाचिक या मानसिक।

[1008] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिन्हें न तो अंतर्दृष्टि से और न ही संस्कृति से दूर किया जा सकता है?

अच्छी और अनिश्चित अवस्थाएँ जो इंद्रिय, रूप या निराकार के जगत से संबंधित हैं, या उस जीवन से जो अविभाजित है; चार स्कंध; इसके अलावा सभी रूप और अविभाजित तत्व।[41]

[1009] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनके कारणों को अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जाना है?[42]

तीन बंधन, अर्थात्, व्यक्तित्व का सिद्धांत, उलझन, मात्र नियम और अनुष्ठान का संक्रमण।

इस संदर्भ में

[1010] 'व्यक्तिवाद का सिद्धांत' क्या है? . . .

[धारा 1003-1005 के अनुसार जारी रखें].[43]

[पृष्ठ 263] [1010ए]

ये तीनों बंधन, उनसे जुड़े हुए विकार, उनसे संबंधित चारों स्कंध, साथ ही उनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक, वाचिक और मानसिक क्रियाएं—ये वे अवस्थाएं हैं जिनके कारणों को अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जा सकता है।

[1010बी][44]

तीन बेड़ियाँ: —

व्यक्तित्व का सिद्धांत,

उलझन,

महज नियमों और रीति-रिवाजों का संक्रमण

ये वे अवस्थाएँ हैं जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जाना है।

इनसे जुड़े कामवासना, घृणा और सुस्ती वे कारण हैं जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जाना चाहिए। और इनसे जुड़े विकार, इनसे संबंधित चार स्कंध और इनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक, वाचिक और मानसिक क्रियाएं वे अवस्थाएं हैं जिनके कारण अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किए जाने चाहिए।

[1011] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनके कारणों को संस्कृति द्वारा दूर किया जाना है?

कामवासना, घृणा और सुस्ती जो भी शेष रह जाए, ये वे कारण हैं[45] जिन्हें संस्कृति द्वारा दूर किया जाना है। और उनसे जुड़े विकार, उनसे संबंधित चार स्कंध और उनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक, वाचिक और मानसिक क्रियाएँ—ये वे अवस्थाएँ हैं जिनके कारणों को संस्कृति द्वारा दूर किया जाना है।

[1012] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनके कारणों को न तो अंतर्दृष्टि से और न ही साधना से दूर किया जा सकता है?

उपर्युक्त अवस्थाओं को छोड़कर, अन्य सभी अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो इंद्रिय, रूप और निराकार जगत से संबंधित हैं, और उस जीवन से संबंधित हैं जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; इसके अलावा, सभी रूप और अविभाजित तत्व।

[पृष्ठ 264] [1013] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो [पुनर्जन्म] के संचय का कारण बनती हैं?[46]

इंद्रियों, सजीव और निराकार जगत से संबंधित अच्छे और बुरे सह-नशे की अवस्थाएँ; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध।

[1014] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो पुनर्जन्म को रद्द कर देती हैं?

वे चार मार्ग जो असंलग्न हैं।

[1015] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो न तो पुनर्जन्म के संचय का कारण बनती हैं और न ही पुनर्जन्म को समाप्त करती हैं?

इंद्रियों, सजीव या निराकार जगतों में, या उस अविभाजित जीवन में, अच्छे और बुरे भावों के परिणाम; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; वे भाव, जिन्हें क्रिया-विचार के रूप में जाना जाता है, जो न तो अच्छे हैं, न बुरे, और न ही कर्म का परिणाम हैं; ये सभी सजीव और अविभाजित तत्व हैं।

[1015] वे कौन से राज्य हैं जो छात्रवृत्ति से संबंधित हैं?[47]

वे चार मार्ग जो असंलग्न हैं और संन्यासी के जीवन के तीन निम्नतम फल हैं।

[1016] वे कौन से राज्य हैं जो छात्रवृत्ति से संबंधित नहीं हैं?

सबसे ऊपर का फल[48] — वह फल जो अरहतशिप है।

[पृष्ठ 265] [1017] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो छात्रवृत्ति से संबंधित नहीं हैं और न ही संबंधित हैं?

उपर्युक्त अवस्थाओं को छोड़कर, अन्य सभी अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो इंद्रिय, रूप और निराकार जगत से संबंधित हैं; सभी रूप और अविभाजित तत्व भी।

[1018] वे कौन से राज्य हैं जो सीमित हैं?[49]

सभी अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो इंद्रियों के ब्रह्मांड से संबंधित हैं; दूसरे शब्दों में, जीव स्कंध।

[1019] वे कौन से राज्य हैं जिनका दायरा व्यापक है?[50]

अच्छे, बुरे और अनिश्चित अवस्थाएँ, जो रूप और निराकार जगत से संबंधित हैं; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध।

[1021] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो अनंत हैं?[51]

वे मार्ग जो अविभाजित हैं, और उन मार्गों के फल, और अमिश्रित तत्व।

[1022] वे कौन-कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनमें विचार की सीमित वस्तुएँ होती हैं?

वे भावनात्मक, अवधारणात्मक और संश्लेषित अवस्थाएँ, साथ ही साथ इंद्रिय-छापों पर लागू बुद्धि की अवस्थाएँ,[52] जो सीमित मामलों के संबंध में उत्पन्न होती हैं।

[पृष्ठ 266] [1023] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जिन्होंने विचार की वस्तुओं को विस्तारित किया है[53]

वे भावनात्मक, अवधारणात्मक और संश्लेषणात्मक अवस्थाएँ, साथ ही वे बौद्धिक अवस्थाएँ जो व्यापक दायरे के मामलों के संबंध में उत्पन्न होती हैं, और साथ ही इंद्रिय-अनुभूतियों पर लागू होती हैं।

[1024] वे कौन-कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनमें विचार की अनंत वस्तुएँ होती हैं?

वे भावनात्मक, बोधात्मक और संश्लेषणात्मक अवस्थाएँ, साथ ही वे बौद्धिक अवस्थाएँ जो इंद्रिय-अनुभूतियों पर लागू होती हैं, जो असीम महत्व के मामलों के संबंध में उत्पन्न होती हैं।

[1025] आधार अवस्थाएँ कौन सी हैं?

बुरे कर्मों के तीन मूल - काम, घृणा, सुस्ती - उनसे जुड़े भ्रष्टाचार; उनसे संबंधित चार स्कंध; उनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक, वाचिक और मानसिक क्रियाएं।

[1026] मध्यम मूल्य वाले राज्य कौन से हैं?

सह-नशे की अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, इंद्रियों, सजीव और निराकार जगतों से संबंधित हैं; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध।

[1027] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो परिपूर्ण हैं?[54]

वे मार्ग जो अविभाजित हैं, और उन मार्गों के फल, और अमिश्रित तत्व।

[1028] वे कौन से राज्य हैं जिनकी गलतियों के परिणाम निश्चित हैं?[55]

[पृष्ठ 267] पाँच कार्य जिनके तत्काल परिणाम होते हैं, और वे गलत विचार जो अपने परिणामों में निश्चित होते हैं।[56]

[पृष्ठ 268] [1029] वे कौन से राज्य हैं जिनकी धार्मिकता उसके परिणामों के संबंध में निश्चित है?[57]

वे चार मार्ग जो असंलग्न हैं।

[1030] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जिनमें निश्चित परिणाम नहीं होते?

उपर्युक्त अवस्थाओं को छोड़कर, अन्य सभी अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो इंद्रिय, रूप और निराकार जगत से संबंधित हैं, या उस जीवन से संबंधित हैं जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; इसके अलावा, सभी रूप और अविभाजित तत्व।

[1031] वे कौन से राज्य हैं जिनका विचार पथ पर केंद्रित है?[58]

वे भावनात्मक, बोधात्मक और संश्लेषणात्मक अवस्थाएँ, साथ ही वे बौद्धिक अवस्थाएँ जो इंद्रिय-अनुभूतियों पर लागू होती हैं, जो आर्य मार्ग के संबंध में उत्पन्न होती हैं।

[1032] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो पथ पर कारणवश निर्भर हैं?[59]

[पृष्ठ 269] [सबसे पहले] चार स्कंध जब मार्ग के चरणों से जुड़े होते हैं जैसा कि मार्ग से परिचित व्यक्ति द्वारा अनुभव किया जाता है[60] (चरणों को छोड़कर)।

[द्वितीय (1033)] चार स्कंध जब सही विचारों से जुड़े होते हैं - ये मार्ग और कारण दोनों हैं - उस व्यक्ति के जो मार्ग से परिचित है (सही विचार अपवाद हैं)।

[तीसरा] चारों स्कंध, जब कामवासना, घृणा और सुस्ती से मुक्ति की उन अवस्थाओं से जुड़े होते हैं जो मार्ग के ज्ञाता में विशिष्ट होती हैं। अब, ये [अंतिम नाम वाली] अवस्थाएँ 'मार्ग-कारण' हैं;[61] पूर्व (स्कंध) वे अवस्थाएँ हैं जो मार्ग पर कारणवश निर्भर हैं।

[1034] वे कौन से कारण हैं जो पथ-शासित हैं?[62]

[सर्वोत्तम] वे भावनात्मक, बोधात्मक और संश्लेषित अवस्थाएँ, साथ ही इंद्रिय-अनुभूतियों पर लागू बुद्धि की अवस्थाएँ, जो उत्पन्न होने पर आर्य मार्ग को अपना नियंत्रक बनाती हैं।

[द्वितीय] चार स्कंध, जब उस मार्ग से परिचित व्यक्ति द्वारा किए गए अन्वेषण से जुड़े होते हैं, और जो एक ऐसा मार्ग विकसित कर रहा है जिसमें अन्वेषण प्रमुख कारक है।[63]

[1035] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो 'उत्पन्न हुई हैं'?[64]

वे अवस्थाएँ जो जन्म ले चुकी हैं,

बन चुकी हैं,

प्राप्त की जा चुकी हैं,

निर्मित की जा चुकी हैं, पुनर्निर्मित की जा चुकी हैं,[65]

प्रकट की जा चुकी हैं,

जो कुछ उत्पन्न हुआ है, जो

हुआ है

,

जो घटित हुआ है, जो अप्रत्याशित रूप से

हुआ है, जिसके कारण उत्पन्न हुआ है,

उन सभी को उत्पन्न हुई चीजों में एक साथ वर्गीकृत किया जाता है, अर्थात् रूप, भावना, बोध, संश्लेषण, बुद्धि।

[1036] वे कौन-कौन सी अवस्थाएँ हैं जो 'उत्पन्न नहीं हुई हैं'?

वे अवस्थाएँ जो अजन्मी हैं,

न तो उत्पन्न हुई हैं,

न ही प्राप्त हुई हैं,

न ही सृजित हुई हैं,

न ही पुनः सृजित हुई हैं,

और न ही प्रकट हुई हैं;

जो न तो उत्पन्न हुए हैं, न ही घटित हुए हैं;

न ही घटित हुए हैं,

न ही अचानक घटित हुए हैं;

वे चीजें जो उत्पन्न नहीं हुई हैं,

जिन्हें उन चीजों में वर्गीकृत किया गया है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं, अर्थात् रूप, भावनाएँ, धारणाएँ, संश्लेषण, बुद्धि।

[1037] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो अवश्य उत्पन्न होंगी?[66]

[पृष्ठ 271] उन अच्छे और बुरे राज्यों के परिणाम जो इंद्रिय, रूप और निराकार के जगत से संबंधित हैं, या उस जीवन से जो अविभाजित है, जिसके परिणाम अभी तक परिपक्व नहीं हुए हैं , [67] अर्थात्, चार स्कंध और कर्म के कारण उत्पन्न हुआ वह रूप जो उत्पन्न होगा।

[1038] कौन-कौन सी अवस्थाएँ अतीत में हैं?

वे राज्य जो अतीत में हैं, विलुप्त हो चुके हैं, घुल चुके हैं,[68] बदल चुके हैं, समाप्त हो चुके हैं, मिटा दिए गए हैं; अतीत में हैं और अतीत की चीजों में वर्गीकृत हैं; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[1039] भविष्य की कौन-सी अवस्थाएँ हैं?

वे अवस्थाएँ जो अजन्मी हैं,

जो न तो उत्पन्न हुई हैं,

न प्राप्त हुई हैं,

न सृजित हुई हैं,

न पुनः सृजित हुई हैं,

और न ही प्रकट हुई हैं;

जो न तो उत्पन्न हुए हैं,

न घटित हुए हैं,
न ही घटित हुए हैं,
न ही अचानक घटित हुए हैं;
जो अभी तक नहीं पहुंचे हैं,
और उन्हें उन चीजों में गिना जाता है जो अभी तक नहीं पहुंची हैं।
[1040] वे कौन सी चीजें हैं जो उपस्थित हैं?
वे अवस्थाएँ जो जन्म ले चुकी हैं,
बन चुकी हैं,
प्राप्त कर ली गई हैं,
निर्मित की गई हैं, पुनर्निर्मित की गई हैं,[69] प्रकट की गई हैं;
जो उत्पन्न हुए हैं,
घटित हुए हैं,
अचानक घटित हुए हैं,
उत्पन्न होने का कारण बने हैं;
जो इसके विरुद्ध उत्पन्न हुए हैं[70] और उन चीजों में वर्गीकृत हैं जो इस प्रकार उत्पन्न हुई हैं।
[1041-1048] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जिनका चिंतन का विषय भूतकाल... भविष्यकाल... वर्तमानकाल है?
[पृष्ठ 272] वे भावनात्मक, अवधारणात्मक और संश्लेषित अवस्थाएँ, साथ ही साथ बुद्धि की वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-छापों पर लागू होती हैं, जो अतीत . . . भविष्य . . . वर्तमान अवस्थाओं के संबंध में उत्पन्न होती हैं।[71]
[1044] वे कौन से राज्य हैं जो व्यक्तिगत हैं?[72]
वे अवस्थाएँ जो इस या उस प्राणी के लिए स्वयं की, स्वयं-संदर्भित, स्वयं की,[73] व्यक्तिगत, पकड़ का परिणाम हैं; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।
[1045] कौन-कौन सी अवस्थाएँ बाह्य हैं?
वे अवस्थाएँ जो, इस या उस अन्य प्राणी के लिए,[74] अन्य व्यक्तियों के लिए, स्वयं की, स्वयं-संदर्भित, उनकी अपनी, व्यक्तिगत, पकड़ का परिणाम[75] दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध हैं।
[1046] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो व्यक्तिगत-बाह्य हैं?
ऐसी अवस्थाएँ जो [व्यक्तिगत और बाह्य] दोनों हैं।[76]
[1047-1049] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनमें स्वयं के बारे में विचार का विषय होता है... उस चीज़ के बारे में जो [पृष्ठ 273] स्वयं से बाह्य है... उस चीज़ के बारे में जो 'व्यक्तिगत-बाह्य' है?
वे भावनात्मक, अवधारणात्मक, संश्लेषित अवस्थाएँ, साथ ही साथ बुद्धि की वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-छापों पर लागू होती हैं,[77] जो स्वयं की अवस्थाओं के संबंध में उत्पन्न होती हैं... अवस्थाएँ जो बाह्य हैं... अवस्थाएँ जो व्यक्तिगत-बाह्य हैं।
[1050] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो दृश्यमान और प्रभाव डालने वाली दोनों हैं?[78]
दृश्य रूप का क्षेत्र।
[1051] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो अदृश्य हैं, लेकिन प्रभाव डालती हैं?
इंद्रियों के क्षेत्र और ध्वनि, गंध, स्वाद और स्पर्शनीयता के क्षेत्र।
[1052] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अदृश्य और अप्रभावित दोनों हैं?
चार स्कंध; इसके अलावा वह रूप, जो अदृश्य और अप्रभावित होते हुए भी [मानसिक] अवस्थाओं के क्षेत्र में समाहित है;[79] साथ ही अविभाजित तत्व।
ट्रिपलेट्स का अंत।
- फुटनोट:
1. या अस्वीकृति। साई. (344, 345) के अनुसार, नैतिक चेतना की अवस्थाओं को जिन विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया था (धम्म-विभागो), उन्हें अब एक ऐसी विधि से प्रस्तुत किया जाना है जो अपनी अधिक संक्षिप्तता में, पुस्तक I के अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत विवरण (वित्थर-देशनम्) की अस्वीकृति या खंडन है। उदाहरण के लिए, 'कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति पहचान सकता है' कि प्रश्न [984] के

उत्तर को जिन संक्षिप्त शब्दों में व्यक्त किया गया है, उनमें अन्य प्रश्नों के साथ-साथ प्रश्न [1] का उत्तर भी निहित है। दूसरी ओर, निम्नलिखित अट्ठकथा (मुद्रित पाठ में § 1368 से अंत तक) की तुलना में, यह विधि कम संक्षिप्त और अधिक विस्तृत है।

2. 'मूल' से तात्पर्य 'कारण, स्थिति, घटित करना, उत्पन्न करना, उत्पत्ति करना, पैदा करना' है। और 'चूंकि मूल से अलग कोई अच्छाई नहीं होती', इसलिए इसमें सभी अच्छाई शामिल है। असलम 344।

3. मनोकम्मम, मुद्रित पाठ में अनजाने में छूट गया। देखें, धारा 982 और आगे।

4. तद-एकत्थ च किलेसा। एकत्थम को (असल. 345) एक ही विचार में एक सामान्य उत्पत्ति के कारण, या एक ही व्यक्ति में एक सामान्य अपवर्जन, अर्थात् यहाँ, भ्रष्ट या दोषपूर्ण अवस्थाओं के अपवर्जन के कारण, स्थित के रूप में परिभाषित किया गया है। किलेसा पर, § 1229 और उसके बाद के अनुच्छेद देखें।

5.अपरियापन्ना. नीचे देखें, § 992, § 583 भी।

6. इस विभाजन में बार-बार दोहराव से बचने के लिए, इन चार स्कंधों को आगे से 'चार स्कंध' के रूप में संदर्भित किया जाएगा।

7.धम्म किरिया. सी एफ § 566 वगैरह.

8.मुद्रित पाठ में संखता को असंखत होना चाहिए।

9. इस स्थिति में भावना का स्कंध प्रमुख कारक है, और इसे केवल एक सहयोगी या चेतना में गौण घटक के रूप में नहीं गिना जाता है। (पाठ में संपयुत्तो से पहले तर्न शब्द जोड़ा जाना चाहिए।)

10. सुखा-भूमियम। मैंने यहाँ भूमि के शाब्दिक अर्थ का ही प्रयोग किया है, 'अवस्था' (जैसा कि अनुच्छेद 277 आदि में है) या 'स्रोत' जैसे शब्दों के प्रयोग के बजाय, क्योंकि साइप्रस के विद्वानों (पृष्ठ 346) ने एक उदाहरण दिया है: - जिस प्रकार 'यह गन्ना-भूमि है' या 'चावल-भूमि है' कहकर हमारा तात्पर्य उन स्थानों से है जहाँ ये फसलें खूब होती हैं, उसी प्रकार सुखा-भूमि आदि से हमारा तात्पर्य एक विचार (या मन की अवस्था, चित्तम) से है, जो सुख (या आनंद) के उदय का स्थान (या अवसर, थानम) है।

11.के. में चार या अधिक स्कंधों की सूची से पहले हमेशा एक कोलन लगाया जाता है, जो इन त्रिकों में सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा है। साई. में ऐसा कुछ स्पष्ट नहीं है जो कोष्ठक 'दूसरे शब्दों में' द्वारा दिए गए मेरे इस व्याख्या को उचित ठहराए, जिससे उत्तरों की कुछ अस्पष्ट संरचना स्पष्ट होती है। लेकिन इसकी टिप्पणियों से मुझे यह समझ आता है कि इन संक्षिप्त उत्तरों में, स्कंध-सूची उत्तर के पिछले आधे भाग का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें यह किसी अन्य पहलू, अर्थात् रसत्थेना, या चेतना में समूहों के रूप में प्रकट होती है। वास्तव में, पुस्तक I में इसी विधि का विस्तार से पालन किया गया है, लेकिन यहाँ केवल संक्षेप में: पहले धं म के संदर्भ में उत्तर, फिर सारांश, जो मुख्य रूप से, कम से कम, स्कंध के संदर्भ में है। उदाहरण के लिए, §§ 431-441, 441a, 442 देखें। साथ ही अस. 152 भी देखें।

12. विपाकधम्म-धम्म, विपाक-सभाव-धम्म द्वारा व्याख्या (असल 42), एक परिणाम प्रकृति, या परिणाम की गुणवत्ता वाले राज्य। ऊपर देखें, पृ. 164.

13. धारा 653 आदि देखें।

14. ससावा. धारा 1096 आदि देखें।

15. पृष्ठ 165, टिप्पणी 2 देखें। जब अपरियापन्न शब्द धम्म पर लागू होता है और नैतिक-मनोवैज्ञानिक अर्थ में प्रयोग किया जाता है, तो यहाँ इसे मार्ग, फल और अमिश्रित तत्व के रूप में वर्णित किया गया है। अनुच्छेद 1287 देखें। इसका सकारात्मक सहसंबंध, आस्ल 50 में, 'अस्तित्व के त्रिविध चक्र में समाहित' (अर्थात इंद्रिय, रूप आदि के जगत) के रूप में वर्णित है। मुझे नहीं पता कि इस उच्च अर्थ वाला अपरियापन्न पुराने पिटकों में से किसी में मिलता है या नहीं। लेकिन यह केवाई 507 में मिलता है, जहाँ यह मानना विधर्म घोषित किया गया है कि कोई भी मात्र काल्पनिक मत अविभाजित का है, और जहाँ बाद की अवधारणा की विषयवस्तु हमारे नियमावली की तुलना में अधिक विस्तार से बताई गई है।

16. मगगफलानी के बाद च पढ़िए। टीकाकार यहाँ वर्णित अरहत की स्थिति को सभी प्रकार के 'आकर्षण' से मुक्त बताते हुए इस प्रकार पुष्टि करते हैं: यद्यपि अरहत के स्कंध (अस्थायी अस्तित्व) उन लोगों के लिए आकर्षण का कारण बन सकते हैं जो कहते हैं, "हे हमारे माता के भाई, थेरा! हे हमारे पिता के भाई, थेरा!" फिर भी मार्ग, फल और निर्वाण से कोई आकर्षण, कोई संक्रमण नहीं होता। क्योंकि जिस प्रकार दिनभर गर्म किए गए लोहे के गोले पर मच्छर नहीं बैठते, उसी प्रकार ये वस्तुएँ अपनी अत्यधिक महिमा से भी लालसा, अहंकार या गलत मत के आकर्षण को आकर्षित नहीं करतीं।

17. या भ्रष्ट करना। धारा 1229 (टिप्पणी) आदि देखें।

18. भौतिक रूप के स्कंध से प्रारंभ करते हुए।

19. धारा 160 देखें। प्रथम ध्यान के सूत्र का भाग। निराकार जगत, ब्रह्मांड या स्वर्ग को छोड़ दिया गया है, क्योंकि यह एक ऐसी 'भूमि' है जहाँ ये मानसिक प्रक्रियाएँ विकसित नहीं हो सकतीं। धारा 265-268 देखें।

20. अन्यथा वे संश्लेषण के स्कंध के अंतर्गत आएंगे। देखें § 62, और पृष्ठ 251, नोट 7।

21. संपायुट्टो से पहले टार्न पढ़ें।

22. धारा 168 देखें—यह वाक्यांश 'पंचमुखी ध्यान प्रणाली' से लिया गया है।

23. धारा 162 आदि देखें।

24. 'आनंद' को भावना के एक तरीके के रूप में नहीं, बल्कि एक 'संश्लेषण' के रूप में गिना जाता है (देखें पृष्ठ 11, टिप्पणी 4); हालाँकि, 'सुविधा' और 'निराशा' भावना के तीन तरीकों में से दो होने के कारण, यह स्कंध केवल एक संबद्ध अवस्था नहीं रह जाती है।

25. दस्सानम्, शाब्दिक अर्थ, देखना या दृष्टि। 'अंतर्दृष्टि' द्वारा क्या दूर किया जा सकता है और क्या नहीं, इस बात को ध्यान में रखते हुए, यह याद रखना आवश्यक है कि यहाँ इस शब्द का प्रयोग बौद्ध नैतिकता के तकनीकी अर्थ में किया गया है, और इसका अर्थ है मानसिक जागृति या बौद्धिक रूपांतरण, जिसके द्वारा व्यक्ति सोतापत्ति बन जाता है और प्रथम मार्ग में प्रवेश करता है - और इससे अधिक कुछ नहीं। असल. 356, 357; 43.

यह यहाँ वर्णित तीन बंधनों को तोड़ने का साधन था, जिन्हें बाद में उल्लिखित दस बंधनों की सूची में चौथे, पाँचवें और छठे स्थान पर रखा गया है (§§ 1113, 1123, टिप्पणी)। यह मन और हृदय के लिए एक निश्चित दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता था, जहाँ से निर्वाण की प्रतिज्ञा भूमि का दर्शन हुआ और अनित्यता के तथ्य को पहली बार समझा गया (इस पर और नाना-दस्सनम पर मानक अंश देखें, डी. i. 76), साथ ही सारवादी सिद्धांतों की निरर्थकता और नियमों और कर्मों पर आधारित धर्म की शक्तिहीनता को भी समझा गया।
व्यापक दृष्टिकोण के साथ नई विधियों में विश्वास उत्पन्न हुआ। दस्सनम जीवन और मन की ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं को दूर करने में असमर्थ थे: घटनाओं का संयोजन, कर्म का विकास, अलौकिक का अनंत रहस्य (देखें § 1008 और टिप्पणी)।

इस अंतर्दृष्टि को प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों के लिए, रोचक किमसुका सूत्र, खंड 4, 191 देखें। बुद्धघोष कहते हैं कि प्राप्त किए जाने वाले उच्चतर दृष्टिकोणों की तुलना में इसे दृष्टिहीनता कहा जा सकता है। क्योंकि जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी राजा के पास किसी कार्य के लिए जा रहा हो, यदि वह राजा को दूर से अपने हाथी पर जाते हुए देखे, तो पूछे जाने पर वह कहेगा कि उसने उसे नहीं देखा, क्योंकि उसने अपना कार्य पूरा नहीं किया है, उसी प्रकार धर्मांतरित व्यक्ति, यद्यपि उसने निर्वाण की पहली झलक प्राप्त कर ली हो, फिर भी बुराई को दूर करने के कार्यों में व्यस्त होने के कारण दृष्टिहीन कहलाता है। उसका ज्ञान मार्ग के चिंतन में निहित है।

26. बेड़ियों के बारे में, धारा 1113 आदि देखें।

27. सक्कया-दित्थी, जो बौद्ध दृष्टिकोण से सभी भ्रमों में सबसे खतरनाक भ्रमों में से एक है, को साइ. (पृष्ठ 348) द्वारा कायो से जोड़ा गया है, जो पांच स्कंधों का घटनात्मक मिश्रण है, और या तो सत से, (आध्यात्मिक) अस्तित्व के अर्थ में, या से आम से, यानी स्वयं से। तुलना करें एसएन, श्लोक 950, 951; धम्मदिन्ना, श्लोक 367। बाद वाला स्पष्टीकरण - स्वकया - संभवतः सही है (देखें ई. मुलर, 'पाली व्याकरण', पृष्ठ 19)। 'व्यक्तित्व' तब इस स्कंध-जटिलता का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे अब हम 'शरीर और आत्मा' (या मन) के रूप में बात करेंगे। धम्मदिन्ना ने एम.आई. में इस शब्द और सिद्धांत दोनों पर चर्चा की है। 299 इत्यादि, (जे.आर.ए.एस., 1894, पृष्ठ 324 में लेखक का एक लेख देखें।) चौथा उपदान, या 'आत्मा के सिद्धांत की खोज', को समान शब्दों में वर्णित किया गया है। § 1217 देखें।
दित्थी, जिसे यहाँ 'सिद्धांत' के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और जिसे समान रूप से 'अनुमान' या 'विचार' के रूप में भी अनुवादित किया जा सकता है—ये चारों शब्द देखने या देखी गई चीजों की धारणा में एक समान व्युत्पत्ति आधार रखते हैं—उत्तर में इसे 'राय' के रूप में प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि यह 'मनुष्यों के बीच प्रचलित धारणाओं के समूह' के लिए अधिक उपयुक्त है, जो पुथुज्जनो के मामले में संगठित ज्ञान की सेवा करता है। गौतम संभवतः डोका के प्लेटोनिक वर्णन को 'ज्ञान से अधिक धुंधला, अज्ञान से अधिक प्रकाशमान' के रूप में स्वीकार करते।
'विधर्म' या 'भ्रम' के रूप में अनुवाद करने का नुकसान यह है कि सही दिठ्ठी के मामले में अन्य शब्दों का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है, जैसा कि एमपीएस, भ. I में दिठ्ठी आर्य निय्यानिका के रूप में वर्णित है। नीचे, § 1366 देखें।

28. इधा, एक शब्द है, जैसा कि साइप्रस कहता है, या तो स्थान निर्धारण के लिए, या निर्देश देने में उदाहरण के लिए; यहाँ इसका प्रयोग पूर्व अर्थ में किया गया है, और इसका अर्थ है संसार में घटित होना। असल. 348.

29. अस्सुतव, शाब्दिक अर्थ: वह व्यक्ति जिसने सुना नहीं है, अर्थात् जिसे सिखाया नहीं गया है, जो स्कंधों, तत्वों, क्षेत्रों, स्थितियों, घटकों, ध्यान आदि विषयों में अन्वेषण, पूछताछ और ज्ञान की कमी के कारण उचित परंपरा और उपलब्धि से वंचित है। वही।

30. पुथुज्जनो, सामान्य सांसारिक व्यक्ति। साइ. में ऐसे श्लोक उद्धृत किए गए हैं जो व्लियोम्मे सेन्सुएल मोयेन को अंधा या सौम्य के रूप में भेद करते हैं; यहाँ पहले वाले का तात्पर्य है।
एक अन्य उद्धरण में (जो अभी तक अप्रमाणित है) उन्हें व्यक्तिवाद के सिद्धांत द्वारा संचालित विभिन्न सामान्य दुर्गुणों में लिप्त बताया गया है।
विभिन्न साधारण उपदेशकों के होठों पर यह बात अटकी हुई थी, जो हर प्रकार के पुनर्जन्म में लीन थे;
जीवन को विभिन्न सामान्य जटिलताओं से और भी जटिल बना देना;
विभिन्न प्रकार की अभद्र धाराओं द्वारा बह जाना;
विभिन्न प्रकार के निम्न स्तर के संतोष या चिड़चिड़ेपन के स्रोतों से शांत या उत्तेजित होना;
इंद्रियों के पांच निम्न सुखों में डूबा हुआ, लालची, उलझा हुआ, मोहित, संलग्न, जकड़ा हुआ, मजबूती से जकड़ा हुआ और बाधित;
ढका हुआ, मफल्ड, में लिपटा हुआ, बंद और लबादा और पांच निम्न बाधाओं द्वारा ढका हुआ (§ 1152 एट सीक);
अतीत में अनगिनत निम्न चरित्र और आचरण वाले लोगों के बीच समाहित हो गया, जो उच्च सिद्धांतों के विरोधी थे;
या फिर, अंततः, उन कुलीन लोगों से अलग और विशिष्ट व्यक्ति के रूप में जो सद्गुण और ज्ञान में लीन रहते हैं।

31. अरियानामदसवि, बुद्धों, पच्चेक-बुद्धों और बुद्धों के शिष्यों, या केवल बुद्धों का उल्लेख करते हुए। बुद्धघोष विस्तार से बताते हैं कि पवित्र व्यक्तियों को देख पाने में असमर्थता केवल दृष्टिगत कमी नहीं है, बल्कि अंतर्दृष्टि या बुद्धिमान निष्कर्ष की कमी है। सच्चे श्रेष्ठ व्यक्ति, शारीरिक या 'दिव्य' दृष्टि से देखे जाने पर भी, वास्तव में दिखाई नहीं देते। उनका स्वरूप (वान नो) तो समझ में आ जाता है, लेकिन उनके श्रेष्ठ स्वभाव का क्षेत्र नहीं, ठीक वैसे ही जैसे कुत्ते और सियार आदि उन्हें देखकर भी नहीं पहचान पाते। यहां तक कि एक थेरा का निजी सेवक भी अपने स्वामी में नायक को नहीं पहचान पाता, क्योंकि अंतर्दृष्टि और समझ के बिना संतों द्वारा प्राप्त दृष्टिकोण या सच्चे श्रेष्ठता की अवस्थाओं को समझना इतना कठिन है। 'हे वक्कली, यह तुच्छ शरीर जो तुम देखते हो, तुम्हारे लिए क्या है? जो धर्म को देखता है, वही मेल को देखता है।' एस. 3., पृष्ठ। 120; असल. 350.

32. अविनितो. साइ. उदाहरणों सहित आत्म-संयम और त्याग के अनुशासन (विनय) के पाँच तरीकों की गणना करता है। ये चाइल्डर्स, एसवी विनयो में दिए गए हैं।

33. सप्पुरिसा, जिसका अर्थ है पच्चेक-बुद्ध और बुद्धों के शिष्य। (असल. 349) 34. प्रत्येक स्कंध के संबंध में इन चार 'दृष्टिकोणों' पर, जो एक कल्पनीय केंद्रीय सत्ता या अत्ता से संबंधित हैं, मेरी प्रस्तावना में चर्चा की गई है। साई. (पृष्ठ 354) के अनुसार, ये सभी मार्ग में बाधाएँ हैं, यद्यपि स्वर्ग में नहीं (मग्गवरना न सग्गवरना), और प्रथम मार्ग पर प्रगति के दौरान इन पर विजय प्राप्त की जाती है।

35.इडा-पक्कायाता.

36. धारा 425 देखें। संदेह के विशिष्ट रूपों पर इस प्रकार टिप्पणी की गई है (असल. 354, 355):
शिक्षक के शरीर पर बुद्ध के 32 प्रमुख या 80 लघु शारीरिक लक्षण हैं या नहीं, या भूतकाल, भविष्य और वर्तमान के संबंध में आवश्यक सर्वज्ञता है या नहीं;
इस बात पर कि क्या ये मार्ग और उनके फल वास्तव में परम अमृतमय निर्वाण की ओर ले जाने के लिए पर्याप्त हैं;
क्या इस संप्रदाय के अनुयायी वास्तव में मोक्ष के मार्ग के विभिन्न चरणों में हैं, या उन्होंने अब तक सही ढंग से अपना मार्ग तय किया है;
प्रशिक्षण कितना उपयोगी है, इस बारे में;
क्या स्कंधों, धातुओं और आयतनों के माध्यम से विकास की प्रक्रिया अतीत में कायम रही है, या भविष्य में कायम रहेगी;
क्या कारण-कार्य का बारह-स्तरीय चक्र मौजूद है, जो अभी और यहीं प्रभावी हो रहा है या बिल्कुल भी प्रभावी हो रहा है।
37.Ito bahiddha.

38. मैंने पाठ और के. दोनों से थोड़ा भिन्न पाठ अपनाने का साहस किया है। अर्थ इसकी मांग करता प्रतीत होता है और के. इसे इंगित करता है। बाद वाले में लिखा है: S i 1 ena ti gosiladina, vatena ti govatadina va (sic lege), sllabbatena ti tadubhayena, suddhi ti kilesasuddhi paramattha-suddhibhutam va nibbanam eva. लेकिन यदि पाठ में suddhivatena लिखा हो तो vatena ti उद्धृत करना के. के तरीकों के अनुरूप नहीं होगा। (असल. 355)
गोशील और गोवतम् शब्दों के संदर्भ में यह स्पष्ट नहीं है कि गोवत्तिका कहलाने वालों की 'मवेशी नैतिकता' आदि में किस प्रकार की प्रथाएँ और जीवन शैली का पालन किया जाता था, या कुक्कुरवत्तिकाओं की 'कुत्ते जैसी (? सनकी) प्रथाओं' में किस प्रकार की प्रथाओं का पालन किया जाता था। दोनों का उल्लेख एम. आई. 387 में मिलता है। (देखें ख. पी. सी. सी., पृष्ठ 26)।
यह देखा जाएगा कि शुद्धि को एक ओर तो केवल किलेशों के त्याग (देखें § 1229) के रूप में, और दूसरी ओर पूर्ण पवित्रता या निर्वाण के रूप में विभेदित किया जाता है।
सिलब्बटापरमासो पर, राइस डेविड्स के 'अमेरिकन लेक्चर्स', 146 देखें।

39. इन्हें मुख्यतः अटकलबाजी और उलझन (जिन्हें 'बंधन' नहीं, बल्कि विपत्ति या बुराई माना जाता है) कहा जाता है, और इनके अलावा, कामवासना, घृणा, सुस्ती, अभिमान, जड़ता, उत्तेजना, असावधानी, दोष की उपेक्षा।

40. या अभ्यास: भावना, शिष्य के आत्म-प्रशिक्षण में व्यवस्थित प्रयास का सामूहिक नाम है, जो 'अंतर्दृष्टि' प्राप्त करने के बाद 'सिद्धांत के सिद्धांतों' को छोड़ देता है ताकि वह 'पूर्णता की ओर बढ़ सके' (इब्रानियों 6:1) - दूसरे शब्दों में, अरहतत्व के तीन उच्चतर मार्गों पर यात्रा कर सके।
'भावना की शक्तियों' पर, ए. आई. 52 देखें।
ए.आई.43 में, भावना को पूर्ण करने के लिए 'एक आवश्यक चीज' कायगत-सति, शरीर या शारीरिक क्रिया से संबंधित बातों में जागरूकता बताई गई है।

41. अतः केवल अकुशल धम्म, यानी 'बुरी अवस्थाओं' को ही अंतर्दृष्टि और साधना से दूर किया जा सकता है। यहाँ तक कि ये दोनों परस्पर स्वतंत्र रूप से भी कारगर नहीं हो सकते, क्योंकि देखें अनुच्छेद 1258, 1260। शेष कर्म संचित होते रहते हैं। अच्छे और अनिर्धारित, पदार्थ के गुण और सरल तत्व: ये किसी भी व्यक्ति के लिए तब तक समाप्त नहीं हो सकते जब तक कि, बुद्धघोष के अनुसार, उसका अभिसंखार-विन्नानम् (असल. 357) - उसकी सृजनशील, संचय करने वाली बुद्धि, स्वयं अरहत के रूप में उसके जीवन के अंत के साथ समाप्त न हो जाए। देखें केवद्ध सूत्र पर सारांश, डी. i. 223; 'बुद्ध के संवाद', i. 272 इत्यादि।

42.Pahatabba-hetuka, 'अर्थात, उनका कारण (hetu etesam) अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जाना है'। असल. 43.
43.
यहां पाठ में स्पष्ट रूप से त्रुटि है। मैं के. में दिए गए कथन का अनुसरण करता हूँ, अर्थात्:
तथा कतमा सक्कयदिट्ठि? . . . पे. . . अयं वुक्कति सक्कयदिट्ठि
- और इसी तरह।

44. यह पैराग्राफ, जिसमें मैं फिर से के. का अनुसरण करता हूँ, पाठ में बिल्कुल भी शामिल नहीं है। फिर भी, बुद्धघोष इस पर टिप्पणी करते हैं (पृष्ठ 357)।

45. यहाँ भी मैं के. का अनुसरण करते हुए हेतुका के स्थान पर पहतब्बा-हेतु पढ़ता हूँ। बुद्धघोष ने पूर्व पाठ (पृष्ठ 358) उद्धृत किया है, जो उत्तेजना के साथ सुस्ती को दूर करने को संदर्भित करता है।

46. अपाचयागामिनो। इसके विपरीत, पृष्ठ 82, टिप्पणी 2 देखें। बाद वाला निर्वाण प्राप्त करने के समतुल्य है। दोनों प्रक्रियाओं की तुलना दीवार के निर्माण और विध्वंस से की जाती है। असल. 44.

47. असेक्खा, यानी (असल. 44), प्रशिक्षण के तीन या सात पाठ्यक्रमों में उत्पन्न होना (चाइल्डर्स, एसवी देखें)। असेक्खा का तात्पर्य है कि विद्यार्थी या प्रशिक्षु ने अपने अध्ययन और प्रशिक्षण को पूर्ण कर लिया है और वह एक सिद्ध पुरुष, एक अरहत बन गया है। पीपी, पृष्ठ 14 देखें। 'सन्यासी के जीवन के फल' शब्द के लिए समाईनाफल सूत्र, डी. i. 47 देखें।

48. उपरित्थिमम, पीपी i. 42 आदि में प्रयुक्त एक शब्द है, जहाँ इसे 'बेड़ियों' पर लागू किया जाता है जिन्हें अंत में उतारा जाता है। नीचे देखें, § 1113, और पृष्ठ 303। पृष्ठ 166, नोट 1 भी देखें।

49. परित्तम, जिसे बौद्धिक और नैतिक, साथ ही भौतिक महत्वहीनता से युक्त समझा जाता है—फ्रांसीसी शब्द का यही अर्थ है। उदाहरण के लिए गोबर के ढेर का चित्रण किया गया है! इसका मूल गुण अप्पानुभवत है, अर्थात् सामान्यतः कम महत्व या प्रभाव वाला। परित्तम को ही संपूर्ण इंद्रिय-अनुभव के क्षेत्र के समतुल्य माना जाता है। अस्लि. 44.

50. महाग्गता, अर्थात् 'बुराई का प्रतिरोध करने की क्षमता, अच्छे परिणामों की प्रचुरता, व्यापक विस्तार' या इच्छाशक्ति, ऊर्जा, विचार या ज्ञान के उच्च स्तर की प्राप्ति के संबंध में। वही।

51. अप्पमना, या बिना माप के। असल. 45.

52. चित्तचेतसिका धम्म के लिए यह एक लंबा और जटिल पर्यायवाची है, लेकिन अनुच्छेद 1187-1190 का संदर्भ यह स्पष्ट करता है कि इस शब्द का यही सार है। और पश्चिमी मनोविज्ञान ने मुझे इससे अधिक संक्षिप्त पर्यायवाची शब्द नहीं सुझाया है। हालाँकि, अनुच्छेद 1282 और 1284 देखें। 'भावनात्मक' को इसके अधिक सीमित अर्थ में लिया जाना चाहिए, जैसे कि यह केवल भावना या सुखवादी चेतना का विशेषण है।

53. धारा 1021 देखें।

54.जांच के इस त्रिक के तीन विषय - धम्म हीना, मज्झिमा, पा निता - को (असली. 45) लामक (घटिया गुणवत्ता का, तुलना करें, विन. ii. 76), इस और तीसरे गुण के बीच में, और अलौकिक या आदर्श (लोकउत्तरा) के रूप में व्याख्यायित किया गया है।

55. मिच्छत्तनीयता, जैसा कि साइ. (वही) में समझाया गया है: 'दुष्टता' वह गलत प्रवृत्ति है जो सुख की चाह में हानिकारक चीजों में लाभ देखती है और इस विकृति में बनी रहती है। 'परिणामों में स्थिर' (शाब्दिक रूप से, 'नीचे तक पहुँचने वाला') का अर्थ है स्कंधों के विघटन (अर्थात मृत्यु के बाद) पर तुरंत परिणाम देना। तुलना करें एमपीएस 17: अस्मि... नियतो - मैं (अपने भविष्य के बारे में) स्थिर या निश्चित हूँ; केवी 609-612 और पीपी 13 भी देखें: कटामो च पुग्गलो नियतो? इस प्रश्न का उत्तर व्यावहारिक रूप से इन खंडों में दिए गए उत्तरों के समान है। यह वे व्यक्ति (पुग्गल अ) हैं जो निर्णायक रूप से अच्छे और बुरे हैं जिन्हें अनंतारक (तत्काल अच्छे या बुरे भाग्य को प्राप्त करने वाले) कहा जाता है, न कि 'कर्मों' या 'मार्गों' को, जैसा कि ध. एस. में है।
शास्त्र के अनुसार, ये पाँच कृत्य 'मातृहत्या आदि' को संदर्भित करते हैं, मानो यहाँ अभिथानों का उल्लेख किया गया हो, जबकि सामान्यतः इस नाम के अंतर्गत वर्गीकृत पाँच कृत्य हत्या, चोरी, अपवित्रता, झूठ बोलना और असंयम हैं। देखें अनुच्छेद 1290, 1291। बुद्ध को घायल करने या लोहितुप्पादो से संबंधित अंश, यिन. 2:193, की तुलना करें, जिसे अनंतारिका-कम्मम कहा जाता है। मेरा मानना है कि मिल., पृष्ठ 25 में, वाक्यांश 'कोपाफिकनंतरियकम्मम करोति' का अर्थ, जैसा कि अनुवादक ने अनुमान लगाया है, पहले निर्दिष्ट पाँच अपराधों का सारांश नहीं है, बल्कि यह पाँच अन्य अपराधों का संकेत है, जिनमें से मातृहत्या एक और लोहितुप्पादो दूसरा है। अब केवल यह पता लगाना बाकी है कि क्या अन्य तीन, छह अभिथानों में से किसी अन्य तीन के साथ मेल खाते हैं या नहीं।
इनके परिणामों की तात्कालिकता के संबंध में, जबकि कुल्लवग्ग में देवदत्त की घटना से यह स्पष्ट है कि इन अत्याचारों का कुछ दंड इसी जीवन में भुगतना पड़ता है, बुद्धघोष के अनुसार, इसका प्रभाव वर्तमान जीवन की समाप्ति के तुरंत बाद अनुभव होता है। साईं आगे कहते हैं: इन कृत्यों के मामले में, किसी अन्य आचरण के लिए इनमें से किसी एक के कर्म को टालना असंभव है, ताकि इसके परिणामों के अहसास के लिए जगह बन सके। न ही कर्ता ऐसा कर सकता है यदि वह शिनेरु पर्वत के समान विशाल स्वर्ण स्तूप का निर्माण करे, या रत्नों से जड़ा हुआ और विश्व-गोलाकार विहार बनाए, या उसे भिक्षुओं और उनके बुद्ध से भर दे और उन्हें जीवन भर चारों आवश्यक तत्वों में रखे। असल. 358.

56. जो गलत विचार नियत भी हैं, उनका वर्णन साई. में इस प्रकार किया गया है: अहेतुका वाद (डी. आई. 53; एम. आई. 407), कर्म की प्रभावकारिता को नकारने वाले (अकिरिया वाद (डी. आई. 52; एम. आई. 404, 405) और शून्यवाद (नत्थिका वाद, या उच्छेदा वाद, डी. आई. 55; एम. आई. 401-403)। इनके लिए प्रार्थना करना भी व्यर्थ है; शाब्दिक अर्थ यह है कि सौ या हजार बुद्ध भी इन्हें ज्ञान प्रदान नहीं कर सकेंगे। वही।

57.पढ़ना सम्मत्त-नीयता होना चाहिए। सी एफ असल. 45; के.; केवी 609.

58. "मार्ग" का अर्थ है निर्वाण की खोज, या किलेसाओं के विनाश में प्रगति। (असली. 45)

59. 'मग्गहेतुका, अर्थात् उन (अवस्थाओं) का कारण, उन्हें नियंत्रित करने के अर्थ में, अष्टांगिक मार्ग है।'
असल. 45.

बाद में (पृष्ठ 359) साई. इस त्रिविध का आशय इस प्रकार बताता है: 'पहले सूत्र में स्कंधों के कारणिक संबंध का वर्णन किया गया है, जो मार्ग से कारण के रूप में, स्थिति के अर्थ में जुड़ा हुआ है। दूसरे में, मार्ग के अन्य भागों का अष्टम दृष्टियों के साथ कारणिक संबंध का वर्णन किया गया है, जो मार्ग का घटक हैं और कारण माने जाते हैं (अम ओहो; देखें §§ 16, 34, 1054); और तीसरे में, सही दृष्टियों का मार्ग में सक्रिय कारणों के साथ कारणिक संबंध का वर्णन किया गया है।' फिर भी पाठ में तीनों सूत्रों में चार स्कंधों के कारणिक संबंध का वर्णन किया गया है। क्या इससे पाठ के भिन्न-भिन्न संस्करणों का संकेत मिलता है?

60.अरियामग्गासमंगीसा मग्गंगनी।

61. मुद्रित पाठ में, मो हो के बाद इमे धम्म मग्गा-हेतु पढ़ें। तुलना करें साइ. 45; के.; ऊपर भी, § 1011।

62. मगद्धिपातिनो, अर्थात् मार्ग, उन (राज्यों) को अपने नियंत्रण में रखते हुए, उनका पालन-पोषण करता है और उनका शासक है। असल. 45. बाद में (पृष्ठ 359) हमें पूरक टिप्पणियाँ मिलती हैं जो दर्शाती हैं कि इस संदर्भ में शासक (या संप्रभु) और शासित का संबंध, मसीह और उस विश्वासी के बीच के संबंध के समान है जो 'हर विचार को मसीह की आज्ञाकारिता के अधीन कर देता है' (2 कुरिन्थियों 10:5)।
ये सभी विचार या 'अवस्थाएँ' भक्ति के एकमात्र महान लक्ष्य—मार्ग, फल, निर्वाण—के सामने तुच्छ (पर इत ता) हैं। यहाँ तक कि मार्ग पर दूसरों की प्रगति का चिंतन करना, या तथागत को दोहरा चमत्कार करते देखना भी विद्यार्थी के लिए उतना मूल्यवान नहीं है जितना कि स्वयं मार्ग के अर्थ को समझना और उसका अहसास करना।

63. इस वाक्य की संरचना अस्पष्ट है। विमंसाधिपतेय्यम स्पष्ट रूप से कर्ता कारक में है। हालाँकि, साई. (पृष्ठ 359) उद्धरण देते समय कर्ता कारक का प्रयोग करता है, जिससे पाठ और भी अस्पष्ट हो जाता है।
वैसे भी, यह आगे बताता है कि यह शब्द पथ और अधिपटेय्यम के बीच संयुक्त 'सर्वोच्चता' को दर्शाता है जो केवल तभी संभव है (cf. § 269) जब बाद वाला या तो 'जांच' हो या 'ऊर्जा' हो।
जब बाद वाला 'इच्छा' या 'विचार' होता है, तब मार्ग का प्रभुत्व अधिपतेय्यम के अधीन हो जाता है। परन्तु जब विद्यार्थी पहले वाले में से किसी एक को अपना मार्गदर्शक बनाता है, तब वह और मार्ग दोनों मिलकर उसके मार्गदर्शक बन जाते हैं।

64. उप्पन्ना, अर्थात्, जो अस्तित्व में आने के क्षण से और जब तक उनका विशिष्ट अस्तित्व रहा है, तब तक अस्तित्व में रहे हैं और कायम रहे हैं। असल. 45.

65.निब्बत्त, अभिनिब्बत्त पढ़ें।

66. उप्पडिनो, अर्थात्, 'निश्चित रूप से उत्पन्न होगा, इस तथ्य से कि उनका प्रभावी कारण आंशिक रूप से पूरा हो चुका है'
(असल. 45).
बाद में (पृष्ठ 360, 361) इन परिणामी अवस्थाओं के संभावित घटित होने का कारण उनकी स्थायी परिस्थितियों (धुवपच्चयत्थेन) को बताया गया है, जो 100,000 युगों के अंतराल में भी अपने प्रभाव उत्पन्न करने में विफल नहीं हो सकतीं। भावी बुद्ध, मेत्तेय का मार्ग (शाब्दिक अर्थ: पथ) अनुप्पन्नो है, परन्तु उनका (या किसी का भी) फल उपपदिनो धम्म से संबंधित है।

67. अविपक्कविपकानम। के. में डाला गया है, लेकिन, जैसा कि उस संस्करण में कहा गया है, बर्मी या यूरोपीय पाठ में नहीं डाला गया है।

68.मुद्रित पाठ में निरुद्धंगता लिखा है; साइ., निरुद्ध विगत; के., निरुद्ध परिणता (विपरिणता नहीं)।

69.अभिनिब्बत्ता मुद्रित पाठ में छूट गया है। तुलना करें § 1035; साथ ही के.

70. पक्कुप्पन्ना, प्रश्न में 'वर्तमान' द्वारा प्रस्तुत शब्द। हमारे 'स्पष्ट', 'उद्देश्यपूर्ण', 'वस्तु' से तुलना करें, इसके सबसे सामान्य मनोवैज्ञानिक अर्थ में, मानसिक 'अवस्थाओं' के विषय के लिए उपस्थित किसी चीज के रूप में।

71.तुलना करें § 1022.

72. अज्झत्त और बहिद्ध के संबंध में, धारा 742 और 743 देखें। साई. अज्झत्तम के अर्थ में चार प्रकार के अंतर करता है, अर्थात् गोचराज्झत्तम, नियाकज्झत्तम, अज्झत्तज्झत्तम और विषयज्झत्तम, जिनमें से दो अर्थ चाइल्डर्स द्वारा उद्धृत तीन अर्थों में से दो के समान हैं। यहाँ प्रयुक्त विशिष्ट अर्थ दूसरा अर्थ है।

73. niyata के स्थान पर niyaka पढ़ें।

74. 'अर्थात, स्वयं को छोड़कर सभी प्राणी।'

असल. 361.

75. मुद्रित पाठ में उपदिन्ना शब्द का उल्लेख नहीं है।

76. तद उभयम इसका संक्षिप्त उत्तर है। खेद की बात है कि बुद्धघोष की दहम मा की इस प्रजाति पर दृष्टांतों की प्रचुरता लागू नहीं की गई। संयोगवश यह ज्ञात होता है कि वे स्वयं और अन्य आत्माओं के संदर्भ में बारी-बारी से प्रयोग करते हैं।
जबकि पहले और तीसरे प्रश्न में धम्म को या तो 'सीमित' या 'विस्तारित' कहा गया है (देखें §§ 1019-1021), और दूसरे में 'अनंत' कहा गया है, जो अवस्थाएँ 'अनंत' हैं, उनके बारे में कहा जाता है कि वे 'उस चीज को अपना विषय नहीं बनाती हैं जो अब बाह्य से संबंधित है, अब आत्मा से संबंधित है'।
(असल. 361, 362.)

77.तुलना करें § 1022 इत्यादि।

78. धारा 597 और उसके बाद की धाराएँ, धारा 657 और उसके बाद की धाराएँ देखें।

79. धारा 980 देखें।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 2
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
 - पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
 - भाग 1

अंतर्वस्तु

1.1.1मैं।
1.2- फुटनोट:
अध्याय II - कारण समूह
हेतु-गोच्चकम
[1]
मैं।
[पृष्ठ 274] [1053] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो कारण हैं?
अच्छे कर्म के तीन कारण।
[पृष्ठ 275] बुरे (कर्म) के तीन कारण।
अनिश्चितता के तीन कारण।
इंद्रिय जगत में सक्रिय नौ कारण।
रूप जगत में सक्रिय छह कारण।
निराकार जगत में सक्रिय छह कारण।
वे छह कारण जो उस जीवन में सक्रिय हैं जो असंलग्न है।

(ए) इस संदर्भ में,

[1054] अच्छे कर्म के तीन कारण कौन से हैं?
वासना, घृणा और सुस्ती का अभाव।
इस संदर्भ में,
[1055] कामवासना का अभाव क्या है?
कामवासना, वासना, कामुकता का अभाव मोह, उन्माद, जुनून का अभाव है;
लोभ का अभाव, कामवासना का अभाव जो अच्छे (कर्म) की जड़ है।[2]
[1056] नफरत की अनुपस्थिति क्या है?
घृणा, नफरत, नफरत का अभाव;
प्रेम,[3] प्रेमपूर्ण, प्रेमपूर्ण स्वभाव; [4] कोमल देखभाल, सहनशीलता, विचारशीलता; [5] [पृष्ठ 276] सामान्य भलाई की तलाश,[6] करुणा;
द्वेष, दुर्भावना का अभाव;
घृणा का वह अभाव जो अच्छाई (कर्म) की जड़ है।[7]
[1057] सुस्ती का अभाव क्या है?
बीमारी के बारे में, बीमारी के उत्पन्न होने के बारे में, बीमारी के समाप्त होने के बारे में और बीमारी के समाप्त होने के मार्ग के बारे में ज्ञान;
पहली बातों के बारे में, दूसरी बातों के बारे में और दोनों के बारे में एक साथ ज्ञान;
कारण-निर्धारित अवस्थाओं के कारण-निर्दिष्ट होने के बारे में ज्ञान।
यहां तक कि वह ज्ञान भी जो समझ, खोज, शोध, सत्य की खोज आदि से संबंधित है।
[धारा 34 के अनुसार जारी रखें]।
ये तीन अच्छे कर्मों के कारण हैं।

(ख) इस संबंध में,
[1058] बुरे (कर्म) के तीन कारण कौन से हैं?
वासना, घृणा, सुस्ती।
इस संदर्भ में,

[1059] कामवासना क्या है?

जो भी वासना (रागो),

मोह (सरगो),[8] चापलूसी (अनुनयो),[9] आज्ञापालन (अनुरोधो),[10] [पृष्ठ 277] आनंद लेना (नंदी),[11] भावुक आनंद लेना (नंदी-रागो),[11] मन का मोह (चित्तस सरगो),[12] लालसा (इच्छा),

तड़प (मुच्छा),

भक्षण (अज्जोसनम),[13] लोभ (गेधो),

सर्वभक्षी लोभ (पालिगेधो),

चिपके रहना (सांगो),

एक दलदल (पंको),[14] प्रलोभन (एजा),[15] छल (माया),[16] जननी (जानिका),[17] [पृष्ठ 278] संतानोत्पत्ति (संजना),

दर्जी (सिब्बानी),[18] जाल में फंसाने वाली (जालिनी),[19] नदी है। (सरिता),[20] विषैली (विसत्तिका),[21] धागा (सुत्तम),[22] प्रसार (विसता),[23] परिश्रम करने वाली (आयुहनी),[24] संगिनी (दुतिया),[25] लालसा (पानिधि), [पृष्ठ 279] नवजीवन की ओर ले जाने वाली (भवनेत्ति),[26] वन (वनम),

झाड़ियाँ (वनथो),[27]

घनिष्ठता (संथावो),[28]

स्नेही प्रेम (सिनेहो),

स्नेह (अपेक्खा),[29]

संबंध (पतिबंधु),[30]

लालसा (आसा),

चाहत (असिम्शन),

लोभ (असिम्सिटट्टम),

दृश्य रूपों की लालसा (रूपा, आदि),

ध्वनियों की लालसा,

गंधों की लालसा,

स्वादों की लालसा,

स्पर्शनीय वस्तुओं की लालसा,

प्राप्ति की लालसा,

धन की लालसा,

संतान की लालसा,

जीवन की लालसा,

बड़बड़ाना (जप्पा),[31] [पृष्ठ 280] बड़बड़ाना,

बुदबुदाना,

बुदबुदाना,

बड़बड़ाना,

आत्म-भोग (लोलुप्पम),[32]

आत्म-भोग,

असंयम,

बेचैनी (पुंचिकता),[33]

सुखद की लालसा (साधु काम्यता),[34]

व्यभिचारी वासना (अधम्मारगो),[35]

अराजक कामवासना (विसमलोभो),

भूख (निकन्ति),

भूख (निकमान),

विनती (पट्टाना),
ईर्ष्या (पिहाना),
याचना (संपट्टाना),[36]
कामुक भोग की प्यास (कामतन्हा),
अस्तित्व की प्यास (भवतन्हा),
गैर-अस्तित्व की प्यास (विभवतन्हा),[37]
रूप की प्यास,[38]
निराकारता की प्यास,
विनाश की प्यास,
दृश्य रूपों की प्यास,[39] [पृष्ठ 281] ध्वनियों की प्यास,
गंधों की प्यास,
प्यास स्वाद के लिए,
मूर्त के लिए प्यास,
मानसिक स्थिति के लिए प्यास (धम्मतनहा),
एक बाढ़ (ओघो),
एक योक (योगो),
ट्रैमेल्स (गंथो),
लगाव (उपदानम),
रुकावट (आवरणम),
बाधा (निवारणम),
जालसाजी (चदानम), [40]
बंधन (बंधनम), [41]
भ्रष्टता (उपक्किलसो),
लड़खड़ाना (अनुसयो), [42]
व्याप्त (परयुत्थानम),[43]
लता (लता),[44]
लोभ (वेविचम),[45]
दर्द की जड़,
दर्द का स्रोत (दुक्खनिदानम), [पृष्ठ 282] दर्द का उत्पादन (दुक्खप्पभवो),
मार का जाल (मरपासो),
मार का मछली पकड़ने का कांटा (मरबलिसम),
मार का क्षेत्र (मरविसायो),
प्यास,
आनंद की प्यास (नंदितन्हा),
प्यास का मछली पकड़ने का जाल (जलमतन्हा)[46],
प्यास की लगाम (गद्दुलतन्हा),[47]
सागर (समुद्दो),[48]
लोभ (अभिज्ज्जा),[49]
वह कामवासना जो बुराई की जड़ है - यही कामवासना कहलाती है।
[1060] घृणा क्या है?
जब ये सोचकर झुंझलाहट उत्पन्न होती है: उसने मुझे हानि पहुँचाई है, पहुँचा रहा है, पहुँचाएगा;
उसने मेरे किसी प्रिय और अनमोल व्यक्ति को हानि पहुँचाई है, पहुँचा रहा है, पहुँचाएगा;

उसने किसी ऐसे व्यक्ति को लाभ पहुँचाया है, पहुँचा रहा है, पहुँचाएगा जिसे मैं नापसंद करता हूँ और जिसका मैं विरोध करता हूँ;
या जब झुंझलाहट निराधार रूप से उत्पन्न होती है[50]: — मन की ऐसी सभी व्यथा,[51] आक्रोश, घृणा, शत्रुता;[52]
चिड़चिड़ापन, चिड़चिड़ापन, [पृष्ठ 283] रोष;[53]
घृणा, अरुचि, तिरस्कार;[54]
मानसिक विकार,[55] घृणा;[56]
क्रोध, रोष, चिड़चिड़ापन;
घृणा, नफरत, घृणा;
अव्यवस्था, परेशान होना, विक्षिप्तता;
विरोध, शत्रुता;[57]
अशिष्टता, अचानकता, हृदय की घृणा — इसे ही घृणा कहा जाता है।
[1061] सुस्ती क्या है? बीमारी के बारे में ज्ञान का अभाव,
बीमारी के उदय के बारे में ज्ञान का अभाव,
बीमारी के निवारण के बारे में ज्ञान का अभाव,
बीमारी के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग के बारे में ज्ञान का अभाव;
पूर्वोक्त बातों के बारे में ज्ञान का अभाव, पश्चात् बातों के बारे में ज्ञान
का अभाव और दोनों के बारे में एक साथ ज्ञान का अभाव; कारण-निर्धारित अवस्थाओं के कारण-निर्दिष्ट होने के बारे में ज्ञान का अभाव — यहाँ तक कि उस प्रकार का ज्ञान का अभाव जो अंतर्दृष्टि,
समझ,
जागरूकता
, ज्ञान,
भेदन , बोध, विश्लेषण, तुलना, चिंतन और तीक्ष्ण बुद्धि का अभाव है;

अशुद्धता,
बचकानापन,
अज्ञानता,
मूर्खता की सुस्ती,
मंदबुद्धि, अज्ञानता
की बाढ़, अज्ञानता का
जुआ,
अज्ञानता की निर्भरता,
अज्ञानता से ग्रस्त होना,
अज्ञानता की बाधा,
बुराई की जड़ सुस्ती - इसे सुस्ती कहा जाता है।[58]
ये तीन कारण हैं जिनसे बुरे कर्म होते हैं।

(सी) इस संबंध में,

[1062] अनिश्चितता के तीन कारण कौन से हैं?
कामवासना, घृणा और सुस्ती का अभाव अच्छे राज्यों के परिणाम स्वरूप या क्रिया-विचारों के रूप में ज्ञात अनिश्चित अवस्थाओं के रूप में घटित होता है।[59]
[1063] इंद्रिय जगत में कार्यरत नौ कारण कौन से हैं (कामवचरहेतु)?
अच्छे कर्म के तीन कारण, बुरे कर्म के तीन कारण और अनिश्चित अवस्थाओं के तीन कारण—ये नौ कारण हैं।
[1064] रूप के ब्रह्मांड में सक्रिय छह कारण कौन से हैं?
अच्छे कर्म के तीन कारण, अनिश्चित अवस्थाओं के तीन कारण—ये छह हैं।
[1065] निराकार ब्रह्मांड में कार्यरत छह कारण कौन से हैं?
अच्छे कर्म के तीन कारण, अनिश्चित अवस्थाओं के तीन कारण—ये छह हैं।
[1066] अनशामिल में कौन से छह कारण सक्रिय हैं?
अच्छे कर्म के तीन कारण, अनिश्चित अवस्थाओं के तीन कारण—ये छह हैं।
इस संदर्भ में,
[1067] अच्छे कर्म के तीन कारण कौन से हैं?
वासना, घृणा और सुस्ती का अभाव।
इस संदर्भ में,
[1068-1070] कामवासना की अनुपस्थिति क्या है... घृणा की अनुपस्थिति क्या है... सुस्ती की अनुपस्थिति क्या है?
धारा 1055-1057 के अनुसार उत्तर, लेकिन धारा 1056 में 'घृणा' से 'दुर्भावना की अनुपस्थिति' को छोड़कर, विशेष रूप से।[60]
ये अच्छे कर्म के तीन कारण हैं।

(घ) इस संदर्भ में,
[पृष्ठ 285] [1071] अनिश्चितता की तीन वजहें कौन-सी हैं?
अच्छी अवस्थाओं के फलस्वरूप कामवासना, घृणा और सुस्ती का अभाव होना—ये तीन बातें हैं।
ये वे छह कारण हैं जो असंलग्न अवस्था में सक्रिय हैं। ये वे अवस्थाएँ हैं जो कारण हैं।
[1072] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो कारण नहीं हैं?
प्रत्येक अवस्था, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, चाहे वह इंद्रियों के जगत से संबंधित हो, रूप से संबंधित हो, निराकार से संबंधित हो, या उस जीवन से संबंधित हो जो अविभाजित है, सिवाय ऊपर बताई गई अवस्थाओं के; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप और अविभाजित तत्व भी।
[1073] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनमें कारण सहवर्ती होते हैं?[61]
[पृष्ठ 286] वे अवस्थाएँ, अर्थात् चार स्कंध, जिनके सहवर्ती कारण ऊपर सूचीबद्ध अवस्थाएँ हैं।[62]
[1074J वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनमें सहवर्ती कारण नहीं होते?
वे अवस्थाएँ, अर्थात् चारों स्कंध, सभी अविभाजित तत्व हैं, जिनके सहवर्ती कारण ऊपर वर्णित अवस्थाएँ नहीं हैं।
[1075] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो किसी कारण से जुड़ी हैं?[63]
वे राज्य, अर्थात् चार स्कंध, जो ऊपर उल्लिखित राज्यों से संबंधित हैं।
[1076] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो किसी कारण से जुड़ी नहीं हैं?
वे अवस्थाएँ, अर्थात् चारों स्कंध, सभी अमिश्रित तत्व भी बनाती हैं, जो ऊपर उल्लिखित अवस्थाओं से संबंधित नहीं हैं।
[1077] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो कारण भी हैं और जिनके सहवर्ती कारण भी हैं?
सुस्ती के साथ वासना दोनों है। वासना के साथ सुस्ती दोनों है। सुस्ती के साथ नफरत दोनों है। नफरत के साथ सुस्ती दोनों है।[64]
कामवासना का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव—ये भी, एक दूसरे के साथ मिलकर, कारण हैं और इनके सहवर्ती कारण भी हैं।
[पृष्ठ 287] [1078] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनके सहवर्ती कारण होते हैं, लेकिन वे स्वयं कारण नहीं हैं?

वे अवस्थाएँ, अर्थात् चार स्कंध, जिनके सहवर्ती कारण वे अवस्थाएँ हैं [जिन्हें ऊपर कारणों के रूप में गिनाया गया है], उनमें से बाद वाली अवस्थाओं को छोड़कर।

[1079] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो कारण भी हैं और कारण से जुड़ी भी हैं?

[1080] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो किसी कारण से जुड़ी होती हैं, लेकिन कारण नहीं होतीं?

उत्तर उपरोक्त जोड़ी के समान हैं।[65]

[1081] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो कारण नहीं हैं, बल्कि उनका एक कारण सहवर्ती है?[66]

वे अवस्थाएँ, अर्थात् चार स्कंध, जो ऊपर वर्णित अवस्थाओं के कारण नहीं हैं, परन्तु जिनमें से कोई एक अवस्था सहवर्ती होती है।

[1082] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो कारण नहीं हैं और जिनके सहवर्ती कारण नहीं हैं?

ये अवस्थाएँ, अर्थात् चारों स्कंध, सभी एक अविभाजित तत्व का निर्माण करती हैं, जो न तो ऊपर वर्णित अवस्थाओं के कारण हैं और न ही उनमें से किसी को अपना सहवर्ती मानती हैं।

- फुटनोट:

1. इस कथन (§ 595) के संबंध में कि रूप 'वह है जो कारण नहीं है', साइ. अरस्तू की तरह ही कारण के चार प्रकारों में अंतर करता है। हालाँकि, यह समानता संख्या से आगे नहीं बढ़ती। हेतु या तो

कारण के रूप में कारण (हेतु-हेतु);

कारण को शर्त के रूप में, या आवश्यक पूर्ववर्ती 'साधन' (paccayahetu) के रूप में;

अंतिम या सर्वोच्च के रूप में कारण (उत्तम-हेतु); और

कारण एक सामान्य विशेषता के रूप में (s adhar a nail etu). Asl. 303.

इन भेदों को निम्नलिखित तरीके से लागू किया जाता है:

(ए)

धारा 1053 में दिए गए त्रिगुण कारण की त्रिमूर्ति। यहाँ शब्द को हमेशा 'मूल' द्वारा प्रतिरूपित किया जाता है, मूल, इसके विपरीत, सामान्य रूप से उत्पादक एजेंट (धारा 981 के नोट में सूची देखें) और, निश्चित रूप से, विशेष रूप से नैतिक एजेंसी के लिए है।

(बी)

'मैंने घोषित किया है, भिक्षु, कि चार महान घटनाएँ रूप-स्कंध के कारण और परिस्थितियाँ हैं।'

जब सिद्धा भौतिक होती है, तो इसे अरस्तू के दूसरे औपचारिक सिद्धांत η υλη και το υποκειμενον के अनुरूप कहा जा सकता है। संभवतः सिद्धा इसी अवधारणा का सामान्यीकरण था जिसमें प्रभाव के लिए आवश्यक अमूर्त साधन भी शामिल थे। हालाँकि, कोलब्रुक ('जीवन और निबंध', ii. 419) ने कहा कि बौद्ध हेतु को निकटवर्ती कारण और प्रत्यय (सिद्धा) को समवर्ती अवसर के रूप में भेद करते हैं।

(सी)

'जब अच्छे कर्मों का फल मिलता है, तो वही अंततः या सर्वोच्च रूप से वांछित वस्तु होती है' - और बुरे कर्मों के मामले में इसका ठीक विपरीत होता है। यह संभवतः अरस्तू के अंतिम कारण (το ου ενεκα) के लगभग समान है।

(डी)

'जिस प्रकार पृथ्वी और जल (ठोस और द्रव) तत्वों का सार ही मीठे या बेस्वाद होने की स्थिति निर्धारित करता है, उसी प्रकार अज्ञान ही संस्कारों का सामान्य आधार तत्व है। हमारे वर्तमान संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग इसके मूल अर्थ में किया गया है।'

2. धारा 32 देखें। पाली शब्द दोनों उत्तरों में समान हैं। निम्नलिखित उत्तर में, शब्द धारा 33 से काफी भिन्न हैं।

3. मुद्रित पाठ में met tarn है; Cy. और K. में metti पढ़ा जाता है।

4. 'प्रेम से ग्रस्त और प्रेम के माध्यम से आसक्ति से मुक्त व्यक्ति की मानसिक स्थिति।'

(असल. 362.).
पृष्ठ 66 पर दिए गए नोट को देखें।

5. अनुद्दा, अनुद्दयाना, अनुद्दयितत्तम्। साई. ने रक्खति के रूप में इसका प्रतिलेखन किया है, जो इन शब्दों में निहित संदर्भ को दर्शाता है, जिन्हें आमतौर पर 'दया' या 'करुणा' के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो परोपकार और दानशीलता के सुरक्षात्मक और रक्षा करने वाले पहलू को दर्शाते हैं। सी. 7i. 3, 13; एस. 2., पृष्ठ 218 में इसके प्रयोग की तुलना करें, जहाँ इसका उपयोग कमजोर भाइयों के हित में सहनशीलता के उस दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए किया गया है, जिसकी अनुशंसा सेंट पॉल ने इओमान और कोरिंथियन अनुयायियों को की थी।

6.हितेसिता. देखें सी. 9. 5, 7.

7. बुद्धघोष निष्कर्ष निकालते हैं कि इन सभी शब्दों (अर्थात 'प्रेम' से 'करुणा' तक) के द्वारा प्रेम की उन्नति (एक चक्र ऊपर) और उसकी उत्पत्ति (अप्पना) का वर्णन किया गया है। संभवतः इन तकनीकी शब्दों का प्रयोग करते समय उनके मन में ध्यान की प्रक्रिया रही होगी, जिसमें ध्यान की उत्पत्ति कराई जाती है। देखें खिस डेविड्स, 'योगवचार की नियमावली', पृष्ठ 11।

8.'मजबूत रागो का अर्थ'. असल. 362,

9. यह मिल. 44 में पतिघो या घृणा के विपरीत है; तुलना करें 122 और 322. टिप्पणी (असल. 362) - विसयेसु सत्तनम अनुनयनतो - यह संकेत दे सकती है कि चापलूसी दूसरों की कामुक इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए की जाती है।

10. यह विरोध, पतिविरोध के विपरीत है। धारा 1060 देखें। साइ. (वही) कामेटी द्वारा व्याख्या करता है। तुलना करें एस. आई. इल; केवाई 485।

11. इसे किसी वस्तु के लिए बार-बार उत्पन्न होने वाली उस प्यास के रूप में समझाया गया है, जिसका एक बार घटित होना नंदी नामक अवस्था का निर्माण करता है। असल. 363.

12. इसे पहले से नामित 'मोह' को योग्य बनाने के रूप में समझाया गया है, जिसमें किसी व्यक्तिगत इकाई के बजाय एक मानसिक अवस्था या मनोविकृति के संदर्भ पर जोर दिया गया है। वही।

13. 'अर्थात, निगलकर पकड़ना, पूरी तरह से समाप्त कर देना।'
असल. 363, 370.
यह शब्द संभवतः 'सा' से बना है, जिसका अर्थ है बांधना (या प्राप्त करना), और आमतौर पर, इसके संदर्भ में, इसका अर्थ लगाव होता है। देखें एम. आई. 109, 498; मिल. 74. हालांकि, टीका के अनुसार, ऐसा प्रतीत होता है कि 'अ 9' मूल से व्युत्पन्न एक समरूप शब्द है, जिसका अर्थ है खाना, जो ध्य और क्ष से व्युत्पन्न 'झयाति' के समानांतर विकास के समान है। देखें एहिस डेविड्स, 'बुद्ध के संवाद', आई. 33, टिप्पणी 2.
ए. i. 66, 67 में दिया गया अंश ही एकमात्र ऐसा अंश है जो मुझे वर्तमान में ज्ञात है जहाँ यह शब्द, आसक्ति और लालच दोनों के संदर्भों के साथ समन्वय में आता है, और इसे दोनों अर्थों में समान रूप से अच्छी तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है।

14. ओएसएलडीएनार्न द्वारा पुनर्कथन. एएसएल. 363.

15. अकाक्ल्धनम द्वारा पुनर्कथन किया गया, जिसका प्रयोग डीएचपी. सीवाई. (पृष्ठ 412) में खजाने और परिवार के प्रेम की चुंबकीय शक्ति को दर्शाने के लिए किया गया है। वही।

16. वैनकैनम द्वारा पुनर्कथन किया गया। वही।

17. क्योंकि कामवासना प्राणियों को जीवन चक्र पर पुनर्जन्म दिलाती है। अतः निम्नलिखित विशेषण इस प्रकार है:
तन्हा जनेति पुरिसम, चित्तं अस विधावति।

18. साइ. बताते हैं कि लोब हो पुनर्जन्म के माध्यम से प्राणियों को दुःख से जोड़ता है, ठीक उसी तरह जैसे एक दर्जी कपड़े के एक टुकड़े को दूसरे से जोड़ता है। वही।

19. वह = तन्हा, जिसके फैलाव से इंद्रियों का विविध जाल एक जाल के समान हो जाता है। वही।
यस्सा जलिनी विसात्तिका
तन्हा न'अत्थि कुहिंसी नेतावे।
एस.आई. 107; = डीएचपी., वर्. 180.

20. टीकाकार के अनुसार, लोभो की तीव्र धारा से, या फिर उसकी चिपचिपी दृढ़ता से:
सरितानि सिनेहितानि च
सोमनस्सनि भवन्ति जंतुनो।
डीएचपी., संस्करण 341.

21. ऊपर दिए गए नोट 2 को देखें।

22. क्योंकि यह विनाश और दुर्भाग्य को एक रस्सी पर पिरोए हुए घड़ों की तरह आपस में जोड़ देता है। असलम 364.

23. 'इंद्रियजन्य वस्तुओं पर फैलने के अर्थ में।'
वही।

24. 'अर्थात, वह प्राणियों को इस या उस अवस्था के लिए परिश्रम करने के लिए प्रेरित करती है (आयुहापेति)।'
वही। आयुहाती पर, जेपीटीएस, 1885, पृष्ठ 58, 59; 1886, पृष्ठ 155, 156; मिल. 108, 214 देखें।

25. लोभो (या तन्हा) की तुलना एक प्रिय दूसरे रूप, या पत्नी, या यात्रा साथी से की जाती है।
यह विचार सूत्र निपाता के श्लोक 740 में मिलता है, जिसका उल्लेख साइप्रस ने किया है।
तंहदुतियो पुरिसो दीघर्न अद्धनं संसारं
इत्थभवन्नथभावं संसारं नटिवत्तति ति।

26.Cy.: भवानत्ति = अस्तित्व की डोर। क्योंकि इसी के द्वारा प्राणियों को, जैसे गायों को उनके गले में बंधी डोर से, जहाँ भी उनकी आवश्यकता होती है, ले जाया जाता है।

27. उष्णकटिबंधीय वनों की घनी और दुर्गम प्रकृति अक्सर लोभो या तन्हा के खतरों को दर्शाती है। देखें ध., पृष्ठ 283, साइ. में उद्धृत। वही।

28. 'घनिष्ठता दो प्रकार की होती है: या तो यह शारीरिक (अर्थात्, तन्हा) होती है या मैत्रीपूर्ण। यहाँ पूर्व प्रकार का अभिप्राय है।'

असल. 365.

29.'अलयाकरनवासेना अपेक्खति ति अपेक्खा।'
वही।
इस शब्द पर साइ. में उद्धरण महासुदस्सना सुत्त, 229 से है, जिसके साथ तुलना करें एस. iii. 144.

30. 'जीवित प्राणियों के निरंतर निकट होने के कारण तन्हा के समान कोई संबंध (या जुड़ाव) नहीं है।'
असल. 365.

31. निम्नलिखित चारों शब्द जप्पा के ही भिन्न रूप हैं। 'जब भी किसी लालची व्यक्ति को कुछ दिया जाता है, तो वह बुदबुदाता है, "यह मेरा है, यह मेरा है!, यह मुझे फलां व्यक्ति ने दिया है!"
असल. 365.
के. अभिजप्पना के बाद जप दोहराता है। सी एफ सी. iv. 14, 26: सकन्नजप्पकम।

32.जाट. i. 340; iv. 306 देखें। बुद्धघोष इसे लुम्पति से व्युत्पन्न करते हैं। व्हिटनी की 'बूट्स' आदि देखें, जहाँ यह लुप के गहन रूप में प्रकट होता है, लेकिन अर्थ में लुभ से संबंधित है।

33. साई. के अनुसार, तन्हा से उत्पन्न उत्तेजना या घबराहट की तुलना यहाँ 'कुत्तों द्वारा कुछ खोजते समय अपनी पूंछ हिलाने' (सुनाखा पढ़ें) से की गई है। वही।

34. सी.वाई. और के. साधु पढ़ते हैं।

35.माँ के लिए, माँ की बहन आदि के लिए। अस्ल. 366.

36.यानि पत्तन तेज हो गया. वही.

37.अर्थात्, विनाश की स्थिति के लिए। वही।

38.अर्थात, शुद्ध (सुद्धे) रूप की अवस्था के लिए। वही।

39. 'ध्वनियों की प्यास' से पहले, के. ने दूसरी बार रूपतन्हा शब्द का प्रयोग किया है। यहाँ जिस रूपनी की लालसा व्यक्त की गई है, वह संभवतः 'दृश्य' या 'दृष्टि की अनुभूतियाँ' हैं, जो पूर्व रूपतन्हा के अंतर्गत वर्णित अलौकिक अवस्था से भिन्न हैं और निराकार अवस्था के बाद आती हैं। दूसरी ओर, सी. केवल 'विनाश की प्यास' और 'ध्वनियों की प्यास' के बीच 'दित्तिरागो' शब्द का उल्लेख करते हैं, जिसका अर्थ है चिंतन की लालसा।

40.सो असल. और के. सी. सुत्त निप. i. 5, 7.

41.अर्थात्, 'संसार के चक्र पर'। वही।

42. 'शक्ति की हानि के माध्यम से'। वही।

43.अर्थात्, हृदय कामवासना से ग्रस्त हो जाता है, जैसे सड़क लुटेरों के वश में हो जाती है। वही।

44.. . . लता उब्भिज्ज तित्तति. धप्प. 340. साई में उद्धृत. लोभ या वासना अपने शिकार का गला घोंट देती है, जैसे लता पेड़ का गला घोंट देती है.

45.सुट्टा निप देखें। 1033. हालाँकि, बुद्धघोसा ने इस शब्द को 'बहुमुखी चाहत', विएलहाबेरेई के रूप में परिभाषित किया है; 'विविधनि वत्थुनि इच्छाति'। मैंने छुपा दिया।
असल में, पृष्ठ 375 पर, उनका एक अलग स्पष्टीकरण है। तुलना करें एसएन ii., sv veviccha.

46. नदी पर जाल की तरह फैला हुआ। असल. 367.

47.तुलना करें जे. एट. ii. 246; iii. 204. टैन हा अपने शिकार को इस तरह घसीटता है जैसे कुत्ते पट्टे से खींचे जाते हैं (असल. 367)।

48. कामवासना की प्यास बुझाना कठिन है। वही। तुलना करें, ऊपर, पृष्ठ 175, टिप्पणी 4।

49. धारा 391 देखें।

50.'अत्थाने वा पण अघाटो ति अकरणे कोपो।
उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति इसलिए परेशान होता है क्योंकि बहुत अधिक बारिश होती है, या बारिश नहीं होती है, या क्योंकि सूरज बहुत तेज होता है, या बहुत कम गर्म होता है, या क्योंकि हवा बहुत तेज या बहुत कम चलती है, या क्योंकि वह बोधि वृक्ष के पत्तों को साफ नहीं कर सकता है, या क्योंकि हवा के कारण वह अपना वस्त्र नहीं पहन सकता है, या क्योंकि वह किसी पेड़ के ठूंठ पर गिर गया है।
असल. 367.

51. सिट्टास्सा अघतो। अघतो का अनुवाद ऊपर झुंझलाहट के रूप में किया गया है। अगले दो शब्द पतिघतो और पतिघम हैं। बाद वाला शब्द इंद्रिय-गतिविधि में क्रिया और प्रतिक्रिया को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है। § 597 et seq.

52.पतिविरोधो. सी एफ मिल. 203, 402.

53.Kopo, pakopo, sampakopo.

54.Padoso, sampadoso.

55. चित्तस्स व्यापत्ति; इसका अर्थ है मन का पूर्ण उलटफेर या प्रलय। जाट 4:107 में व्यापत्ति का प्रयोग जहाज के डूबने के लिए किया गया है। ऊपर दिए गए अनुच्छेद 418 देखें।

56. मनोपदोसो. तुलना करें जाट. iv. 29; एम. i. 377, जहाँ इसका अर्थ स्पष्ट रूप से अभिशाप या निंदा है - 'घृणा' का मूल अर्थ।

57. धारा 418 देखें।

58. असलम 368 के अनुसार, यह 'विभंग की टीका में विस्तार से बताया गया है'।

59.किरियव्यकतेसु धम्मेसु। ऊपर देखें, § 566 वगैरह। साइ. यहाँ सन्नाटा है.

60. Ado so अनजाने में पाठ में छूट गया है।

61. सहेतुका। इस शब्द पर बौद्ध धर्मग्रंथ (पृष्ठ 47) में लिखा है: संप अयोगतो पवत्तेन सह हेतुना ति सहेतुका, और इसके विपरीत: अहेतुकाथ तथ'एव पवत्तो न'अत्थी एतेसम हेतु ति। इसका अनुवाद इस प्रकार हो सकता है: 'सहेतुका का अर्थ है, किसी कारण के साथ निरंतरता में मिलन' और 'अहेतुका का अर्थ है, उनके लिए किसी कारण की निरंतरता नहीं है'। बौद्ध धर्मग्रंथ में किसी दी गई अवस्था के साथ किसी कारण के निरंतर बने रहने पर इतना जोर दिया गया है कि यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मध्यकालीन विवाद, जिसे सूत्र 'सेसंटे काउसा सेसैट एट इफेक्टस' के नाम से जाना जाता है, बौद्ध विद्वानों के लिए अपरिचित नहीं था।
क्या हम यहाँ कुछ ऐसी अवस्थाओं का वर्गीकरण कर रहे हैं, जिनके फलस्वरूप बने रहने के लिए कारण का निरंतर बने रहना आवश्यक है? यदि ऐसा है, तो बौद्ध आधुनिक तर्कशास्त्री (जे.एस. मिल) से सहमत होंगे (देखें अनुच्छेद 1075, नोट) कि कुछ मामलों में ही, 'किसी फलस्वरूप बने रहने के लिए फलस्वरूप उत्पन्न करने वाली अवस्था का निरंतर बने रहना आवश्यक है'। हालाँकि, यह समानता अत्यंत संदिग्ध है।
पाली भाषा में तो यह भी अस्पष्ट है कि क्या सहवर्ती कारण ही विचाराधीन राज्य का कारण है; वास्तव में, कभी-कभी ऐसा स्पष्ट रूप से नहीं होता है।
उदाहरण के लिए, अनुच्छेद 1077 में 'सुस्ती' हेतु-धम्मो है, परन्तु इसलिए यह कामवासना और घृणा जैसी सहवर्ती अवस्थाओं का कारण नहीं है। संकलक हमेशा की तरह इस विषय के तर्क से अधिक मनोविज्ञान में रुचि रखते थे और मानसिक जुड़ाव के कारकों की जाँच कर रहे थे।

62. तेही धम्मेही, अर्थात् अच्छे या बुरे प्रभावों के छह कारणों में से किसी एक के साथ। असल. 368.

63. हेतु-संपयुत्त। संपयुत्त शब्द के अर्थ के लिए पृष्ठ 1, नोट 4 देखें। यह विपरीतार्थक शब्दों का युग्म पिछले युग्म से अर्थ में भिन्न नहीं बताया गया है (अत्थतो नानत्तम् नत्थि), और सूत्रों को केवल श्रोताओं की विभिन्न प्रवृत्तियों (अज झसयवासेना) के अनुकूल बनाने के उद्देश्य से विभेदित किया गया है। असल. 48. हालाँकि, अर्थ की यह समानता केवल हेतु के क्षेत्र में ही लागू होती प्रतीत होती है।
अगले गोच्चकम में, आसवविप्पयुत्त का गुण ससव के गुण के साथ संगत होने की अनुमति है, § 1111, और इसी प्रकार बाद के गोच्चकों के लिए भी।

64. जब सुस्ती के साथ उलझन और उत्तेजना (उद्धच्चम) हो, तो उसे कारण कहा जाता है, परन्तु उसका सहवर्ती कारण नहीं होता। असल. 368.

65.तुलना करें § 1075, एन. 2.

66. पूरक प्रश्न, सी.वाई. कहते हैं, ना-हेतु अवस्थाओं से संबंधित। असल. 47.
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 3

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
  - भाग 1

अध्याय III - युग्मों का संक्षिप्त मध्यवर्ती समूह
कुलंतराडुकम

[पृष्ठ 288] [1083] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो सशर्त हैं?[1]

पांच स्कंध, अर्थात् रूप, भावना, बोध, संश्लेषण और बुद्धि के स्कंध।

[1084] कौन-कौन सी अवस्थाएँ बिना शर्त हैं?

'और अमिश्रित तत्व'.[2]

[1085] कौन सी अवस्थाएँ यौगिक हैं?[3]

वे अवस्थाएँ जो सशर्त हैं।

[1086] कौन-कौन सी अवस्थाएँ अविभाजित हैं?

वह अवस्था जो बिना शर्त हो।

[1087] वे कौन से राज्य हैं जिनमें दृश्यता है?

[दृश्यमान] रूपों का क्षेत्र।

[1088] वे कौन से राज्य हैं जिनमें दृश्यता नहीं है?

इंद्रियों और इंद्रिय-विषयों के क्षेत्र; चार स्कंध; वह रूप भी जो न तो दृश्यमान है और न ही प्रभाव डालने वाला है, [मानसिक] अवस्थाओं के अंतर्गत समाहित है;[4] और अविभाजित तत्व।

[पृष्ठ 289] [1089] वे कौन से राज्य हैं जो प्रभावित करते हैं?[5]

इंद्रियों के क्षेत्र और इंद्रिय-विषय।

[1090] वे कौन से राज्य हैं जो गैर-प्रभावित हैं?

चारों स्कंध; वह रूप भी जो न तो दृश्यमान है और न ही प्रभाव डालने वाला, [मानसिक] अवस्थाओं के अंतर्गत आता है; साथ ही अविभाजित तत्व भी।

[1091] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जिनका [भौतिक] रूप है?[6]

चार महान सिद्धांत और साथ ही चार महान घटनाओं से व्युत्पन्न रूप।[7]

[1092] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जिनका कोई भौतिक रूप नहीं है?

चारों स्कंध और अमिश्रित तत्व।

[1093] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो सांसारिक हैं?[8]

सह-नशा [9] अवस्थाएँ, अच्छा, बुरा और अनिश्चित, इंद्रियों, रूप या निराकार की दुनिया से संबंधित, अर्थात् पाँच स्कंध।

[1094] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो अलौकिक हैं?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं, और उन मार्गों के फल, और अमिश्रित तत्व।

[1095] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो एक तरह से बोधगम्य हैं, और दूसरी तरह से बोधगम्य नहीं हैं?

जो अवस्थाएँ दृष्टि से पहचानी जा सकती हैं, वे श्रवण से नहीं पहचानी जा सकतीं; इसके विपरीत, जो अवस्थाएँ श्रवण से पहचानी जा सकती हैं, वे दृष्टि से नहीं पहचानी जा सकतीं।

जो अवस्थाएँ दृष्टि से पहचानी जा सकती हैं, वे गंध से, स्वाद से, या शारीरिक संवेदना से नहीं पहचानी जा सकतीं, और इसके विपरीत भी।

[पृष्ठ 290] वे अवस्थाएँ जो श्रवण द्वारा पहचानी जा सकती हैं, वे गंध द्वारा ... स्वाद द्वारा ... शारीरिक संवेदनशीलता द्वारा ... दृष्टि द्वारा नहीं पहचानी जा सकतीं, और इसके विपरीत भी।

इसलिए उन अवस्थाओं के लिए जो गंध, स्वाद और शरीर संवेदनशीलता द्वारा पहचानी जा सकती हैं।[10]

- फुटनोट:
1.सप्पाकाया, = अत्तानो निप्पादाकेना, सह पकायेना। असल. 47.

2.किसी ने अपेक्षा की होगी कि पाठन इसके बजाय असंखत् वा धातु होगा। . . सीए धातु, पाठ और के दोनों में दिया गया है। असंखत्-धातुं संध्या है।

3. संखता को 'परिस्थितियों द्वारा निर्मित, एकत्रित' के रूप में परिभाषित किया गया है। असल. 47.

4. धारा 1052 देखें।

5.सप्ततिघा. सी एफ § 597, आदि।

6. यूपिनो, अर्थात्, उनका ऐसा रूप है जो स्वयं में विवेचनात्मक चेतना से रहित है (अविनिभोगवासेना)। एएसएल, पृ. 47, तुलना करें पृ. 56; मिल. 63; एम. आई. 293।

7.तुलना करें धारा 597.

8. लोकिया = अस्तित्व के चक्र से बंधा हुआ, उसका एक हिस्सा, जो अपने विलीन होने और बिखरने (लुज्जना पलुज्जना) के कारण लोको कहलाता है। संसार से परे जाना, उसमें एक गैर-अनुरूप विशेषता होना - उसमें होते हुए भी उसका हिस्सा न होना - लोकुत्तरो कहलाता है। असल. 47, 48.

9. धारा 1103 देखें।

10. साई. इस प्रश्न का उत्तर देते हैं कि ऐसा कोई दोहा क्यों नहीं है जो यह बताए कि कौन सी अवस्थाएँ प्रतिनिधिक ज्ञान या विचार (मनोविन्नानम्) द्वारा बोधगम्य हैं या नहीं? इसका उत्तर है, "ऐसा भेद पूरी तरह से मान्य है, 'अस्तित्वहीन नहीं है", लेकिन इसे स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, क्योंकि निर्धारण या निर्णय (ववत्थानम्) का अभाव है। 'उदाहरण के लिए, जब हम यह निर्णय लेते हैं कि फलाँ-फलाँ चीजें दृश्य बुद्धि द्वारा बोधगम्य नहीं हैं, तो ऐसा कुछ नहीं होता।' देखें अस्ल. 369, तुलना करें मिल. 87, जहाँ इस बौद्धिक प्रक्रिया को अधिक स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। बुद्धघोष का तर्क मुझे कम स्पष्ट लगता है।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 4

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण

- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
  - भाग 1

अध्याय IV - मादक पदार्थों का समूह

आसव-गोच्चकम

[पृष्ठ 291] [1096] कौन-कौन सी अवस्थाएँ मादक पदार्थ हैं?[1]

चार मादक पदार्थ,
अर्थात्,
कामुकता का मादक पदार्थ, [पृष्ठ 292] नवजीवन का मादक पदार्थ,
सट्टा राय का मादक पदार्थ,
अज्ञान का मादक पदार्थ।

इस संदर्भ में

[1097] कामुकता का नशा क्या है?

वह कामुक इच्छा,[2]
कामुक जुनून,
कामुक आनंद, [पृष्ठ 293] कामुक लालसा,
कामुक स्नेह,
कामुक प्यास,
कामुक बुखार,
कामुक तंद्रा,
कामुक लोभ,
जो इंद्रियों के सुखों से उत्तेजित होता है[3]

इसे कामुकता का नशा कहा जाता है।

[1098] नए जीवन का नशा क्या है?

पुनर्जन्म के संबंध में जो इच्छा,
अस्तित्व में आने की तीव्र इच्छा,
अस्तित्व में आने का आनंद, अस्तित्व में आने की लालसा,
अस्तित्व में आने का प्रेम, अस्तित्व में आने की
तीव्र इच्छा,
तड़प,
भूख महसूस होती है।

— इसे नवजीवन का नशा कहा जाता है।[4]

[1099] सट्टा राय का नशा क्या है?[5]

यह मानना कि दुनिया शाश्वत है,
या यह शाश्वत नहीं है,[6] अनंत या सीमित;[7]

कि सजीव आत्मा शरीर है,
या सजीव आत्मा शरीर से भिन्न वस्तु है;[8]

या फिर जिसने सत्य पर विजय प्राप्त की है[9] वह मृत्यु के बाद विद्यमान रहता है,
या मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहता,
या मृत्यु के बाद विद्यमान और विद्यमान दोनों रहता है,
या मृत्यु के बाद विद्यमान न तो रहता है और न ही विद्यमान रहता है — इस प्रकार की राय,
राय में चलना, राय का
जंगल, राय का वीरान इलाका, राय का कठपुतली शो, राय की हाथापाई , राय की बेड़ी, उसकी पकड़ और दृढ़ता, उसकी ओर झुकाव, उससे संक्रमित होना, यह बाई-पाथ, गलत रास्ता, गलत होना, यह 'फोर्डिंग प्लेस', पकड़ की यह अस्थिरता[10]

इसे अटकलबाजी से उपजी राय का नशा कहा जाता है। इसके अलावा, अटकलों के नशे में सभी झूठे सिद्धांत शामिल होते हैं।

[1100] अज्ञान का नशा क्या है?[11]

धारा 1061 में 'सुस्ती' के लिए दिए गए अनुसार उत्तर दें।

ये वे अवस्थाएँ हैं जो मादक पदार्थ हैं।

[1102][12] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो मादक पदार्थ नहीं हैं?

प्रत्येक अवस्था, अच्छी, बुरी और अनिश्चित,[14] जो पूर्वोक्त (नशीले पदार्थों) में शामिल नहीं है, चाहे वह इंद्रियों, रूपों या निराकारों के जगत से संबंधित हो, या उस जीवन से जो अशाब्दिक है, अर्थात् चार स्कंध; सभी रूप भी, और अमिश्रित तत्व।

[1103] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो सह-नशीले पदार्थ हैं?[15]

[पृष्ठ 295] अच्छी, बुरी और अनिश्चित अवस्थाएँ, चाहे वे इंद्रियों, रूपों या निराकारों के जगत से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[1104] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो सह-नशीले पदार्थ नहीं हैं?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं, और उन मार्गों के फल, और अमिश्रित तत्व।

[1105] वे कौन से राज्य हैं जो 'नशीले पदार्थों से जुड़े' हैं?

वे राज्य जो उन [नशीले] राज्यों से जुड़े हैं,[16] अर्थात्, चार स्कंध।

[1106] वे कौन से राज्य हैं जो 'नशीले पदार्थों से विच्छेदित' हैं?

वे अवस्थाएँ जो उन [नशीले] अवस्थाओं से असंबद्ध हैं, अर्थात् चारों स्कंध; वे सभी भी अमिश्रित तत्व का निर्माण करती हैं।

[1107] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो मादक पदार्थ और सह-मादक पदार्थ दोनों हैं?

स्वयं मादक पदार्थ।[17]

[1108] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो सह-नशीले पदार्थ हैं, लेकिन नशीले पदार्थ नहीं हैं?

वे अवस्थाएँ जिनमें उपरोक्त अवस्थाएँ (§ 1096) सहवर्ती अवस्थाएँ हैं; अर्थात्, मादक पदार्थों को छोड़कर, सभी अवस्थाएँ, चाहे अच्छी हों, बुरी हों या अनिश्चित हों, जो सह-मादक हैं, चाहे वे इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[पृष्ठ 296] [1109] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो मादक पदार्थ भी हैं और मादक पदार्थों से संबंधित भी हैं?

कामुकता का नशा, अज्ञानता के नशे के साथ-साथ, और इसके विपरीत। नवजीवन का नशा, अज्ञानता के नशे के साथ-साथ, और इसके विपरीत। काल्पनिक मत का नशा, अज्ञानता के नशे के साथ-साथ, और इसके विपरीत।

[1110] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो मादक पदार्थों से संबंधित हैं लेकिन स्वयं मादक पदार्थ नहीं हैं?

वे राज्य जो पूर्वोक्त राज्यों से संबद्ध हैं (§ 1096) - बाद वाले स्वयं को छोड़कर - अर्थात्, चार स्कंध।

[1111] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो मादक पदार्थों से असंबद्ध हैं लेकिन सह-मादक पदार्थ हैं?

वे अवस्थाएँ जो ऊपर नामित अवस्थाओं (§ 1096) से असंबद्ध हैं, परन्तु जो अच्छी, बुरी या अनिश्चित हैं, उन्हें सहवर्ती के रूप में धारण करती हैं, चाहे वे इंद्रिय जगत, रूप जगत या निराकार जगत से संबंधित हों, अर्थात् पाँच स्कंध।

[1112] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो मादक पदार्थों से असंबद्ध हैं और सह-मादक पदार्थ नहीं हैं?

वे पथ जो असंलग्न हैं और पथों के फल और असंयोजित तत्व.[3]

- फुटनोट:
1. 'नशा' शब्द 'आसवो' का एक पर्यायवाची मात्र है, क्योंकि इसका कोई उपयुक्त अंग्रेज़ी पर्याय उपलब्ध नहीं है (देखें खिस डेविड्स, 'बुद्ध के संवाद', खंड i., पृष्ठ 92, नोट 3)। यहाँ इसका चयन बुद्धघोष की टिप्पणी के आधार पर किया गया है। यह टिप्पणी इस प्रकार है: 'आसव का अर्थ है वे आगे बढ़ते हैं। ऐसा कहा जाता है कि वे बहते हैं (लेगे सवन्ति), इंद्रियों और मन में घूमते हैं। या, मानसिक अवस्थाओं के संदर्भ में, वे चुने हुए लोगों तक, और स्थान के संदर्भ में, वे अस्तित्व के उच्चतम स्तरों तक बहते हैं - मेरा अर्थ है, उनकी सीमा अवस्थाओं और स्थान दोनों को समाहित करती है, इस समाहितता को 'अ' उपसर्ग द्वारा दर्शाया गया है।'

इसके अलावा, आसव मादक पेय पदार्थों (आसव) के समान होते हैं, जैसे कि शराब आदि, जिन्हें लंबे समय तक रखा जा सकता है। क्योंकि संसार में, लंबे समय तक रखे गए मादक पेय पदार्थों को आसव कहा जाता है। और यदि इन मादक पेय पदार्थों को इतने लंबे समय तक रखने के कारण आसव कहा जाता है, तो ये अवस्थाएँ भी इस नाम के योग्य हैं।

क्योंकि ऐसा कहा जाता है:

"हे भाइयों, अज्ञान का वह चरम बिंदु, जिसके समक्ष अज्ञान का अस्तित्व ही नहीं रहा है, प्रकट नहीं होता।"
[अज्ञान के आसव का जिक्र करते हुए]

असल. 48.

इस अंश से हमें यह समझ आता है कि बुद्धघोष के लिए, 'आसवो' शब्द, चाहे इसके अन्य अर्थ कुछ भी रहे हों, मुख्य रूप से दो धारणाओं का प्रतीक था, और ये थीं किसी संभावित और अत्यंत शक्तिशाली प्रभाव का फैलाव और उसकी वृद्धि की अवधि। पहला रूपक—प्रवाहित होना, ऊपर से बहना और उसके ऊपर से बहना—संवेदना के संरक्षित मार्गों के मानक वर्णन में एक संबंधित क्रिया के साथ आता है—अनवस(स)वेय्युम {जैसे, डी. आई. 70)।

बाद की धारणा सुभूति की इस शब्द पर शुरुआती टिप्पणी में दिखाई देती है ('अभिधानप्पदीपिका-सुचि', sv असवो): मन-पुरीसमददयो येनति - जिससे अभिमान और मानवीय पागलपन [या आसक्ति] आती है।

इस शब्द में निस्संदेह कुछ ऐसा भी निहित था जो बहते समय दूषित, भ्रष्ट और लहूलुहान कर देता था। लेकिन यह भी उस शब्द के शारीरिक और नैतिक महत्व का हिस्सा है जिसे मैंने अनुवाद में चुना है।

बाद में (पृष्ठ 369) साई. बौद्ध धर्म की प्रचलित पद्धति के अनुसार मादक पदार्थों को संख्यात्मक श्रेणियों में वर्गीकृत करता है। इस प्रकार, वे एक हैं, या अविभेदित हैं, क्योंकि वे शराब की तरह लंबे समय तक संचित रहते हैं। विनय में उनका दो प्रकार से वर्णन किया गया है: - वे मादक पदार्थ जिन्हें इस जीवन में दबाना है और वे जिन्हें भविष्य के जन्मों में त्यागना है (देखें V. iii. 21; V., पृष्ठ 143, 223)। सुत्तंत में, उदाहरण के लिए, सलायतन-सुत्त में, उन्हें तीन शीर्षों के अंतर्गत विभेदित किया गया है, दित्तसव को छोड़ दिया गया है। (जिस सुत्त का उल्लेख किया गया है, उसका अभी संपादन नहीं हुआ है, लेकिन VM i. 55; S. iv. 256; A. i. 167; iii. 414; और cf. D. i. 84)।

दीघा निकाय के महा-परिनिर्वाण-सूत्र में, हालांकि, चारों आसवों का उल्लेख है (पृष्ठ 38, 40)। अतः तीन संभावित निष्कर्ष निकलते हैं: या तो बुद्धघोष से एक बार गलती हुई है, या अंतिम सूत्र के संस्करण में सुधार की आवश्यकता है, या यह एक बाद का ग्रंथ है, जो संभवतः अभिधम्म के समकालीन है। 'प्रवेश' (ए. iii. 410-417) पर लिखे गए अंश में, इन्हें पाँच विभिन्न प्रकार के पुनर्जन्मों की ओर ले जाने वाले कारक के रूप में माना गया है। 'चक्क निपाता के अहुनेय-सूत्र' (अर्थात उस निपाता का क्रमांक 18ii, ए. iii. 387) में, इन्हें दूर करने के छह तरीकों के अंतर्गत माना गया है। सब्बसव-प्रवचन (एम. i., पृष्ठ 7-11) में सात तरीके दिए गए हैं।

2.'कामचन्दो ति कामसंखतो चंदो न कट्टुकम्यतचन्दो न धम्मचन्दो'. असल. 370. इंद्रिय-संबंधी इच्छा और नैतिक रूप से तटस्थ, केवल इच्छाशक्ति की अवस्था के बीच सावधानीपूर्वक किया गया यह अंतर, साथ ही आदर्श की चाहत, जनवरी 1898 में जेकेएएस में मेरे द्वारा प्रस्तुत तर्क को पुष्ट करता है, जिसकी पुनर्चर्चा मेरी प्रस्तावना में की गई है।

3.पंचकामागुनिको रागो कामसावो नामा (असल. 369)।

शास्त्र में कहा गया है कि सर्वोच्च देवताओं के महलों या स्वर्ग के मनोकामना वृक्षों की लालसा करना या सौंदर्यपरक विलासिता (आभरणम) की चाहत को कामुकता के नशे के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसी इच्छाएँ कामुकता से कहीं अधिक गंभीर हैं। बल्कि ये लोभ के बंधन (धारा 1136) और कामवासना के कारण (धारा 1059) के अंतर्गत आती हैं। असल. 371, 377.

4. शाब्दिक रूप से, बनने का। 'जिसे भावसवो कहा जाता है, वह पुनर्जन्म की आशा है, शाश्वतवादी चिंतन से जुड़ा जुनून (उत्तर के बाद देखें और § 1003, n. 2), ध्यान की अवस्था की लालसा (यानी, रूप और निराकार के स्तरों में पुनर्जन्म की तीव्र इच्छा)।'

असल. 369.

5.दित्थसावो, 'यानि, बासठ सिद्धांत'। इहिद, देखें डी. आई., ब्रह्मजला सुत्त।

6.अर्थात, यह मानना कि यह पंच-स्कंधित मामला स्थायी, स्थिर, शाश्वत है - जो शाश्वतवादी सिद्धांत है; या यह कि यह नष्ट हो जाता है, नाश हो जाता है - जो पूर्ण विघटन का सिद्धांत है। असल. 370, 371. तुलना करें §§ 1003, n. 3; 1315-16.

7. इन दोनों सिद्धांतों को साई. द्वारा पूर्ववर्ती खंड में वर्णित सिद्धांतों में से किसी एक के साथ संगत घोषित किया गया है। और यह भी कहा गया है कि ये सिद्धांत किसी एक या दूसरे सिद्धांत के अनुयायी द्वारा अभ्यास किए जाने वाले ध्यान की प्रकृति द्वारा निर्धारित होते हैं। असल. 371. देखें §§ 1317-18.

8.अर्थात्, शरीर के विघटन पर जीवन (या सजीव आत्मा) का विनाश होता है या नहीं। वही।

9. तथागतो — साइप्रस में, सत्तो तथागतो नाम। अतः स्पष्ट है कि यह केवल बुद्ध का ही संदर्भ नहीं है। देखें कोबर्ट चाल्मर्स, 'तथागत', जेईएएएस, जनवरी, 1898, पृष्ठ 113-115। ऐसे व्यक्ति के भविष्य के अस्तित्व के बारे में चार अटकलों को क्रमशः शाश्वतवादी, विनाशवादी, अर्ध-शाश्वतवादी और अमरविक्खेपिका नाम दिया गया है। वही, देखें डी. आई. 3, §§ 58, 41, 59, 35।

10. धारा 381 के अंतर्गत देखें।

11.पाठ में दुक्खुदाय अन्नम् के बाद दुक्खनिरोधे अन्नम् प्रदान करें।

12.'§ 1101' स्पष्ट रूप से एक त्रुटिपूर्ण प्रक्षेप है। § 1104 देखें, जहाँ यह पुनः और अपने सही स्थान पर प्रकट होता है।

13.पाठ में कुसलकुसलव्यकत् पढ़ें।

14. ससवा, अर्थात्, 'आसवों के साथ आगे बढ़ते हुए', और जिन्होंने 'अत्तनम अरम्मनम कत्वा' - 'आत्मा को अपना लक्ष्य बनाया है'। असल. 48.

15. इस प्रकार के उत्तर, जो इन 'समूहों' में अक्सर पाए जाते हैं, देखने में भले ही प्रश्न की मात्र पुनरावृत्ति प्रतीत हों, लेकिन तार्किक भाषा में ये विश्लेषणात्मक या व्याख्यात्मक प्रस्ताव हैं। वर्तमान शब्द आसव-संपयुत्त का अर्थ या इसमें ये चार प्रकार समाहित हैं: कामसव-संपयुत्त, भावसव-संपयुत्त इत्यादि।

16. जब परस्पर संबद्ध हों। निम्नलिखित उत्तरों की जोड़ी देखें।

17. निष्कर्ष में, साइ. घोषणा करता है (पृष्ठ 372) कि सट्टा राय का नशा पहले (सोतपत्ति) मार्ग से प्रगति के दौरान दूर किया जाता है, कामुकता का नशा तीसरे (नाग अमी) मार्ग में और नवगठित अस्तित्व और अज्ञान का नशा चौथे (अरहत्त) मार्ग में दूर किया जाता है।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 5

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
- भाग 1

अध्याय V - बेड़ियों का समूह
सन्नोजना-गोच्चकम
[पृष्ठ 297] [1113] कौन से राज्य बेड़ियाँ हैं?

दस बंधन, अर्थात्, कामुकता का बंधन,
घृणा का बंधन,
अहंकार का बंधन,
काल्पनिक मत का बंधन,
उलझन का बंधन,
मात्र नियम और अनुष्ठान का संक्रमण,
नवजीवन की लालसा,
ईर्ष्या,
नीचता,
अज्ञानता।[1] [पृष्ठ 298] इस संदर्भ में,

[1114] कामुक वासना का बंधन क्या है? वह कामुक इच्छा,
कामुक जुनून,
कामुक आनंद,
कामुक लालसा,
कामुक लगाव, कामुक उन्माद, कामुक
सुस्ती , कामुक लोभ, जो इंद्रियों के सुखों से उत्तेजित होता है।

— इसे कामुकता का बंधन कहा जाता है।[2]

[1115] प्रतिकर्षण का बंधन क्या है?[3]

'घृणा' के लिए उत्तर दें, धारा 1060।

[1116] अहंकार का बंधन क्या है?[4] [पृष्ठ 299] 'मैं श्रेष्ठ व्यक्ति हूँ' के विचार से अहंकार;
'मैं उनके समान अच्छा हूँ' के विचार से अहंकार;
'मैं नीच हूँ' के विचार से अहंकार - इस प्रकार के सभी अहंकार,
अतिशयता,
अभिमान,
ऊँचाई,
घमंड,
झंडा फहराना,
अनुमान,
आत्म-प्रचार के लिए हृदय की इच्छा - इसे अहंकार कहा जाता है।

[1117] सट्टा राय का बंधन क्या है?

धारा 1099 के अनुसार 'अनुमानित राय के मादक पदार्थ' के लिए उत्तर दें, इस पूरक के साथ:

और, 'महज नियम और अनुष्ठान के संक्रमण के बंधन' को छोड़कर, सभी गलत विचार सट्टा राय के बंधन में शामिल हैं।

[1118] उलझन का बंधन क्या है?

'भ्रम' के लिए उत्तर दें, धारा 1004।

[1119] मात्र नियम और अनुष्ठान के संक्रमण का बंधन क्या है?

एन्सिवर के अनुसार 'संक्रमण' आदि के लिए, § 1005.

[1120] नए जीवन की चाहत का बंधन क्या है?

'पुनर्जन्मित अस्तित्व के मादक पदार्थ' के लिए उत्तर दें, धारा 1098।

[1121] ईर्ष्या का बंधन (इस्सन्नोजनम्) क्या है? ईर्ष्या,
ईर्ष्या करना,
ईर्ष्या - दूसरों को मिलने वाले
उपहारों,
आतिथ्य,
आदर,
स्नेह,
श्रद्धा और पूजा के प्रति ईर्ष्या की अभिव्यक्ति और मनोदशा[5] - इसे ईर्ष्या का बंधन कहा जाता है।

[1122] कंजूसी का बंधन (मच्चरिसन्नोजनम्) क्या है? पाँच प्रकार की कंजूसी,

अर्थात्,
निवास,
परिवार,
उपहार,
प्रतिष्ठा,
सिद्धांत[6] के संबंध में कंजूसी — इस प्रकार की [पृष्ठ 300] कंजूसी,
ईर्ष्या,
नीच भावना,
लोभ और नीचता,[7]
कंजूसी और उदारता की कमी[8] — इसे कंजूसी का बंधन कहा जाता है।

[पृष्ठ 301] [1123] अज्ञान का बंधन क्या है?

अज्ञानता के मादक पदार्थ के लिए उत्तर दें, धारा 1100।

ये वे अवस्थाएँ हैं जो बंधन हैं।

[1124] वे कौन-कौन सी अवस्थाएँ हैं जो बेड़ियाँ नहीं हैं?

प्रत्येक अवस्था, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो पूर्वोक्त [दस] अवस्थाओं में शामिल नहीं है, चाहे वह इंद्रियों के जगत से संबंधित हो, या रूप से, या निराकार से, या उस जीवन से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप भी, और अविभाजित तत्व।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1125] (ए) बेड़ियों के लिए अनुकूल?[9]

सह-नशे की अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो इंद्रियों, रूप या निराकार के जगत से संबंधित हैं; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[1126] (ख) बेड़ियों के लिए प्रतिकूल?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं और उन मार्गों के फल हैं, तथा अमिश्रित तत्व हैं।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1127] (क) बेड़ियों से संबंधित?
[1128] (ख) बेड़ियों से असंबद्ध?

धारा 1105, 1106 के तहत 'नशीले पदार्थों' से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों के समान उत्तर।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1129] (क) बेड़ियाँ और बेड़ियों के लिए अनुकूल दोनों?

[पृष्ठ 302] बेड़ियाँ स्वयं दोनों हैं

[1130] (ख) बेड़ियों के लिए अनुकूल लेकिन स्वयं बेड़ियाँ नहीं।

वे अवस्थाएँ जो उपर्युक्त [दस] अवस्थाओं के अनुकूल हैं; अर्थात्, बंधनों को छोड़कर, सभी सह-नशाग्रस्त अवस्थाएँ, चाहे अच्छी हों, बुरी हों या अनिश्चित हों, चाहे वे इंद्रिय जगत, सजीव जगत या निराकार जगत से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1131] (क) बेड़ियाँ और बेड़ियों से संबंधित दोनों?

कामुकता का बंधन, अज्ञान के बंधन के साथ मिलकर, और इसके विपरीत, दोनों का ही रूप है। इसी प्रकार, शेष आठ बंधनों में से कोई भी बंधन, अज्ञान के बंधन के साथ मिलकर, और इसके विपरीत, दोनों का ही रूप है।

[1132] (ख) बेड़ियों से जुड़ा हुआ है लेकिन बेड़ी नहीं है?

उपर्युक्त दस राज्यों से संबद्ध राज्य, बंधनों को छोड़कर; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1133] (क) बेड़ियों से असंबद्ध होते हुए भी उनके प्रति अनुकूल?

वे अवस्थाएँ जो उपर्युक्त [दस] अवस्थाओं से विमुख हैं, अर्थात् अच्छी, बुरी और अनिर्धारित अवस्थाएँ जो सह-नशाजनक हैं, चाहे वे इंद्रियों के जगत से संबंधित हों, या रूप के जगत से, या निराकार के जगत से; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[1134] (ख) बेड़ियों से असंबद्ध और उनके लिए अनुकूल नहीं?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं और मार्गों के फल; सभी भी एक अविभाजित तत्व बनाते हैं। [10]

[पृष्ठ 303] (अरहत्ता) मार्ग,
सट्टा राय, उलझन और मात्र नियम और अनुष्ठान के संक्रमण के बंधन, प्रथम (सोतपत्ति) मार्ग में,
चौथे मार्ग में नवीकृत अस्तित्व के जुनून का बंधन,
प्रथम मार्ग में ईर्ष्या और नीचता के बंधन,
चौथे मार्ग में अज्ञान का बंधन।

अतः बुद्धघोष के अनुसार, दूसरा मार्ग बंधनों को तोड़ने की प्रक्रिया में एक अंतरिम अवधि प्रतीत होता है।

निम्नलिखित तालिकाएँ दर्शाती हैं कि Dh. S. और इसके Cy. किस हद तक Childers, sv samyojanam (cf. D. i. 156) में उद्धृत अधिकारियों से सहमत हैं:

ध. एस, और असल. चाइल्डर्स।

दिट्ठि

विकिसिच्चा

सिलबबता-परमासो

प्रथम पथ द्वारा हटाया गया। सक्कया-दिट्ठि

विकिसिच्चा

सिलबबता-परमासो

इस्सा

मच्चरियाम दूसरे और तीसरे मार्ग द्वारा हटा दिया गया। kamarago

patigho

kamarago

patigho तीसरे मार्ग द्वारा हटाया गया।

mano

bhavarago

avijja

चौथे मार्ग द्वारा हटाया गया रूपरागो

अरूपरागो

मनो

उद्धाक्कम

अविज्जा

- फुटनोट:

1. सन्नोजननी का अर्थ है 'वे चीजें जो बांधती हैं, जो उस व्यक्ति को पुनर्जन्म के चक्र में जकड़ती हैं जिसके लिए वे मौजूद हैं'।

असल. 48.

यह सूची सुत्तों में अक्सर मिलने वाले और चाइल्डर्स में सूचीबद्ध प्रसिद्ध दासा सानिओजनानी से कुछ मामलों में भिन्न है।

एहिस डेविड्स, 'अमेरिकन लेक्चर्स', 141 और उसके बाद देखें।

इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि बुद्धघोष को उस पुरानी श्रेणी का ज्ञान था, क्योंकि उन्होंने पहली तीन श्रेणियों को क्रम से 'ऐसी अवस्थाएँ जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जाना चाहिए' के रूप में नामित किया था।

धारा 1002 इत्यादि।

हालाँकि, वे इन दोनों सूचियों पर कोई टिप्पणी नहीं करते। एम. आई. 360-363 में मन की आठ अवस्थाओं का वर्णन किया गया है और उन्हें क्रमशः बंधन और बाधा के रूप में नामित किया गया है, लेकिन वे इन दोनों शीर्षकों द्वारा आमतौर पर समझी जाने वाली श्रेणियों से बिल्कुल भिन्न हैं। तुलना करें एम. आई. 432; ए. ii. 238; डिव. एस. 533, 553।

2. धारा 1097 से तुलना करें। एकमात्र विसंगति धारा 1114 में 'इंद्रियजन्य प्यास' (कमापिपासो) का लोप है, जो पीटीएस पाठ और के. दोनों में है।

3. पतिघ-सन्नोजनाम, सीएफ। §§ 413-421.

4. मन-साईइनोजनम् — या अभिमान।

हालांकि अन्य किसी भी दृष्टि से ऐसा नहीं है, लेकिन शब्द की व्युत्पत्ति अधिक सटीक है।

'लोली' hin 0 है। (तुलना करें §§ 269, इत्यादि, 1025.

'उदात्तता और अहंकार' उन्नति, उन्नमो हैं।

'झंडा फहराना' बस 'धजो' है, यह रूपक किसी व्यक्ति या उसकी संपत्ति पर झंडा फहराने से व्यक्त होने वाले दिखावे को दर्शाता है, लेकिन यह हमारे 'तुरही की गूंज' वाले रूपक से बेहतर मेल खाता है।

'अजम्पशन' को संपग्गहो कहते हैं। साइप्रस (पृष्ठ 372) में आगे उक्खिपनत्थेना चित्तम संपग्गनहति ति लिखा है, जिसका अर्थ है मन को उछालना (अहंकार करना)। चाइल्डर्स द्वारा उद्धृत सिसम उक्खिपित्वा और अहंकार आदि के लिए हिब्रू अलंकारों की तुलना करें - सिर, सींग, एड़ी या स्वयं को ऊँचा उठाना; साथ ही पग्गहो, धारा 56 भी देखें।

'स्वयं का प्रचार करने की हृदय की इच्छा' है केतुकम्यता चित्तस्स। पाठ में प्रयुक्त विराम चिह्नों को बदलकर ही मैं इस वाक्य का अर्थ समझ सकता हूँ।

इस प्रकार: केतु वुक्काति बहुसु धजेसु अक्गुगतधाजो। मनो पि पुनप्पुना उप्पज्जमानो अपारपरे उपादया एकुग्गात्थेना केतुम वियाति केतु। केतुम इच्छाति ति केतुकाम्यतस्सा भावो केतुकाम्यता। स पना चित्तस्स, न अत्तानो, तेन वुट्टम: - केतुकाम्यता चित्तस्स ति। 'कई झंडों के ऊपर फहराए गए झंडे को केतु (चिह्न, या मानक) कहा जाता है; सीएफ कामायण i. 19, 16, बोथल द्वारा उद्धृत। और दोनों)। केतु से अभिप्राय उस दंभ से है जो बार-बार उठने पर ऊंचे स्थान पर स्थापित किसी चीज के अर्थ में एक संकेत की तरह होता है। केतु-इच्छा की स्थिति, यानी आत्म- की इच्छा, केतुकाम्यता है।

लेकिन इसका तात्पर्य मन की अवस्था से है, न कि किसी स्व-सत्ता से, इसलिए यह वाक्यांश 'स्व-प्रचार के लिए मन [या हृदय] की इच्छा' है।

5. दूसरे शब्दों में, पड़ोसी की सफलता पर असंतोष और बड़बड़ाहट, और दुर्भाग्य आने पर आत्मसंतुष्टि (शाडेनफ्रायड)। असल. 373. तुलना करें. पीपी, पृष्ठ 19.

6. बुद्धघोष उदारता की कमी के वास्तविक उदाहरणों को इसकी कमी से अलग करने में काफी मेहनत करते हैं। उदाहरण के लिए, यह मच्छरिया है जब कोई भिक्षु, आवास का उपयोग करते हुए, दूसरे को उसमें हिस्सा देने से मना करता है, या जब वह अपने संरक्षकों और

रिश्तेदारों के साथ दूसरे के मेलजोल से, या अपनी भक्ति के बदले आम लोगों से उपहार लेने से, या शारीरिक या नैतिक आकर्षण के लिए ख्याति प्राप्त करने से, या सिद्धांत के शाब्दिक या भाव में निपुणता प्राप्त करने से मना करता है।

दूसरी ओर, झगड़ालू व्यक्तियों आदि के अपने आवास पर आने की निंदा करना, शांति भंग करने वालों को अपने सामाजिक दायरे में शामिल करना, या गुणी लोगों के बजाय स्वार्थी और कंजूस भाइयों को उपहार देना अनुचित नहीं है। न ही किसी जिज्ञासु को शिक्षा देने से इनकार करना हर मामले में अनुदारता है। संयम बरतना सिद्धांत या जिज्ञासु के प्रति सम्मान के कारण हो सकता है।

बाद वाला व्यक्ति दी गई शिक्षा को विकृत कर सकता है, या शिक्षा उसे परेशान कर सकती है। फिर भी, यदि प्रश्नकर्ता 'कमजोर भाई' नहीं है, बल्कि 'हमारे उद्देश्य' के प्रति शत्रुतापूर्ण साबित होने की संभावना रखता है, तो शिक्षा को रोके रखना सैद्धांतिक अनुदारता का कार्य है (amhakam samayam bhinditum samattho)।

इसके बाद पौराणिक कथाओं से संबंधित एक अनुच्छेद आता है जिसमें उन लोगों के अप्रिय पुनर्जन्मों का वर्णन है जो इन पांच प्रकार की नीचता में से किसी एक के संबंध में गलती करते हैं। असल. 374, 375.

7. वेविचम कदरियाम। इन शब्दों को (असल. 375, 376) क्रमशः नीचता की कोमल (मुदु) और कठोर (थद्धा) किस्मों के रूप में वर्णित किया गया है (चाइल्डर्स, एसवी थद्धो देखें)। हम इन्हें नकारात्मक और सकारात्मक रूप से असामाजिक कह सकते हैं।

क्योंकि पहला वाला वह भाव है जो अपने सभी लाभों पर फैलते हुए कहता है, 'यह मेरा है, किसी और का नहीं!'

(धारा 1059)।

बाद वाला (अनारियो) तो दूसरों को दान देने से भी रोकता था।

8. कटुकन्चुकता अगगाहितत्तम चित्तस्स। पहले शब्द के उच्चारण को लेकर संदेह है। के. ने इसे कटकन्चुकता और बुद्धघोष ने कटुकन्चुकता लिखा है। इस शब्द पर मॉरिस, जेपीटीएस, 1887, पृष्ठ 161 में चर्चा की गई है। बुद्धघोष की टिप्पणी इस प्रकार है (असल. 376): 'कटुकन्चुको का अर्थ है कि किसी भिखारी को देखकर, अपने कंजूस स्वभाव के कारण, हृदय संकुचित या झुक जाता है (अंचति—? √अन्ह, या अंक) और सिकुड़ जाता है।' फिर, एक वैकल्पिक व्याख्या देते हुए, वे अपनी विशिष्ट व्युत्पत्ति का सहारा लेते हैं, कटुकन्चुकता को कटच्चुगाहो—चम्मच से मदद—से व्युत्पन्न करते हैं। जब आपका चावल का बर्तन पूरी तरह भरा हो, तो आप केवल चम्मच के सिरे से थोड़ी-बहुत मदद ही ले सकते हैं। और जैसे कंजूस का दिल सिकुड़ता है, वैसे ही उसका शरीर भी 'अपने आप पर वापस झुक जाता है, अपने आप पर वापस फेंक दिया जाता है, उसे शांति नहीं मिलती' (वह मिल से उद्धृत करता है, पृष्ठ 297)।

इसी प्रकार, aggahitattam cittassa का अर्थ है हृदय को रोके रखना, या उसे पीछे रखना, दूसरों को दान और सेवा के माध्यम से उसके विस्तार को रोकना।

9. सन्नोजनीय। इसलिए पाठ और के. साई. सन्नोजन्य पढ़ता है। लेकिन गंथनीय, ओघनीय, योगनीय, अस्ल. 49 देखें। साई. इस शब्द की व्याख्या करता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है बंधन-जैसा, कि यह बंधनों को विकसित करके उन्हें लाभ पहुँचाता है, एक बार जब उनकी शुरुआत हो जाती है। अस्ल. 48।

10. बंधनों के विषय को छोड़ते हुए, साइ. (पृष्ठ 376, 377) घोषणा करता है कि तीसरे (अन अ गार्नी) मार्ग पर प्रगति के दौरान कामुकता और घृणा के बंधन टूट जाते हैं, जबकि चौथे मार्ग में अहंकार का बंधन टूट जाता है। चौथे मार्ग के कार्य पर, ध. एस., § 364 की तुलना करें, जो दाईं ओर की तालिका से सहमत है। डॉ. ओल्डेनबर्ग की 'बुद्ध' के पहले संस्करण (पृष्ठ 452) में इस संबंध में विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाया गया था।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 6

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण

- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
  - भाग 1

अध्याय VI - संबंधों का समूह

गंथा-गोच्चकम

[1]

[पृष्ठ 304] [1135] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो बंधन हैं? चार बंधन,
अर्थात्,
लोभ का शारीरिक बंधन,
द्वेष का शारीरिक बंधन,
मात्र नियम और अनुष्ठान के संक्रमण का शारीरिक बंधन, और
हठधर्मिता की प्रवृत्ति का शारीरिक बंधन। इस संदर्भ में,

[1136] लोभ का शारीरिक बंधन क्या है (अबिज्जा कायगन्थो)?

'वासना' के लिए उत्तर दें, § 1059.[2]

[1137] दुर्भावना का शारीरिक बंधन क्या है (व्यापादो कायगन्थो)?

'घृणा' के लिए उत्तर दें, धारा 1060।

[1138] मात्र नियम और अनुष्ठान के संक्रमण का शारीरिक बंधन क्या है?

धारा 1005 और धारा 1119 के अनुसार तथाकथित बंधन के लिए उत्तर दें।

[पृष्ठ 305] [1139] हठधर्मिता की प्रवृत्ति का शारीरिक बंधन क्या है?[3] "संसार शाश्वत है" - यह सत्य है, बाकी सब असत्य है!
"संसार शाश्वत नहीं है" - यह सत्य है, बाकी सब असत्य है!
"संसार परिमित है... अनंत है" - यह सत्य है, बाकी सब असत्य है!
"जीवित आत्मा शरीर है... शरीर से भिन्न है" - यह सत्य है, बाकी सब असत्य है!

"जिसने सत्य को प्राप्त किया है वह मृत्यु के बाद विद्यमान रहता है... मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहता... मृत्यु के बाद विद्यमान भी रहता है और नहीं भी रहता... मृत्यु के बाद न तो विद्यमान रहता है और न ही नहीं रहता" - यह सत्य है, बाकी सब असत्य है!' — इस तरह की राय,

राय के इस जाल में फँसना,

राय का यह जंगल,

राय का यह वीरान इलाका,

राय का कठपुतली शो,

राय

की यह खींचतान, राय की यह बेड़ी,

इसकी पकड़ और दृढ़ता,

इसकी ओर झुकाव,

इससे संक्रमित होना,

यह टेढ़ा रास्ता,

गलत राह

,

यह 'पार करने की जगह',

पकड़ की यह अस्थिरता

इसे हठधर्मिता की प्रवृत्ति का शारीरिक बंधन कहा जाता है।

और, केवल नियम और अनुष्ठान के संक्रमण के शारीरिक बंधन को छोड़कर, सभी गलत विचार हठधर्मिता की प्रवृत्ति के शारीरिक बंधन के अंतर्गत आते हैं।

ये वे राज्य हैं जिनके बीच टाई है।

[1140] वे कौन से राज्य हैं जो टाई नहीं हैं?

प्रत्येक अवस्था, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो पूर्वोक्त [चार] अवस्थाओं में शामिल नहीं है, चाहे वह इंद्रियों के जगत से संबंधित हो या रूप के जगत से, या निराकार से, या उस जीवन से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप भी, और अविभाजित तत्व।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1141] (ए) बंधे होने की प्रवृत्ति?[4]

इंद्रियों, रूप और निराकार जगत से संबंधित अच्छी, बुरी और अनिश्चित अवस्थाएँ, जो सह-विषाक्त हैं; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[पृष्ठ 306] [1142] (ख) बंधने की प्रवृत्ति नहीं रखते?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं और उन मार्गों के फल हैं, तथा अमिश्रित तत्व हैं।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1143] (क) संबंधों से संबंधित?

उपर्युक्त चार राज्यों से संबंधित राज्य; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध।

[1144] (ख) संबंधों से विच्छेदित?

वे अवस्थाएँ जो उन [चार उपर्युक्त] अवस्थाओं से असंबद्ध हैं; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी भी एक अमिश्रित तत्व बनाते हैं।[5]

वे कौन से राज्य हैं जो

[1145] (क) क्या वे स्वयं ही बंधन हैं और बंधने की प्रवृत्ति रखते हैं?

ये संबंध स्वयं दोनों ही हैं।

[1146] (ख) बंधने की प्रवृत्ति रखते हैं, लेकिन बंधन नहीं हैं?

वे अवस्थाएँ जो उन [चारों उपर्युक्त] अवस्थाओं से बंधी होने की प्रवृत्ति रखती हैं, अर्थात् प्रत्येक अवस्था, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो बाद वाली अवस्थाओं में शामिल नहीं है, चाहे वह इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हो; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1147] (क) स्वयं संबंध, और संबंधों से जुड़े हुए?

मात्र नियम और अनुष्ठान के संक्रमण का शारीरिक बंधन, लोभ के शारीरिक बंधन के साथ, और इसके विपरीत, दोनों है। हठधर्मिता की प्रवृत्ति का शारीरिक बंधन, लोभ के शारीरिक बंधन के साथ, और इसके विपरीत, दोनों है।[6]

[1148] (ख) संबंधों से संबंधित है लेकिन संबंध नहीं है?

[पृष्ठ 307] वे राज्य जो उपर्युक्त चार राज्यों (टाई) से संबद्ध हैं, स्वयं बाद वाले को छोड़कर; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1149] (क) क्या वे संबंधों से अलग हैं, लेकिन बंधने की प्रवृत्ति रखते हैं?

वे अवस्थाएँ जो उपर्युक्त अवस्थाओं से असंबद्ध हैं, अर्थात् इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित अच्छी, बुरी और अनिश्चित अवस्थाएँ, जो सह-विषाक्त हैं; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[1150] (ग) क्या वे संबंधों से अलग हैं और उनसे जुड़ने की प्रवृत्ति नहीं रखते हैं?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं और उन मार्गों के फल हैं, तथा अमिश्रित तत्व हैं।

- फुटनोट:

1. गंथो को उस रूप में परिभाषित किया गया है जो किसी व्यक्ति को पुनर्जन्म के चक्र में बांधता है। और कायगंथो (शरीर-बंधन) शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि यह बंधन शरीर के माध्यम से होता है—अर्थात् गर्भाधान और पुनर्जन्म में प्राप्त होता है। अस्लि. 49, 377. गंथाओं की गणना इस उत्तर में श्लोक 4, 59 में की गई है, और उस खंड में अक्सर इनका सामूहिक रूप से, कभी-कभी गंधों के रूप में उल्लेख किया गया है। अ. (ii, 24) में मुझे केवल सामान्य संकेत 'सब्बा-गंथा-पामोकानो' मिलता है।

2. पृष्ठ 293, नोट 1 भी देखें।

3. इस प्रकार की आध्यात्मिक बाधा पर एकमात्र टिप्पणी यह है कि यह उन लोगों का दृष्टिकोण है जिन्होंने सर्वज्ञ के सिद्धांतों को अस्वीकार कर दिया है। असल. 377.

4.गंठनिया. अरम्मनकारणवसेन गन्थेहि गन्थितब्बा ति गन्थनिया। असल. 49.

5.सब्बन च रूपम असन्खता च धातु को पाठ में छोड़ दिया गया है, लेकिन यह समान अंशों (§§ 1124, 1167) में होता है और के में दिया गया है।

6. मुझे यह समझ में नहीं आता कि इन संयोजनों से दुर्भावना (व्यापादो) का बंधन क्यों हटा दिया गया है, न तो पाठ में और न ही के. बुद्धघोष ने इस पर कोई टिप्पणी की है।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 7

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण

- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
  - भाग 1

अध्याय VII - बाढ़ों का समूह

ओघा-गोच्चकम

[पृष्ठ 308] [1151] बाढ़ से प्रभावित राज्य कौन-कौन से हैं?

... [बेड़ियों के समूह की तरह जारी रखें।][1]

- फुटनोट:

1. इस अध्याय और अगले अध्याय में दिए गए समूह को पाठ और के. दोनों में ही पूर्णतः पढ़ा हुआ माना जाना चाहिए। विषयसूची से यह स्पष्ट है कि इसमें भी वही विधि अपनाई गई है जो बंधन और बेड़ियों के समूहों में अपनाई गई है। एस. वी., पृष्ठ 59 में बाढ़ या बंधन के अंतर्गत शामिल 'अवस्थाओं' की संख्या और प्रकार देखे जा सकते हैं, और दोनों समूहों की विषयवस्तु चारों आसवों के समान है।
ये हैं
कामवासना की बाढ़ या बंधन,

नवीकृत अस्तित्व (भाव),
अनुमानित राय (दित्थी) और
अज्ञान (अविज्जा)।
अत्थसालिनी केवल इतना ही कहती हैं कि बाढ़ को यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि यह जिसके लिए विद्यमान होती है उसे संसार में डुबो देती है, जबकि बंधन, बंधनों की तरह, उसे चक्र में जकड़ लेते हैं (पृष्ठ 49)। साथ ही, यह भी कि विशेषण, योगनिया और योगनिया, जो गंथनिया के समान हैं, क्रमशः बाढ़ में समा जाने वाली और बंधनों में जकड़ जाने वाली वस्तु को दर्शाते हैं।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 8

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
 - पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
 - भाग 1

अध्याय VIII - बंधनों का समूह
योग-गोच्चकम
[पृष्ठ 309] [1151ए] कौन से राज्य बांड हैं?

... [जंजीरों के समूह की तरह जारी रखें]।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 9

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
 - पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
 - भाग 1

अध्याय IX - बाधाओं का समूह
निवारण-गोच्चकम
[पृष्ठ 310] [1152] कौन सी अवस्थाएँ बाधाएँ हैं? छह बाधाएँ,
अर्थात्,
कामुक इच्छा की बाधा,
द्वेष की बाधा,
सुस्ती और आलस्य की बाधा,
उत्तेजना और चिंता की बाधा,
उलझन की बाधा,
अज्ञान की बाधा।[1] इस संदर्भ में

[1153] कामुक इच्छा की बाधा क्या है?

'इंद्रिय सुख के मादक पदार्थ' के लिए उत्तर दें, धारा 1097.[2]

[1154] दुर्भावना की बाधा क्या है?

धारा 1137 के अनुसार 'दुर्भावना का बंधन' के लिए उत्तर दें।

[1155] जड़ता और सुस्ती की बाधा क्या है?

सबसे पहले, स्थिरता और सुस्ती के बीच अंतर करें।[3]

[पृष्ठ 311] इस संदर्भ में,

[1156] दृढ़ता क्या है? वह जो अरुचि है,[4] बुद्धि की अविवेकी[5];
चिपकना और सामंजस्य स्थापित करना;
चिपके रहना, जकड़ना, चिपचिपाहट;
दृढ़ता, अर्थात् बुद्धि की कठोरता, दृढ़ता[6] — इसे दृढ़ता कहा जाता है।

[1157] सुस्ती क्या है?[7] वह जो इंद्रियों की अरुचि और बेकाबूपन है, एक आवरण, आवरण,[8] भीतर अवरोध[9];
सुस्ती जो [पृष्ठ 312] नींद, उनींदापन है;
नींद,[10] ऊँघना, तंद्रा — इसे सुस्ती कहा जाता है।

अब यह दृढ़ता है और यह सुस्ती है जिसे 'दृढ़ता और सुस्ती की बाधा' कहा जाता है।[11]

[1159] उत्तेजना और चिंता की बाधा क्या है?

सबसे पहले 'उत्साह' और 'चिंता' के बीच अंतर स्पष्ट करें।

इस संदर्भ में,

[1160] उत्तेजना क्या है?[12] मन की वह उत्तेजना जो बेचैनी, हृदय की व्याकुलता, मन की उथल-पुथल है—इसे उत्तेजना कहते हैं।
[1161] चिंता क्या है?[13]

[पृष्ठ 313] किसी गैरकानूनी चीज़ में वैध की चेतना;
वैध चीज़ में गैरकानूनी की चेतना;
नैतिक चीज़ में अनैतिक की चेतना;
अनैतिक चीज़ में नैतिक की चेतना[14] — इस प्रकार की सभी चिंता,
बेचैनी,
अति सावधानी,
अंतरात्मा का पश्चाताप,
मानसिक बलिदान[15]

— इसी को चिंता कहते हैं।

अब यही उत्साह है और यही चिंता है, जिसे 'उत्साह और चिंता की बाधा' कहा जाता है।

[1162] अज्ञानता की बाधा क्या है?

'सुस्ती' के लिए उत्तर दें, धारा 1061।

[1163] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जो बाधाएँ नहीं हैं?

प्रत्येक अवस्था, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, जो पूर्वोक्त [छह] अवस्थाओं में शामिल नहीं है, चाहे वह इंद्रियों, रूप, या निराकार के जगत से संबंधित हो, या उस जीवन से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप भी, और अविभाजित तत्व।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1164] (ए) बाधाओं के लिए अनुकूल?[16]

[पृष्ठ 314] सह-नशा अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, चाहे इंद्रियों, रूपों या निराकारों के जगत से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[1165] (ख) बाधाओं के लिए प्रतिकूल?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं और उन मार्गों के फल हैं, तथा अमिश्रित तत्व हैं।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1166] (क) बाधाओं से संबंधित?
[1167] (ख) बाधाओं से असंबद्ध?

मादक पदार्थों के संबंध में संबंधित प्रश्नों के उत्तरों के समान, धारा 1105, 1106।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1168] (क) बाधाएँ स्वयं और बाधाओं के लिए अनुकूल कारक?

ये बाधाएँ स्वयं दोनों ही हैं।

[1169] (ख) बाधाओं के लिए अनुकूल, लेकिन स्वयं बाधाएँ नहीं?

वे अवस्थाएँ जो उपर्युक्त बाधाओं के लिए अनुकूल हैं; अर्थात्, बाधाओं को छोड़कर, सभी सह-विषाक्त अवस्थाएँ, चाहे वे अच्छी हों, बुरी हों या अनिश्चित हों, चाहे वे इंद्रिय जगत से संबंधित हों, सजीव जगत से संबंधित हों या निराकार जगत से; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1170] (क) क्या वे स्वयं बाधाएँ हैं और बाधाओं से जुड़े हैं?

निम्नलिखित जोड़े स्वयं भी बाधाएँ हैं और बाधाओं से संबंधित भी हैं:

अज्ञानता के साथ कामुक इच्छा, और इसके विपरीत।
अज्ञानता के साथ दुर्भावना, और इसके विपरीत।

स्थिरता और सुस्ती,
उत्तेजना,
चिंता,
उलझन, अज्ञानता के साथ क्रमिक रूप से, और इसके विपरीत भी।
[पृष्ठ 315] कामुक इच्छा,
द्वेष,
जड़ता और सुस्ती,
उत्तेजना,
उत्तेजना,
उलझन अज्ञानता के साथ क्रमिक रूप से, और इसके विपरीत भी।

[1171] (ख) बाधाओं से संबंधित हैं, परन्तु स्वयं बाधाएँ नहीं हैं?

वे राज्य जो उपर्युक्त छह राज्यों से संबद्ध हैं, उनमें से वे स्वयं अपवाद हैं; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध।

वे कौन से राज्य हैं जो

[1172] (क) बाधाओं से असंबद्ध, परन्तु उनके लिए अनुकूल?

वे अवस्थाएँ जो उपर्युक्त [छह] अवस्थाओं से असंबद्ध हैं, अर्थात् सह-नशे वाली अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, चाहे वे इंद्रिय, रूप या निराकार के जगत से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[1173] (ख) बाधाओं से असंबद्ध और उनके लिए प्रतिकूल?

वे मार्ग जो अशाब्दिक हैं, और मार्गों के फल, और अमिश्रित तत्व।[17]

- फुटनोट:
1. सुत्त पिटक में, अवरोधों को पाँच श्रेणियों में रखा गया है, जिनमें अज्ञान (अविज्जा) को शामिल नहीं किया गया है। द्वैत पिटक के विवरण के लिए देखें: 1:71-74, और देखें: द्वैत पिटक 246; मृ. पिटक 60, 144, 181, 269, 294, आदि; अ. 3:63; शृंखला: 60, 94-98। बुद्धघोष ने इस विसंगति पर ध्यान नहीं दिया है। § 1112, आदि भी देखें। अवरोधों को ऐसी अवस्थाओं के रूप में समझा जाना चाहिए जो विचार को दबाती, घेरती या अवरुद्ध करती हैं। निवरणीय अवस्थाओं को उसी प्रकार समझा जाना चाहिए जो सानिओजनीय अवस्थाएँ हैं। अस्लि. 49.

2. 'इंद्रियजन्य प्यास' को फिर से छोड़ दिया गया है, जैसा कि संबंधित बेड़ी, § 1114 के विवरण में है।

3. यह ध्यान देने योग्य है कि जहाँ एक ओर ग्रंथ थिनम (स्थिरता) को चित्त-जटिलता की एक रोगग्रस्त अवस्था और मिद्धम को कायो की एक रोगग्रस्त अवस्था कहता है, वहीं बुद्धघोष ने दीघा निकाय पर अपने प्रवचन (सुम. 211) में थिनम को चित्त-गेलाइनाम (मन की बीमारी या विकार) और मिद्धम को चेतसिकगेलानाम कहा है। हालाँकि, धम्म संगानी के प्रमुख मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखने पर यह स्पष्ट असंगति दूर हो जाती है।

बुद्धघोष हमें याद दिलाते हैं कि कायो से तात्पर्य 'तीन स्कंधों' से है, जिनमें भावना, बोध और संश्लेषण शामिल हैं, अर्थात् वे तीन स्कंध जिनके माध्यम से हमें वस्तुनिष्ठ रूप से बोधित शारीरिक अवस्थाओं का व्यक्तिपरक अनुभव होता है। और चेतसिको इस अर्थ में लिए गए कायो का संगत विशेषण है (§ 1022)।

अतः दृढ़ता विन्नाना-स्कंध तक ही सीमित है, जो कि (लगभग) प्रतिनिधि बौद्धिकता है, जबकि सुस्ती मन की उसकी प्रतिनिधि और भावनात्मक पक्ष पर एक संगत विकार है।

4.अकल्याता, गिलनाभवो के समतुल्य, अस. 377, जहाँ महा विभंग, i. 62 उद्धृत है।

5. धारा 47 देखें।

6. '(निष्क्रिय) मन को किसी भी अपेक्षित मनोवृत्ति या व्यवहार में बनाए नहीं रखा जा सकता। यह पेड़ से लटके हुए चमगादड़ की तरह, या डंडी से चिपके गुड़ की तरह, या फैलाने के लिए बहुत सख्त मक्खन के टुकड़े की तरह निष्क्रिय होता है।'

(असल., वही)।

'संलग्न' (लिनम) का भावार्थ 'अविप्परिकतया पतिकुतितम' है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, बिना विस्तार के पीछे की ओर मुड़ा हुआ, जहाँ टीकाकार द्वारा परिकल्पित यह धारणा कंजूसी या कंजूसी के समान है। देखें § 1122, n. 2.

7. मिद्धम, जो साइप्रस में मेधाती (√मेड, 'मोटा होना') से लिया गया है; हमारे 'सुस्ती' में एक समान धारणा है, cf. τέρπειν, तृप्त होना, और √टार्प।

8. ओनाहो, परियोनाहो। मिल. 300; डी. i. 246 देखें। बाद वाले ग्रंथ में, 'अ' संक्षिप्त है। साइ. (असल. 378) में उपमा 'इंद्रियों (कयो) को बादल की तरह आकाश में घेर लेना' है। सुम. i. 135 में, इन दोनों शब्दों में से दूसरे का प्रयोग ढोल को 'ढकने' के लिए किया गया है।

9. अंतो-समोरोध। धर्मग्रंथ समझाता है कि जिस प्रकार मनुष्य किसी घिरे हुए शहर से बाहर नहीं निकल सकते, उसी प्रकार आलस्य से अवरुद्ध धम्म भी विस्तार या प्रसार द्वारा बाहर नहीं निकल सकता।

10. सोप्पम की इस पुनरावृत्ति पर कोई टिप्पणी नहीं है।

11. टीकाकार इस बाधा पर अपनी सामान्य टिप्पणियों में यह स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं कि खिनसावो, या अरहत के लिए, आवधिक सुस्ती या विश्राम से बुरे कर्म उत्पन्न नहीं होते। उदाहरण के लिए, बुद्ध ने कुछ ऋतुओं में भोजन के बाद झपकी लेने की अनुमति दी थी (देखें एम. i. 249), क्योंकि यह स्वयं मन को भ्रमित नहीं करता। यद्यपि, अप्रशिक्षित व्यक्ति के लिए यह बाधा इतनी प्रबल है कि अरहत मार्ग प्राप्त करने तक इसका प्रभाव समाप्त नहीं होता। अरहत अपने दुर्बल शरीर (शाब्दिक रूप से, अपने नाखून-कायो) को विश्राम देना चाहता है, परन्तु उसके लिए यह उतना ही निरर्थक कार्य है जितना रात में पत्तों और फूलों को समेटना। सुस्ती पर विजय पाने के लिए देखें ए. iv. 86।

12. धारा 429 देखें।

13. अपने मूल अर्थ में कुक्कुच्चम का अर्थ है बेचैनी, हाथों और पैरों की खराब हरकत। जाट. i. 119; ii. 142; और सुम. i. 1, 2 देखें। अतः इसका अर्थ है मानसिक बेचैनी, संशय की चिंता (शाब्दिक अर्थ, 'किसी के जूते में चुभने वाला छोटा नुकीला पत्थर'। स्केट का अंग्रेजी शब्दकोश देखें), अति संवेदनशील, अति संशयी अंतरात्मा। विनय में दिए गए संघ के नियमों के पालन के संबंध में कुक्कुच्चम के अक्सर देखे जाने वाले मामलों में — 'तस्स कुक्कुच्चम अहोसी' — या कुक्कुच्चयन्तो — संबंधित व्यक्ति पर कोई दोष नहीं लगता। कानून के अक्षरशः पालन के प्रति कमजोर अंतरात्मा की चिंता में कमजोरी थी; दूसरी ओर, गुरु के आदेशों के प्रति निष्ठा थी।

महान सारिपुत्त भी ऐसी शंकाओं से परे नहीं थे, जब विश्रामगृह में बीमार पड़ने पर उन्होंने 31वें पचित्ति नियम (विन. 4. 70) के अनुसार भोजन करने से इनकार कर दिया था। लेकिन बुद्धघोष इसे प्रशंसनीय शंका का उदाहरण मानते हैं, जिसे 'विनयकुक्कुच्चम्' के रूप में उस तीव्र पीड़ा (अनुतपो) से भिन्न माना जाना चाहिए जो किसी पाप के बोध से उत्पन्न होती है, एक ऐसी भावना जो अरहत के लिए संभव नहीं है। असल. 384. नीचे देखें, धारा 1304।

14. यहाँ वैध (कप्पियम) और अवैध शब्दों का तात्पर्य केवल पंथ के नियमित नियमों से है, जैसे भोजन के प्रकार, भोजन का समय आदि। नैतिक और अनैतिक (अवज्जम आदि) शब्दों से सद्गुण और दुर्गुण के कर्मों का तात्पर्य है। असल. 383.

15. पृष्ठ 117, नोट 7 देखें।

16.निवारणीय, सन्नोजनीय के समान समझा जाए। असल. 49.

17. प्रथम मार्ग में चिंता और उलझन का त्याग किया जाता है; तृतीय मार्ग में कामुक इच्छा और द्वेष का; चतुर्थ मार्ग में जड़ता, सुस्ती और अज्ञान का। असल. 384. (पांच) बाधाओं की उपस्थिति या अनुपस्थिति की अंतर्दृष्टि को, अ. i. 272 में, मनोसोच्यम कहा गया है।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 10

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण

- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
  - भाग 1

अध्याय X - संक्रामक रोगों पर समूह
परमास-गोच्चाकम
[1]

[पृष्ठ 316] [1174] कौन-कौन सी अवस्थाएँ संक्रामक हैं?

अटकलबाजीपूर्ण राय का संक्रमण।

इस संदर्भ में,

[1175] 'सट्टा राय का संक्रमण' क्या है?

'अनुमानित राय के मादक पदार्थ' के बारे में उत्तर दें।

अर्थात्: 'यह मानना कि दुनिया शाश्वत है, या यह कि यह शाश्वत नहीं है', आदि (धारा 1099)।

[1176] वे कौन-से राज्य हैं जो संक्रामक नहीं हैं?

उत्तर दें जैसा कि 'राज्यों के मामले में जो बाधा नहीं हैं' (§ 1163)।[2]

[1177, 1178] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) संक्रमित? (ख) असंक्रमित?

बाधाओं से संबंधित संबंधित उत्तरों के अनुसार उत्तर (धारा 1164, 1165)।

[पृष्ठ 317] [1179, 1180] वे कौन से राज्य हैं जो

(a) क्या यह संक्रमण से संबंधित है? (b) क्या यह संक्रमण से असंबंधित है?

बाधाओं से संबंधित संबंधित उत्तरों के अनुसार उत्तर (धारा 1166, 1167)।

[1181, 1182] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) क्या वे स्वयं संक्रामक और संक्रमित हैं?

यह संक्रमण स्वयं ही दोनों है।

(ख) संक्रमित लेकिन संक्रामक नहीं?

वे अवस्थाएँ जो उपर्युक्त अवस्थाओं से संक्रमित हैं; अर्थात्, बाद वाली अवस्था को छोड़कर, सभी सह-विषाक्त अवस्थाएँ, चाहे वे अच्छी हों, बुरी हों या अनिश्चित हों, चाहे वे इंद्रिय जगत से संबंधित हों, सजीव जगत से संबंधित हों या निराकार जगत से; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

[1183, 1184] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) संक्रमण से असंबद्ध होते हुए भी संक्रमित? (ख) संक्रमण से असंबद्ध और असंक्रमित?

बाधाओं पर संबंधित अनुभागों (§§ 1172, 1173) में दिए गए उत्तरों के अनुसार।

- फुटनोट:
1. साइ. (पृष्ठ 49) के अनुसार, जो व्यक्ति धम्म के प्रति सही दृष्टिकोण से भटक जाता है, अर्थात्, जो उनकी अनित्यता आदि में विश्वास खो देता है, वह स्वयं को सट्टा विचारों के संक्रामक स्पर्श के लिए खुला छोड़ देता है।

2. समरूपता के लिए एक प्रकार के संक्रमण को हमेशा बहुवचन कहा जाता है, जैसे कि उपर्युक्त अवस्थाएँ (ते धम्म थपेत्व)। असल. 385.
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 11

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
  - भाग 1

अध्याय XI - युग्मों का महान मध्यवर्ती समुच्चय
महानताराडुकम
[1]

[पृष्ठ 318] [1185, 1186] वे कौन से राज्य हैं जिनमें

(क) विचार का एक सहवर्ती वस्तु?[2]

चारों स्कंध।

(ख) विचार का कोई सहवर्ती विषय नहीं?

सभी रूप,[3] और अमिश्रित तत्व।

[1187, 1188] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) बुद्धि का?[4]

इंद्रिय-अनुभूतियों पर लागू संज्ञान; विचारणीय तत्व और वैचारिक संज्ञान का तत्व।

(ख) बुद्धि का नहीं?

भाव, बोध और संश्लेषण के स्कंध; ये सभी एक अविभाजित तत्व का रूप हैं।

[1189, 1190] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) इंद्रियों के जीवन में शामिल?[5]

[पृष्ठ 319] भावना, बोध और संश्लेषण के स्कंध।

(ख) इंद्रियों के जीवन में शामिल नहीं?

बुद्धि और सभी रूप एवं अविभाजित तत्व।

[1191, 1192] वे कौन से राज्य हैं जो

(a) विचार से संबंधित?

भाव, बोध और संश्लेषण के स्कंध।

(ख) विचार से विरक्त?

सभी रूप और अविभाजित तत्व। (विचार को स्वयं से संबद्ध या असंबद्ध के रूप में वर्णित नहीं किया जाना चाहिए।)[6]

[1193, 1194] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) विचार से जुड़ा हुआ?[7] (ख) विचार से अलग?

धारा 1191 और 1192 के अनुसार उत्तर दें, (विचार को स्वयं से जुड़ा हुआ या स्वयं से अलग नहीं बताया जाना चाहिए।)

[1195, 1196] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) विचार से उत्पन्न?[8]

भावना, बोध और संश्लेषण के स्कंध; शारीरिक और स्वर संकेत; या कोई भी अन्य रूप जो विचार से उत्पन्न होता है, विचार के कारण होता है, विचार से उत्पन्न होता है, चाहे वह दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद के क्षेत्र में हो,[9] या मूर्त, अंतरिक्ष या तरलता के तत्व, रूप की हल्कापन, प्लास्टिसिटी या सुगमता, रूप का एकीकरण या निर्वाह, या शारीरिक पोषण।[पृष्ठ 320]

(ख) विचार से उत्पन्न नहीं हुआ?

विचार; साथ ही अन्य सभी प्रकार के रूप और अविभाजित तत्व।

[1197, 1198] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) विचार के साथ अस्तित्व में आना?[10]

भावना, बोध और संश्लेषण के स्कंध; शारीरिक और मौखिक संकेत।

(ख) क्या वे विचार के साथ अस्तित्व में नहीं आते?

विचार; साथ ही अन्य सभी प्रकार के रूप,[11] और अविभाजित तत्व।

[1199, 1200] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) विचार के अनुरूप?[12] (ख) विचार के अनुरूप नहीं?

उपरोक्त दोनों उत्तरों के समान ही उत्तर दें।

[1201, 1202] वे कौन से राज्य हैं जो

(ए) विचार से उत्पन्न एआईआईडी के साथ संयुक्त?[13]

भाव, बोध और संश्लेषण के स्कंध।

(ख) विचार से जुड़ा हुआ और उससे उत्पन्न नहीं है?[14]

स्वयं विचार; समस्त रूप और अविभाजित तत्व भी।

[पृष्ठ 321] [1203, 1204] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) क्या वे विचार से जुड़े हुए और उससे उत्पन्न होते हैं, और जो एक साथ अस्तित्व में आते हैं? (ख) क्या वे ऐसे नहीं हैं जो विचार से जुड़े हुए और उससे उत्पन्न होते हैं और जो विचार के साथ अस्तित्व में आते हैं?[15]

उत्तर वही हैं जो उपरोक्त दोनों उत्तरों में दिए गए हैं।

[1205, 1206] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) क्या यह विचार से जुड़ा हुआ है, उससे उत्पन्न हुआ है और उसके बाद उत्पन्न हुआ है? (ख) क्या यह विचार से जुड़ा हुआ नहीं है, उससे उत्पन्न नहीं हुआ है और उसके बाद उत्पन्न नहीं हुआ है?

उत्तर उपरोक्त दोनों उत्तरों के समान ही होंगे।

[1207, 1208] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) स्वयं का?

पांचों इंद्रियों और चिंतन के क्षेत्र।

(ख) बाह्य?

इंद्रियों और विचारों की पाँच वस्तुओं के क्षेत्र।[16]

[1209, 1210] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) व्युत्पन्न?

पांचों इंद्रियों के क्षेत्र... और शारीरिक पोषण।[17]

(ख) व्युत्पन्न नहीं है?

चार स्कंध, चार महान घटनाएँ और अविभाज्य तत्व।

[1211-1212] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) पकड़ने का मुद्दा?[18]

सह-नशे का प्रभाव अच्छी और बुरी दोनों अवस्थाओं पर पड़ता है, चाहे वे इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, चारों स्कंध और कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले रूप पर।

[पृष्ठ 322] (ख) क्या यह समझने का मुद्दा नहीं है?

सह-नशे का प्रभाव, चाहे वह इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हो, अच्छी और बुरी अवस्थाओं का मिश्रण है; दूसरे शब्दों में, चारों स्कंध; साथ ही ऐसे क्रिया-विचार जो न तो अच्छे हैं, न बुरे और न ही कर्म के फल हैं; इसके अतिरिक्त, वे मार्ग जो अविभाजित हैं और मार्गों के फल हैं, और अमिश्रित तत्व हैं।

- फुटनोट:

1. इस पुस्तक के अध्याय III देखें। इस अध्याय में दिए गए उत्तरों पर CY कोई टिप्पणी नहीं करेगा।

2. सरम्मना.

3. पृष्ठ 169 देखें: 'विचार से रहित'। केवी 404 देखें।

4. चित्त। धारा 1022 देखें। 'अनुप्रयुक्त संज्ञान', आदि मूल शब्द चक्खुविन्नानम और शेष में है। जब निम्नलिखित युग्मों में 'अर्थ' शब्द का प्रयोग नहीं होता, तो मैंने लगभग समानार्थी शब्द 'विचार' का प्रयोग किया है।

5. सेतासिका. धारा 1022 देखें.

6. बौद्ध तर्कशास्त्र में यह परिष्करण सामान्यतः थापेत्व द्वारा शासित संक्षिप्त कोष्ठकों द्वारा व्यक्त किया जाता है, सिवाय इसके। उदाहरण के लिए, धारा 984 आदि देखें।

7. चित्त-संस्था। 'अर्थात, विचार के साथ निरंतरता, तत्काल निकटता की स्थिति में।'

असल. 49.

इसके विपरीत -विसंस्था = 'विचार के साथ निरंतरता, तत्काल निकटता की स्थिति में नहीं, यद्यपि उसके साथ एकता में आगे बढ़ रहा है'।

वही।

8.चित्त-समुत्थाना। सीएफ § 667.

9. पाठ में रसायतनम शब्द अनजाने में छूट गया है।

10.चित्त-सहभुनो.

11.अर्थात, सूचना देने के दो तरीकों को छोड़कर, जिन्हें 'रूप' माना जाता है। धारा 596 देखें।

12.Cittanuparivattina.

13. चित्त-संसत्थ-समुत्थाना। साई. इसे और निम्नलिखित दो युग्मों में पदों को द्वंद्व यौगिक के रूप में पढ़ता है।

14. पाठ में नकारात्मक शब्द का वितरण नहीं किया गया है, और 'अवस्थाओं' को योग्य बनाने वाले विशेषणों के समूह को संयुक्त रूप से लिया जाना चाहिए। यह उत्तर से सिद्ध होता है। देखें धारा 1196, 1198, साथ ही पृष्ठ 204, नोट 1।

सह-भूनो को सहा भवन्ति के रूप में जाना जाता है, भूत नहीं। असल. 49.

15. नोट 5, पृष्ठ 320 देखें।

16. सीएफ § 596.

17.धम्मयातनम.

18. एम.आई. 190 देखें।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 12
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
- भाग 1

अध्याय XII - समझने पर समूह
उपादान-गोच्चकम
[पृष्ठ 323] [1213] वे कौन से राज्य हैं जिनमें पकड़ का गुण है?[1]
[पृष्ठ 324] चार आसक्तियाँ: —
इंद्रियों को पकड़ने के बाद,
अनुमानित राय के बाद लालच,
मात्र नियमों और रीति-रिवाजों के पीछे भागने की प्रवृत्ति,
आत्मा के सिद्धांत को पाने की लालसा।
इस संदर्भ में,
[1214] इंद्रियों के पीछे भागना क्या है? वह कामुक इच्छा,
कामुक जुनून,
कामुक आनंद,
कामुक लालसा,
कामुक विच्छेदन,
कामुक बुखार,

कामुक तल्लीनता,
कामुक लोभ, जो इंद्रियों के सुखों से उत्तेजित होता है।[2]
[1215] काल्पनिक मत के पीछे भागना क्या है? 'दान, बलिदान या भेंट जैसी कोई चीज नहीं है;[3]
अच्छे या बुरे कर्मों का न तो कोई फल है और न ही कोई परिणाम;
यह लोक या परलोक जैसी कोई चीज नहीं है;[4] माता-पिता जैसी कोई चीज नहीं है, न ही उनके बिना जन्म लेने वाले प्राणी;[5]
संसार में कोई संन्यासी या ब्राह्मण नहीं हैं जो सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गए हों, जिन्होंने शिखर प्राप्त कर लिया हो, जिन्होंने स्वयं ही इस लोक और परलोक दोनों को समझकर और अनुभव करके दूसरों को भी बताया हो'[6] — इस प्रकार की सारी अटकलें,
मतों में भटकना,
मतों का जंगल,
मतों का कठपुतली शो,
मतों की लड़ाई,
मतों का बंधन,
इसकी पकड़ और दृढ़ता,
इसकी ओर झुकाव,
इससे संक्रमित होना,
यह टापों वाला रास्ता,
गलत मार्ग,
गलतता,
यह 'पार करने का स्थान',
पकड़ की यह अस्थिरता[7]
— इसे ही अटकलबाजी पर आधारित राय के पीछे भागने की प्रवृत्ति कहा जाता है।
और मात्र नियम और अनुष्ठान तथा आत्मा-सिद्धांत के प्रति आसक्ति को छोड़कर, सभी गलत विचार काल्पनिक मत के प्रति आसक्ति में शामिल हैं।
[1216] मात्र नियम और अनुष्ठान के पीछे भागना क्या है?
'केवल नियम और अनुष्ठान के संक्रमण' के लिए उत्तर दें, धारा 1005.[8]
[1217] आत्मा के बाद पकड़ क्या है सिद्धांत?
एंसिवर 'व्यक्तित्व के सिद्धांत' के लिए, § 1003.
[1218] वे कौन-से राज्य हैं जिनमें पकड़ का गुण नहीं है?
अन्य सभी अवस्थाएँ, चाहे अच्छी हों, बुरी हों या अनिश्चित हों (उपरोक्त को छोड़कर), चाहे वे इंद्रियों के जगत से संबंधित हों, या रूप के जगत से, या निराकार से, या उस जीवन से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप और अविभाजित तत्व भी।
[1219] कौन-कौन सी अवस्थाएँ हैं जो पकड़ के लिए अनुकूल हैं?
सह-नशा अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित [पृष्ठ 326] चाहे वे इंद्रिय, रूप या निराकार की दुनिया से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।
[1220] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो ग्रास्पिंग के लिए अनुकूल नहीं हैं?
वे मार्ग जो अविभाजित हैं, और उन मार्गों के फल; और अमिश्रित तत्व।
[1221-1224] वे कौन से राज्य हैं जो

(a) क्या यह लालसा से संबंधित है? (b) क्या यह लालसा से असंबद्ध है? (c) क्या यह लालसा से संबंधित है और लालसा के लिए सहायक भी है? (d) क्या यह लालसा के लिए सहायक है लेकिन लालसा नहीं है?
अन्य समूहों में संबंधित प्रश्नों के लिए दिए गए उत्तरों के बिल्कुल समान उत्तर, जैसे कि §§ 1125, 1141, 1164।
[1225-1228] वे कौन से राज्य हैं जो
(a) क्या यह पकड़ना और पकड़ना दोनों से संबंधित है?

अटकलों के बाद की समझ, इंद्रियों के बाद की समझ के साथ मिलकर, दोनों ही है, और इसके विपरीत भी।
इसी प्रकार, अन्य सभी टिवो ग्रैस्पिंग क्रियाएं उस बाद की भावना के साथ संयोजन में होती हैं, और इसके विपरीत भी।
(ख) क्या यह आसक्ति से संबंधित है, लेकिन आसक्ति नहीं है? (ग) क्या यह आसक्ति से असंबद्ध है, फिर भी इसके लिए अनुकूल है? (घ) क्या यह आसक्ति से असंबद्ध है, लेकिन इसके लिए अनुकूल नहीं है?
ऊपर निर्दिष्ट समूहों में उत्तरदाता, §§ 1125, 1141, 1164 इत्यादि[9]
- फुटनोट:
1. उपादान। बौद्ध नैतिकता में यह मूलभूत धारणा साइ. (पृष्ठ 450 और 385) में है, जिसे 'वे हिंसक रूप से लेते हैं, अर्थात् वे मजबूत पकड़ से पकड़ लेते हैं' (भूसम आदियन्ति... दलहगहम गन्हन्ति) शब्दों द्वारा व्यक्त किया गया है, उपसर्ग उप को अन्य शब्दों जैसे उपायसो और उपक्कुत्थो की तरह वर्धक अर्थ दिया गया है।
इससे पता चलता है कि, जहाँ तक बुद्धघोष द्वारा दिए गए पारंपरिक अर्थ की बात है, उनके समय के बौद्ध धर्म में यह शब्द 'आसक्ति' (जैसे, वॉरेन, 'बौद्ध धर्म अनुवाद में', पृष्ठ 189 आदि) या 'चिपकने' (हार्डी, 'मैनुअल', 394) की स्थिर अवस्था के बजाय 'पकड़ने' की गतिशील शक्ति को दर्शाता था। न ही उनकी टिप्पणी 'हैंग' या 'लेबेनस्ट्रीब' जैसे अनुवादों का समर्थन करती है (न्यूमैन, 'डाई ईडेन गोटामो बुद्धोस', पृष्ठ 104, 470)।
दूसरी ओर, फाउसबोल की 'सीजर' (एसएन इन एसबीई, एक्स., पृ. 138) और ओल्डेनबर्ग की 'एर्ग्रेफेन' ('बुद्ध', तीसरा संस्करण, 269) बुद्धघोष से सहमत हैं।
उपदानीयो शब्द का उपादन आम (समी. §§ 655, 881, 1219) से संबंध श्लोक 4:89 में सबसे स्पष्ट रूप से बताया गया है; वहाँ विशेष इंद्रियों को उपदानीय धम्म और उससे जुड़ी कामुक इच्छा को उपदान म कहा गया है। श्लोक 4:258 भी देखें। बुद्धघोष उपदानीय म पर कोई टिप्पणी नहीं करते हैं जब, जैसा कि § 1219 में है, इसे धम्म पर लागू किया जाता है; लेकिन जब यह रूपम...उपदानीयम (ध. श्लोक, §§ 655, 881) का प्रश्न होता है, तो वे इसे 'ऐसी अवस्थाएँ जो आसक्ति से बंधी होने के कारण आसक्ति के लिए अनुकूल (हित अ, शाब्दिक रूप से, अच्छी) होती हैं; दूसरे शब्दों में, ऐसी घटनाएँ जो आसक्ति के मानसिक विषयों की स्थितियाँ हैं' के रूप में परिभाषित करते हैं।
(उपादानस्सा अरम्मना-पक्काय-भूटानि)।
असल. 42.
इसी संदर्भ में, बुद्धघोष ने रूपम उपादिनम (ध. एस., § 653) को उन अवस्थाओं के रूप में परिभाषित किया है जो कर्मों के फल के रूप में प्राप्त, धारण की गई या ग्रहण की गई (गहित) हैं - जो लालसा के गुण वाले कर्मों द्वारा संचित की गई हैं। वही। किसी भी टीका में उपादानम की व्याख्या ईंधन के अर्थ में, अर्थात् पुनर्जन्म के आधार के रूप में नहीं की गई है; चारों उपादानों का सरल अर्थ है इंद्रियों (कामम उपादियाति), अटकलों आदि को पकड़ना।

2. धारा 1114 और धारा 1097 देखें; साथ ही धारा 1153 भी देखें।

3. साइ. इन निषेधों की व्याख्या केवल इस प्रकार करता है कि तीनों में से किसी में भी कोई प्रभावकारिता या फल नहीं है। असल. 385.

4. यहाँ निहित किसी भी गहन तत्वमीमांसा को अनदेखा करते हुए, साइ. इन निषेधों की व्याख्या इस प्रकार करता है कि ये निषेध किसी अन्य लोक के निवासी द्वारा इस लोक के संबंध में, या यहाँ नीचे स्थित किसी निवासी द्वारा किसी अन्य लोक के संबंध में रखे गए हैं। वही।

5. इस प्रकार जन्म लेने वाले प्राणियों के बारे में, साइ. आगे कहता है, वह मानता है कि कोई भी नहीं है; और न ही किसी के पूर्व जीवन का उसके बाद के वंश पर कोई प्रभाव होता है।

6. बुद्धघोष ने प्रचलित चिंतन के विशिष्ट रूपों के रूप में 'आत्मा (स्वयं) और संसार दोनों शाश्वत हैं' का उल्लेख किया है। इन्हें वे 'पुरिमदित्तिम उत्तरदित्तिम' कहते हैं, जो कि चाहे 'पूर्ववर्ती और पश्चातवर्ती विधर्म' हों, या 'पूर्वी और उत्तरी मत', या दोनों, समान रूप से

रोचक हैं। हालाँकि, ग्रंथ में अजित केसकंबली द्वारा प्रतिपादित विचारों को एक विशिष्ट प्रचलित चिंतन के रूप में चुना गया है। देखें डी. आई. 55 और एम. आई. 402।

7. सीएफ § 381.

8. ऊपर उल्लिखित 'मवेशी नैतिकता और प्रथाएँ' (§ 1005, n. 3) का उदाहरण Cy. Ibid. में फिर से दिया गया है।

9. प्रथम मार्ग प्रथम को छोड़कर सभी प्रकार के मोह का निवारण करता है, जिसका उन्मूलन तब तक पूरा नहीं होता जब तक कि चारों मार्गों को पार न कर लिया जाए। अस्लि. 386. इसकी तुलना §§ 1173 n., 1134 n., और 1112 n. से करें, जहाँ हर मामले में 'इंद्रिय', 'इंद्रिय-भाव' और 'इंद्रिय-इच्छा' को तीसरे या अनागामी मार्ग में पराजित होते हुए बताया गया है।

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग1-अध्याय 13

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
- भाग 1

अध्याय XIII - भ्रष्टाचार पर समूह
किलेसा-गोच्चकम
[पृष्ठ 327] [1229] वे कौन से राज्य हैं जिनमें भ्रष्टाचार का गुण है?[1]

[पृष्ठ 328] भ्रष्टाचार के दस आधार, अर्थात्: कामवासना, उलझन,
घृणा, जड़ता,
सुस्ती, उत्तेजना,
अहंकार, असावधानी,
काल्पनिक राय, दोष की उपेक्षा। [1230-1237] इस संदर्भ में,

वासना क्या है?
. . . घृणा?
. . . सुस्ती?
. . . अहंकार?
. . . सट्टा राय?
. . . उलझन?
. . . जड़ता?
. . . उत्तेजना?[2]

उत्तर m §§ 1059-1061, 1116-1118, 1156, 1159 के अनुसार हैं।

[1238] असावधानी क्या है?

जब विवेकपूर्ण संशय होना चाहिए, तब विवेकपूर्ण संशय की कोई भावना नहीं; बुरे और दुष्ट अवस्थाओं को प्राप्त करने में विवेकपूर्ण संशय की कमी।[3]

[1239] दोष की उपेक्षा क्या है?

जहां अपराधबोध होना चाहिए वहां अपराधबोध का अभाव, बुरे और पापपूर्ण अवस्थाओं को प्राप्त करने पर अपराधबोध का अभाव।

ये वे राज्य हैं जिनमें भ्रष्टाचार व्याप्त है।

[1240] वे कौन से राज्य हैं जिनमें भ्रष्टाचार का गुण नहीं है?

अन्य सभी अवस्थाएँ (अर्थात, उपर्युक्त दस को छोड़कर सभी), अच्छी, बुरी और अनिश्चित, चाहे वे इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हों, या उस जीवन से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चारों स्कंध, सभी रूप और अविभाजित तत्व हैं।

[1241, 1242] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) हानिकारक?

[पृष्ठ 329] सह-नशा अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, चाहे वे इंद्रियों, रूप या निराकार की दुनिया से संबंधित हों;[4] दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

(ख) हानिरहित?

वे मार्ग जो अविभाजित हैं, और उन मार्गों के फल, और अमिश्रित तत्व।

[1243, 1243a] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) भ्रष्ट?

बुरे कर्मों के तीन मूल, अर्थात् कामवासना, घृणा और सुस्ती, साथ ही उनसे जुड़े भ्रष्टाचार, उनसे संबंधित चार स्कंध और उनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक, वाचिक और मानसिक क्रियाएं।

(ख) भ्रष्ट नहीं?

अच्छे और अनिश्चित अवस्थाएँ, चाहे वे इंद्रिय, रूप, या निराकार के जगत से संबंधित हों, या उस जीवन से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप भी, और अविभाजित तत्व।[5]

[1244-1247] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) भ्रष्टाचार से संबंधित?
(ख) भ्रष्टाचार से असंबंधित?

(ग) क्या दोनों भ्रष्ट और हानिकारक हैं?
(घ) क्या वे स्वयं भ्रष्ट नहीं हैं?

उत्तर, 'ग्रास्पिंग्स', §§ 1221-1224 में संबंधित युग्मों के अनुसार।

[1248, 1249] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) भ्रष्टाचार और भ्रष्ट दोनों?

स्वयं भ्रष्टाचार।

(ख) भ्रष्ट लेकिन स्वयं नहीं। भ्रष्टाचार?

वे राज्य जो उन दस राज्यों के कारण भ्रष्ट हो जाते हैं, वे दस राज्य स्वयं अपवाद स्वरूप हैं; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध।

[पृष्ठ 330] [1250-1253] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार से जुड़े दोनों प्रकार के भ्रष्टाचार? कामवासना,
घृणा,
अहंकार,
अटकलबाजी
,
उलझन,
जड़ता,
उत्तेजना,
असावधानी
और दोष की अवहेलना, ये सभी सुस्ती के साथ अलग-अलग रूप से और सुस्ती इनमें से प्रत्येक के साथ मिलकर।

कामुकता, उत्तेजना के साथ, और इसके विपरीत, और इसी तरह शेष आठ आधारों के लिए।
कामुकता, असावधानी के साथ, और इसके विपरीत, और इसी तरह शेष आठ के लिए।
कामुकता, दोष की उपेक्षा के साथ, और इसके विपरीत, और इसी तरह शेष आठ के लिए।[6]

(ख) भ्रष्टाचार से जुड़े हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं?[7] (ग) बुराइयों से असंबद्ध हैं लेकिन हानिकारक हैं?
(घ) बुराइयों से असंबद्ध और हानिरहित हैं?

इन तीन प्रश्नों के उत्तर पूर्व समूहों के समान ही हैं। §§ 1226-1228, 1171-1173, आदि देखें।[8]

- फुटनोट:

1. 'किलेसा' शब्द पर बौद्ध धर्मग्रंथ मौन हैं। यह सत्य है कि यह शब्द बौद्ध अनुयायी के लिए उतना ही निकट है जितना ईसाई के लिए 'पाप'। हालांकि, सामान्यतः बुद्धघोष सुकरात के विचारों पर चलते हुए परिचित शब्दों को बिना जांचे स्वीकार नहीं करते। इस मामले में उन्होंने अपना ध्यान व्युत्पन्न शब्दों तक ही सीमित रखा है।

वैसे, संयोगवश— 'अच्छा' के अर्थ पर चर्चा करते हुए (ऊपर, § 1; अस्लायथ 62)—वह आध्यात्मिक स्वास्थ्य को क्लेश रोग की अनुपस्थिति में निहित मानते हैं, जिससे यह पता चलता है कि क्लेश बुराई या नैतिक अच्छाई की अनुपस्थिति के समानार्थक था। व्युत्पन्न शब्दों में से केवल संकिलित्था को ही अशुद्धता या गंदगी का भाव व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया गया है (चाइल्डर्स, एसवी संकिलेसो देखें), खराब मक्खन को इसी नाम से पुकारा गया है (अस्लायथ 319)।

अन्यत्र इसका अर्थ 'संकिलेसो से युक्त' बताया गया है, जबकि संकिलेसा (ऊपर, §§ 993-995; अस्लि. 42) को बोथ्ल और रोथ (क्वालन, बेलास्टिगेन) में संक्लेका के वर्णन के साथ निकटता से मेल खाते हुए परिभाषित किया गया है: 'इसका अर्थ है कष्ट देना, पीड़ा देना', जबकि संबंधित विशेषण को 'लगातार स्वयं को अपने विचारों का विषय बनाकर संकिलेसा के योग्य होना... यह शब्द उन चीजों के लिए एक पर्याय है जो संकिलेसा की स्थितियाँ (या वस्तुएँ) हैं' के रूप में वर्णित किया गया है। हालाँकि, मेरा मानना है कि आधुनिक बौद्धों के लिए शब्दों का यह समूह लगभग भ्रष्टाचार या अपवित्रता का प्रतिनिधित्व करता है; और न ही मैं कोई ऐसा अंग्रेज़ी शब्द चुन पाया हूँ जो इन्हें इनके मूल अर्थ, अर्थात् 'पीड़ा' (नैतिक अस्वस्थता के कारण) के अनुरूप व्यक्त कर सके।

'आधार' या वत्थुनी ऐसी अवस्थाएँ हैं जिन्हें यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि उनमें विकृतियाँ (वसन्ति) तात्कालिक अवस्थाओं (अनंतरा-पच्चया) के रूप में निवास करती हैं। असल. 386.

2. उत्तर में, पाठ में vupasamo की जगह avupasamo होना चाहिए।

3. धारा 387, 388 देखें।

4. अपरियापन्ना को, बेशक, मुद्रित पाठ से हटा दिया जाना चाहिए।

5. यह खंड मुद्रित पाठ में, जाहिरा तौर पर अनजाने में, छूट गया है। मतिका देखें।

6. यह बहुत स्पष्ट नहीं है, और न ही साइ. द्वारा कोई स्पष्टीकरण दिया गया है, कि इस संदर्भ में दो कारकों के स्थिरांक के रूप में भ्रष्टाचार के केवल तीसरे, आठवें, नौवें और दसवें आधारों को ही क्यों चुना गया है।

7.उत्तर में तेहि धम्मेही के बाद ये धम्म आपूर्ति करें।

8. प्रथम मार्ग में अटकलबाजी और भ्रम पर विजय प्राप्त होती है, तृतीय मार्ग घृणा का निवारण करता है, परन्तु शेष सात मार्गों पर विजय प्राप्त करने के लिए चतुर्थ मार्ग आवश्यक है। असल. 387.

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
 - पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
 - भाग 1

अध्याय XIV - युग्मों का संपूरक समुच्चय
पिट्थिडुकम
[पृष्ठ 331] [1254] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जाना है?

तीन बंधन, अर्थात्: व्यक्तिवाद का सिद्धांत, उलझन और मात्र नियम और अनुष्ठान का संक्रमण।

[1255-1257]

धारा 1003-1006 के समान।

[1258] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर नहीं किया जा सकता?

उपर्युक्त तीन अवस्थाओं को छोड़कर, सभी अवस्थाएँ, चाहे वे अच्छी हों, बुरी हों या अनिश्चित हों, चाहे वे इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हों, या उस जीवन से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप और अविभाजित तत्व भी।

[1259, 1260] वे कौन से राज्य हैं जो

(a) to he put aivay hy farming?

शेष सभी कामवासना, घृणा और सुस्ती, साथ ही उनसे जुड़े हुए भ्रष्टाचार, उनसे संबंधित चारों स्कंध और उनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक, वाचिक और मानसिक क्रियाएं।

(ख) खेती द्वारा हटाया नहीं जाना चाहिए?

उन राज्यों के लिए उत्तर दें जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर नहीं किया जाना है [§ 1258]।

[1261] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनके कारणों को अंतर्दृष्टि द्वारा दूर किया जा सकता है?

तीन बंधन, अर्थात्: व्यक्तित्व का सिद्धांत, उलझन और मात्र नियम और अनुष्ठान का संक्रमण।

[पृष्ठ 332] [1262-1264]

धारा 1003-1006 के समान।

[1265] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनके कारणों को अंतर्दृष्टि से दूर नहीं किया जा सकता?

उन 'अवस्थाओं के लिए उत्तर दें जिन्हें अंतर्दृष्टि द्वारा दूर नहीं किया जा सकता है', धारा 1258।

[1266, 1267] वे कौन सी अवस्थाएँ हैं जिनके कारण हैं

(क) क्या इसे खेती द्वारा दूर किया जा सकता है?

शेष सभी कामवासना, घृणा और सुस्ती: ये वे कारण हैं जिन्हें साधना द्वारा दूर किया जाना है।[1] और उनसे जुड़े विकार, उनसे संबंधित चार स्कंध और उनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक, वाचिक और मानसिक क्रियाएँ, वे अवस्थाएँ हैं जिनके कारणों को साधना द्वारा दूर किया जाना है।

(ख) खेती द्वारा हटाया नहीं जाना चाहिए?

एन्सिवर, 'उन राज्यों के लिए जिन्हें खेती द्वारा दूर नहीं किया जाना है', धारा 1260।

[1268-1271] वे कौन से राज्य हैं?

(क) 'जिसमें गर्भाधान कार्य करता है'?

जब चार स्कंध गर्भाधान से जुड़े होते हैं (बाद वाला शामिल नहीं है), [जो उत्पन्न होता है] ऐसी मिट्टी में जिसमें गर्भाधान कार्य करता है, या तो इंद्रिय या रूप के जगत में, या उस जीवन में जो अशाब्दिक है।[2]

(ख) 'गर्भधारण की प्रक्रिया से रहित'?

जब चारों स्कंध ऐसी भूमि में उत्पन्न होते हैं जो कल्पना से रहित हो, चाहे वह इंद्रियों, रूप या निराकार के जगत में हो, या उस जीवन में जो अविभाज्य है; तो स्वयं कल्पना भी, और समस्त रूप और अविभाजित तत्व भी।

[पृष्ठ 333] (ग) 'जिसमें विचार विवेचनात्मक कार्य करता है'? (घ) 'विवेचनात्मक विचार के कार्य से रहित'?

उत्तर ('अवधारणा' के स्थान पर 'विवेचनात्मक विचार' प्रतिस्थापित करते हुए) क्रमशः धारा 1268, 1269 के अनुसार।

[1272-1277] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) आनंदित?[3] (ख) आनंदित नहीं?

(ग) आनंद के साथ? (घ) आनंद के बिना?

(e) सहजता के साथ? (f) सहजता के बिना?

प्रत्येक प्रश्न युग्म के उत्तर धारा 1268, 1269 में दिए गए उत्तरों के समान हैं, जहाँ 'गर्भधारण' के स्थान पर 'आनंद' या 'सुकून' को उचित क्रम में प्रतिस्थापित किया गया है।

[1278, 1279] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) क्या यह निष्पक्षता के साथ होता है?

बोध, संश्लेषण और बुद्धि के तीन स्कंध,[4] जब निस्वार्थता से जुड़े होते हैं (बाद वाला शामिल नहीं है), [जो उत्पन्न होता है] इसके अनुकूल भूमि में, या तो इंद्रिय, रूप या निराकार के संसार में, या उस जीवन में जो अशाब्दिक है।

(ख) क्या यह निष्पक्षता से रहित है?

चारों स्कंध [जब उत्पन्न होते हैं] ऐसी मिट्टी में जो अनासक्ति के लिए अनुपयुक्त हो, चाहे इंद्रिय जगत में हो या रूप जगत में,[5] या उस जीवन में जो अनासक्त है; अनासक्ति स्वयं भी, और समस्त रूप और अविभाजित तत्व।

[पृष्ठ 334] [1281-1287] वे कौन से राज्य हैं जो

(ए) इंद्रियों के ब्रह्मांड से संबंधित (होना)?[6]

नीचे दुख की लहरहीन गहराई से लेकर ऊपर परिनिमित्तवासवत्ती देवताओं के स्वर्ग तक—तो वहाँ जो कुछ भी है, और उसमें समाहित है, चाहे वह स्कंध हो, तत्व हो या क्षेत्र[7]—रूप, भावना, बोध, संश्लेषण, बुद्धि: ये वे अवस्थाएँ हैं जो इंद्रिय जगत से संबंधित हैं।

(ख) इंद्रियों के ब्रह्मांड से संबंधित नहीं हैं?

रूप का ब्रह्मांड, निराकार का ब्रह्मांड और वह जीवन जो समाहित नहीं है।

(ग) रूप के ब्रह्मांड से संबंधित (जुड़ा हुआ)?

ब्रह्मलोक से लेकर ऊपर अकनित्थ देवताओं के स्वर्ग तक, सब कुछ समाहित करते हुए, जो भी अवस्थाएँ, चाहे वे इंद्रियों की हों या बुद्धि की, उनमें समाहित हैं, चाहे वे किसी ऐसे व्यक्ति की अवस्थाएँ हों जिसने [संभावित अच्छाई वाला ध्यान] प्राप्त कर लिया हो, या जिसमें [परिणामी ध्यान] उत्पन्न हुआ हो, या वर्तमान परिस्थितियों में सुखी रूप से रहने वाले व्यक्ति की अवस्थाएँ हों।[8]

(घ) क्या वे रूप के ब्रह्मांड से संबंधित नहीं हैं?

इंद्रियों का ब्रह्मांड, निराकार का ब्रह्मांड और वह जीवन जो समाहित नहीं है।

(ई) निराकार के ब्रह्मांड से संबंधित (संबंध रखना)?

'अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र'[9] के देवताओं के बीच प्रवेश द्वार को निचली सीमा मानकर, ऊपर 'उस क्षेत्र के देवताओं के बीच प्रवेश द्वार [पृष्ठ 335] तक जहाँ न तो बोध है और न ही अबोध—तो इंद्रिय और बुद्धि दोनों की जो भी अवस्थाएँ उसमें समाहित हैं और उसमें शामिल हैं, चाहे वे [संभावित अच्छाई वाले ध्यान] को प्राप्त करने वाले की अवस्थाएँ हों, या जिसमें [परिणामी ध्यान] उत्पन्न हुआ हो, या वर्तमान परिस्थितियों में सुखी रूप से रहने वाले की अवस्थाएँ हों: ये अवस्थाएँ निराकार के ब्रह्मांड से संबंधित हैं।

(f) निराकार के ब्रह्मांड से संबंधित नहीं हैं?

इंद्रियों का ब्रह्मांड,[10] रूप का ब्रह्मांड, और वह जीवन जो असंलग्न है।

(g) क्या वे शामिल हैं?

सह-नशे की अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, चाहे वे इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

(h) क्या वे असंलग्न श्रेणी से संबंधित हैं?

मार्ग, मार्गों के फल और अविभाजित तत्व।

[1288, 1289] वे कौन से राज्य हैं जिनके द्वारा

(ए) क्या कोई जा रहा है?[11]

वे चार मार्ग जो असंलग्न हैं।

(ख) क्या वहां से जाने का कोई रास्ता नहीं है?

सभी अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, उन चार को छोड़कर, चाहे वे इंद्रिय, रूप या [पृष्ठ 336] निराकार के जगत से संबंधित हों, या उस हृफ़ से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप भी, और अविभाजित तत्व।

[1290, 1291] वे कौन से राज्य हैं जो

(ए) उनके परिणामों में बर्खास्त?[12]

वे पाँच कर्म जिनके तत्काल परिणाम होते हैं, और वे गलत विचार जिनके परिणाम निश्चित होते हैं; साथ ही वे चार मार्ग जो असंलग्न हैं।

(ख) जिनके परिणाम निश्चित नहीं हैं?

धारा 1289 के अनुसार उत्तर दें।

[1292, 1293] वे कौन से राज्य हैं जिनमें

(ए) कुछ परे?[13]

सह-नशे की अवस्थाएँ, अच्छी, बुरी और अनिश्चित, चाहे वे इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हों; दूसरे शब्दों में, पाँच स्कंध।

(ख) कोई 'परे' नहीं?

वे चार मार्ग जो अविभाजित हैं, और उन मार्गों के फल, और अमिश्रित तत्व।

[1294, 1295] वे कौन से राज्य हैं जो

(क) युद्ध के साथ?[14]

[पृष्ठ 337] बुरे (कर्म) के तीन मूल: काम, घृणा और सुस्ती - और उनसे जुड़े भ्रष्टाचार; उनसे जुड़े चार स्कंध; उनसे उत्पन्न होने वाली क्रिया, शारीरिक, वाचिक और मानसिक।

(ख) युद्ध के साथ समवर्ती नहीं?

अच्छे, बुरे और अनिश्चित अवस्थाएँ, चाहे वे इंद्रियों, रूप या निराकार जगत से संबंधित हों, या उस जीवन से जो अविभाजित है; दूसरे शब्दों में, चार स्कंध; सभी रूप भी हैं, और अमिश्रित तत्व हैं।

- फुटनोट:
1. पाठ में, pahatabba-hetuka (प्रथम घटना) के स्थान पर pahatabba-hetu पढ़ें।

2. इस और निम्नलिखित युग्मों की तुलना धारा 996-998 और पृष्ठ 252, नोट 1 से करें। परिशिष्ट I, पृष्ठ 362, 363 भी देखें। पाठ में, arupavacare को हटा दिया जाना चाहिए, और pariyapanne के स्थान पर apariyapanne प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए।

3. सप्पितिका। यह शब्द सुखम, ए. आई. 81 को योग्य बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसका अर्थ पीति-सहगत (§ 1274) से कितना भिन्न है, यह मैं नहीं कह सकता।

सकारात्मक शब्दों के उत्तरों में, मुद्रित पाठ से arupavacare शब्द को हटा दिया जाना चाहिए। देखें, धारा 265 इत्यादि।

4. उपेक्षा (निरासत) वेदना या भावना का एक रूप है, और इसलिए इसे स्वयं से संबद्ध नहीं कहा जाता है।

5. मुद्रित पाठ में arupavacare शब्द को हटा दें।

6.कामवाचार. अवतारों की चर्चा मेरे परिचय (vi) में की गई है।

7.खंड-धातु-आयतन (cf K.)। मैं इसे धम्म को योग्य बनाने वाला एक विशेषणात्मक द्वंद्व यौगिक मानता हूँ, लेकिन इसके बाद के पाँच पद, स्कंध, धम्म के समरूप हैं।

8.अंतिम तीन परिधियों द्वारा प्रस्तुत तीन शब्द समपन्नस्सा, उप्पन्नस्सा और दित्थधम्मसुखविहारिसा हैं। साइ. (पृ. 888) उन्हें कुसल-झानम, विपाका-झानम और किरिया-झानम के संदर्भ में समझाते हैं। इस विषय पर आगे मेरे परिचय (viii) में चर्चा की गई है।

9. पृष्ठ 71-75 देखें।

10. यह अनजाने में मुद्रित पाठ में छूट गया है।

11. निय्यानिका। धारा 277 और उसके बाद के अनुच्छेदों में इस शब्द का अनुवाद 'जिसके द्वारा आगे बढ़ना और प्रगति करना' के रूप में किया गया है, जबकि साई. इसे कुछ अस्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं, और संदर्भ, उस संदर्भ में और इस संदर्भ में भी, यह दर्शाता है कि अभिव्यक्ति आदर्श की प्राप्ति की अपेक्षा उसकी खोज को अधिक दर्शाती है। यहाँ साई. संक्षिप्त और अधिक स्पष्ट है (असल. 50)।

इस शब्द का अर्थ है, 'वे पुनर्जन्म के चक्र को तोड़कर निर्वाण को अपना लक्ष्य बनाकर जन्म-मृत्यु के उस चक्र से मुक्त हो जाते हैं।' इसके विपरीत श्रेणी में आने वाली शुभ अवस्थाएँ वे स्थिर अवस्थाएँ हैं जो आध्यात्मिक प्रगति में पथों के फल कहलाती हैं।

12. धारा 1028-1030 देखें।

13. स-उत्तर = स्वयं (या आत्मा) को त्यागने में सक्षम। अस. 50. यह शब्द चित्तम पर लागू होता है, डी. आई. 80 में। अन-उत्तर धम्म में यह पारगमन सिद्ध हो चुका है।

14. सरना, 'उन भावनाओं आदि का पर्यायवाची, जिनसे व्याकुल होकर प्राणी अनेक तरीकों से विलाप और दुःख का शिकार होते हैं'
. . . '= झगड़ों के साथ' (सह राणेहि)।

असल. 50.

'कामवासना से जुड़ी सुस्ती कामवासना के साथ सह-युद्ध (सरानो) करती है, या घृणा से जुड़ी सुस्ती घृणा के साथ सह-युद्ध करती है।'

असल. 388.

किसी को 'शारीरिक अभिलाषाएँ जो आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती हैं' और των ηδοντων των στρατενομενων εν τοις μελεσιν υμων के ईसाई समानांतर की याद दिलाती है, हालाँकि इस मामले में हमले में सहवर्ती पर जोर नहीं दिया गया है।

थेरिगाथा सुभा में पासा पलट जाता है - 'एक अच्छा युद्ध' - उसकी प्रगति के लिए शत्रुतापूर्ण कामुक इच्छाओं के खिलाफ लड़कर (श्लोक 358, 360)।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पुस्तक3-भाग2
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
- पुस्तक 3 - 'उन्मूलन' नामक विभाजन
- भाग 2

भाग II - सुत्तंत पदों के युग्म
सुत्तंतिका-दुकाम
[1]
[1296, 1297] वे कौन से राज्य हैं जो
(क) ज्ञान का भाग लेना?[2]
वे अवस्थाएँ जो ज्ञान की सहयोगी हैं।
(ख) अज्ञानता में भाग लेना?[3]
वे अवस्थाएँ जो अज्ञानता की सहयोगी हैं।
[1298, 1299] वे कौन से राज्य हैं जिनमें

(क) बिजली की समानता?[4]
[पृष्ठ 339] तीन निम्नतम नोबल पथों का विज्ञान[5]।
(ख) वज्रपात की आकृति?
सर्वोच्च मार्ग का विज्ञान, अरहतत्व का मार्ग।
[1300, 1301] वे कौन से राज्य हैं जो
(क) मूर्ख?[6]
कर्तव्यहीनता और दोष की अवहेलना। इसके अलावा, सभी बुरी स्थितियाँ मूर्खतापूर्ण होती हैं।
(ख) विवेकपूर्ण?
विवेक और निंदा का भय। इसके अलावा, सभी अच्छे राज्य विवेकशील होते हैं।
[1302, 1303] वे कौन से राज्य हैं जो
(ए) अंधेरा?[7]
कर्तव्यहीनता और दोष की अवहेलना। इसके अलावा, सभी बुरी अवस्थाएँ अंधकारमय होती हैं।
(बी) चमकीला?
कर्तव्यनिष्ठा और निंदा का भय। इसके अलावा, सभी अच्छे राज्य उज्ज्वल होते हैं।
[पृष्ठ 340] [1304, 1305] वे कौन से राज्य हैं जो
(क) पश्चाताप को बढ़ावा देना?[8]
कर्म, वचन और विचार में दुराचार। इसके अलावा, सभी बुरी अवस्थाएँ पश्चाताप को जन्म देती हैं।
(ख) पश्चाताप को बढ़ावा नहीं देते?
कर्म, वचन और विचार में अच्छा आचरण। इसके अलावा, कोई भी अच्छी अवस्था पश्चाताप को जन्म नहीं देती।
[1306] कौन से राज्य समानार्थी हैं?[9]
[पृष्ठ 341] जो एक गणना है, जो एक पदनाम है, एक अभिव्यक्ति है, एक प्रचलित शब्द है, एक नाम है, एक संप्रदाय है, एक नाम का निर्धारण है, एक व्याख्या है, इस या उस स्थिति पर प्रवचन का एक विशिष्ट चिह्न है।
[1306ए] सभी राज्य समानार्थी नामकरण की प्रक्रियाएँ हैं।
[1307] वे कौन से राज्य हैं जो व्याख्यात्मक हैं?
धारा 1306 के अनुसार उत्तर दें।
[1307ए] सभी अवस्थाएँ व्याख्या की प्रक्रियाएँ हैं।

[1308] वे कौन-सी अवस्थाएँ हैं जो अभिव्यक्तियाँ हैं?
धारा 1306 के अनुसार उत्तर दें।
[1308ए] सभी अवस्थाएँ अभिव्यक्ति की प्रक्रियाएँ हैं।
इस संदर्भ में,
[1309] नाम क्या है?[10]
[पृष्ठ 342] चार स्कंध और अमिश्रित तत्व।
[1310] रूप क्या है?
चार महान घटनाएँ और उनसे व्युत्पन्न रूप।[11]
[1311] अज्ञान क्या है?
एन्सिवर 'सुस्ती' के लिए, § 390 ('उस अवसर पर' को छोड़कर)।[12]
[1312] नए अस्तित्व की लालसा क्या है?
'पुनर्जन्म के जुनून की बेड़ी' के लिए उत्तर दें, धारा 1120।
[1313] पुनर्जीवित अस्तित्व के बारे में सट्टा राय क्या है?
ऐसे सिद्धांत जिनमें कहा गया है कि आत्मा और संसार दोनों का पुनर्जन्म होगा, आदि।
[1314] अस्तित्व के नवीनीकरण न होने के बारे में सट्टा राय क्या है?
ऐसे सिद्धांत जिनमें कहा गया है कि आत्मा और संसार दोनों का पुनर्जन्म नहीं होगा, आदि।
[पृष्ठ 343] [1315] शाश्वतवाद के नाम से जानी जाने वाली अटकलों का प्रकार क्या है?
आत्मा और संसार दोनों शाश्वत हैं, इत्यादि।
[1316] विनाश के नाम से जानी जाने वाली अटकलों का प्रकार क्या है?
आत्मा और संसार दोनों का नाश हो जाएगा, इत्यादि।
[1317] परिमित सिद्धांत के नाम से जानी जाने वाली अटकलों का प्रकार क्या है... [1318] अनंत सिद्धांत?
आत्मा और संसार दोनों ही परिमित हैं... अनंत हैं, इत्यादि।
[1319] उत्पत्ति के सिद्धांत के रूप में जानी जाने वाली अटकलों का प्रकार क्या है... [1320] परलोक का सिद्धांत?
परम अतीत से संबंधित सिद्धांत... भविष्य से संबंधित सिद्धांत।
इस तरह की राय,
राय के जाल में चलना,
राय का जंगल,
राय का विकराल मैदान,
राय की कठपुतली,
राय की खींचतान,
राय की बेड़ी,
इसकी पकड़ और दृढ़ता,
इसकी ओर झुकाव,
इससे संक्रमित होना,
यह टेढ़ा रास्ता,
गलत राह,
गलत होना,
यह 'पार करने की जगह',
पकड़ की यह अस्थिरता
— इसे ही नवगठित अस्तित्व और बाकी के बारे में सट्टा राय कहा जाता है।[13]
[1321] असावधानी क्या है? . . . [1322] दोष की उपेक्षा?
भ्रष्टाचार के नौवें और दसवें आधारों के लिए उत्तर, धारा 1238, 1239।

[पृष्ठ 344] [1323] कर्तव्यनिष्ठा क्या है?
जब विवेकपूर्ण संशय होना चाहिए तब विवेकपूर्ण संशय का अनुभव करना, बुरे और पापपूर्ण अवस्थाओं को प्राप्त करने पर विवेकपूर्ण संशय का अनुभव करना।
[1324] निंदा का भय क्या है?
अपराधबोध की भावना जहाँ अपराधबोध महसूस किया जाना चाहिए, बुरे और दुष्ट अवस्थाओं को प्राप्त करने पर अपराधबोध की भावना।[14]
[1825] अवज्ञा क्या है?[15]
जब कानून के अनुसार कुछ कहा गया हो तो चिड़चिड़ा, विद्रोही, अवज्ञाकारी होना, विरोधाभास, आलोचना, सम्मान, विचार, श्रद्धा, आदर की कमी।[16]
[1326] बुराई से दोस्ती क्या है?
अविश्वासी, अनैतिक, अशिक्षित, नीच स्वभाव वाले[18] और बुद्धिहीन[19] व्यक्तियों का अनुसरण करना, उनकी संगति में बार-बार जाना और उनसे जुड़ना[17], उनका सहारा लेना और उनके साथ मेलजोल रखना[पृष्ठ 345], उनके प्रति समर्पित होना, उनके बारे में उत्साही होना[20] और उनसे उलझ जाना[21]
[1327] सौम्यता क्या है?
जब कानून के अनुसार बात कही गई हो, तो विनम्र, आज्ञाकारी[22] होना, विरोध और आलोचना से बचना; सम्मान और विचार[23] दिखाना, आदर और सम्मान।
[1328] अच्छाई के साथ मित्रता क्या है?
विश्वासियों, गुणी, सुशिक्षित, उदार और बुद्धिमान व्यक्तियों का अनुसरण करना, उनकी संगति में रहना और उनके साथ मेलजोल रखना; उनके पास जाना और उनके साथ रहना, उनके प्रति समर्पित रहना, उनके प्रति उत्साही रहना और उनके साथ घुलमिल जाना।
[1329-1332] कौशल क्या है?
(क) अपराध? (ख) अपराधों से मुक्ति?
(ग) उपलब्धियाँ? (घ) उपलब्धियों से उबरना?
वह कौशल जो विज्ञान, समझ, खोज, अनुसंधान आदि है,[24] जब इसे लागू किया जाता है
[पृष्ठ 346] (क) अपराध जिन्हें पाँच समूहों के अपराध
और सात समूहों के अपराध कहा जाता है;[25] (ख) उन अपराधों के [प्रभावों से] बहाली;[26]
(ग) प्राप्ति का एक मामला[27] जहाँ 'अवधारणा कार्य करती है और विचार विवेचनात्मक होता है',
प्राप्ति का एक मामला 'जिसमें अवधारणा का कोई कार्य नहीं होता, बल्कि केवल विचार विवेचनात्मक होता है',
प्राप्ति का एक मामला 'अवधारणा और विचार विवेचनात्मक के कार्य से रहित';
(घ) उन उपलब्धियों से पुनर्प्राप्ति।[28]
[पृष्ठ 347] [1333] तत्वों में प्रवीणता क्या है?[29]
वह दक्षता जो विज्ञान,
समझ,
खोज,
अनुसंधान
आदि है, जब अठारह तत्वों पर लागू होती है, अर्थात्: दृष्टि, दृश्य वस्तु और दृश्य अनुभूति,
श्रवण, ध्वनि और श्रवण अनुभूति,
गंध, गंध और घ्राण अनुभूति,
स्वाद, स्वादिष्ट वस्तु और स्वाद अनुभूति,
देह संवेदनशीलता, मूर्त और स्पर्श अनुभूति,
मन, मानसिक वस्तु और प्रतिनिधि अनुभूति। [1334] ध्यान में दक्षता क्या है?[30]
ध्यान लगाने की वह निपुणता, जो विज्ञान, समझ आदि है, जब उन तत्वों पर लागू की जाती है।
[1335] क्षेत्रों में कौशल क्या है?[31]

वह कौशल जो विज्ञान, समझ आदि है, जब बारह क्षेत्रों पर लागू किया जाता है, अर्थात्, दृष्टि और दृश्य रूप, श्रवण और ध्वनि, गंध और गंधयुक्त वस्तु, स्वाद और स्वादयुक्त वस्तु, शरीर संवेदनशीलता और स्पर्शनीय, मन और मानसिक वस्तु।[32]

[पृष्ठ 348] [1336] 'कंडीशन्ड जेनेसिस' में कौशल क्या है?

विज्ञान, समझ आदि, जब इस सूत्र पर लागू होते हैं: 'संश्लेषण अज्ञान के कारण होते हैं;

ज्ञान संश्लेषण के कारण होता है;

नाम और रूप ज्ञान के कारण होते हैं;

छह गुना क्षेत्र नाम और रूप के कारण होते हैं;

संपर्क छह प्रकार के क्षेत्रों के कारण होता है,

संपर्क के कारण भावना,

भावना के कारण लालसा, लालसा के

कारण आसक्ति, आसक्ति के

कारण पुनर्जन्म, पुनर्जन्म

के कारण जन्म,

वृद्धावस्था और मृत्यु, शोक, विलाप, पीड़ा, उदासी और निराशा जन्म के कारण होते हैं।

इस पूरे दुष्ट समूह का विद्रोह ऐसा ही है।[33] [1337, 1338] पुष्टि करने में कौशल क्या है ... [कारण संयोजन] को नकारने में?

विज्ञान, समझ, आदि, जब किसी दिए गए परिस्थिति में यह पता लगाने के लिए लागू किया जाता है कि कुछ अवस्थाएँ . . . नहीं हैं, कुछ अन्य अवस्थाओं का कारण और स्थितियाँ हैं।[34]

[1339] सीधा क्या है?

बिना झुकाव, मरोड़ या टेढ़ेपन के सीधा खड़ा होना।

[1340] नरम क्या है?

जो लचीलापन, कोमलता, सहजता, कोमलता, हृदय की विनम्रता है।[35]

[पृष्ठ 349] [1341] धैर्य क्या है?

वह धैर्य जो सहनशीलता, आज्ञाकारिता, अशिष्टता और अचानकता की अनुपस्थिति, हृदय की संतुष्टि है।[36]

[1342] संयम क्या है?

जो कर्म, वचन और कर्म तथा वचन दोनों में अतिरेक की अनुपस्थिति है।[37]

इसके अलावा, सभी नैतिक आत्म-संयम ही संयम है।

[1343] मैत्री क्या है?[38]

जब ऐसी सभी बातें जो अभद्र,[39] अप्रिय,

कर्कश,

दूसरों के लिए कठोर,

दूसरों के लिए अपमानजनक ,

क्रोध की सीमा पर,

एकाग्रता के लिए अनुकूल नहीं हैं,

उन्हें दूर कर दिया जाता है, और जब ऐसी सभी बातें जो हानिरहित,[40]

कानों को सुखद,[41] स्नेहपूर्ण,

हृदय को छूने वाली,

शिष्ट,[42]

मधुर और आम लोगों को स्वीकार्य हैं — जब इस प्रकार की भाषा बोली जाती है — परिष्कृत, मैत्रीपूर्ण और सौम्य भाषा — इसे ही मित्रता कहा जाता है।

[1344] शिष्टाचार क्या है?

शिष्टाचार के दो रूप: शारीरिक आवश्यकताओं के प्रति आतिथ्य सत्कार और सिद्धांत के मामलों में विचारशीलता। जब कोई शिष्टाचार दिखाता है तो वह इन दो रूपों में से किसी एक में होता है।[43]

[1345] क्या है जब इंद्रियों का द्वार असुरक्षित है?[44]

[पृष्ठ 351] जब कोई व्यक्ति[45] किसी वस्तु को आँख से देखता है[46], तो वह उसके सामान्य स्वरूप या उसके विवरणों में मोहित हो जाता है।[47] वह उन भावनाओं को नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करता जो उसके भीतर दुष्ट, लोभी, उदास और नकारात्मक भावनाओं को जन्म दे सकती हैं, यदि वह दृष्टि के संबंध में अनियंत्रित रहे। वह अपनी दृष्टि शक्ति पर नियंत्रण नहीं रखता और न ही उस पर महारत हासिल करता है।

और इसी प्रकार जब वह कान से कोई ध्वनि सुनता है... नाक से कोई गंध सूंघता है... जीभ से किसी स्वाद का अनुभव करता है... शरीर से किसी स्पर्शनीय वस्तु को महसूस करता है... मन से किसी मानसिक वस्तु को पहचानता है, तो वह उसके सामान्य स्वरूप और उसके विवरणों से मोहित हो जाता है।

वह उन चीजों को रोकने का प्रयास नहीं करता जो दुष्ट, लालची और निराश जैसी भावनाओं को जन्म दे सकती हैं, यदि वह मानसिक क्षमता के मामले में अनियंत्रित रहे।

वह मानसिक क्षमता पर न तो निगरानी रखता है और न ही उस पर महारत हासिल करता है।

इन छह क्षमताओं का इस प्रकार [पृष्ठ 352] असुरक्षित, उपेक्षित, निगरानी रहित, अनियंत्रित होना ही क्षमताओं के द्वार को असुरक्षित रखना कहलाता है।

[1346] आहार में अतिरेक क्या है?[48]

जब कोई व्यक्ति लापरवाही और विवेक के बिना खेल,[50] कामुक अतिरेक, व्यक्तिगत आकर्षण और अलंकरण के प्रयोजनों के लिए भोजन[49] लेता है, तो उसकी अतृप्ति, असंयम और विवेक की कमी को आहार में असंयम कहा जाता है।

[1347] संकायों के द्वारों की सुरक्षा का क्या अर्थ है?

जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को अपनी आंखों से देखता है तो वह उसकी सामान्य दिखावट या उसके विवरण से मोहित नहीं होता है।

वह अपने आप को उन चीजों को नियंत्रित करने के लिए दृढ़ संकल्पित करता है जो दुष्ट, लालची, उदास जैसी भावनाओं को उस पर हावी होने का कारण बन सकती हैं, यदि वह दृष्टि के संबंध में अनियंत्रित रूप से रहता है।

वह अपनी इस दृष्टि शक्ति पर नियंत्रण रखता है और उस पर महारत हासिल करता है। इसी प्रकार, जब वह कानों से कोई ध्वनि सुनता है... नाक से कोई गंध सूंघता है... जीभ से किसी स्वाद का अनुभव करता है... शरीर से किसी वस्तु को स्पर्श करता है... मन से किसी विचार को पहचानता है, तो वह उसके सामान्य स्वरूप और बारीकियों में मोहित नहीं होता।

वह अपने आप को उन चीजों को नियंत्रित करने के लिए दृढ़ संकल्पित करता है जो दुष्ट, लालची, उदास जैसी भावनाओं को उस पर हावी होने का कारण बन सकती हैं, यदि वह मानसिक क्षमता के संबंध में अनियंत्रित रहता है।

वह मानसिक क्षमता पर नजर रखता है और उस पर महारत हासिल करता है।

इन छह क्षमताओं की इस प्रकार रक्षा करना, देखभाल करना, निगरानी रखना, [पृष्ठ 353] नियंत्रित करना, इसे ही क्षमताओं के द्वारों की रक्षा करना कहा जाता है।

[1348] आहार में संयम क्या है?

जब कोई व्यक्ति विचार और विवेक के साथ भोजन ग्रहण करता है, खेल, अतिरेक, व्यक्तिगत आकर्षण और मोहक गुणों के लिए नहीं, बल्कि शरीर के भरण-पोषण और संरक्षण के लिए, भूख की पीड़ा को शांत करने के लिए, और उच्चतर जीवन के अभ्यास में सहायता के लिए, और यह सोचते हुए कि 'मैं अपनी भावनाओं को वश में करूँगा और कोई नई भावना उत्पन्न नहीं होने दूँगा, और मेरा भरण-पोषण, निर्दोषता और आराम सुनिश्चित होगा' - आहार में यह संतोष, संयम और विवेक ही आहार में संयम कहलाता है।

[1349] विस्मृति क्या है?[54] [पृष्ठ 354] असावधानी,

स्मृति का लोप,

स्मरण न होना, याद न रखना,

सतहीपन , विस्मृति। [1350] बुद्धि का अभाव क्या है?

'अज्ञानता' या 'मंदबुद्धि' के लिए धारा 1311 आदि के अनुसार उत्तर दें।

[1351] माइंडफुलनेस क्या है?
धारा 14 के अनुसार उत्तर दें, 'उस अवसर पर' को हटा दें।[55]
[1352] बुद्धि क्या है?
'बुद्धि' या 'विज्ञान' के लिए उत्तर दें, धारा 16. और धारा 53 देखें।
[1353] गणना की शक्ति क्या है?[56]
'बुद्धि' के लिए उत्तर दें, धारा 16.
[1354] खेती की शक्ति क्या है?
जो अच्छे राज्यों की खोज, संवर्धन और वृद्धि का माध्यम है।
इसके अलावा, महान जागृति[57] में सात कारक साधना की शक्ति हैं।
[1355] संयम क्या है?
'शांत' के लिए उत्तर दें, §§ 11, 54.[58]
[1356] अंतर्दृष्टि क्या है?
'अंतर्दृष्टि' और 'बुद्धि' के लिए उत्तर दें, धारा 55, 16.
[पृष्ठ 355] [1357] 'संयम का चिह्न' क्या है?[59]
'शांत' के लिए उत्तर दें, धारा 1357.
[1358] 'पकड़ का निशान' क्या है?
'पकड़' और 'ऊर्जा' के लिए उत्तर दें, धारा 56, 13.
[1359] पकड़ क्या है?
'पकड़ के निशान' के लिए उत्तर दें, धारा 1358।
[1360] संतुलन क्या है?
धारा 57 के अनुसार 'संतुलन' के लिए उत्तर दें।
[1361] नैतिक विफलता क्या है?[60]
कर्मों में अति, शब्दों में अति, और दोनों में अति। इसके अलावा, सभी अनैतिकता नैतिक विफलता है।
[1362] सैद्धांतिक भ्रांति क्या है?[61] 'दान, बलिदान या भेंट जैसी कोई चीज नहीं है; अच्छे या बुरे कर्मों का न तो कोई फल है और न ही कोई परिणाम;
इस लोक या परलोक जैसी कोई चीज नहीं है;
माता-पिता या उनके बिना जन्म लेने वाले प्राणियों जैसी कोई चीज नहीं है;
संसार में ऐसे कोई संन्यासी या ब्राह्मण नहीं हैं जो सर्वोच्च शिखर पर पहुँच चुके हों, जिन्होंने शिखर प्राप्त कर लिया हो, जिन्होंने स्वयं ही इस लोक और परलोक दोनों को समझकर और अनुभव करके दूसरों को भी बताया हो'— इस प्रकार की सभी अटकलें... यही सैद्धांतिक भ्रांति कहलाती हैं। इसके अलावा, सभी गलत विचार सैद्धांतिक भ्रांतियाँ हैं।
[1363] नैतिक प्रगति क्या है?
कर्म, वचन और कर्म तथा वचन दोनों में अतिरेक का अभाव।[62]
[1364] सैद्धांतिक प्रगति क्या है? 'दान, बलिदान और भेंट जैसी चीज़ें होती हैं;
... अच्छे और बुरे कर्मों का फल और परिणाम;
... यह [पृष्ठ 356] लोक और अगला लोक;
माता, पिता और उनके बिना जन्म लेने वाले प्राणी;
... संन्यासी और ब्राह्मण जो उच्चतम स्तर पर पहुँच चुके हैं, जिन्होंने शिखर प्राप्त कर लिया है, जिन्होंने स्वयं ही इस लोक और दूसरे लोक दोनों को समझकर और अनुभव करके दूसरों को भी बताया है' - इस प्रकार का सारा विज्ञान,
समझ
आदि [63] ... इसे ही सैद्धांतिक प्रगति कहा जाता है। इसके अलावा, सभी सही विचार सैद्धांतिक प्रगति हैं।
[1365] नैतिकता में पवित्रता क्या है?
कर्म, वचन और कर्म एवं वचन दोनों में अतिरेक का अभाव।[64]

[1366] सिद्धांत में शुद्धता क्या है?
कर्म की विशिष्ट प्रकृति का ज्ञान;[65] सत्यों का उनके उचित क्रम में ज्ञान; मार्ग धारण करने वाले का ज्ञान; मार्ग के फल को धारण करने वाले का ज्ञान।
(i.)[66] वाक्यांश 'अब सिद्धांत की शुद्धता' उस विज्ञान के बराबर है, समझ . . . सही सिद्धांत (विचार) [ऊपर वर्णित, § 16]।
(ii) वाक्यांश 'और जैसे कि कुछ विचारों को धारण करने वाले का संघर्ष',[67] में 'संघर्ष' का अर्थ ऊर्जा आदि की शुरुआत है [ऊपर वर्णित, § 13]।
[पृष्ठ 358] (iii.) 'आंदोलन' वाक्यांश जन्म के भय, वृद्धावस्था के भय, बीमारी के भय, मृत्यु के भय को दर्शाता है।
(iv.) 'आंदोलन का अवसर' वाक्यांश का अर्थ है जन्म, वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु।
(v.) 'और जो उत्तेजित है उसका गंभीर संघर्ष' वाक्यांश [चार अष्ट संघर्षों] को संदर्भित करता है:
— जब कोई भिक्षु यह इच्छा उत्पन्न करता है (क) कि जो बुरी और दुष्ट अवस्थाएँ उत्पन्न नहीं हुई हैं वे उत्पन्न न हों,
(ख) कि जो बुरी और दुष्ट अवस्थाएँ उत्पन्न हो चुकी हैं उन्हें दूर किया जाए,
(ग) कि जो अच्छी अवस्थाएँ उत्पन्न नहीं हुई हैं वे उत्पन्न हों,
(घ) कि जो अच्छी अवस्थाएँ उत्पन्न हो चुकी हैं वे स्थिर रहें, भ्रमित न हों, उनका बार-बार अभ्यास किया जाए, उन्हें प्रचुर मात्रा में बनाया जाए, उनका विकास किया जाए और उन्हें परिपूर्ण किया जाए — तब वह प्रयास करता है, ऊर्जा लगाता है, विचार में आगे बढ़ता है और संघर्ष करता है।[68]
(vi.) वाक्यांश 'और अच्छे राज्यों में असंतोष' का अर्थ है अच्छे राज्यों की खेती से असंतुष्ट व्यक्ति में उच्च उपलब्धि की लालसा।[69]
(vii.) वाक्यांश 'और संघर्ष में पीछे न हटना' का अर्थ है संपूर्ण, निरंतर और अविचल प्रदर्शन, ठहराव की अनुपस्थिति, अडिग इच्छाशक्ति, अडिग सहनशीलता,[70] परिश्रमी खोज, अभ्यास और पुनरावृत्ति जो अच्छे राज्यों की खेती के साथ होती है।
[पृष्ठ 359] (viii.) 'ज्ञान' वाक्यांश का अर्थ तीन प्रकार का ज्ञान है, अर्थात् (क) अपने पूर्व जन्मों का स्मरण,
(ख) प्राणियों के पुनर्जन्म और पुनरागमन का ज्ञान,
(ग) मादक पदार्थों का अंत करने वाला ज्ञान। (ix.) 'मुक्ति' वाक्यांश का अर्थ दो प्रकार की मुक्ति है, अर्थात् (क) विचार का वैराग्य,[71] और
(ख) निर्वाण।[72] (x.) 'अंत करने का ज्ञान' वाक्यांश का अर्थ उस ज्ञान से है जो मार्ग धारण करने वाले के पास होता है।
(xi.) 'उत्पत्ति में ज्ञान' वाक्यांश का अर्थ है वह ज्ञान जो उसके पास है जो मार्ग का फल धारण करता है।
'एलिमिनेशन' नामक डिवीजन का अंत।
- फुटनोट:
1. इस शीर्षक पर प्रस्तावना में चर्चा की गई है।

2.विज्जभगिनो, यानी, "वे (धम्म) ज्ञान के साथ जुड़कर (भजन्ति) ज्ञान का हिस्सा बनते हैं, वे ज्ञान के भागों या विभाजनों के रूप में वर्संतुर (वत्तन्ति) करते हैं"
(असल. 50).
बौद्ध विज्या के आठ तरीकों में से, अर्थात्: अंतर्दृष्टि से उत्पन्न ज्ञान (विपस्सनानाम्), 'मानसिक छवि' की क्षमता (इद्धि), और अंतर्ज्ञान के छह रूप (अभिन्न) - यहाँ केवल पहले का उल्लेख किया गया है (cf D. i., p. 76 et seq., and Childers, s.vv.).
पाठक को याद होगा कि विज्जा शब्द बौद्ध नैतिकता द्वारा ब्राह्मणवादी सिद्धांत से लिया गया है। देखें अभिव्यक्ति तिस्सो विज्जा, पृष्ठ 358। यह लगभग हमारे 'ज्ञान' के समतुल्य है।
अंगुत्तरा (iii. 334) में छह राज्यों को विज जा-भागीय कहा गया है।

3. चारों सत्यों के संबंध में अज्ञानता। असल. 51.

4. इस और निम्नलिखित उपमा पर विस्तार से चर्चा की गई है (असल. 388), जैसा कि नीचे दिया गया है: चरण
यात्री अंधकार में अपनी यात्रा शुरू करता है।
वह रास्ता भटक जाता है।

बिजली चमकती है और रोशनी बिखेर देती है।
सड़क फिर से समतल हो गई है।
अतः 'महान' शिष्य को यह प्राप्त होता है:
प्रथम (द्वितीय या तृतीय) पथों के लिए अंतर्दृष्टि निर्माण की शुरुआत;
अंधकार द्वारा सत्य का विनाश;
इस मार्ग की महिमा प्रकट होती है;
चारों सत्य स्पष्ट कर दिए गए हैं।
लेकिन अरहतत्व की विजय की शक्ति के वज्रपात में हमें यह उपमा मिलती है:
एक सर्वव्यापी शक्ति,
इसके आने का रहस्य।
ईजनरेशन के संदर्भ में हवा के बारे में देखें, जॉन iii. 8.

5. पन्ना, जिसे अन्यत्र 'ज्ञान' के रूप में अनुवादित किया गया है। § 17 देखें और n. 3 की तुलना करें।
यहां 'विज्ञान' को उसके आधुनिक अर्थ में संगठित ज्ञान और उस ज्ञान को प्राप्त करने और स्थापित करने के लिए जांच और सत्यापन की संगठित विधियों के रूप में नहीं, बल्कि प्लेटो और अरस्तू के अर्थ में ἐπιστήμη, या राय के बौद्धिक विपरीतार्थक शब्द के रूप में समझा जाना चाहिए।

6. बाला, जिसका विपरीत पंडित है, जो पैना में भाग लेता है। धारा 16 देखें, जहाँ संज्ञा रूप, पाण्डिसे आम, को 'विद्वत्ता' के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और (असल. 147) इसे पाण्डितस्स भावो के रूप में व्याख्यायित किया गया है, जो एक विवेकशील व्यक्ति की अवस्था है, वह व्यक्ति जिसमें विवेक और समझ है, वह व्यक्ति जिसने 'अच्छा मार्ग चुना है', जो 'औसत कामुक व्यक्ति' या मूर्ख युवक के विपरीत है।
उत्तरों के लिए धारा 30, 31 देखें।

7. नैतिक महत्व के संदर्भ में प्रयुक्त कान्हा और सुक्का के बारे में, देखें एम. आई., 389; डीएचपी., संस्करण 87; मिल. 200. (तुलना करें 'राजा मिलिंदा के प्रश्न', आई. 284, नोट 2.)

8. तपनिया। जबकि हम 'पश्चाताप' में 'अनैतिकता के अयनबाइट' को उजागर करते हैं, बौद्ध शब्द उस गर्मी की लहर को संदर्भित करता है जब किए गए बुरे काम का एहसास होता है।

9.यह और निम्नलिखित दो प्रश्नों के विषय क्रमशः अधिवचन, निरुति और पन्नति हैं।
तीनों को (असली. 51) 'अर्थ में अभिसरण' (अत्थतो निन्नकरण) कहा जाता है, हालाँकि उनका रूप विविध है।
'भाग्य बढ़ाने वाला धन बढ़ाने वाला होता है' इस वाक्यांश में दोनों शब्द परस्पर परिभाषित हैं। यही अधिवचनम है।
'वे रचना करते हैं (या संयोजन करते हैं, अभिसंखारोंति), भाइयों, और इसलिए "संश्लेषण" हैं' इस वाक्यांश में कारण के साथ-साथ तथ्य का भी कथन है, जैसे प्रवचन (अभिलाप) में होता है। . . .
वाक्यांश 'मन की तर्कसंगतता, अवधारणा, स्वभाव' (ऊपर देखें, § 7) में, कुछ इस तरह या उस तरह से निर्धारित किया जाता है; और यह पन्नाट्टी है।
उपरोक्त से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिवचन द्वारा शब्दों की सरल समतुल्यता स्थापित की जानी है। अनुवाद करते समय 'है' या 'हैं' को केवल '=' के रूप में समझा जाना चाहिए, न कि किसी व्यापक अर्थ में समावेशन के रूप में। यह शब्द चीनी शास्त्र में हर जगह आता है, और इन फुटनोट्स में इसे आमतौर पर 'के समतुल्य' के रूप में अनुवादित किया गया है। जाट शास्त्र i. 117; दिव. 491 में एक अच्छा उदाहरण देखें।
दूसरा उदाहरण और टिप्पणी स्पष्टीकरण से हमारा तात्पर्य स्पष्ट करते हैं। लेकिन संदर्भ के अभाव में उद्धृत तीसरे अंश से पाफिनाटी के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना आसान नहीं है।

तीनों प्रश्नों के सामान्य उत्तर पर आते हुए, साइ. उन चीजों के उदाहरण देता है जिन्हें वर्गीकृत (संख), नामित (समन्ना), व्यक्त और प्रचलित (वोहारो) किया जाता है, जैसे कि 'मैं', 'दूसरा', 'एक आदमी', 'पशु', 'टिसो', 'एक बिस्तर', 'एक घर', आदि।
नाम प्रदान करने के आधारों के दृष्टिकोण से नाम चार प्रकार का होता है, अर्थात्:
किसी विशेष अवसर पर आम सहमति से दिया गया (समनफिया-नामम), उदाहरण के लिए, प्रथम राजा महासम्मतो के अवसर पर;
किसी व्यक्तिगत गुण (गुण-नामम) के कारण दिया गया, उदाहरण के लिए, विनय शास्त्र में पारंगत होना;
किसी निजी इच्छा या शौक के कारण दिया गया नाम (कित्तिमानामम), जैसे किसी शिशु का नामकरण;
नहीं दिया गया; आदिम उत्पत्ति का; मूलतः आकस्मिक (ओपपटिकनमणि), जैसे, 'चंद्रमा', 'पृथ्वी', आदि।
धारा 1309, एन. में आगे देखें।
नामकरण आदि की प्रक्रियाएँ — अधिवचनपथ, आदि।
टीकाकार का निष्कर्ष है कि ऐसा कोई प्राणी या यौगिक नहीं है जिसका कोई न कोई नामकरण न हो। रेगिस्तान और पहाड़ी इलाकों के पेड़ों का भी नाम ग्रामीण लोग रख देते हैं। और यदि वे किसी एक प्रजाति का नाम न जानने की बात स्वीकार करते हैं, तो उसे 'नामहीन' कहा जाता है। उदाहरण के लिए, हमारे OS innominatum, या Pic Sans-nom, आदि देखें।
'विशिष्ट चिह्न' व्यंजनम् है।

10. यहाँ, साई. नाम-प्रकारों के अपने पूर्वोक्त वर्गीकरण का उपयोग यह दर्शाने के लिए करता है कि नाम को रूप से अलग करते समय किस श्रेणी में रखा जाए। नाम को, अर्थात्, ओपतिका-नाम के रूप में समझा जाना चाहिए, यानी इसके सभी घटकों को इसी प्रकार समझा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, भावना जब उत्पन्न होती है, तो उसका नामकरण उन आधारों पर नहीं किया जाता जिन पर किसी नए व्यक्ति या 'कृत्रिम प्रकार' - मेज आदि - का नामकरण किया जा सकता है। 'इसका नाम यह कहकर नहीं रखा जाना चाहिए, "तुम्हें भावना कहा जाए!" नाम इसके साथ ही उत्पन्न हुआ है।'
(पृष्ठ 392)।
यहां 'अमिश्रित तत्व' से फिर से निर्वाण की बात की गई है। वही। ऊपर देखें, पृष्ठ 166, नोट 1।

11. धारा 584 देखें। प्रश्न का अधिक संक्षिप्त रूप: tattha katamaip ... अब अंत तक बना रहेगा। अब तक इसका प्रयोग केवल छात्र से किसी दिए गए उत्तर के विवरण, जैसे कि पिछले उत्तर के भाग के रूप में 'नाम', पर प्रश्न पूछने के लिए किया जाता था। अतः tattha का अनुवाद 'इस संदर्भ में' किया गया है (चाहे इस शब्द का अन्यत्र कोई भी अर्थ हो)। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि इन अंतिम सत्तावन प्रश्नों में tattha का क्या अर्थ है, क्योंकि इनमें से अधिकांश विषय नियमावली के पूर्ववर्ती भाग में नहीं आए हैं।

12. प्रश्नों की यह जोड़ी 'यह दिखाने के लिए शामिल की गई है' कि निम्नलिखित जोड़ियों में विचारों का समूह 'पुनर्जन्म के चक्र की जड़ से एक उत्थान है'।
असल. 392.

13. यह दित्थी सूत्र (देखें §§ 381, 1099) भी उपरोक्त सभी काल्पनिक मतों के उत्तरों के साथ संलग्न है। इनमें से पहले दो (भाव और विभाव) को साई. (पृष्ठ 392) में क्रमशः अगले दो से जोड़ा गया है (देखें § 1099)। सभी आठों का विवरण और विवेचना ब्रह्मजाल सूत्र, डी. i. 13-40 में दी गई है। साई. स्वयं अंतिम दो सिद्धांतों के संदर्भ में इस सूत्र का उल्लेख करता है।
यह भी देखें 'बुद्ध के संवाद', i. 26, n. 3.

14. धारा 80, 31 देखें।

15.डोवाकासाटा। 'चिड़चिड़ा' के लिए सी. (पृष्ठ 398) और के. डोवाकासायम पढ़ते हैं।

16. उत्तर में पहले तीन पद मूल रूप से एक ही अमूर्त संज्ञा के अलग-अलग रूप हैं, जैसे: dovacassayam, dovacassiyam, dovacassata.

चौथे शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'विपरीत पक्ष लेना'।
पांचवां शब्द शाब्दिक रूप से 'विरोध में संतुष्टि' है।
इसका कारण दूसरों को स्वयं से पहले रखने की आदत का अभाव बताया गया है। असल. 393.
इस शब्द को अंत में यह कहकर खारिज कर दिया गया है कि यदि इसे इसी प्रकार जारी रखा जाए, तो इसमें चारों स्कंध, विशेषकर संश्लेषण का स्कंध शामिल हो जाता है। यही बात निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए जटिल सामान्यीकरणों पर भी लागू होती है। ये केवल एक स्कंध से संबंधित अपेक्षाकृत सरल अवस्थाएँ नहीं हैं। (यहाँ भी इस विषय में संपादन की त्रुटि अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है।)

17.सेवना, निसेवना, समसेवना। साई. के अनुसार, उपसर्ग केवल वर्धक के रूप में कार्य करते हैं।

18. मैकरिनो; पाँच प्रकार की नीचता का आदी। असल. 394. देखें § 1122, n.

19. दुप्पन्ना.

20. भजन, संभजन, भट्टि, संभट्टी; इन सभी का मूल अर्थ 'भाग का होना', 'से संबंधित होना' है। लेकिन पहले दो का अर्थ उपसंकमन से बदल दिया गया है। भक्ति के अर्थ में भट्टि शब्द का प्रयोग, मेरे विचार से, निकायों में नहीं मिलता। संभवतः इस अर्थ में इसका सबसे पुराना प्रयोग जाट उपनिषद के श्लोक 340 में मिलता है—जहाँ साइको उपनिषद में इसके समतुल्य 'सिनेहो' दिया गया है—और श्वेत उपनिषद के श्लोक 6:23 में भी।

21. टार्न संपवनकटा (जैसा कि के. और सी.वाई. कहते हैं), अर्थात् उलझाव; शाब्दिक अर्थ है, उनके साथ जुड़ा हुआ — उन व्यक्तियों के साथ, विचार और कर्म दोनों में। असल. 394.

22.Sovacassayamn (sic lege), sovacassiyam, sovacassata.

23.अदारियम, अदराता; पाठ में छोड़ा गया है, लेकिन के. में जोड़ा गया है। देखें § 1325.

24. यहाँ और आगे के अनुभागों में जिस अंश को छोड़ा गया है, वह निस्संदेह वह अंश है जिसमें विज्ञान (पन्ना) का वर्णन किया गया है, §16 और आगे भी। 'कौशल' या 'निपुणता' (कुसलता) के लिए प्रस्तावना viii देखें, 'अच्छा' के लिए।

25.अर्थात्, अपात्तियों के समूह को पराजिका, संघदिशेष, पचित्तिया, पतिदेसानिया और दुक्कटा अपराध कहा जाता है, और वह समूह जिसमें इनके अतिरिक्त थुलच्चया और दुभसित अपराध शामिल हैं। असल. 394; तुलना करें. विन. वी. 91. वैज्ञानिक प्रक्रिया का वर्णन साई. में -परिच्छेद-जनना-पन्न के रूप में किया गया है।

26. अपात्ति-वत्थाना, या अपराध से मुक्ति। बुद्धघोष इस संदर्भ में इस शब्द की व्याख्या नहीं करते, परन्तु अपने धर्मग्रंथ में, जो लगभग समान शब्दों में विन. iii. 112 और iv. 225 में मिलता है (यह धर्मग्रंथ मिनायेफ, पैट. 69 में भी मिलता है), वे वत्थाना का प्रयोग संघ के सदस्य द्वारा किए गए अपराध के प्रायश्चित और मुक्ति की तीनों विधियों (परिवास, मनत्ता, आभना) को समाहित करने वाले एक सामान्य शब्द के रूप में करते हैं। तुलना करें चाइल्डर्स, एसवी, संघदिसेसो; विन. v. 118. नीचे भी देखें, § 1332।

27. समापत्तियाँ, या आत्म-एकाग्रता की विभिन्न अवस्थाएँ, जिनमें यहाँ वर्णित ध्यान और समाधि के अन्य रूप शामिल हैं, बौद्ध धर्म से पूर्व की हैं और बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और संस्कृति में प्रयुक्त हैं। यह उल्लेखनीय है कि यहाँ इन्हें केवल आठ के रूप में संदर्भित नहीं किया गया है (देखें चाइल्डर्स, एसवी) (वैसे, अंगुत्तरा के अट्ठक-निपात में भी इनका उल्लेख नहीं है)। यह भी स्पष्ट नहीं है कि उत्तर में उद्धृत तीन समापत्तियाँ पंचमुखी ध्यान की पहली तीन अवस्थाओं से पूर्णतः मेल खाती हैं।

यदि ऐसा है, और यदि हम यह मान लें कि इस शब्द में उन तीन चरणों से अधिक चरण शामिल हैं, तो सुभूति द्वारा चार विमोखों को शामिल करने के अनुसार, इससे हमें नौ समापत्तियाँ प्राप्त होंगी। फिर, एम. आई. 301 में, पाँचवें विमोख - अंतिम - को समापत्ति कहा गया है, जिससे इनकी संख्या दस हो जाती है। तुलना करें एम. आई. 398-400।

28. किसी न किसी प्रकार की समाधि से उभरने (शाब्दिक रूप से, वुत्थाना से उठने; देखें ऊपर, § 1330) की क्षमता को, साइ. द्वारा, उस समय के पूर्वनिर्धारण के रूप में निर्दिष्ट किया गया है जब विषय स्वयं को जागृत करना चाहता था, और इच्छा के इस कार्य को पूरा करना - एक समय जिसे खगोलीय पिंडों की गतियों के संदर्भ में बताया गया है।
'जब चंद्रमा, सूर्य और नक्षत्र अमुक स्थान पर पहुंच जाएंगे, तब मैं जागूंगा।'
वुत्थाना के इस प्रयोग पर, एम. आई. 302; ए. iii. 311; एस. iii. 270 देखें। यहाँ निर्दिष्ट ध्यान के तरीकों पर, ऊपर, § 160 आदि देखें। प्राप्ति (समापत्ति) में कौशल को स्वयं अप्पना या केंद्रीय अवधारणा (ध्यान में) के साथ-साथ परिक्कम्मा या प्रारंभिक बातों के विवेक को प्रभावित करने के विज्ञान के रूप में समझाया गया है।

29.धातुयो। इस मामले में कौशल में अधिग्रहण, ध्यान, श्रवण और स्मरण (निर्देश पूरी तरह से मौखिक होता है) और भेदभाव शामिल हैं। असल. 395.

30.सीप. 5, एन. 1.

31. धारा 597 आदि देखें।

32. योग्यता के अंतिम तीन प्रकारों में सभी के लिए समान छह कारकों को अलग किया गया है:
अधिग्रहण,
ध्यान,
श्रवण,
तुलना (शाब्दिक रूप से, मापन),
प्रवेश,
चिंतन।
इनमें से पाँचवें को छोड़कर बाकी सभी सांसारिक चिंतन विषयों पर आधारित हैं; अंतर्मन अलौकिक विषयों से संबंधित है; ध्यान और तुलना दोनों प्रकार के चिंतन के मिश्रण पर आधारित हो सकते हैं। अस्लायथ 395. (इस अंश से यह या कोई भी अर्थ निकालने के लिए, संपादित साइ. में कुछ संशोधन आवश्यक हो गया है।)

33. इस प्रसिद्ध सूत्र पर साइ. केवल इतना ही टिप्पणी करता है कि
'यह पटिच्चसमुप्पदा पर विभंग में प्रकट होगा।'
असल. 395.

34. कौशल की यह प्रजाति (थानाकुसलता, अत्थानाकुसलता) बुद्ध की दस शक्तियों में से एक थी। देखें एम. आई. 69. साइ. (पृष्ठ 395) विशिष्ट प्रक्रियाओं से प्राप्त विशिष्ट परिणामों की एक श्रृंखला के रूप में इंद्रिय-ज्ञान को उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करता है; साथ ही वनस्पति जगत में कारण और प्रभाव को भी।

35. इस और पिछले प्रश्न में प्रयुक्त शब्द 'अज्जवो' और 'मद्दवो' क्रमशः 'उज(ज)ुकता' और 'मुदुतता' के पर्यायवाची हैं (धारा 50, 51, 44, 45)। अंतिम शब्द को 'अभिमान का अभाव' के रूप में व्यक्त किया गया है। (असल. 395)।

36. धैर्य (खन्ती) दस परमिता में से एक है। जाट. i., पृ. 22, 23. ए. iii. 254, 255 भी देखें। अंतिम तीन पर्यायवाची 'घृणा' के अंतिम तीन पर्यायवाची के विपरीत हैं। ऊपर देखें, §§ 418, 1060. ए. iii. 248 में, अज्जावो, जावा नो, मद्दवो, खन्ती और सोरच्चम को एक शुद्ध नस्ल के घोड़े का धम्म बताया गया है।

37. संयम (सोरच्चम) को 'दुराचार से दूर रहना' के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसका अर्थ है कर्म में तीन प्रकार के, वाणी में चार प्रकार के और आजीविका में चार प्रकार के अपराधों से बचना। खिस डेविड्स, 'मैनुअल ऑफ बुद्धिज्म', पृष्ठ 142 देखें। मन के तीन अपराधों का उल्लेख नहीं किया गया है, इसलिए सोरच्चम स्पष्ट रूप से केवल व्यक्ति की आत्म-अभिव्यक्ति पर लागू होता है। असल. 396.

38. सखल्यम, सम्मोदक और मुदु द्वारा व्याख्या की गई। वही। अभिवादन पर शिष्टाचार के आदान-प्रदान के लिए सामान्य सूत्र देखें, जैसे, एम.आई. 16.

39.अंडका। यह और इसके बाद के शब्द एम.आई. 286 में मिलते हैं। मॉरिस के नोट्स, जेपीटीएस, 1884, 1886, 1889 देखें। बुद्धघोष की टिप्पणी केर्न की इस परिकल्पना की आवश्यकता को समाप्त कर देती है कि जब यह शब्द वाणी के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है, तो इसे कंदका पढ़ा जाना चाहिए, या मॉरिस की इस परिकल्पना की कि इसे चंदका पढ़ा जाना चाहिए। वे कहते हैं (असल. 396): जैसे किसी दोषपूर्ण (सदोस) वृक्ष में उभार (अंडकानी; उभार, मस्से) निकलते हैं, वैसे ही दोषपूर्णता के कारण, घमंड और उद्दंडता भरे शब्दों से उभार (अंडका) उत्पन्न होते हैं।
एम.आई. 286 में 'अप्रिय' (असाता) को छोड़ दिया गया है।
'ग्रेटिंग' = कक्कासा = (असल. इहिद.) पुतिका।
कुछ हद तक बनावटी अलंकार में कर्कश या खुरदरी वाणी की तुलना सड़े हुए पेड़ के चूर्ण-चूर्ण ऊतक के प्रवेश से कान में होने वाली अप्रिय अनुभूति से की गई है (इसलिए टार्न, कन्ना नहीं!)। 'अपमानजनक', आदि (परभिसज्जनी); मानो कांटों की एक छिपी हुई शाखा अंगों को घायल कर रही हो और मार्ग अवरुद्ध कर रही हो। इहिद।

40.Innocuous = nela = niddoa. Asl. 397.

41.अर्थात्, विभिन्न प्रकार की मिठास से।

42. पोरी, यानी शहरी बोलचाल, या तो इसलिए कि इसमें अच्छे विचार होते हैं (गुण अ), या इसलिए कि इसका प्रयोग सुसंस्कृत लोग करते हैं, या यह शहरी बोलचाल के कारण होता है। क्योंकि शहरवासी उचित शब्दों का प्रयोग करते हैं, पिता को पिता और भाई को भाई कहते हैं।

43. पतिसंथारो, अमीसेना और धम्मेना दोनों, पर बुद्धघोष (असल. 397-399) ने विस्तार से चर्चा की है। वे हमेशा की तरह इस शब्द की व्युत्पत्ति—फैलाव या प्रसार—को लेते हैं और इसे दया और उदारता के माध्यम से दाता और प्राप्तकर्ता के बीच की दूरी को पाटने या समाप्त करने के रूप में दर्शाते हैं। दोनों को संघ का सदस्य माना जाता है, और वर्णित कई आतिथ्यपूर्ण और विनम्र सेवाएँ विन. 2:210, 211 में मिलती हैं। मिल. 409 भी देखें।

44.अगुत्तद्वराता। यह और धारा 1347 में विपरीत दृष्टिकोण बौद्ध सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण सूत्र का गठन करते हैं, और डी.आई. 70, एम.आई. 180, 269, आदि में पाए जाते हैं। इसे केवी 426, 464 में भी उद्धृत किया गया है।

45.के. मुद्रित पाठ में दिए गए पुग्गलो को छोड़ देता है। बाद वाला इसे संबंधित उत्तर, § 1347 में छोड़ देता है।

46. यह एक ऐसा अंश है जो स्वाभाविक रूप से टीकाकार से मनोवैज्ञानिक योग्यता की मांग करता है (असली. 399, 400)।

यहां "आंख" शब्द संपूर्ण क्रियाशील कारण (करण-वसेन) को दर्शाता है, अर्थात् उस दृश्य बोध को जो सामान्यतः स्वीकृत रूप-दर्शन क्षमता है। जैसा कि प्राचीन विद्वानों ने कहा है:
आँख रूप नहीं देखती, क्योंकि वह बुद्धि (चित्तम) के स्वभाव की नहीं है; बुद्धि, आँख के स्वभाव की न होने के कारण, रूप नहीं देखती (यहाँ 'चित्तम' गलत तरीके से विराम चिह्नित किया गया है)।
हम इंद्रियों से युक्त मन से 'द्वार-वस्तु' पर प्रभाव डालते हुए देखते हैं (द्वाराममन संघट्टनेन पसादवत्थुकेना चित्तेना पस्साति), अर्थात् समग्र जीव या तंत्र से, जैसे हम कहते हैं, "वह धनुष से तीर चलाता है"।

47. निमित्तगाही और अनुव्यंजनगाही के विषय में, डी. i. 70 में 'बुद्ध के संवाद', i. 80 में इस विशेष अंश से संबंधित टिप्पणियाँ देखें। पूर्व शब्द को अत्थसालिनी में उस व्यक्ति के कार्य के रूप में परिभाषित किया गया है जो आकर्षक आदि को देखकर या जो विशिष्ट रूप से स्त्री या पुरुष है, उसे तीव्र इच्छा से प्राप्त करने का प्रयास करता है।

48.भोजन अमात्तनफिउता = बिना सोचे-समझे निरंतर लिप्त रहना... जिसमें माप या सीमा का उल्लंघन हो। असल. 402.

49.अहरम 'खाद्य और पेय दोनों'. असल. 401.

50. दावया, इत्यादि। यानी, वह नृत्य कर सकता है या कलाबाजी कर सकता है, इत्यादि। या राजाओं और दरबारियों की तरह जो अपने 'जीवन के अभिमान' और मर्दानगी को बढ़ाने के लिए भोजन करते हैं, इत्यादि। असल. 402, 403.

51.विहिमसुपरातिया। विहिंसा = अभुत्ता-पक्काय उपपज्जनक-खुदा। असल. 403.

52.ब्रह्मचर्यानुगहया।

53. संयमी जीवन का यह सूत्र (जैसा कि ट्रेंकनर इसे 'पाली मिसक', 74 कहते हैं) एम. i. 355; एस. iv. 104, 176, आदि; और मिल. 367 में मिलता है। असल में टिप्पणियाँ प्रश्नगत वेदना की अधिक विशिष्ट और कम उदात्त व्याख्या प्रकट करती हैं, जो अंतिम नामित अंश के अनुवादक (रीस डेविड्स, 'राजा मिलिंदा के प्रश्न', ii. 231) द्वारा ली गई व्याख्या से भिन्न है।
पूर्व मत के अनुसार, पुराणई च वेदनम् का अर्थ है भोजन न करने के कारण होने वाली भूख, और नवई च वेदनम् का अर्थ है अत्यधिक भोजन करना या पर्याप्त भोजन करना। (आध्यात्मिक 403, 404)। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, भूख की लालसा से मुक्त व्यक्ति की आदर्श स्थिति, तृप्ति या भरपेट भोजन करने की सकारात्मक अनुभूति नहीं, बल्कि भूख न लगना और प्यास न लगना जैसी अपेक्षाकृत नकारात्मक अनुभूति होगी। 'आराम' (भोजनसंतोष) के अंतर्गत, जो लोग इसे प्राप्त करने में असफल रहते हैं, उन्हें पाँच प्रचलित उपनामों से बड़े उत्साह से वर्णित किया गया है - 'रुको, जैकेट!', 'घूमने वाला' (क्योंकि खाने के बाद उठने में असमर्थ), आदि। संयमी प्रक्रिया को भी अन्य श्रेणियों में विस्तार से वर्णित किया गया है। (आध्यात्मिक 404)।

54. इस उत्तर (मुत्थासच्चम का वर्णन करते हुए) में कुछ संशोधन की आवश्यकता है। अनुस्सति को असति होना चाहिए, और अपिलापनाता और अ-सम्मुस्सनाता में निषेधात्मक 'अ' को हटा देना चाहिए। के. (यहाँ केवल) पामुस्सनाता पढ़ता है - जबकि साइ. ऐसा नहीं करता - और अप्पतिस्सति के बाद असति को दोहराता है। अनुच्छेद 14 और फुटनोट देखें।

55.के. असम्मुस्सनाटा, अप्पामुस्सनाटा के लिए पढ़ता है। पिछली टिप्पणी देखें।

56. पतिसंखनाबलम्। यह वर्तमान ग्रंथ में वर्णित 'शक्तियों' के किसी भी समूह में शामिल नहीं है (देखें धारा 1, आदि), और न ही यह पन्नाबलानी (धारा 29) का हिस्सा है। हालांकि, यह ए. iv. 223 में दी गई आठ भिन्न प्रकार की शक्तियों में शामिल है, जो विद्वान या बहुसुतो की विशिष्ट बलम् के रूप में मानी जाती है। विन. i. 213 में पतिसंख के प्रयोग की तुलना करें। वर्तमान संदर्भ में, यह सहसंबंधी शब्द के रूप में दस्सानम् (अंतर्दृष्टि) का स्थान ले चुका प्रतीत होता है; ऊपर देखें, धारा 1002-1012, 1254-1267।

57. धारा 285, 287 आदि देखें।

58. इस और निम्नलिखित संदर्भों में 'उस अवसर पर' वाक्यांश को हटा दिया जाना चाहिए।

59.समथ-निमित्तम्। तम अकरम गहेत्वा पुना पवत्तेततब्बस्सा समथस्सा निमित्त-वसेन द्वारा समझाया गया। असल. 53.

60.सिलवीपट्टी. सीएफ §§ 1363, 1342.

61. दित्थिविपट्टी. देखें § 1215.

62.सिला-संपदा. सीएफ § 1342.

63. धारा 16 के अनुसार जारी रखें।

64. धारा 1363 देखें। सैद्धांतिक रूप से पवित्रता सैद्धांतिक प्रगति के सापेक्ष पूर्णता को इंगित करती प्रतीत होती है, जबकि नैतिक मामलों में ऐसा भेद स्पष्ट रूप से लागू नहीं होता है। साई. इस भेदहीनता को केवल यह कहकर स्पष्ट करते हैं कि धारा 1363 में पतिमोक्खा के संयम के 'शील' का उल्लेख है, जबकि धारा 1365 में विशुद्धि-शील की बात की गई है।

65.के. में यहाँ kammassakatam iianam लिखा है— एक विचित्र वाक्यांश। बुद्धघोष, अपनी व्याख्या के अनुसार, kamma-ssakata-nanam (Asl. 406, 407) या -ssakata- या -ssakata m fianam (Asl. 406) पढ़ते हैं। इस sakata या sakatarn का संगत विशेषण नागसेना द्वारा सुत्त पिटक से उद्धृत अंश में मिलता है (Mil. i. 45; cf. Khys Davids' trans., i. 101, n. 1; asl. 66 भी देखें), अर्थात् kammassaka (satta); यानी, अनुवादक के अनुसार, 'प्रत्येक का अपना कर्म'।

चूंकि यह अंश मज्झिमा एन. के अभी तक अप्रकाशित 135वें सुत्त में आता है, इसलिए पापंचा सुदानी में इस पर अत्थसालिनी की तुलना में अधिक स्पष्ट टिप्पणी मिलने की संभावना है।

दूसरे का अर्थ यह है: [इस वाक्यांश का अर्थ है] यह जानने का विज्ञान कि यह कर्म (या क्रिया) सकम है, वह कर्म सकम नहीं है। इस संदर्भ में, सभी बुरे कर्म, चाहे वे स्वयं द्वारा किए गए हों या किसी अन्य द्वारा, सकम नहीं हैं।

ऐसा क्यों? क्योंकि यह उपयोगिता को नष्ट करके अनुपयोगिता उत्पन्न करता है। परन्तु अच्छे कर्म, जिनका विपरीत प्रभाव होता है, उन्हें सकम कहा जाता है। जैसे कोई धनवान व्यक्ति यात्रा के दौरान विभिन्न शहरों में, जहाँ उत्सव चल रहे हों, रुककर अपनी इच्छा अनुसार दान करने का निश्चय करके उन उत्सवों में भाग लेता है और सुरक्षित रूप से जंगल से निकल आता है, ठीक उसी प्रकार कर्म के सकम के ज्ञान में निपुण प्राणी, जब वे पुनर्जन्म के योग्य कर्म संचित कर लेते हैं, तो सुरक्षित और सहजता से असंख्य संख्या में भी अरहतत्व प्राप्त कर लेते हैं।

अब यदि यहाँ 'सकम' का अर्थ, जैसा कि आमतौर पर होता है, 'स्वयं का' है, तो भी यह इस कथन की कोई व्याख्या नहीं है कि किसी के बुरे कर्म स्वयं के नहीं होते। और यह दृष्टांत इस कथन को कैसे सिद्ध करता है?

66. उपरोक्त प्रश्न और उत्तर के साथ 'धम्म संगानी' की विधि का समापन होता है। इसके बाद ग्यारह विविध वाक्यांश या शब्द आते हैं, जो विधि के किसी भी भाग का विषय नहीं हैं, और यहाँ एक टीका के रूप में दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक को या तो विधि में दिए गए उत्तरों से संदर्भित किया गया है, या संक्षेप में समझाया गया है, और संभवतः ये सभी बौद्ध नैतिकता की तकनीकों के रूप में सुत्त पिटक से लिए गए हैं।

संभवतः ये दोनों मिलकर एक ही वाक्य बनाते हैं, जो ज्ञान और मुक्ति के स्वरूप का स्पष्ट और संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करता है। बुद्धघोष ने इस प्राचीन टीका के अंश पर कोई विशेष जानकारी नहीं दी है, लेकिन विभंग की टीका में 'आंदोलन' विषय के विभाजन की व्याख्या करने का वादा किया है।

67. यथा दित्तिस्सा च पदानम्। संभवत: यथादित्तिस्सा पढ़ा जाना चाहिए; हालांकि, के. ने दोनों शब्दों को अलग कर दिया है। सी.वाई. ने केवल इतना कहा है कि इसमें जो ऊर्जा लगाई गई है वह बुद्धिमान या वैज्ञानिक है, और इसे सांसारिक या उच्चतर चीजों में लगाया जा सकता है।

68. ए. ii. 15, 16, 74 देखें। यह देखा जाएगा कि ए. ii. के पृष्ठ 15 पर सम्मपधानानी के रूप में वर्णित इच्छा-संस्कृति के चार तरीके (और ध. एस. में उद्धृत) पृष्ठ 74 पर क्रमशः आत्म-संयम, उच्चारण, संवर्धन (या विकास) और संरक्षण के लिए संघर्ष कहलाते हैं। फिर भी पृष्ठ 16 पर इन चारों शब्दों को अलग-अलग अर्थ दिए गए हैं।

69. यह और अगला वाक्यांश (vii.) अ. i. 50 में लगातार आते हैं। धर्मनिष्ठ व्यक्ति में संघ को छोटे दान देने से लेकर बड़े दान देने तक, और अंत में स्वयं संघ में प्रवेश करने और अरहत पद प्राप्त करने तक, उदात्त असंतोष की प्रगति का संक्षेप में वर्णन किया गया है, असल. 407. अंतिम उपलब्धि विजेता को परम संतुष्ट की उपाधि प्रदान करती है।

70.तुलना करें § 13.

71.चित्तस्सा च अधिमुत्ती = विमुत्ती (मुक्ति)। डी. मैं. 174.

72. मेरा मानना है कि मूल मैनुअल में यह एकमात्र ऐसा अंश है जहाँ यह शब्द मिलता है। यह इस तथ्य के संदर्भ में रोचक है कि यह मूल टीका के परिशिष्ट में मिलता है, और यह भी कि पाठ में आगे आने वाले पुराने सारांश में यह शब्द बार-बार आता है। परिशिष्ट I देखें।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> परिशिष्ट 1

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण,
परिशिष्ट 1

परिशिष्ट I
[पृष्ठ 360] पुस्तक III का सार या संक्षिप्त व्याख्या (§§ 981-1295), जिसका शीर्षक है व्याख्या का विभाजन या स्पष्टीकरण (अत्थुद्धारो)।

धम्मसंगनी के मूल पाठ के तुरंत बाद लगभग 230 प्रश्नों और उत्तरों का एक परिशिष्ट दिया गया है। प्रश्न हूबहू 'उन्मूलन' भाग, यानी तृतीय खंड के प्रश्नों के समान क्रम में हैं, लेकिन इनमें नैतिक कारकों या दोषों की विभिन्न सूचियों, जैसे कि कारण (हेतु) की विविधता, या 'नशीले पदार्थों' आदि के विवरण पर कोई प्रतिवाद नहीं है। उत्तर अधिकतर तृतीय खंड के उत्तरों की तुलना में अधिक संक्षिप्त हैं और उनकी भाषा भी लगभग भिन्न है, जिनमें कई ऐसे शब्द शामिल हैं जो बौद्ध धर्म के प्रारंभिक काल के बाद तकनीकी उपयोग में आए।

स्वयं नियमावली में इस परिशिष्ट को कोई विशिष्ट शीर्षक नहीं दिया गया है। संभवतः अंतिम घोषणा 'धम्मसंगनिप्पकरणी समत्ता' का तात्पर्य इससे नहीं, बल्कि संपूर्ण ग्रंथ से है। हालाँकि, 'अत्थसालिनी' (पृष्ठ 409 और आगे) में इस खंड को पाठ नहीं, बल्कि टीका माना गया है और इसे अत्थकथाकांडम या व्याख्यात्मक भाग कहा गया है; और एक पूर्व के अंश में इसे अत्थुद्धरो (आस्ल 6) युक्त चौथा विभत्ती कहा गया है। परंपरा के अनुसार, यह सारिपुत्त का कार्य है और उन्होंने इसे 'निक्खेप-कांडम' (तीसरा खंड, अर्थात् लगभग संपूर्ण नियमावली) की विषयवस्तु को उस शिष्य के लिए स्पष्ट करने के उद्देश्य से संकलित किया था जो अन्यथा इसे समझ नहीं पाता था।

ऐसा होने पर, और उत्तरों से कोई नई जानकारी न मिलने पर

[पृष्ठ 361] चर्चा किए गए विषयों के संदर्भ में, मैंने इनका अनुवाद करना उचित नहीं समझा। साथ ही, यह उचित लगा कि शब्दावली में मौजूद विशिष्ट, भले ही व्यक्तिगत न हों, अंतरों को स्पष्ट कर लिया जाए, ताकि पाठक बौद्ध धर्म की शब्दावली या अवधारणाओं के इतिहास के लिए उपयोगी किसी भी बात से वंचित न रह जाए। मैंने कुछ उत्तरों का अनुवाद भी दिया है, जहाँ लगभग समान कथन प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त शब्दों में अंतर ही स्वयं मैनुअल की भाषा को समझने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

पाली भाषा में प्रयुक्त शब्दों के संदर्भ में, जब तीनों रूपों, या सभी पुनर्जन्मों के लोकों, साथ ही साथ उस उच्चतर संतत्वपूर्ण आकांक्षा के जीवन का सामूहिक रूप से उल्लेख करने की आवश्यकता होती है, जिसका पुनर्जन्म से कोई संबंध नहीं है, तो इन चारों को अब अलग-अलग रूप से इसके या उसके अवक्रम और अविभाजित के रूप में नहीं बोला जाता है, बल्कि इन्हें बस 'चार भूमि' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

फिर से, 'निर्वाण' (निब्बानम) शब्द हमेशा 'अमिश्रित तत्व' शब्द के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। परिशिष्ट II देखें।

'रूप' 'सभी रूप' की जगह लेता है (देखें § 983 पासिम), और 'सन्यासी के जीवन के फल' शब्द 'मार्गों के फल' की जगह लेता है। (देखें § 992 पासिम[1]) बाद वाला परिवर्तन स्वयं नियमावली में केवल एक बार आता है, अर्थात् § 1016.[2]

अब पुस्तक प्रथम में वर्णित अच्छे और बुरे विचारों के उन 'प्रकारों' का बार-बार उल्लेख किया गया है। इन्हें चित्तणी नहीं, बल्कि चित्तुप्पदा, या विचार की उत्पत्ति कहा गया है, यह शब्द मैनुअल में केवल एक बार शीर्षक के रूप में आया है। (ऊपर देखें, पृष्ठ 164)

तीसरे खंड में बार-बार उल्लेख किए गए स्कंधों का यहाँ कभी जिक्र नहीं किया गया है।

'सह-विषाक्त पदार्थ' (सासावो) शब्द का प्रयोग अब विषाक्त पदार्थ समूह के विश्लेषण को छोड़कर कहीं और नहीं किया जाता है।

एब्लेटिव का बहुत बार उपयोग -टू (जब

[पृष्ठ 362] नियमावली में संज्ञावाचक विशेषण का प्रयोग — उदाहरण के लिए, कामवकारम कुसलम् के स्थान पर कामवकार-कुसलतो — बाद की मुहावरेदार शैली को दर्शाता है। मेरा मानना है कि नियमावली स्वयं इस अपादान कारक का प्रयोग केवल दो बार करती है, अर्थात् §§ 1062, 1071 में: विपकतो = परिणाम के रूप में, या परिणाम के माध्यम से।

नियमावली में 'किरिया' शब्द का प्रयोग बहुत कम होता था, लेकिन अब इसका प्रयोग अत्यंत बार किया जाता है।

अब इन तीन प्रश्नों पर विचार करते हुए

(क) अच्छी,
(ख) बुरी, और
(ग) अनिश्चित अवस्थाएँ

जिसके साथ पुस्तक III (धारा 981-983, और इस मामले में स्वयं नियमावली) शुरू होती है, हम क्रमानुसार निम्नलिखित संक्षिप्त उत्तर पढ़ते हैं:

(क) चारों स्तरों में अच्छा (भूममिषु)।

(ख) बुरे विचार की बारह उत्पत्ति। (
ग) चारों स्तरों में परिणाम;
तीन स्तरों में पूर्ण अनिश्चितताएँ[3];[4]
रूप और निर्वाण भी।

अब, बारह प्रकार की बुरी अवस्थाओं के विश्लेषण (पुस्तक I, भाग I, अध्याय II) को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि ये संपूर्ण प्रश्न को समाहित करती हैं, क्योंकि इसमें केवल एक ही 'स्तर' - इंद्रियजन्य अस्तित्व - शामिल है। दूसरी ओर, अच्छे और अनिश्चित धर्मों में चारों स्तर शामिल होते हैं, और इनका उत्तर केवल आठ प्रकार के अच्छे विचारों (अध्याय I) के संदर्भ में नहीं दिया जा सकता, न ही विचार उत्पत्ति के संदर्भ में।

प्रश्नों की अगली त्रयी (पुस्तक III, §§ 984-986) का उत्तर ऐसी भाषा में दिया गया है जो पूरे काम में केवल एक अन्य अंश (§ 1268 इत्यादि) में मिलती है, और जो इतनी अस्पष्ट है कि किसी भी समकक्ष अनुवाद का स्वागत है।

'सुखद भाव से जुड़ी अवस्थाएँ':— 'इंद्रिय जगत में सुख से ग्रस्त चार प्रकार के विचार, जो अच्छे कर्मों से संबंधित हैं।
चार प्रकार के विचार, जो बुरे कर्मों से संबंधित हैं।
छह प्रकार के विचार, जो इंद्रिय जगत में अच्छे कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं, साथ ही पाँच प्रकार के विचार, जो पूर्ण हो चुके हैं।[5]
रूप
के स्वर्ग से संबंधित त्रिगुण और चौगुण [6] ध्यान, चाहे वह अच्छे कर्म के रूप में उत्पन्न हो, अच्छे कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न हो या पूर्ण अवस्था के रूप में।
उच्च आदर्श से संबंधित त्रिगुण और चौगुण ध्यान, चाहे वह अच्छे कर्मों के रूप में उत्पन्न हो या फलस्वरूप।
इससे उत्पन्न सुखद भाव को इसमें शामिल नहीं किया जाता है।' 'दुखद भाव से जुड़ी अवस्थाएँ':— 'उदासी से ग्रस्त दो प्रकार के विचार। शरीर का ज्ञान, जो पीड़ा से ग्रस्त होता है। इससे उत्पन्न पीड़ा भाव को इसमें शामिल नहीं किया जाता है।' 'तटस्थ भाव से संबंधित अवस्थाएँ':— 'इंद्रिय जगत में अच्छे (कर्म) से संबंधित, निस्वार्थ भाव से युक्त विचार की चार उत्पत्तियाँ।
छह, जो बुरे (कर्म) से संबंधित हैं।
दस, जो इंद्रिय जगत में अच्छे (कर्म) के परिणामों से संबंधित हैं।[7]
छह, जो बुरे (कर्म) के परिणामों से संबंधित हैं।[8]
छह, जो पूर्ण विचार से संबंधित हैं।[9]
चौथा ध्यान, जो रूप के स्वर्ग से संबंधित है, चाहे वह अच्छे (कर्म), परिणाम (अच्छे कर्म) या पूर्ण अवस्था के रूप में उत्पन्न हो।
निराकार अस्तित्व से संबंधित चार ध्यान,[10] चाहे वे अच्छे (कर्म), परिणाम (अच्छे कर्म) या पूर्ण अवस्था के रूप में उत्पन्न हों।
उच्च आदर्श से संबंधित चौथा ध्यान, चाहे वह अच्छे (कर्म) या परिणाम (अच्छे कर्म) के रूप में उत्पन्न हो।
इसके साथ उत्पन्न होने वाली तटस्थ भावना को इसमें शामिल नहीं किया जाता है।'

'यह कहना उचित नहीं है कि ये तीन प्रकार की भावनाएँ [पृष्ठ 364] स्वयं से, या रूप से, या निर्वाण से जुड़ी हुई हैं।'

धारा 1007-1012 के प्रश्नों के उत्तर (धारा 1009 के प्रश्न को छोड़कर) वहां दिए गए उत्तरों की तुलना में अधिक सटीक हैं:

'अंतर्दृष्टि द्वारा दूर की जा सकने वाली अवस्थाएँ':— 'विचारों और मतों से जुड़ी विचार की चार उत्पत्तियाँ, उलझन से युक्त विचार की उत्पत्ति।' 'संस्कृति द्वारा दूर की जा सकने वाली अवस्थाएँ [1007]':— 'उत्तेजना से युक्त विचार की उत्पत्ति।'

'विचारों की वे उत्पत्तियाँ जो कामवासना से ग्रस्त हैं, लेकिन विचारों और मतों से असंबद्ध हैं, और वे दो उत्पत्तियाँ जो उदासी से ग्रस्त हैं:

— ये अवस्थाएँ अंतर्दृष्टि या संस्कृति द्वारा दूर की जा सकती हैं। 'वे अवस्थाएँ जो न तो अंतर्दृष्टि से और न ही संस्कृति से दूर की जा सकती हैं': — 'चारों स्तरों में अच्छा; चारों स्तरों में परिणाम; तीनों स्तरों में पूर्ण अनिश्चितताएँ; रूप और निर्वाण।' जिन अवस्थाओं के कारणों को अंतर्दृष्टि, संस्कृति या दोनों में से किसी से भी दूर किया जा सकता है, उनका वर्णन एक ही शब्दों में किया गया है। हालाँकि, मोह (सुस्ती) का नाम अस्पष्ट रूप से ऐसी अवस्था के रूप में लिया गया है जिसके कारण को दोनों में से किसी से भी दूर नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न 1022-1024 के उत्तर वहां प्रयुक्त शब्दों से बिल्कुल भिन्न शब्दों में दिए गए हैं: —

(क) 'सीमित विचार विषयों वाली अवस्थाएँ': - 'इंद्रियजन्य अस्तित्व का सभी परिणाम; वह विचार जो पूर्ण क्रिया है; वह प्रतिनिधिक संज्ञान जो पूर्ण क्रिया है लेकिन कारणों से मुक्त नहीं है,[11] और सुख के साथ है'। (ख) 'व्यापक दायरे के विचार विषयों वाली अवस्थाएँ': - 'अनंत बुद्धि का क्षेत्र; वह क्षेत्र जहाँ [पृष्ठ 365] न तो बोध है और न ही अबोध'।

(तुलना कीजिए धारा 267, 268) (ग) 'अनंत विचार विषयों वाले राज्य:' —

'चार मार्ग जो अविभाज्य हैं, और संन्यासी के जीवन के चार फल।' 'ज्ञान से विमुख और इंद्रिय जगत में अच्छे (कर्म) से संबंधित विचार की चार उत्पत्ति, और ज्ञान से विमुख,
पूर्ण कर्मों से संबंधित विचार की चार उत्पत्ति, और सभी बुरे (कर्म) कर्म।'

— ये अवस्थाएँ (a) या (b) हो सकती हैं, लेकिन (c) नहीं, और इन्हें (a) और (b) दोनों नहीं कहा जा सकता है।

'[पुनः,] ज्ञान से संबंधित और इंद्रिय जगत में अच्छे (कर्म) से संबंधित विचार की चार उत्पत्तियाँ,
ज्ञान से संबंधित पूर्ण विचारों की चार उत्पत्तियाँ,
रूप जगत से संबंधित चौथा ध्यान, चाहे वह अच्छे (कर्म) के रूप में उत्पन्न हो या पूर्ण विचार के रूप में,
और पूर्ण तथा कारणों से मुक्त तथा अनासक्ति से युक्त प्रतिनिधि ज्ञान:

— ये अवस्थाएँ (a), या (b), या (c) हो सकती हैं, लेकिन इन्हें (a) और (b) और (c) कहना उचित नहीं है।

अंत में, रूप के स्वर्गों से संबंधित त्रिगुण और चौगुण ध्यान, चाहे वह अच्छे कर्म के रूप में उत्पन्न हो, परिणाम के रूप में हो, या पूर्ण विचार के रूप में हो,
चौथे ध्यान के परिणाम हों,
और निराकार अस्तित्व से जुड़े पहले दो ध्यान हों, अर्थात् अनंत अंतरिक्ष और अनंत शून्यता के क्षेत्र।

— इन अवस्थाओं को (क) और (ख) तथा (ग) कहना उचित नहीं है। रूप और निर्वाण विचार के विषय से रहित हैं।

एक और समूह का उल्लेख करना उचित होगा जो पूछे गए विषय के संदर्भ में नहीं, बल्कि अन्य संदर्भों में उत्तर देता है। यह दो त्रिक हैं जो अनुच्छेद 1044-1049 से संबंधित हैं। अट्ठकथा में निम्नलिखित लिखा है: 'वे अवस्थाएँ जो...'

(क) व्यक्तिगत (या व्यक्तिपरक),

(ख) बाह्य,
(ग) व्यक्तिगत बाह्य।

'रूप को छोड़कर, जो [पृष्ठ 366] इंद्रियों से बंधा नहीं है,[12] सभी अवस्थाएँ व्यक्तिपरक या बाह्य या व्यक्तिपरक-बाह्य हो सकती हैं। जो रूप इंद्रियों से बंधा नहीं है, और निर्वाण दोनों बाह्य हैं।' 'जिन अवस्थाओं में

(क) विचार का एक व्यक्तिपरक विषय,
(ख) विचार का एक बाह्य विषय,
(ग) विचार का एक व्यक्तिपरक-बाह्य विषय: —

'(ए)
असीम बौद्धिकता का क्षेत्र और वह क्षेत्र जहाँ न तो अनुभूति है और न ही अअनुभूति।
(बी)
रूप के स्वर्गों से संबंधित त्रिविध और चौविध ध्यान, चाहे वह अच्छे कर्म के रूप में उत्पन्न हो, अच्छे कर्मों के परिणाम स्वरूप हो, या पूर्ण विचार के रूप में हो, वह भी चौथे ध्यान, अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र, अविभाज्य चार मार्गों और संन्यासी के जीवन के चार फलों का परिणाम है:
— इन अवस्थाओं में विचार का एक बाह्य विषय होता है।
'इंद्रिय जगत से संबंधित रूप, अवस्था, अच्छे, बुरे और अनिश्चित को छोड़कर, और रूप के स्वर्ग से संबंधित चौथे ध्यान को छोड़कर, चाहे वह अच्छे (कर्म) के रूप में उत्पन्न हो या पूर्ण विचार के रूप में:
— ये सभी या तो (a), (h), या (c) हो सकते हैं।
लेकिन यह कहना उचित नहीं है कि शून्यता का क्षेत्र तीनों ही है।
'रूप और निर्वाण विचार के विषय नहीं हैं।'
यहां एक अतिरिक्त रुचि का बिंदु है। दूसरे और चौथे अरुप्पज्जना को विशुद्ध आत्मनिरीक्षण के अभ्यास के रूप में परिकल्पित किया गया है, और इसमें किसी भी प्रकार के विश्व-संबंधी विचार या वृहद ब्रह्मांडीय बोध का कोई निहितार्थ नहीं है, और न ही 'भावुक आत्मा' के अन्य लोकों में लीन होने का कोई संकेत है।

- फुटनोट:
1. संभवतः पांडुलिपियों में हुई त्रुटि के कारण, मुद्रित पाठ में, धारा 1597 में, समन्नाफलानी के स्थान पर झनाबलानी लिखा है। तुलना करें. के.

2. ऊपर त्रुटिवश [1015] के रूप में मुद्रित हुआ।

3. किरियव्यक्तम्। परिचय देखें viii.

4.अर्थात्, अर्थ को छोड़कर (पुस्तक 1, भाग III, अध्याय 2 देखें)।

5.के. में लिखा है kamavacara kusalassa vipakato ca kiriyato ca panca. लेकिन §§ 469 और 568 के संदर्भ से पता चलता है कि विश्लेषण क्रमशः छह और पांच देता है।

6. उच्चतम ध्यान को छोड़कर, क्योंकि यह 'सुखद अनुभूति' के साथ असंगत है।

7. कामवकार-कुसलस्सा पढ़ें।

8. धारा 556 में चार, धारा 562 में एक, धारा 564 में एक।

9. धारा 566 में पाँच, धारा 574 में एक।

10.आर्टिपवकारा के स्थान पर अरुप्पा पढ़ें। V. 71 et seq.

11.किरिया-हेतुका मनोविन्ननधातु।

12.मानिंद्रियम के लिए पढ़ें, अनिन्द्रिय-बद्धरुपई च. एक चूक के कारण यह वाक्य और अगला वाक्य पाठ में इस प्रकार मुद्रित हैं मानो वे पिछले त्रयी का हिस्सा हों।
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> परिशिष्ट 2

अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं की गणना,
परिशिष्ट 2

परिशिष्ट II
[पृष्ठ 367] उस पर जो धम्मसंगनी में असंबद्ध तत्व (संखत् धातु) के बारे में भविष्यवाणी की गई है।

अविभाज्य तत्व को नैतिक रूप से अनिर्धारित (अव्यकटम्) की चौथी और अंतिम श्रेणी में रखा गया है—दूसरे शब्दों में, वह आचरण या मन की अवस्था जो अच्छे या बुरे कर्म उत्पन्न नहीं करती। लेकिन इन चारों में से केवल इसी पर अलग से और व्यवस्थित रूप से चर्चा नहीं की जाती, जैसा कि अन्य तीन—परिणाम, क्रिया और रूप—के मामले में होता है।

तृतीय खंड में, जिसे व्यावहारिक नैतिकता कहा जा सकता है, निम्नलिखित कथन संयोगवश सामने आते हैं। जहाँ मूल पाठ के पूरक के रूप में जोड़ी गई अट्ठकथा में असंखता धातु के स्थान पर निर्वाण (निब्बानम्) शब्द का प्रयोग किया गया है, वहीं धम्म संगानी में 'अमिश्रित तत्व' शब्द को मार्ग के 'सर्वोच्च फल', अरहत्तफलम् के साथ नहीं जोड़ा गया है, जो निर्वाण अवस्था का एक पहलू है (देखें श्लोक 4, 251, 252)। अतः इस विषय पर और अधिक शोध की आवश्यकता प्रतीत होती है।

इसी सुविधा के लिए, निम्नलिखित परिणाम पृष्ठ 168-171 पर दिए गए प्रपत्र संबंधी तालिका के लगभग समानांतर संलग्न किए गए हैं। देखें टिप्पणी, पृष्ठ 166।

अमिश्रित तत्व है

दुविधा में पड़ा हुआ [983]
न तो परिणाम और न ही परिणाम उत्पन्न करने वाला। [989]
न तो पकड़ने का मुद्दा[1] और न ही इसके अनुकूल[2] [992]
न तो भ्रष्ट और न ही हानिकारक [995]
[पृष्ठ 368] 'अवधारणा और विचार विवेचनात्मक प्रक्रिया के कार्य से रहित' [998][3]
न तो अंतर्दृष्टि से और न ही संस्कृति से इसे दूर किया जा सकता है [1008]
ऐसी चीज जिसके कारणों को न तो अंतर्दृष्टि से और न ही संस्कृति से दूर किया जा सकता है [1012][4]
जो न तो पुनर्जन्म के संचय का कारण बनता है और न ही उसे नष्ट करता है। [1015]
न तो विद्यार्थीत्व से संबंधित है और न ही उससे संबंधित है [1017][5]
अनंत [1021]
अचूक [1027]
वह जो निश्चित परिणामों को जन्म नहीं देता [1030][6]
अदृश्य और अप्रभावित [1052][7]
कारण नहीं [1072]
बिना कारणों के सहवर्ती के रूप में [1074][8]
किसी कारण से संबद्ध नहीं [1076]
भौतिक रूप के बिना [1092]
अलौकिक [1094]
यह मादक पदार्थ नहीं है। [1102]
सह-नशा करने वाला पदार्थ नहीं [1104]
नशीले पदार्थों से संबंध समाप्त [1106][9]
बेड़ी नहीं [1124]
बेड़ियों के लिए प्रतिकूल [1126]
बेड़ियों से अलग [1128][10]
टाई नहीं [1141]
वह नहीं जो बंधने की प्रवृत्ति रखता हो [1142]
संबंधों से विच्छेदित [1144][11]
[पृष्ठ 369] कोई बाधा नहीं [1163]
बाधाओं से असंबद्ध और उनके लिए प्रतिकूल [1173]
यह कोई संक्रामक रोग नहीं है। [1176]
संक्रमण से अप्रभावित और असंक्रमित [1184]
विचार की सहवर्ती वस्तु के बिना [1186]
बुद्धि का नहीं [1188]
इंद्रियों के जीवन में शामिल नहीं [1190]
विचार से अलग [1192]
विचार से विरक्त [1194]
विचार से उत्पन्न नहीं हुआ [1196]

यह कोई ऐसी चीज नहीं है जो विचार के साथ अस्तित्व में आती हो। [1198]
विचार के अनुरूप नहीं [1200]
व्युत्पन्न नहीं [1210]
समझने की विशेषता के बिना [1218]
ग्रास्पिंग से असंबद्ध, और इसका पक्ष न लेना [1228]
भ्रष्टाचार के गुण के बिना [1240]
हानिरहित [1242]
भ्रष्ट नहीं[243ए]
भ्रष्टाचार से अलग और हानिरहित [1210]
आनंदित नहीं [1273]
खुशी के बिना [1275]
सहजता के बिना [1277]
निष्पक्षता के बिना [1279]
शामिल नहीं [1287]
जिससे कोई छुटकारा नहीं मिल सकता [1289]
कोई ऐसी चीज जिसका कोई परे न हो[1293]
युद्ध के साथ समवर्ती नहीं [1295]

साइ में. धातु कथा निब्बानम (निर्वाण) पर हमेशा असंखतो खंडो का स्थान लिया जाता है।

समाप्त।

- फुटनोट:
1. [1212] में भी दिया गया है।

2. [1220] में भी दिया गया है।

3. [1269], [1271] में भी दिया गया है।

4. [1258] आदि में भी दिया गया है।

5. मुद्रित पाठ में [1018].

6. [1291] में दोहराया गया।

7. [1088] और [1090] में दोहराया गया

8.[1082] [1072] और [1074] को जोड़ता है

9.[1112] [1104] और [1106] को दोहराता है

10.[1134] [1126] और [1128] को दोहराता है

11.[1150] [1142] और [1144] को दोहराता है
टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगानि >> संक्षिप्ताक्षर
अनुवादक: सीएएफ राइस डेविड्स

धम्मसंगनी - आंतरिक घटनाओं का विवरण
विवरण

लघुरूप
1. बौद्ध धर्मग्रंथ
उ. - अंगुत्तर-निकाय।
सी. — कुलावग्गा.
डी. — दीघा-निकाय.
धम्मपद।
ध. के.— धातु-कथा.
धम्म-संगनी.
जाट. — जातक.
के. - पाठ का स्याम देश (कम्बोडियन) संस्करण।
के. वी.— कथा वत्थु.
एम. — मज्झिमा-निकया.
एमपीएस- महा-परिनिब्बान सुत्त (बच्चे)।
पीपी— पुग्गला-पन्नट्टी।
एस. — सम्युत्त-निकाय.
एसएन — सुत्त-निपाता।
विन. — विनय.
2. अन्य पुस्तकें।
अभ. एस - अभिधम्मत्थ-संगहा।
Asl. — AtthasfilinT.
दिव. — दिव्यावदना.
जेपीटीएस— पाली टेक्स्ट सोसायटी की पत्रिका।
जेआरएएस — जर्नल ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसाइटी।

एमबी वी.— महा बोधि वंश.
महा.— महा वंश.
मिल. — मिलिंडा पान्हो.
एसबीई— पूर्व के पवित्र ग्रंथ।
सुम. — सुमंगला-विलासिनी.
विसुद्धि मग्गा

टिपिटका >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पाली-अंग्रेजी संस्करण-अध्याय 4

धम्मसंगनी अध्याय 4

4. अष्टकथाकांड

टिकात्थुद्धारो

1384. कटमे धम्म कुसल? कैटुसु भूमिसु कुसलम् - इमे धम्म कुसल।

1385. कटमे धम्म अकुशला? द्वादश अकुसलचित्तुप्पादा - इमे धम्म अकुशला।

1386. कटमे धम्म अभ्यक्ता? कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतं, रूपान्च, निब्बाणच - इमे धम्म अभ्यक्ता।

1387. कतमे धम्म सुखाय वेदनाय संपयुत्ता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो सोमनस्सासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो कत्तारो कामवाकरकुसलसा विपाकातो च किरियतो च पञ्च, रूपावकरतिकाकातुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरटिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं सुखं वेदानां थपेत्वा - इमे धम्म सुखाय वेदनाय संपयुत्ता।

1388. कटमे धम्म दुक्खाय वेदनाय संपयुत्ता? द्वे दोमानस्सासहागतचित्तुप्पादा, दुक्खसहगतं कायवीनाणं, एत्थुप्पन्नं दुक्खं वेदानां थपेत्वा - इमे धम्म दुक्खाय वेदनाय संपयुत्ता।

1389. कतमे धम्म अदुक्खमसुखाय वेदनाय संपयुत्ता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो उपेक्खसहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो च, कामवाकरकुसलस्स विपाकतो दास, अकुसलस्स विपकातो च, किरियतो च, रूपावचरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, कत्तारो अरूपावकार कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं अदुक्खमसुखं वेदानां थपेत्वा — इमे धम्म अदुक्खमासुखाय वेदनाय संपयुत्ता। तिस्सो च वेदना, रूपाञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म न वत्तब्बा सुखाय वेदनाय संपायुत्ततिपि, दुक्खाय वेदनाय संपायुत्ततिपि, या वेदनाय संपायुत्ततिपि।

1390. कटमे धम्म विपाका? कैटुसु भूमिसु विपाको - इमे धम्म विपाका।

1391. कतमे धम्म विपाकधम्मधम्म? कैटुसु भूमिसु कुसलं अकुसलं - इमे धम्म विपाकधम्मधम्म।

1392. कतमे धम्म नेवविपाकनविपकधम्मधम्म? तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, रूपाञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नेवविपाकनविपाकधम्मधम्म।

1393. कतमे धम्म उपादिन्नुपादनीय? तिसु भूमिसु विपाको, यञ्च रूपं कम्मस्सा कटत्ता - इमे धम्म उपादिनुपादनीय।

1394. कतमे धम्म अनुपादिनुपादनीय? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, यञ्च रूपं न कम्मास्सा कटत्ता - इमे धम्म अनुपादिनुपादनीय।

1395. कतमे धम्म अनुपादिन्नुपादनीय? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अनुपदीन्नुपादनीय।

1396. कतमे धम्म संकिलित्थसंकिलेसिका? द्वादशाकुसलचित्तुपाद - इमे धम्म सांकिलिट्ठसान्किलेसिका।

1397. कतमे धम्म असांकिलीठसंकिलेसिका? तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बनचा रूपं - इमे धम्म असांकिलीथसांकिलेसिका।

1398. कतमे धम्म असांकिलित्थासन्किलेसिका? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणंच - इमे धम्म असांकिलीथसासंकिलेसिका।

1399. कटमे धम्म सवितक्कसविचरा? कामवचरण कुसलं, अकुसलं, कामवचरणं कुसलस विपाकतो एकादसा चित्तुप्पदा, अकुसलस्सा विपकातो दवे, किरियतो एकादश, रूपवचरण पथमं झाणं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरं पठहमं झाणं कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्ने विटककविकारे थापेत्वा - इमे धम्म सवितक्कसविचरा।

1400. कतमे धम्म अवितक्कविचारमत्ता? रूपावकरापानकाणये दुतियां झाणं कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, लोकुत्तारापंचकनाये दुतियां झानां कुसलतो च विपाकातो च, एत्थुप्पन्नं विचारं थपेत्वा, विटक्को च - इमे धम्म अवितक्कविचारमत्ता।

1401. कतमे धम्म अवित्तक्काविचार? द्वेपञ्चविन्नानि, रूपावचराटिकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपकातो च किरियतो च लोकुत्तराटिकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च पंचकाणये दुतिये झाने [दुतियाज्झाने (सि.)], उप्पन्नो च विचारो रूपानचा निब्बानचा - इमे धम्म अवित्क्काविचार। वितक्कसहजातो विचारो न वत्तब्बो सवितक्कसविचारोतिपि, अवित्तक्कविचारमत्तोतिपि, अवित्क्काविचारोतिपि।

1402. कतमे धम्म पितिसाहगता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो सोमनस्सासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो कत्तारो, कामवाकरकुसलसा विपाकातो पञ्च, किरियतो पञ्च, रूपावकरदुकटिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकटिकज्झाना कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं पितिम थपेत्वा - इमे धम्म पितिसाहगता।

1403. कतमे धम्म सुखसहागता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो सोमनस्सासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो कत्तारो, कामवाकरकुसलसा विपाकातो च, किरियतो पञ्च, रूपावकरतिकाकातुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरटिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं सुखं थपेत्वा - इमे धम्म सुखसहगता।

1404. कतमे धम्म उपेक्खसहगता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो उपेक्खसहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो च, कामवाकरकुसलस्स विपाकतो दास, अकुसलस्स विपकातो च, किरियतो च, रूपावचरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, लोकुत्तरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं उपेक्खं थपेत्वा - इमे धम्म उपेक्खसहगता। पिति न पितिसाहगता, सुखसहगता, न उपेक्खसहगता। सुखं न सुखसहगतं, सिया पितिसाहगतं, न उपेक्खसहगतं, सिया न वत्तबं पितिससहगतं। द्वे दोमनससहागतचित्तुप्पादा, दुक्खसहगतकायविनाणं, या च वेदना उपेक्खा, रूपाञ्च निब्बाणचा - इमे धम्म न वट्टब्बा पितिसाहगततिपि, सुखसहगततिपि, उपेक्खसहागतातिपि।

1405. कतमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा? कत्तारो दिथिगतसम्पायुत्तचित्तुप्पदा, विकिसिचासहगातो चित्तुप्पदो — इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा।

1406. कटमे धम्म भवनाय पहतब्बा? उद्धच्चसहागतो चित्तुप्पदो — इमे धम्म भवनाय पहतब्बा। कट्टारो दिथिगतविप्पयुत्त लोभासहागतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनससहागतचित्तुप्पादा - इमे धम्म सिया दस्सानेन पहतब्बा सिया भवनया पहतब्बा।

1407. कतमे धम्म नेवा दस्सानेन न भवनाय पहतब्बा? कैटुसु भूमिसु कुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, रूपाञ्च, निब्बानांच - इमे धम्म नेवा दस्सानेन न भवनाय पहतब्बा।

1408. कतमे धम्म दस्सानेन पहतबहेतुका? कत्तारो दिथिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पदा, विसिकिचसाहगातो चित्तुप्पदो, एत्थुप्पन्नं मोहं थपेत्वा - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बाहेतुका।

1409. कटमे धम्म भवनाय पहतबहेतुका? उद्धच्चसहागतो चित्तुप्पदो, एत्थुप्पन्नं मोहं थपेत्वा - इमे धम्म भवनाय पहतबहेतुका। कट्टारो दिथिगतविप्पयुत्त लोभासहागतचित्तुप्पादा, द्वे डोमनस्सासाहागतचित्तुप्पादा - इमे धम्म सिया दस्सानेन पहतबहेतुका, सिया भवनाय पहतबहेतुका।

1410. कतमे धम्म नेवा दस्सानेन न भवनाय पहतबहेतुका? विकिसिचासहगतो मोहो, उद्धाचसहागतो मोहो, कटुसु भूमिसु कुसलम्, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपान्च, निब्बानांच - इमे धम्म नेवा दस्सानेन न भवनाय पहतबहेतुका।

1411. कतमे धम्म अचयागमिनो? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं — इमे धम्म अचायगामिनो।

1412. कतमे धम्म अपाकायगामिनो? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना - इमे धम्म अपाकायगामिनो।

1413. कतमे धम्म नेवाचयागामिनापकायागामिनो? कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपाञ्च, निब्बानांच - इमे धम्म नेवाचयागामिनापकायागामिनो।

1414. कटमे धम्म सेक्खा? कट्टारो मग्गा अपरियापन्ना, हेथिमानी च तिनि समानाफलनि - इमे धम्म सेक्खा।

1415. कतमे धम्म असेक्खा? उपरिथिमं अरहट्टफलं - इमे धम्म असेक्खा।

1416. कटमे धम्म नेवासेक्खानासेक्खा? तिसु भूमिसु कुसलम्, अकुसलम्, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपान्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नेवासेक्खानासेक्खा।

1417. कटमे धम्म परित्ता? कामवचरकुसलं, अकुशलं, सब्बो कामवचरस विपको, कामवचरकिरियाब्यकटं, सब्बाञ्च रूपं - इमे धम्म परित्ता।

1418. कटमे धम्म महग्गता? रूपावचार, अरूपवचार, कुसलब्यकाता - इमे धम्म महग्गता।

1419. कटमे धम्म अप्पमना? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अप्पमना।

1420. कतमे धम्म परित्तरम्मना? सब्बो कामवाचरस्स विपाको, किरियामनोधातु, किरियाहेटुकमानोविनानाधातु सोमनस्सासहगता - इमे धम्म परित्तरम्मना।

1421. कतमे धम्म महग्गतरम्मना? विनानाञ्चायतनं, नेवसन्ननासन्यातनम् - इमे धम्म महाग्गतरम्मना।

1422. कतमे धम्म अप्पमानारमन्ना? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना, चत्तारि च समान्नफलनि - इमे धम्म अप्पमनारमण। कामवाकरकुसलतो कत्तरो णाणविप्पयुत्तचित्तुप्पदा, किरियतो कत्तरो णाणविप्पयुत्तचित्तुप्पदा, सब्बम अकुशलम् — इमे धम्म सिया परित्तरम्मना, सिया महग्गतरम्मना, न अप्पमानारम्मना, सिया न वट्टब्बा परित्तरम्मनातिपि, महागतरम्मनातिपि। कामवाचरकुसलतो कत्तारो णाणसंपयुत्तचित्तुप्पदा, किरियतो कत्तारो णाणसंपयुत्तचित्तुपाद, रूपावचरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च किरियतो च, किरियाहेटुकमानोविनाधातु उपेक्खसहगता - इमे धम्म सिया परित्तरम्मना, सिया महाग्गतरम्मना, सिया अप्पमानारमन्ना, सिया न वट्टब्बा परित्तरम्मनातिपि, महग्गतरम्मनातिपि, अप्पमानारम्मनातिपि। रूपावकारतिकाचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, चतुत्थस्सा झाणस्सा विपाको, आकाशाणञ्चायतनं, आकिंचनायतनं - इमे धम्म न वट्टब्बा परित्तरम्मनातिपि, महग्गतरम्मनातिपि, अप्पमानरामनातिपि। रूपाञ्च निब्बानाञ्च अनारामण्णा।

1423. कतमे धम्म हीना? द्वादश अकुशलचित्तुप्पादा - इमे धम्म हीना।

1424. कतमे धम्म मज्झिमा? तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म मज्झिमा।

1425. कटमे धम्म पनीता? कट्टारो मग्गा अपरियापन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणंच - इमे धम्म पनिता।

1426. कतमे धम्म मिच्चत्तनियता? कत्तारो दिथिगतसम्पायुत्तचित्तुप्पदा, द्वे दोमनससाहगतचित्तुप्पदा - इमे धम्म सिया मिच्चत्तनियता, सिया अनियता।

1427. कतमे धम्म सम्मत्नियता? कट्टारो मग्गा अपरियापन्ना - इमे धम्म सम्मत्तनीयता।

1428. कतमे धम्म अनियता? कत्तारो दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पदा, विकिकचासहगतो सिट्टुप्पादो, उद्धाचसहागातो सिट्टुप्पादो, तिसु भूमिसु कुसलं, कात्सु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, रूपान्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अनियता।

1429. कटमे धम्म मग्गरम्मना? कामवाकरकुसलतो कत्तारो णाणासंपयुत्तचित्तुप्पदा, किरियतो कत्तारो णाणासंपयुत्तचित्तुपाद - इमे धम्म सिया मग्गरम्मना, न मग्गहेतुका; सिया मग्गाधिपतिनो, सिया न वट्टब्बा मग्गरमणतिपि, मग्गाधिपतिनोतिपि। कट्टारो अरियामग्गा न मग्गरम्मना, मग्गहेतुका; सिया मग्गाधिपतिनो, सिया न वट्टब्बा मग्गाधिपतिनोति। रूपावचरचतुत्थं झाणं कुसलतो च किरियतो च, किरियाहेटुकमानोविनाधातु उपेक्खसहगता - इमे धम्म सिया मग्गरम्मना; न मग्गहेतुका, न मग्गाधिपतिनो; सिया न वत्तब्बा मग्गरमणति। कामवाकरकुसलतो कत्तरो णाणविप्पयुत्तचित्तुप्पदा, सब्बां अकुशलं, सब्बो कामवाचरस विपाको, किरियतो च चित्तुप्पादा, रूपावकारतिकाचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकातो च किरियतो च, चतुत्थस्सा झनस्सा विपाको, कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, कत्तारि च समाननफलनि - इमे धम्म न वत्तब्बा मग्गरम्मनातिपि, मग्गहेतुकातिपि, मग्गाधिपतिनोटिपि. रूपाञ्च निब्बानाञ्च अनारामण्णा।

1430. कतमे धम्म उप्पन्ना? कैटुसु भूमिसु विपाको, यञ्च रूपं कम्मस्सा कटत्ता - इमे धम्म सिया उप्पन्ना, सिया उप्पादिनो; न वट्टब्बा अनुप्पन्नति. कैटुसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, यांचा रूपं न कम्मास्सा कटत्ता - इमे धम्म सिया उप्पन्ना, सिया अनुप्पन्ना, न वट्टब्बा उप्पादिनोति. निब्बाणं न वत्तब्बं उप्पन्नन्तिपि, अनुप्पन्नन्तिपि, उप्पदिनोतिपि।

1431. निब्बाणं थपेत्वा सब्बे धम्म सिया अतिता, सिया अनागत, सिया पच्चुप्पन्ना। निब्बाणं न वत्तब्बं अतितन्तिपि, अनागतन्तिपि, पच्चुप्पन्नन्तिपि।

1432. कटमे धम्म अतितरम्मना? विनानाञ्चायतनं, नेवसन्ननासन्यातनम् - इमे धम्म अतितरम्मना।

1433. नियोग अनागतारम्मना नत्थि।

1434. कटमे धम्म पच्चुप्पन्नारम्मना? द्वेपञ्चविन्नानि, तिस्सो च मनोधातुयो – इमे धम्म पच्चुप्पन्नारम्मना। कामवाकरकुसलस्सा विपाकातो दास चित्तुप्पादा, अकुसलस्सा विपाकातो मनोविनाधातु उपेक्खसहगता, किरियाहेटुकमानोविनानाधातु सोमनस्सासाहागता - इमे धम्म सिया अतितरम्मना, सिया अनागतारम्मना, सिया पच्चुप्पन्नारम्मना। कामवाचरकुसलम, अकुसलम, किरियतो नवा चित्तुप्पदा, रूपावचरम चतुत्थं झनानं कुसलतो च किरियतो च - इमे धम्म सिया अतितरम्मना, सिया अनागतारम्मना, सिया पच्चुप्पन्नरमन्ना; सिया न वत्तब्बा अतितरम्मनातिपि, अनागतारम्मनातिपि, पच्चुप्पन्नरम्मनातिपि। रूपावकारतिकाचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, चतुत्थस्सा झानास्सा विपाको, आकाशानचायतनं, अकिंचनायतनं, कत्तारो मग्गा अपिरियपन्ना, चत्तारि च समानाफलनि – इमे धम्म न वत्तब्बा अतितरम्मनातिपि, अनागतारम्मनातिपि, पच्चुप्पन्नरमणतिपि। रूपाञ्च निब्बानाञ्च अनारामण्णा।

1435. अनिन्द्रियबधरूपाञ्च निब्बाणञ्च थापेत्वा, सब्बे धम्म सिया अज्जहट्टा, सिया बहिद्धा, सिया अजज्जत्तबहिद्धा। अनिन्द्रियबधरूपाञ्च निर्वाणञ्च बहिद्धा।

1436. कटमे धम्म अज्झत्तरम्मना? विनानाञ्चायतनं, नेवसन्ननासन्यातनम् - इमे धम्म अज्झत्तारम्मना।

1437. कतमे धम्म बहिद्धारम्मना? रूपावकारतिकाचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकातो च किरियतो च, चतुत्थस्सा झाणस्सा विपाको, आकाशानचायतनं, कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना चत्तारी च समानाफलनि - इमे धम्म बहिद्धारम्मना. रूपं थपेतवा, सब्बेव कामवचरा कुसलकुशलाब्यकाता धम्म, रूपवचरं चतुत्थं झनानं कुसलतो च किरियतो च - इमे धम्म सिया अज्जहत्तरम्मना, सिया बहिद्धारम्मना, सिया अजज्जट्टबहिद्धारम्मना। अकिंचनन्यातनं न वत्तब्बं अज्झत्तारम्मनन्तिपि, बहिद्धारम्मन्तिपि, अज्झत्तबहिद्धारम्मन्तिपि। रूपाञ्च निब्बानाञ्च अनारामण्णा।

1438. कतमे धम्म सन्निदस्सानसप्पतिघा? रूपायतनं - इमे धम्म सानिदासंससप्पतिघा।

1439. कतमे धम्म अनिदस्सानसप्पतिघा? चक्खायतनं...पे... फोटहब्बायतनं - इमे धम्म अनिदस्सानसप्पातिघा।

1440. कतमे धम्म अनिदासनप्पतिघा? कैटुसु भूमिसु कुसलं, अकुशलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, यञ्च रूपं अनिदासनं अप्पतिघं धम्मायतनपरियपन्नं, निब्बाणंच - इमे धम्म अनिदासनप्पातिघा।

Tikaṃ.

दुकात्थुद्धारो

हेतुगोच्चकं

1441. कतमे धम्म हेतु? तयो कुसलहेतु, तयो अकुशलहेतु, तयो अभ्याकहेतु। अलोभो कुसलहेतु, अदोसो कुसलहेतु, कैटुसु भूमिसु कुसालेसु उप्पज्जन्ति। अमोहो कुसलहेतु, कामवाचरकुसलतो चत्तारो णाणविप्पयुत्ते चित्तुप्पदे थपेत्वा, कातुसु भूमिसु कुसालेसु उप्पज्जति।

लोभो अथासु लोभसहागतेसु चित्तुप्पादेसु उपज्जति। दोसो दविसु दोमनस्सासाहागतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति। मोहो सब्बाकुसलेसु उपज्जति।

अलोभो विपाकहेतु अदोसो विपाकहेतु, कामवाचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पदे थपेत्वा, कैट्टुसु भूमिसु विपाकेसु उप्पज्जन्ति। अमोहो विपकाहेतु, कामवाचरस्स विपकातो अहेतुके चित्तुप्पदे ठप्पेतवा, कत्तारो णाणविप्पयुत्ते चित्तुप्पदे ठपेत्वा, बिल्लीसु भूमिसु विपाकेसु उपज्जति।

अलोभो किरियाहेतु अदोसो किरियाहेतु, कामवाकरकिरियातो अहेतुके चित्तुप्पदे थपेत्वा, तिसु भूमिसु किरियेसु उपप्पजंति। अमोहो किरियहेतु, कामवचरकिरियतो अहेतुके चित्तुप्पादे थापेतवा, कत्तारो णाणविप्पयुत्ते चित्तुप्पदे थापेतवा, तिसु भूमिसु किरियेसु उप्पज्जति - इमे धम्म हेतु।

1442. कतमे धम्म न हेतु? तपेत्वा हेतु, कैट्टुसु भूमिसु कुसलम्, अकुसलम्, कैट्टुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, रूपान्च, निब्बानांच - इमे धम्म न हेतु.

1443. कतमे धम्म सहेतुका? विकिसिचासहगतं उद्धच्चसहागतं मोहं थापेत्वा अवसेसं अकुसलं, कट्टुसु भूमिसु कुसलं, कामवाचरस विपाकातो अहेतुके चित्तुप्पादे तपेतवा कट्टुसु भूमिसु विपाको, कामवचरकिरीयतो अहेतुके चित्तुप्पदे थपेत्वा तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम् — इमे धम्म सहेतुका।

1444. कतमे धम्म अहेतुका? विकिसिचासहागातो मोहो, उद्धाचसहागातो मोहो, द्वेपञ्चविन्नानि, तिस्सो च मनोधातुयो, पञ्च च अहेतुकामानोविनानाधातुयो, रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म अहेतुका।

1445. कतमे धम्म हेतुसम्पायुत्त? विकिसिचासहगतं उद्धच्चसहागतं मोहं थापेत्वा अवसेसं अकुसलं, कट्टुसु भूमिसु कुसलं, कामवाचरस विपाकातो अहेतुके चित्तुप्पादे तपेतवा कट्टुसु भूमिसु विपाको, कामवचरकिरीयतो अहेतुके चित्तुप्पदे थपेत्वा तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम् — इमे धम्म हेतुसम्पायुत्ता।

1446. कतमे धम्म हेतुविप्पयुत्त? विकिसिचासहागातो मोहो, उद्धच्चासहागातो मोहो, द्वेपञ्चविनानि तिस्सो च मनोधातुयो पञ्च च अहेतुकामानोविनाणाधातुयो, रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म हेतुविप्पयुत्त।

1447. कतमे धम्म हेतु सेवा सहेतुका च? यत्था द्वे तयो हेतु एकतो उपज्जन्ति — इमे धम्म हेतु सेवा सहेतुका च।

1448. कतमे धम्म सहेतुका सेवा न च हेतु? कैट्टुसु भूमिसु कुसलं, अकुशलं, कामवाचरस्स विपाकातो अहेतुके सिट्टुप्पादे थपेतवा कैट्टुसु भूमिसु विपाको, कामवाकरकिरियातो अहेतुके सिट्टुप्पाडे थपेत्वा तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, एत्थुप्पन्ने हेतु थपेत्वा - इमे धम्म सहेतुका सेवा न च हेतु। अहेतुका धम्म न वत्तब्बा - हेतु सेवा सहेतुका चातिपि, सहेतुका सेवा न च हेतुतिपि।

1449. कतमे धम्म हेतु सेवा हेतुसम्पायुत्त च? यत्था द्वे तयो हेतु एकतो उपज्जन्ति — इमे धम्म हेतु सेवा हेतुसम्पायुत्त च।

1450. कतमे धम्म हेतुसम्पायुत्त सेवा न च हेतु? कैट्टुसु भूमिसु कुसलं, अकुशलं, कामवाचरस्स विपाकातो अहेतुके सिट्टुप्पादे थपेतवा कैट्टुसु भूमिसु विपाको, कामवाकरकिरियातो अहेतुके सिट्टुप्पाडे थपेत्वा तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, एत्थुप्पन्ने हेतु थपेत्वा - इमे धम्म हेतुसम्पायुत्त सेवा न च हेतु। हेतुविप्पयुत्त धम्म न वट्टब्बा — हेतुसेवा हेतुसम्पायुत्त चातिपि, हेतुसम्पायुत्त सेवा न च हेतुतिपि।

1451. कतमे धम्म न हेतु सहेतुका? कैट्ठुसु भूमिसु कुसलं, अकुशलं, कामवाचरस्स विपाकातो अहेतुके सिट्ठुप्पादे थपेतवा कैट्ठुसु भूमिसु विपाको, कामवाकरकिरियातो अहेतुके सिट्ठुप्पाडे थपेत्वा तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, एत्थुप्पन्ने हेतु थपेत्वा - इमे धम्म न हेतु सहेतुका।

1452. कतमे धम्म न हेतु अहेतुका? द्वेपञ्चविन्नानि, तिस्सो च मनोधातुयो, पञ्च च अहेटुकमानोविनानाधातुयो, रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म न हेतु अहेतुका। हेतु धम्म न वत्तब्बा - न हेतु सहेतुकातिपि, न हेतु अहेतुकातिपि।

Cūḷantaradukaṃ

1453. कटमे धम्म सप्पक्कया? कैटुसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म सप्पक्कया।

1454. कतमे धम्म अप्पाकाया? निब्बाणं - इमे धम्म अप्पाकाया।

1455. कटमे धम्म संखता? कैटुसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म संखता।

1456. कतमे धम्म असन्खता? निब्बाणं - इमे धम्म असंखता।

1457. कतमे धम्म सन्निदासना? रूपायतनं - इमे धम्म सन्निदासना।

1458. कतमे धम्म अनिदासना? चक्खायतनं...पे... फोटहब्बायतनं, कैटुसु भूमिसु कुसलम्, अकुसलाम्, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्याकटं, यंका रूपं अनिदासनं अप्पतिघं धम्मायतनपरियपन्नं, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अनिदासना।

1459. कतमे धम्म सप्पतिघा? चक्खायतनं...पे... फोटहब्बायतनं - इमे धम्म सप्पतिघा।

1460. कतमे धम्म अप्पतिघा? कैटुसु भूमिसु कुसलं, अकुशलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, यञ्च रूपं अनिदासनं अप्पतिघं धम्मायतनपरियपन्नं, निब्बाणंच - इमे धम्म अप्पतिघा।

1461. कतमे धम्म रूपिनो? चत्तरो च महाभूत, चतुन्नंच महाभूतानां उपादय रूपं - इमे धम्म रूपिनो।

1462. कतमे धम्म अरुपिनो? कैटुसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, निब्बानच - इमे धम्म अरुपिनो।

1463. कतमे धम्म लोकिया? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म लोकिया।

1464. कटमे धम्म लोकुत्तारा? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म लोकुत्तारा। सब्बे [सब्बेवा (स्या.)] धम्म केनचि विन्नेया, केनसी न विन्नेय्या।

आसवगोच्चकं

1465. कतमे धम्म आसव? कत्तारो आसव - कामसावो, भावसावो, दिट्ठासावो, अविज्जासावो। कामसावो अट्ठासु लोभसहगतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति भावासावो कट्ठसु दितिथिगतविप्पयुत्तलोभसहगातेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति दिट्ठासावो बिल्लीसु दिथिगतसम्पायुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। अविज्जासवो सब्बाकुसलेसु उपज्जति - इमे धम्म आसव।

1466. कतमे धम्म नो आसव? हपेत्वा असवे अवसेसं अकुसलं, कट्ठसु भूमिसु कुसलम, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतं, रूपाञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो आसव.

1467. कतमे धम्म सासव? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म सासव।

1468. कतमे धम्म अनासव? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अनासव।

1469. कतमे धम्म आसवसंपयुत्त? द्वे दोमनसस्साहगतचित्तुप्पादा एत्थुप्पन्नं मोहं थपेत्वा, विकिसिचासहगतं उद्धच्चसहागतं मोहं थपेत्वा, अवसेसं अकुशलम् - इमे धम्म आसवसंपयुत्त।

1470. कतमे धम्म आसवविप्पयुत्त? द्वीसु दोमानससाहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो मोहो, विचिकिचसाहगातो मोहो, उद्धच्चसहागातो मोहो, कट्ठसु भूमिसु कुसलं, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म आसवविप्पयुत्त।

1471. कतमे धम्म आसव सेवा सासव च? तेव आसव आसव सेवा ससाव च।

1472. कतमे धम्म सासव सेवा नो च आसव? तपेत्वा आसवे, अवसेसं अकुसलम्, तिसु भूमिसु कुसलम्, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, सब्बांका रूपं - इमे धम्म सासव सेवा नो च आसव। अनासव धम्म न वत्तब्बा - आसव सेवा ससाव चतिपि, ससव सेवा नो च आसवतिपि।

1473. कतमे धम्म आसव सेवा आसवसंपयुत्त च? यत्थ द्वे तैयो आसव एकतो उपज्जन्ति - इमे धम्म आसव सेवा आसवसंपयुत्त च।

1474. कतमे धम्म आसवसंपयुत्त सेवा नो च आसव? हपेत्वा आसवे, अवसेसं अक्सलम् - इमे धम्म आसवसंपयुत्त सेवा नो च आसव। आसवविप्पयुत्त धम्म न वत्तब्बा - आसव सेवा आसवसंपयुत्त चतिपि, आसवसंपयुत्त सेवा नो च आसवतिपि।

1475. कतमे धम्म आसवविप्पयुत्त ससाव? द्वीसु दोमानससहागतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो मोहो, विचिकिचसाहगातो मोहो, उद्धच्चसहागातो मोहो, तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, सब्बनचा रूपं - इमे धम्म आसवविप्पयुत्त ससाव।

1476. कतमे धम्म आसवविप्पयुत्त अनासव? कट्टारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणंच - इमे धम्म आसवविप्पयुत्त अनासव। आसवसंपयुत्त धम्म न वत्तब्बा - आसवविप्पयुत्त ससावतिपि, आसवविप्पयुत्त अनासवतिपि।

संयोजनगोच्चकं

1477. कतमे धम्म समन्वय? दश संयोजनानि - कामरागसंयोजनां, पतिघसंयोजनं, मनसंयोजनं, दितिहिसंयोजनं, विकिकीचासंयोजनं, सिल्बतपरमसयोजनं, भावरागसंयोजनं, इस्सासंयोजनं, मच्छरियासंयोजनं, अविज्जासंयोजनं। Kāmarāgasaṃyojanaṃ aṭṭhasu lobhasahagatesu cittuppādesu uppajjati. Paṭighasaṃyojanaṃ dvīsu domanassasahagatesu cittuppādesu uppajjati. Mānasaṃyojanaṃ catūsu diṭṭhigatavippayuttalobhasahagatesu cittuppādesu uppajjati. Diṭṭhisaṃyojanaṃ catūsu diṭṭhigatasampayuttesu cittuppādesu uppajjati. Vicikicchāsaṃyojanaṃ vicikicchāsahagatesu cittuppādesu uppajjati.

सिलब्बतपरमसासंयोजनं कट्ठसु दिथिगतसम्पायुत्तेसु चित्तुप्पदेसु उपज्जति। भावरागासंयोजनं कैट्ठसु दितथिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पदेसु उपज्जति। इस्सासंयोजनाञ्च मैक्चारियासंयोजनाञ्च दविसु डोमनस्सासाहगतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जन्ति। अविज्जासंयोजनं सब्बाकुसलेसु उप्पज्जति — इमे धम्म समन्वय।

1478. कतमे धम्म नो संयोग। हपेत्वा संयोगेन अवसेसं अकुसलम्, कट्ठसु भूमिसु कुसलम, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, रूपाञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो संयोग.

1479. कतमे धम्म समन्वय? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म समन्वय।

1480. कतमे धम्म असंयोजनिया? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म असंयोजनिया।

1481. कतमे धम्म संयोगसंपयुत्त? उद्धच्चसहागतं मोहं थपेत्वा अवसेसं अकुशलं - इमे धम्म संयोगसंपयुत्त।

1482. कतमे धम्म संयोगविप्पयुत्त? उद्धाचसहागतो मोहो, कट्ठसु भूमिसु कुसलं, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपान्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म संयोगविप्पयुत्त।

1483. कतमे धम्म समन्वय सेवा च? तनेव संयोगानि समन्वया सेवा च।

1484. कतमे धम्म समन्वय्य सेवा नो च समन्वय? तपेत्वा संयोगेन अवसेसं अकुसलम्, तिसु भूमिसु कुसलम्, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, सब्बांका रूपं - इमे धम्म समन्वय सेवा नो च समन्वय। असंयोजनीय धम्म न वत्तब्बा - समन्वय सेवा, समन्वय चातिपि, समन्वय सेवा नो च संयोगातिपि।

1485. कतमे धम्म समन्वय सेवा च? यत्थ द्वे तिनि संयोगनि एकतो उपज्जन्ति - इमे धम्म समन्वय सेवा, समन्वयसंपयुत्त च।

1486. कतमे धम्म संयोगसंपयुत्त सेवा नो च संयोग? हपेत्वा संयोगेन, अवसेसं अकुशलम् — इमे धम्म समन्वयसंपयुत्त सेवा नो च संयोगना। संयोगविप्पयुत्त धम्म न वत्तब्बा — समन्वय सेवा, समन्वयसंपयुत्त चतिपि, संयोगसंपयुत्त सेवा नो च संयोगातिपि।

1487. कतमे धम्म संयोगविप्पयुत्ता समन्वय? उद्धाचसहागतो मोहो, तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बनचा रूपं - इमे धम्म संयोगविप्पयुत्त संयोगिया.

1488. कतमे धम्म संयोगविप्पयुत्त अससंयोगनीय? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म संयोगविप्पयुत्त असंयोजनिया। संयोगसंपयुत्त धम्म न वत्तब्बा — संयोगविप्पयुत्त संयोगिअतिपि, संयोगविप्पयुत्त असंयोजानियातिपि।

गंथागोच्चकं

1489. कटमे धम्म गंथा? कत्तारो गंथा - अभिज्झाकायगंथो, बयापदो कायगंथो, सिलब्बतपरमसो कायगंथो, इदंससच्चाभिनिवेशो कायगंथो। अभिज्झाकायगन्थो अट्ठसु लोभसहगातेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति। बयापादो कायगन्थो दविसु डोमनस्सासाहागतेसु चित्तुप्पदेसु उपज्जति। सिलब्बतपरमसो कायगन्थो च इदंससच्चभिनिवेशो कायगन्थो च कैट्ठसु दिथिगतसाम्पयुत्तेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जन्ति - इमे धम्म गन्था।

1490. कतमे धम्म नो गंथा? तपेत्वा गान्थे, अवसेसं अकुसलं, कटुसु भूमिसु कुसलम, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, रूपाञ्च, निब्बाणचा - इमे धम्म नो गंथा.

1491. कटमे धम्म गंथनिया? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म गंथनिया।

1492. कटमे धम्म अगन्थनिया? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणंच - इमे धम्म अगंथनिया।

1493. कतमे धम्म गन्थासम्पायुत्त? कट्टारो दिथिगतसम्पायुत्तचित्तुप्पादा, कत्तारो दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्नं लोभं थापेतवा, द्वे दोमनस्सासाहागतचित्तुप्पदा, एत्थुप्पन्नं पतिघं थपेत्वा - इमे धम्म गंथसंपयुत्त।

1494. कतमे धम्म गन्थविप्पयुत्त? कैटुसु दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतेसु सिट्टुप्पादेसु उप्पन्नो लोभो, दविसु डोमनस्साहागातेसु सिट्टुप्पादेसु उप्पन्नं पतिघं, विकिकचासहगातो सिट्टुप्पदो, उद्धच्चसहगातो सिट्टुप्पडो, कैटुसु भूमिसु कुसलं, कटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपान्च, निब्बानांच - इमे धम्म गंथविप्पयुत्त।

1495. कतमे धम्म गंथा सेवा गंथानिया च? तेव गंथा गंथा सेवा गंथानिया च।

1496. कतमे धम्म गंथानिया सेवा नो च गंथा? तपेत्वा गान्थे अवसेसं अकुशलम्, तिसु भूमिसु कुसलम्, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, सब्बांका रूपं - इमे धम्म गंथानिया सेवा नो च गंथा। अगन्थानिया धम्म न वत्तब्बा - गंथा सेवा गंथानिया चतिपि, गंथानिया सेवा नो च गंथातिपि।

1497. कतमे धम्म गंथा सेवा गंथासंपयुत्त च? यत्थ दिति च लोभो च एकतो उपज्जन्ति - इमे धम्म गंथा सेवा गंथासम्पयुत्त च।

1498. कतमे धम्म गंथासम्पायुत्त सेवा नो च गंथा? अट्ठा लोभासहागतचित्तुप्पादा द्वे दोमानसस्साहागतचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्ने गान्थे थपेतवा - इमे धम्म गंथसम्पायुत्त सेवा नो च गन्था। गंथाविप्पयुत्त धम्म न वट्टब्बा - गंथा सेवा गंथासंपयुत्त चतिपि, गंथासम्पायुत्त सेवा नो च गंथातिपि।

1499. कतमे धम्म गन्थाविप्पयुत्त गन्थानिया? कैटुसु दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो लोभो, द्विसु डोमनस्साहागातेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नं पतिघं, विकिकिचासहगातो चित्तुप्पदो, उद्धच्चासहगातो चित्तुप्पदो, तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बान्चा रूपं - इमे धम्म गंठविप्पयुत्ता गंथनिया।

1500. कतमे धम्म गन्थविप्पयुत्त अगन्थनिया? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म गंथाविप्पयुत्ता अगंथनिया। गंथासंपयुत्त धम्म न वट्टब्बा - गंथाविप्पयुत्त गंथानियातिपि, गंथाविप्पयुत्त अगंथनियातिपि।

ओघगोच्चकं

1501. कतमे धम्म ओघा...पे...।

योगगोच्चकं

1502. कतमे धम्म योग...पे...।

नीवरणगोच्चकं

1503. कटमे धम्म निवारण? च निवारण - कामच्छंदनिवरणम्, ब्यापदानिवरणम्, पतलीमिद्धनिवरणम्, उद्धच्चक्कुक्कुच्चनिवरणम्, विकिसिच्चानिवरणम्, अविज्जानिवरणम् । कामच्छंदनिवरं अठहसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति, ब्यापदानिवरणं दविसु डोमनस्सासहागतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति, थिनमिद्धनिवरं ससंखारीकेसु अकुसालेसु उप्पज्जति, उद्धच्चानिवरणं उद्धच्चासाहागतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति, कुक्कुच्चनिवराणं दविसु डोमनस्सासाहागतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति, विकिकिचानिवरणं विचिकीछासाहागतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति, अविज्जानिवरणं सब्बाकुसलेसु उपज्जति - इमे धम्म निवारण।

1504. कटमे धम्म नो निवारण? तपेत्वा निवारणे अवसेसं अकुसलाम्, कटुसु भूमिसु कुसलम्, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, रूपाञ्च, निब्बाणचा - इमे धम्म नो निवारण.

1505. कटमे धम्म निवारनीय? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुशलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म निवारण।

1506. कतमे धम्म अनिवरनिया? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणच - इमे धम्म अनिवरनिया।

1507. कतमे धम्म निवारणसंपयुत्त? द्वादश अकुशलचित्तुप्पादा - इमे धम्म निवारणसंपयुत्त।

1508. कतमे धम्म निवारणविप्पयुत्त? कैटुसु भूमिसु कुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, रूपाञ्च, निब्बानांच - इमे धम्म निवारणविप्पयुत्त।

1509. कतमे धम्म निवारण सेवा च? तनेव निवारणानि निवारणा सीव निवारणिया च।

1510. कतमे धम्म निवारणिया सेवा नो च निवारण? तपेत्वा निवारने, अवसेसं अकुसलम्, तिसु भूमिसु कुसलम्, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, सब्बांका रूपं - इमे धम्म निवारनीय सेवा नो च निवारण। अनिवारणिय धम्म न वत्तब्बा - निवारण सेवा निवारणिया चतिपि, निवारणिय सेवा नो च निवारणतिपि।

1511. कतमे धम्म निवारण सेवा च? यत्थ द्वे तिनि निवारणानि एकतो उपज्जन्ति - इमे धम्म निवारण सेवा निवारणसंपयुत्त च।

1512. कतमे धम्म निवारणसंपयुत्त सेवा नो च निवारण? तपेत्वा निवारणे, अवसेसं अकुशलम् - इमे धम्म निवारणसंपयुत्त सेवा नो च निवारण। निवारणविप्पयुत्त धम्म न वट्टब्बा - निवारण सेवा निवारणसंपयुत्त चतिपि, निवारणसंपयुत्त सेवा नो च निवारणतिपि।

1513. कटमे धम्म निवारणविप्पयुत्त निवारणिया? तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बाञ्च रूपं - इमे धम्म निवारणविप्पयुत्त निवारणिया।

1514. कटमे धम्म निवारणविप्पयुत्त अनिवरनिया? कट्टारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणंच - इमे धम्म निवारणविप्पयुत्त अनिवरनिया। निवारणसंपयुत्त धम्म न वत्तब्बा - निवारणविप्पयुत्त निवारणियातिपि, निवारणविप्पयुत्त अनिवराणियातिपि।

परमासगोच्चकं

1515. कतमे धम्म परमसा? दितिथिपरमसो कटुसु दितिथिगतसाम्पयुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति — इमे धम्म परमासा।

1516. कतमे धम्म नो परमसा? तपेत्वा परमसं अवसेसं अकुशलम्, कटुसु भूमिसु कुसलम, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियब्यकतम्, रूपाञ्च, निब्बाणचा — इमे धम्म नो परमसा।

1517. कतमे धम्म परमार्थ? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म परमार्थ।

1518. कटमे धम्म अप्रमठ? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च समानाफलनि निब्बानांच - इमे धम्म अप्रमठ।

1519. कतमे धम्म परमासम्पयुत्त? कत्तारो दिथिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पदा, एत्थुप्पन्नं परमासं थपेत्वा - इमे धम्म परमासंसपयुत्त।

1520. कतमे धम्म परमसविप्पयुत्त? कत्तारो दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पदा, द्वे दोमानस्सहगतचित्तुप्पादा, विकिकिचसाहगातो सिट्टुप्पादो, उद्धच्चसहागातो सिट्टुप्पादो, बिल्लीसु भूमिसु कुसलम्, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपाञ्च, निब्बानांच - इमे धम्म परमसाविप्पयुत्त। परमासो न वत्तब्बो — परमासाम्पयुत्तोतिपि, परमासाविप्पयुत्तोतिपि।

1521. कतमे धम्म परमसा सेवा परमार्थ च? तो एव परमसो परमसो सेवा परमार्थो च।

1522. कतमे धम्म परमार्थ सेवा नो च परमसा? तपेत्वा परमसं अवसेसं अकुसलम्, तिसु भूमिसु कुसलम्, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, सब्बांका रूपं - इमे धम्म परमार्थ सेवा नो च परमसा। अप्रमठ धम्म न वत्तब्बा - परमसा सेवा परमथ चतिपि, परमथ सेवा नो च परमसतिपि।

1523. कतमे धम्म परमसविप्पयुत्त परमार्थ? कट्टारो दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पादा, दवे दोमानस्सासहागतचित्तुप्पादा, विकिसिचासहगातो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहागातो चित्तुप्पादो, तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बान्चा रूपं - इमे धम्म परमसाविप्पयुत्ता परमार्थ।

1524. कतमे धम्म परमसविप्पयुत्त अप्रमठ? कत्तारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणंच - इमे धम्म परमसाविप्पयुत्त अप्रमठ। परमासा च परमासासंपयुत्त च धम्म न वत्तब्बा - परमसाविप्पयुत्त परमथ्थातिपि, परमसविप्पयुत्ता अप्रमठतिपि।

महंतरादुकां

1525. कटमे धम्म सरम्मना? कैटुसु भूमिसु कुसलं, अकुशलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम् - इमे धम्म सरम्मना।

1526. कतमे धम्म अनारम्मना? रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म अनारम्मना।

1527. कटमे धम्म चित्त? चक्खुविनाणं, सोतविनानां, घनविनानां, जीवविनानां, कायविनानां, मनोधातु, मनोविनानाधातु - इमे धम्म चित्त।

1528. कटमे धम्म नो चित्त? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, रूपञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो चित्त।

1529. कटमे धम्म चेतसिका? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो — इमे धम्म चेतसिका।

1530. कतमे धम्म एसिटासिका? चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बाञ्च - इमे धम्म एसिटासिका।

1531. कतमे धम्म चित्तसंपयुत्त? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो - इमे धम्म चित्तसम्पायुत्त।

1532. कतमे धम्म चित्तविप्पयुत्त? रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म चित्तविप्पयुत्त। चित्तं न वट्टब्बं — चित्तेन संपयुत्तन्तिपि, चित्तेन विप्पयुत्तन्तिपि।

1533. कतमे धम्म चित्तसंशथ? वेदानाक्खन्धो, संनाक्खन्धो, संखरक्खन्धो — इमे धम्म चित्तसंशत्था।

1534. कतमे धम्म चित्तविसंशथा? रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म चित्तविसंसंथा। चित्तं न वट्टब्बं — चित्तेन संसंतहन्तिपि, चित्तेन विसंसंशांत्तिपि।

1535. Katame dhammā cittasamuṭṭhānā? वेदनाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, कायवीन्नत्ती, वाचिविनत्ती, यं वा पणन्नमपि अत्थि रूपं चित्तजं चित्तहेतुकं चित्तसमुत्थानं - रूपायतनं सद्दायतनं गंधायतनं रसायतनं फोतहब्बायतनं आकाशधातु आपोधातु रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स काम्मनता रूपस उपाचयो रूपस्सा संतति कबाड़ीकारो अहारो - इमे धम्म चित्तसमुत्थाना।

1536. कटमे धम्म नो चित्तसमुत्थाना? चित्तञ्च, अवसेसन रुपं, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो चित्तसमुत्थाना।

1537. कतमे धम्म चित्तसहभूनो? वेदनाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो, कायाविन्ति, वाचिविनत्ती - इमे धम्म चित्तसाहाभुनो।

1538. कतमे धम्म नो चित्तसहभूनो? चित्तञ्च, अवसेसन रुपं, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो चित्तसहभूनो।

1539. Katame dhammā cittānuparivattino? Vedanākkhandho, saññākkhandho, saṅkhārakkhandho, kāyaviññatti, vacīviññatti — ime dhammā cittānuparivattino.

1540. कतमे धम्म नो चित्तनुपरिवत्तिनो? चित्तांक, अवसेसंच रूपं, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो चित्तनुपरिवत्तिनो।

1541. कटमे धम्म चित्तसंशमुत्थाना? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो — इमे धम्म चित्तसंशठसमुत्थाना।

1542. कतमे धम्म नो चित्तासंसठसमुत्थाना? चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो चित्तसंस्थसमुत्थाना।

1543. कतमे धम्म चित्तसंशस्तसमुत्थानसाहाभुनो? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो — इमे धम्म चित्तसंशस्तसमुत्थानसाहाभुनो।

1544. कतमे धम्म नो चित्तसंशसमुत्थानसाहाभुनो? चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो चित्तसंशमुत्थानसाहाभुनो।

1545. कतमे धम्म चित्तसंशस्तसमुत्थाननुपरिवत्तिनो? वेदानाक्खन्धो, सन्नाक्खन्धो, संखरक्खन्धो - इमे धम्म चित्तसंशस्तसमुथ्थाननुपरिवत्तिनो।

1546. कतमे धम्म नो चित्तसंशसमुत्थाननुपरिवत्तिनो? चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो चित्तसंस्थसमुत्थाननुपरिवत्तिनो।

1547. कटमे धम्म अज्जत्तिका? चक्खायतनं...पे... मनायतनं - इमे धम्म अज्जत्तिका।

1548. कटमे धम्म बहिरा? रूपायतनं...पे...धम्मायतनं - इमे धम्म बहिरा।

1549. कटमे धम्म उपादा? चक्खायतनं...पे...कबदीकारो आहारो - इमे धम्म उपादा।

1550. कतमे धम्म नो उपदा? कैटुसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, कत्तारो च महाभूत, निब्बाणंच - इमे धम्म नो उपदा।

1551. कटमे धम्म उपादिन्ना? तिसु भूमिसु विपाको, यञ्च रूपं कम्मस्सा कटत्ता - इमे धम्म उपादिन्ना।

1552. कटमे धम्म अनुपदिना? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, यांचा रूपं न कम्मस्सा कटत्ता, कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, कत्तारी च समान्नफलनि, निब्बानच - इमे धम्म अनुपादिना।

उपादानगोच्चकं

1553. कटमे धम्म उपादान? चत्तारि उपदाननि - कामुपादानां, दित्थुपादानां, सिलब्बतुपादानां, अत्तवदुपादानां। कामुपादानं अट्ठसु लोभसहगातेसु चित्तुप्पदेसु उपज्जति। दिट्ठुपादान्च सिल्लब्बतुपदानञ्च अत्तवदुपादान्च कटुसु दिथिगतसम्पायुत्तेसु चित्तुप्पदेसु उपज्जन्ति - इमे धम्म उपादन।

1554. कटमे धम्म नो उपादान? तपेत्वा उपादाने अवसेसं अकुसलम्, कटुसु भूमिसु कुसलम्, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, रूपाञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म नो उपादान.

1555. कतमे धम्म उपदानिया? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म उपादनिया।

1556. कतमे धम्म अनुपदनीय? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अनुपादनीय।

1557. कतमे धम्म उपादानसंपयुत्त? कत्तारो दितिगतसम्पायुत्तलोभासहागतचित्तुप्पदा, कत्तारो दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहगतचित्तुप्पदा, एत्थुप्पन्नं लोभं थापेत्वा - इमे धम्म उपादानसंपयुत्त।

1558. कटमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता? कैटुसु दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो लोभो, द्वे दोमानस्सहागतचिट्ठुप्पदा, विकिकिचसाहागतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चासहागातो चित्तुप्पादो, कैटुसु भूमिसु कुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपाञ्च, निब्बाणच - इमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता।

1559. कतमे धम्म उपादान सेवा उपादानिय च? तनेव उपादाननि उपादान सीव उपादानिय च।

1560. कतमे धम्म उपादानिय सेवा नो च उपादान? तपेत्वा उपादाने अवसेसं अकुसलम्, तिसु भूमिसु कुसलम्, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, सब्बांका रूपं - इमे धम्म उपादानिय सेवा नो च उपादान। अनुपादनीय धम्म न वत्तब्बा - उपादान सेवा उपदानिय चतिपि, उपदानिय सेवा नो च उपदानतिपि।

1561. कतमे धम्म उपादान सेवा उपादानसंपयुत्त च? यत्थ दिति च लोभो च एकतो उपज्जन्ति - इमे धम्म उपादान सेवा उपादानसंपयुत्त च।

1562. कतमे धम्म उपादानसंपयुत्त सेवा नो च उपादान? अट्ठ लोभसहगतचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्ने उपादाने थपेत्वा - इमे धम्म उपादानसंपयुत्त सेवा नो च उपादान। उपादानविप्पयुत्त धम्म न वत्तब्बा - उपादान सेवा उपादानसंपयुत्त चतिपि, उपादानसंपयुत्त सेवा नो च उपादानतिपि।

1563. कतमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता उपदानिया? कैटुसु दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतेसु सिट्टुप्पादेसु उप्पन्नो लोभो, द्वे दोमनस्सहागतचिट्टुप्पादो, विकिकिचसाहागोटो सिट्टुप्पडो, उध्च्चासहागातो सिट्टुप्पडो, तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बान्चा रूपं - इमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता उपदानिया।

1564. कतमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता अनुपादनीय? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म उपादानविप्पयुत्ता अनुपादनीय। उपादानसंपयुत्त धम्म न वत्तब्बा - उपादानविप्पयुत्ता उपादानियातिपि, उपादानविप्पयुत्ता अनुपादनियातिपि।

किलेसगोच्चकम्

1565. कतमे धम्म किलेसा? दासा किलेसवत्थुनि - लोभो, दोसो, मोहो, मानो, दितिथि, विकिसिच्चा, थिनं, उद्धाक्कं, अहिरिकां, अनोत्प्पम। लोभो अथासु लोभसहागतेसु चित्तुप्पादेसु उपज्जति। दोसो दविसु दोमनस्सासाहागतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति। मोहो सब्बाकुसलेसु उपज्जति। मनो कैटुसु दितिथिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पदेसु उप्पज्जति। दितिथि कैटुसु दितिथिगतसम्पायुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। विसिकिच्चा विकिकिच्चासहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। थिनं ससंखारीकेसु अकुसालेसु उप्पज्जति। उद्धाच्चान्च अहिरिकाञ्च एनोत्तप्पञ्च सब्बकुसलेसु उप्पज्जन्ति - इमे धम्म किलेसा।

1566. कतमे धम्म नो किलेसा? हपेत्वा किलेसे अवसेसं अकुशलं, कटुसु भूमिसु कुसलम, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपान्च, निब्बाणच - इमे धम्म कोई किलेसा नहीं.

1567. कतमे धम्म संकिलेशिका? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं सब्बनचा रूपं - इमे धम्म संकिलेशिका।

1568. कतमे धम्म असंकिलेसिका? कट्टारो मग्गा अपरियापन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणंच - इमे धम्म असन्किलेसिका।

1569. कतमे धम्म संकिलित्था? द्वादश अकुशलचित्तुपाद - इमे धम्म संकिलिथः।

1570. कतमे धम्म असंकिलित्था? कैटुसु भूमिसु कुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपाञ्च, निब्बानांच - इमे धम्म असंकिलिथा।

1571. कतमे धम्म किलेसासम्पयुत्त? द्वादश अकुशलचित्तुप्पादा - इमे धम्म किलेसासम्पयुत्त।

1572. कतमे धम्म किलेसविप्पयुत्त? कैटुसु भूमिसु कुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, रूपाञ्च, निब्बानांच - इमे धम्म किलेसाविप्पयुत्त।

1573. कतमे धम्म किलेसा सेवा संकिलेशिका च? तेव किलेसा किलेसा सेवा संकिलेशिका च।

1574. कतमे धम्म संकिलेशिका सेवा नो च किलेसा? थपेत्वा किलेसे अवसेसं अकुसलाम्, तिसु भूमिसु कुसलम्, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म संकिलेशिका सेवा नो च किलेसा। असंकिलेशिका धम्म न वत्तब्बा - किलेसा सेवा संकिलेशिका चातिपि, संकिलेशिका सेवा नो च किलेसातिपि।

1575. कटमे धम्म किलेसा सेवा संकिलिथ च? तेव किलेसा किलेसा सेवा संकिलिथा च।

1576. कतमे धम्म संकिलित्थ सेवा नो च किलेसा? हपेत्वा किलेसे अवसेसं अकुसलम् — इमे धम्म संकिलिट्ठ सेवा नो च किलेसा। असंकिलिट्ठा धम्म न वट्टब्बा - किलेसा सेवा संकिलिथा चातिपि, संकिलिट्ठा सेवा नो च किलेसातिपि।

1577. कतमे धम्म किलेसा सेवा किलेसासम्पयुत्त च? यत्था द्वे तैयो किलेसा एकतो उपज्जन्ति — इमे धम्म किलेसा सेवा किलेसासम्पयुत्त च।

1578. कतमे धम्म किलेसासम्पयुत्त सेवा नो च किलेसा? हपेत्वा किलेसे अवसेसं अक्सलम् - इमे धम्म किलेसासम्पयुत्त सेवा नो च किलेसा। किलेसाविप्पयुत्त धम्म न वट्टब्बा - किलेसा सेवा किलेससाम्पयुत्ता चातिपि, किलेससाम्पयुत्ता सेवा नो च किलेसातिपि।

1579. कतमे धम्म किलेसाविप्पयुत्त संकिलेशिका? तिसु भूमिसु कुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, सब्बनचा रूपं - इमे धम्म किलेसविप्पयुत्त संकिलेशिका।

1580. कतमे धम्म किलेसाविप्पयुत्त असंकिलेशिका? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणंच - इमे धम्म किलेसाविप्पयुत्त असान्किलेसिका। किलेसासम्पयुत्त धम्म न वत्तब्बा - किलेसाविप्पयुत्त संकिलेसिकतिपि, किलेससाविप्पयुत्त असन्किलेसिकतिपि।

पिट्ठिदुकम्

1581. कतमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा? कत्तारो दिथिगतसम्पायुत्तचित्तुप्पदा, विकिसिचासहगातो चित्तुप्पदो — इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बा। कट्टारो दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पादा, दवे दोमनस्सासाहागतचित्तुप्पादा - इमे धम्म सिया दस्सानेन पहतब्बा, सिया न दस्सानेन पहतब्बा।

1582. कतमे धम्म न दस्सानेन पहतब्बा? उद्धाचसहागातो सित्तुप्पाडो, कैटुसु भूमिसु कुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपान्च, निब्बानच - इमे धम्म न दस्सानेना पहतब्बा.

1583. कटमे धम्म भवनाय पहतब्बा? उद्धच्चसहागतो चित्तुप्पदो — इमे धम्म भवनाय पहतब्बा। कत्तारो दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पदा, द्वे दोमनस्सासहागतचित्तुप्पदा - इमे धम्म सिया भवनाय पहतब्बा, सिया न भवनाय पहतब्बा।

1584. कटमे धम्म न भवनाय पहतब्बा? कत्तरो दितिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, विचिकिचसाहगतो सित्तुप्पदो, कटुसु भूमिसु कुसलम्, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म न भवनाय पहतब्बा।

1585. कटमे धम्म दस्सानेन पहतबहेतुका? कत्तारो दिथिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पदा, विसिकिचसाहगातो चित्तुप्पदो, एत्थुप्पन्नं मोहं थपेत्वा - इमे धम्म दस्सानेन पहतब्बाहेतुका। कत्तारो दितिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पादा, द्वे डोमनस्सासाहागतचित्तुप्पादा - इमे धम्म सिया दासानेन पहतब्बाहेतुका, सिया न दासानेन पहतब्बाहेतुका।

1586. कतमे धम्म न दस्सानेन पहतबहेतुका? विकिसिछासहागतो मोहो, उद्धाचसहागतो चित्तुप्पदो, कटुसु भूमिसु कुसलम्, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटम्, रूपाञ्च, निब्बाणचा - इमे धम्म न दस्सानेन पहतबहेतुका।

1587. कटमे धम्म भवनाय पहतबहेतुका? उद्धच्चसहागतो चित्तुप्पदो, एत्थुप्पन्नं मोहं थपेत्वा - इमे धम्म भवनाय पहतबहेतुका। कत्तारो दितिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पादा, द्वे डोमनस्सासाहागतचित्तुप्पादा - इमे धम्म सिया भवनाय पहतबहेतुका, सिया न भवनाय

पहतबहेतुका।

1588. कटमे धम्म न भवनाय पहतबहेतुका? कत्तारो दितिगतसम्पायुत्तचित्तुपाद, विसिकिचसाहगतो सिट्टुप्पदो, उद्धाचसहागतो मोहो, कटुसु भूमिसु कुसलं, बिल्लीसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म न भवनाय पहतबहेतुका।

1589. कतमे धम्म सवितक्का? कामवाकरकुसलम, अकुसलम, कामवाकरकुसलसा विपाकटो एकादश चित्तुप्पदा, अकुसलसा विपाकतो दवे, किरियतो एकादश, रूपावचरम पथमं झाणं कुसलतो च विपकातो च किरियतो च लोकुत्तरं पथमं झाणं कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं विटककं थपेत्वा - इमे धम्म सवितक्क।

1590. कटमे धम्म अवित्क्का? द्वेपञ्चविन्नानि, रूपावकरतिकाचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, कत्तारो अरूपवचरा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरतिकाचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, विटक्को च, रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म अवित्क्का।

1591. कटमे धम्म सविचारारा? कामवाकरकुसलम, अकुसलम, कामवाकरकुसलसा विपाकतो एकादश चित्तुप्पादा, अकुसलस्सा विपाकतो द्वे किरियतो एकादश, रूपावकरएककादुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरेकाकाडुकज्झाना कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं विचारं थपेत्वा - इमे धम्म सविचाररा।

1592. कटमे धम्म विचार? द्वेपञ्चविन्नानि, रूपावचराटिकितिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरीयतो च, कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तराटिकटिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, विकारो च, रूपाञ्च, निब्बानाञ्च - इमे धम्म विचारा।

1593. कटमे धम्म सप्पितिका? कामवाकरकुसलतो कत्तारो सोमनस्सासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो कत्तारो, कामवाकरकुसलसा विपाकातो पञ्च, किरियतो पञ्च, रूपावकरदुकटिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकटिकज्झाना कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं पितिम थपेत्वा - इमे धम्म सप्पितिका।

1594. कटमे धम्म अप्पितिका? कामवाकरकुसलतो कत्तारो उपेक्खासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो अट्ठ, कामवाकरकुसलसा विपाकतो एकादश, अकुसलस्सा विपाकतो सत्त, किरियतो च, रूपावकरदुकादुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकदुकज्झाना कुसलतो च विपकातो च पित च, रूपाञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अप्पितिका।

1595. कतमे धम्म पितिसाहगता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो सोमनस्सासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो कत्तारो, कामवाकरकुसलसा विपाकातो पञ्च, किरियतो पञ्च, रूपावकरदुकटिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकटिकज्झाना कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं पितिम थपेत्वा - इमे धम्म पितिसाहगता।

1596. कतमे धम्म न पितिसाहगता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो उपेक्खासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो अट्ठ, कामवाकरकुसलसा विपाकतो एकादश, अकुसलस्सा विपाकतो सत्त, किरियतो च, रूपावकरदुकादुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकदुकज्झाना कुसलतो च विपकातो च, पित च, रूपानच, निब्बानच - इमे धम्म न पितिसाहगता।

1597. कतमे धम्म सुखसहागता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो सोमनस्सासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो कत्तारो, कामवाकरकुसलसा विपाकातो च, किरियतो पञ्च, रूपावकरतिकाकातुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च लोकुत्तरटिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं सुखं थपेत्वा - इमे धम्म सुखसहगता।

1598. कतमे धम्म न सुखसहगाता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो उपेक्खसहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो अट्ठा, कामवाकरकुसलस्स विपाकतो दास, अकुसलस्स विपकतो सत्त, किरियतो च, रूपावकरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपकातो च किरियतो च लोकुत्तरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च विपकातो च, सुखञ्च, रूपञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म न सुखासहागता।

1599. कतमे धम्म उपेक्खसहगता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो उपेक्खसहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो च, कामवाकरकुसलस्स विपाकतो दास, अकुसलस्स विपकातो च, किरियतो च, रूपावकरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च विपकातो। च किरियतो च, कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपकातो च किरियतो च, लोकुत्तरं चतुत्थं झाणं कुसलतो च विपकातो च, एत्थुप्पन्नं उपेक्खं थापेत्वा - इमे धम्म उपेक्खसहगता।

1600. कतमे धम्म न उपेक्खसहगता? कामवाकरकुसलतो कत्तारो सोमनस्सासहागतचित्तुप्पादा, अकुसलतो च, कामवाकरकुसलसा विपाकातो च, अकुसलस्सा विपाकातो एको, किरियतो पञ्च, रूपावकरतिकाकातुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकातो च किरियतो च, लोकुत्तारिकाचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपकातो च, उपेक्खा च, रूपाञ्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म न उपेक्खासहागता।

1601. कटमे धम्म कामवचरा? कामवचरकुसलं, अकुशलं, सब्बो कामवचरस विपको, कामवचरकिरियाब्यकटं, सब्बाञ्च रूपं - इमे धम्म कामवचरा।

1602. कतमे धम्म न कामवचरा? रूपवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना - इमे धम्म न कामवचरा।

1603. कटमे धम्म रूपवचरा? रूपावकारचतुक्कपञ्चकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च - इमे धम्म रूपवचरा।

1604. कतमे धम्म न रूपवचरा? कामवचरा, अरूपवचरा, अपरियापन्ना - इमे धम्म न रूपवचरा।

1605. कटमे धम्म अरूपवकारा? कत्तारो अरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरीयतो च - इमे धम्म अरूपवचरा।

1606. कतमे धम्म न अरूपवचरा? कामवचरा, रूपवचरा, अपरियापन्ना - इमे धम्म न अरूपवचरा।

1607. कतमे धम्म परियापन्ना? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बनचा रूपं - इमे धम्म परियपन्ना।

1608. कतमे धम्म अपरियापन्ना? कट्टारो मग्गा अपरियपन्ना, कत्तारि च समानाफलनि, निब्बानांच - इमे धम्म अपरियपन्ना।

1609. कतमे धम्म नियमिका? कट्टारो मग्गा अपरियापन्ना - इमे धम्म निय्यनिका।

1610. कतमे धम्म अनियानिका? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, कटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपान्च, निब्बानांच - इमे धम्म अनियानिक।

1611. कतमे धम्म नियता? कत्तारो दिथिगतसम्पायुत्तचित्तुप्पदा, दवे दोमनससाहगतचित्तुप्पादा - इमे धम्म सिया नियता सिया अनियाता। कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना - इमे धम्म नियता।

1612. कतमे धम्म अनियता? कत्तारो दिथिगतविप्पयुत्तलोभासहागतचित्तुप्पदा, विकिकचासहगतो सिट्ठुप्पादो, उद्धाचसहागातो सिट्ठुप्पादो, तिसु भूमिसु कुसलं, कात्सु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकतम्, रूपान्च, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अनियता।

1613. कटमे धम्म सौत्तरा? तिसु भूमिसु कुसलं, अकुसलं, तिसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, सब्बांका रूपं - इमे धम्म सौत्तरा।

1614. कतमे धम्म अनुत्तारा? कत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च समानाफलनि, निब्बाणञ्च - इमे धम्म अनुत्तरा।

1615. कतमे धम्म शरणा? द्वादश अकुशलचित्तुप्पादा - इमे धम्म शरणा।

1616. कतमे धम्म अरणा? कैटुसु भूमिसु कुसलं, कैटुसु भूमिसु विपाको, तिसु भूमिसु किरियाब्यकटं, रूपाञ्च, निब्बानांच - इमे धम्म अरणा।

Atthuddhāro niṭṭhito.

धम्मसंगणिपकारणं निहितं।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धम्मसंगनि >> पाली-देवनागरी संस्करण-अध्याय 4

धम्मसंगनी अध्याय 4